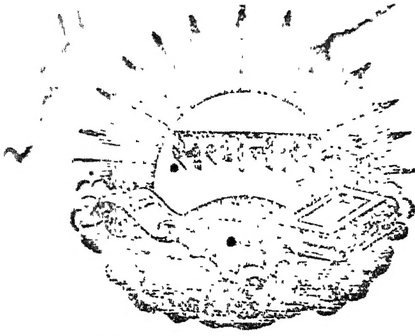
सत्य नाम ।



श्री कवीर साहिव ।



सत्यसुकृत, आहिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतायन, धनी धर्मदास, चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, कंदयान की, दया वंश-व्यालीसकी दया।

अथ श्रीबोधसागरे

एकत्रिंशतिस्तरंगः ।

अथ कमालबोध प्रारम्भः ।

चौपाई ।

शाह सिकन्दर दिल्ली सुलताना । बैठे तख्त करे रजधाना ॥
बहुतेक दिवस आनन्दमें गयऊ। एतेकायाको बेदन भयऊ ॥
देह अग्नि उठी अधिकाई । रैन दिवस शाहा सुधिनाहीं ॥
बहुतेक इलम कियो सुलताना। पीर औलिया सिद्धमुलाना ॥
कोइ विधिजलन दूर नहिं जाई । दिनदिन उठीचलेअग्निकाई ॥

शाहसिकन्दर प्रतिज्ञा ।

दोहा–दीन दुनीका मैं धनी, मेरा जाय परान ।
मेरा वदन जो हरै, मनवांछित पावे दान ॥

चौपाई ।

ऐसा कोइ औलिया नाहीं । मेर तनकी तपन बुझाहीं ॥

वजीर वचन ।

कहै वजीर सुनो सुलताना । काशीमें एक फकीर सयाना ॥
तहाँ एक हिंदु फकीर रहाई । चौदहसौबरसजिन उमरधराई ॥
सब हिन्दू कदमों पै जाहीं । सब हिंदूके पीर कहाहीं ॥
उनकोचरणारविंद धरोतुमजायी । दर्शन करतजलन मिटजायी ॥
रामानंद कहैं सुनी बड़ाई । शाह सवारी काशी आई ॥

दोहा–आय दुनीके बादशाह, सब संगहि दललाय ।
जलन मिटनके कारने, कदमों पहुंचे जाय ॥

चौपाई ।

भया प्रभात जलन अधिकाया । जब रामानंदकहँदर्शनधाया ॥
शाह सिकंदर दर्शन आये । सबही अमीर संग चलिधाये ॥
आय मण्डप आप सुलताना । रामानंददिलरहै खिसियाना ॥
शाहको अग्नि उठी अधिकाई । भये विकल सही न जाई ॥
त्राहि त्राहि तब कीन पुकारा । रामानंद तबमुखफेरिसिधारा ॥
दुरिवदशा भयी अति क्रोधा । कहै वजीर सुनो सब योधा ॥
इनो इस काफिरकी गुमराही । चढत क्रोध मोहिरह्योनजाही ॥
दीन दुनीके शाह सुलताना । जिनका नमै सकल जहाना ॥
सोकाफिरके कदमो आवे । देखतनाहिकाफिर मूहफिरावे ॥
ऐसा काल चढ्यो बलबंडा । नफरके घटमें भयो परचंडा ॥
ऐसो तेग चलायो जायी । काट्यो शिरधड दूर गिरायी ॥
तहि अवसर अचरज असभयऊ । देखत दुनी अचम्भो ठयऊ ॥

टे अंगसो धार बहायी। आधा रक्त अरु दूध चलायी॥
ाह सिकंदर अंदेशा माने। भेद न जाने मनमांहि तवाने॥
वामी केतन चलत दुई धारी। हाहाकरै तब दुनिया सारी॥
दोहा—गुरुरामानंदाहिं मारिया, काशी नगर मझार।
शाहक बेदनवहु पंढचो, त्रासभयी संसार॥
कता बेदनको दुख भारी। दुसरे अचरज परी अगारी॥
हैं सिकन्दर मनअकुलायी। ऐसा कोई औलिया नाहीं॥
मेरे तनको तपन बुझावे। बहुरी अचरजको भेद बतावे॥
बही कहै सुनो सुलताना। इनका शिष्य यक अहै सयाना॥
रल गौ कईबार जियाया। बहुतक अचरजतिन दिखलाया॥
ामानन्दहुते अधिक बडाई। सत्यकबीर कहैं सब ताई॥
तेनको दरशन करिये शाहा। सो पुनि कहिहै अचरजको राहा॥
ुनत बचन सिकंदर भाई। कीन दर्शन कबीर पहँ जाई॥
ाह सिकंदर दर्शन आये। मिटिगयी तपन सब दुखमिटाये॥
जबहीं शाह किया दीदारा। मिटिगयी तपन अग्निकी झारा॥
कहै शाह तुम सच्चे साई। तुमरे दरश तपन बुझाई॥
दोहा—जबही तपन बुझायऊ, सतगुरु दीनदयाल।
भइ प्रतीत तब शाहको भयो शिष्य तेहि बाल॥
चौपाई।
भय मुरीद जुलहाके आयी। तबही-जुलकरन[1]-नाम धराई॥
ज्ञान ध्यान चरचा बहु कीन्हा। शाहसिकंदरशरण जबलीन्हा॥

१ इस शब्दके ऊपर बहुत विचार किया. किन्तु शुद्ध शब्दका पता नहीं लगा। 'जुलकरन' नतो फारसी या अरबी शब्द है न संस्कृत या हिन्दी। कमालबोधकी एकही प्रति मेरे पास है जो सम्वत १९११ का लिखा हुआ है। विशेषता यह है कि, यह पुस्तक खास पं० श्री पाक नाम साहबके समयमें उन्हींके हजूरमें रहनेवाले एक संतकी लिखी हुई है तथापि इसमें इतनी अशुद्धियाँ हैं कि एक २ चौपाईको पढनेमें दो दो मिनट लग जाता है तथापि हजारों सन्देह सहित कॉपी लिखी जाती है।

सतईसलाख सो बीरा लीन्हा। सबहीं जीव अमर करिदीन्हा॥
मनहक्खलाखजिवलेकसिधाने। अपने औगुन सब गयेहिराने॥
तब सिकंदर यक विनती लावा। सिहर गुरु करि ताहि लखावा॥
अहो साहिब मोहिं ग्रंथ लखाई। बाचे ग्रंथ दिल समुझाई॥
तब सद्गुरु हुकुम अस कीना। जसमांग्यो शाह तसतेहिदीना॥
नवी सिन्दका लेहु बुलायी। कागजकलमसबसाथलिवायी॥
शाह सिकंदर तुरत बुलाये। सवालाख सो तेही बेर आये॥
सवालाख देह कबीर तबकीना। सोउ सिकंदर सब सुधिलीना॥
तनमनधन जब अर्पण कीना। शिरके सांटे साहब लीन्हा॥
फिर शाह जब दिल्ली आये। काजीमुल्ला सब सुनि पाये॥
शेख तकी रह उनकर पीरा। सब मिलि गये उनके तीरा॥
सब मिल कहँ सुनो मम पीरा। शाहसिकंदर कस भयेअधीरा॥
काशी माहिं गये जब शाहा। कबीरहिं कीन गुरू नरनाहा॥
सुनत तकी बहुत रिसियाना। का तुम कहौ अस बातबिराना॥
ऐसा कैसा ख्याल खिलायो। कैसे मोरा मुरीद फिरायो॥
चलो जाइये शाह दरबारा। सब मिलि पूछें ज्ञान बिचारा॥
जुलहा मुरीद कस सो भयऊ। सो सब पूछें तिसका भेऊ॥
केहि कारण मुरीद सो हूआ। काजीमुल्लां सब कहँ मूआ॥
सब मिलि आये भेर दरबारा। बैठ तख्तशाह सरदारा॥
तिन कहँ आदर शाह भलदीन्हा। तिनपुनि प्रश्न पूछि सोलीन्हा॥
कहो शाह तुम कहा मत पाये। कैसे अपना ईस्म फिराये॥
काफिर कहँ मुरीद कस तुमहूए। काजीमुल्ला सबकहँ मूए॥
दीनके घर कहँ टोटा भाई। दीनका कर आदिसो आई॥
सो तुम कैसे दियो मिटायी। चार बिहिश्त अल्लाहफरमायी॥

इनकूँ तजि आगे कहँ जाओ। चार मुकाम लाहूत सोभाओ॥
दीन इस्लाम असल फरमायो। सो तुम छोड़ि कहँ भटका खायो॥
दीन दुनी के तुम सरदारा। कैसे भटक्यो दीन तुम्हारा॥
खुदाके अहदी काज़ी कहावें। दीन इसलाम की राह बतावें॥
दीन इसलाम असल है भाई। और सब जग कुफर चलाई॥

सिकन्दर वचन।

सुनत सिकन्दर उत्तरदीन्हा। सबको मन अचरज अस्मभीना॥
भूले काज़ी भूले मुलाना। तिनहु भूले लाय फरमाना॥
दीनका घर दूर है भाई। बिन जाने तुम असल ठहराई॥
किसनेबिहिस्त बैकुण्ठबनाया। दीनकाअसल किसनेफरमाया॥

दोहा—क़ाज़ी मुल्ला भूलिया, भरमें सकलजहान।
मुहम्मद भूले संदेशसे, सोई लाये फरमान॥

चौपाई।

एते सतगुरु दिल्ली आये। शाहसिकन्दर बहुत सुखपाये॥
जमना विचहै महल मुबारक। बैठ पीर जहँ होइके फारक॥
काजी मुल्लाको लिये बुलाये। शेख तकी तुरत चलिआये॥

शेखतकी वचन।

कहे तकी ज़ुल्म तुम कीना। मुरीद हमार फिरायके लीना॥
काह कियो सुनो मति धीरा। जुलम किया तुम दास कबीरा॥
कौन इलम शाहको दिखलायो। कौन सुधि तुम नाम सुनायो॥

कबीर वचन।

मियाँ हम इलम फकीरी बोलें। समरथनाम लिये जग डोलें॥
हम दुर्वेश है दर्प दिवाना। सतकी चाल चलें जग जाना॥

काजीमुल्ला वचन।

निराकार जिन कुरान बखाना। नूर जो उतर्यो सब जगजाना॥

यही खुदा कि. और निनारा । इसका हमको कहो विचारा ॥

कबीर वचन ।

निराकार है खुदाका कीया । इनको तीन लोकसो दीया ॥
इनही रचे जो वेद कुराना । विहिस्तवैकुण्ठइनही जोढाना॥
दोहा–निराकार निर्गुन कहैं, राचि रहे संसार ।
वेद कुरान इन्ही किये, साहिबनूर निनार ॥

काजीमुल्ला वचन ।

ज्ञान कियेमें बानि नाहिं आयी । अपनीअजमत देहु दिखायी ॥
अजमतसे हम सच करिमानें । नाहिं तो करहु झूठ अभिमाने ॥
दीनका घर सब झूठ परायी । तो पुनि इलमतुम्हार चलायी॥
जो कछु इलम हमार चलायी । तो हम तुमको लेव मिलायी ॥
दोहा–हमारे दिल ऐसी लगी, फिराय सिकन्दर साय ।
मखून आदिका मेटिया, सबदिन दिये उठाय ॥
हमारे दिल ऐसी लगी,तुमकच्चा प्यालापिलाय।
कहै शेख तकी कबीरसे, फिराय सिकंदर साय ॥

कबीर वचन ।

मियांजी आवे तो खावे सही, हम केहिबसैं तन माहि ।
तुम खाये सकल जहानको, तौभी छक्के नाहिं ॥
एक मुर्दा यमुनामें आया । सो जुलकरनके नजर पराया॥
कहहु यारो उसकी जिन्दगानी । कहा देखा इन जगमें आनी ॥
आछी उमर यह कह पायी । सुरत शुभान कछु कहानजाई ॥
इसका जीव गया किहि ठायी । काजीमुल्ला कहो समझायी ॥
शेष तकीको आगम नाहीं । हमारे पुत्र कमानेको जाहीं ॥
दुइ लोमको दीन प्याना । उलटा नाव यमुना बहराना ॥
डूबे जीव जो एक हजारा । मुर्दा बहे जायँ असरारा ॥

देखो पीर किताब कुरानां । हम करें तुमको सन्मांना ॥
यहि मुर्दाको लेहु हँकराई । हम तब रहें तुव शरनाई ॥
जो यह मुर्दा आवे नाहीं । तब तुम कर सब झूठ बडाई ॥
सखुन तीन काजी हँकारा । मुरदा बहाजाय मझधारा ॥
दिखाओ कबीर इलम फकीरी । यहि मुरदाको लेहु हँकारी ॥

काजीमुल्ला वचन ।

हम सब धरे तुम्हारे पाई । जो यह मुरदा लेहु बुलाई ॥
जो यह मुर्दा आवे नाहीं । तो तुम झूठे शाह भगमाई ॥
कुदरतकेमालकहि कबीरबुलावा । मुर्दादौरि समरथचरनसमावा
काजीमुल्ला देखें ठाढे । मुर्दासे जिन्दा करि डारे ॥
सतगुरु अंक मिलाप जब कीना । इलम फकीरी उसको दीना ॥

दोहा—मुरदासों जिन्दा किया, दिलसों दीन मलाल ।
शाह परतीत दिखाइया, उत्पन दास कमाल ॥

चौपाई ।

शेख तकी हरषे मन माई । लाय कमाली भेट चढाई ॥
दोउ सुत अहै तुम्हारी शरना । तुमसे मिटे जरा औ मरना ॥
शेख तकी तब शीस नवावा । बेहद साहब सच हम पावा ॥

कबीर वचन ।

जाहु कमाल कोइ मुल्क चेताओ । चौरासीसे जीव मुक्ताओ ॥
चले कमाल तब शीस नवाई । अहमदाबाद तब पहुँचे आई ॥
दरियाखान पठानहिं नामा । तहाँ जाय पुनि कीन्ह मुकामा ॥
साठ मुरीद किये तेहि ठाई । अधिक प्रीति पठान जनाई ॥
तन मनसे बहु सेवा कीना । इलम फकीरी उसको दीना ॥

कमाल वचन ।

सुनो दरियाखान सखुन हमारा । इलमफकीरी सदा बडभारा ॥

जो तुम चाल चलो भरपूरी। तब तुम पहुँचो पुरुष हजूरी ॥
कबहूँ तुम जो चूको चेला। शिकस्त करे तब तुमको काला ॥
जो तुम चेला चूक करो जाई। तब तुम परिहो चौरासीमाई ॥
इतनी सिखावन उसको दीया। दिन सोलह उसकेघर रहिया ॥

दोहा—इल्म फकीरी अलमस्ता दिवाना, कीना एक उपाय।
एक पांव बाँधे वेदको, दूजे किनेब बँधाय ॥

चौपाई।

वेद किनेब जो बड़यारा। चले जातहैं नगर मँझारा ॥
मध्य चौकमें खड़े भय जाई। प्रानी बहुत तमाशे आई ॥
बायां पाव हिन्दू दिखलावे। बांचे वेद वैकुण्ठ सो पावे ॥
दहिना पाँव दीन दिखलावे। पढे कुरान बिहिश्त को जावे ॥
वेद किनेब दोऊ बड भारी। त्राहि २ भयी दुनियाँ सारी ॥
दोनों दीन पावँ तले दीना। ऐसा है कोई अलमस्तनबीना॥
चले सकल पुनि दिया पुकारी। जाय खडे भय शाह दरबारी ॥

दोहा—तुमहो अहमद शाहडा, अचरज देखो आय।
वेद किनेब पावों तले, दोऊ दीन मिटाय ॥

चौपाई।

कांपे अहमद आप सुलताना। जडो जँजीर फकीर दिवाना ॥
जडो जँजीर मुहकमकर ऐसी। ऊपर रहो मुवकिल दशबीसी ॥
रहे न सयानी भये वियाना। बाहर चौकमें खडा दिवाना ॥
सोई जोडा फिर दिखलावे। दोनों दिनको फिर समुझावे ॥
फिरि जाय सब कीन पुकारा। है जिन्दा खडा चौक निर्धारा॥
कहे शाह मुवकिलसे तबही। कैसे गया जिन्दा पुनि जबही॥

मुवकिल वचन।

कहे मुवकिल सुनु सुलताना। ऐसी अजमत हम नाहिं जाना ॥

ात बेर जो जडे जँजीरा । बाहर चाकम खडा फकीरा ॥

अहमदशाह वचन ।

मबकी लाय जमींमें गाढो । पांच २ ईंटा सब मिलि मारो॥
ो कोइ दया करे उसपर जायी । उसके घरको देहु जलायी ॥

दोहा—लाहे लागि कमालको, ऊपर ईंटा अपार ।
तन मनकी कछु सुधि नहीं, इलम फकीरी सार ॥

चौपाई ।

दरियाखान कचहरी जावे । आगू पडी भीड दिखलावे ॥
कहे मुबकिल सुनो दरियाई । कमालके ऊपर है कठिनाई ॥
इलम फकीरी सैल तुम पाई । मारो ईंटा फकीरके ताई ॥
जो तुम इनपर ईंटा न डारो । तब तुम सारी खिदमत हारो ॥
मारो ईंटा होयकर राजी । नहिंतो तुमपर होय शाहनराजी ॥

दरियाखान वचन ।

कौन उपाय करों मैं सांई । कैसे मुरशिदपर ईंट चलाई ॥
मेरी इलम फकीरी जाई । जो मैं इनपर गद कर जाई ॥
तब हजरत उसपर बहुत रिसांई। तबही फूल एक लीन उठाई ॥
दरियाखान विवेक निधाना । भेद फूल मन करे तिवाना ॥
जो फूलै हम मरिहौं जाई । मेरो जनम भ्रष्ट होय जाई ॥
देखि गुनावन शाह रिसाना । कठिन क्रोध प्रकट दिखलाना ॥
देखि क्रोध दरिया जब लीना । पखुरी एक फूलसो छीना ॥
सोई पखुरी गुरुपै चलिया । लागत पखुरी अचेत ह्वै परिया ॥
दरियाखान दौरि ढिग गयऊ । पहर एक तक विन्ती लयऊ ॥
पहर एकमहँ चेत तब आवा । दरियाखान तब अरज सुनावा ॥
सुनहू सतगुरु विन्ती मोरी । इतनी ईंटा परी तुम भोरी ॥
इतनी ईंटा परी तुम संगा । तंब तुम काहे न मोर्‍यो अंगा॥

हमतो फूलक पखुरी डारा । ताते तुम होय पडे बेकरारा ॥

दोहा—याका मरम पाया नहीं, सतगुरु कहो समझाय ॥
एतिक ईंटा मारसे, तुम कहँ ना विकलाय ॥
एक पखुरी फूलसे, लागी इतनी चोट ।
होय विकल धरनी गिरे, होगय लोटम पोट ॥

कमाल वचन ।

बिना भेद उन ईंटा डारा । तुमतो हमको चीन्हके मारा ॥
मोमे इलम फकीरी पाई । ताते तुम मोकूं मारा भाई ॥
यह दुनिया है कालका चारा । इसपर चले न अमल हमारा ॥
ताते देह छांडि हम भये नियारे । डारे कोटिक ईंट अपारे ॥
देखत तुमको देह समोये । शिष्यको दर्शन देह महँ होये॥
भली कीन तुम मोको मारा । अपनी इलम फकीरी हारा ॥
बहुतक ज्ञानहम तोहि सुझावा । तौहू तुम मम मरम न पावा ॥

दोहा—इलम फकीरी चूकी तेरी, सुनहू खान पठान ।
दोजख जाहू मौजमें, यह सतगुरुका फरमान ॥

दरियाखान वचन ।

सब दुनिया दोजख कहँ जायी । मुझको कौने दोजख फरमायी

कमाल वचन ।

भूत ग्वानिमें रहा समाई । सब जग जाने तेरे ताई ॥
जानि बूझि तुम मोको मारा । सब भूतनका बनो सरदारा ॥
सब भूतनमें करो बादशाही । सबमें तेरी चले दुहाई ॥
एती खबर शाह सुन पावा ।जिन्दा कहँ शिर काटन फरमावा
कहे दरियाखान सुनो सुलताना।जिन्दानहीं कोई औलियाजाना
यह सुनि शाह बहुत रिसाया । तुरतहि पोस्त काढि मँगाया ॥

१ कमाल साहब उस समय जिन्दा वेषमें थे। जिन्दा वेषका हाल देखो ग्रन्थ
निरंजनबोध आगम ज्ञानमें । २ चमडा ।

विहीं छाती चीरन लागे । शाही महलमें आग तव जागे॥
डे अहमद जो बहुत ठहेली । शाहकी देह अग्नि तव भेली ॥
ाह कहे चलु जिन्दा पासा । जिन्दा चले तव काशी वासा॥
जेन्दा गया काशी अस्थाना । सुनी शाह मनही पछताना ॥
रियाखान कहँ संग लिवायी। चला शाह काशी कहँ जाई ॥
स्ती घोडा लिये मँगायी । जर जौहर बहु माल भराई ॥
वेचर ऊंट हाथी बहु लीना । गिनत बरे नहिं आवे गीना ॥
चले अहमद आप सुलताना । दुनिया संगउठिचलीनिदाना॥
एक मास दिन सत्ताइस जाई । अहमद पहुँच काशी माई ॥
कमाल पहले गुरु पहँ आये । सतगुरु सन्मुख माथ नवाये ॥
आये अहमद सतगुरु पासा । बारम्वार खैंचे ऊंच उसासा॥
जर जवाहिर माल उतारा । ले सतगुरुके चरणों धारा ॥
बहुत कहूँ कछु वरनि न जाई । हमही पूठ नहिं दीन गुसांई ॥
साहब कमाल गुसाकरि आये । हमरे तनकूँ अग्नि लगाये ॥
यह सुनि सतगुरु बहुत रिसाये । तब कमालको बचन सुनाये ॥
हमको मिले सो जीव उबारें । तुम तो लाये द्रव्य भंडारें ॥

दोहा—नाम रतन धन बेचिके,लाया माल हमाल ।
बूडा वंश कबीरका, उपजा पूत कमाल ॥
कौडीसे हीरा भया, हीरेसे भया लाल ।
आधे साहिब कबीर हैं, पूरा भक्त कमाल ॥

चौपाई ।

इतना कहीं दया प्रभु कीना । शाहको दुख छुडाये लीना ॥
साहब नजर करी भर पूरी । शाहकी जलन भई तव दूरी ॥

दरियाखान वचन ।

दरियाखान कहे कर जोरी । सुनु समरथ विन्ती मोरी ॥

हम तो फूलक पखुरी डारा। कौन चूक है गुरू हमारा।
पहिले इलम फकीरी दीना। फिरके जनम भूतको कीना।
कौन चूक अपराध गुसाँई। सो समरथ मोहि देहु बताई॥
थोडा चूक वहुत दुख दीना। हो समरथ मैं होऊं अधीना॥
भूत जनम वड़ होय मलीना। महा दुख तुम सदा जो दीना॥
एसी चूक है कहा हमारी। भूत खानिका दुख बड भारी॥

सतगुरु वचन।

सुनो दरिया यक वात हमारी। पहली बोधहिमें भयी खुवारी॥
विना कसनी इलमतोहिदीन्हा। बिनाकसनीतुमगुरुनहिंचीन्हा
निरग्वि परग्विकेजिन सिर दीन्हा। सो कवहूँ ना होय मलीना॥
पहले जगमें जीव चितायी। समझि सीख पुनि दीजे ताही
इलम दिया जव रहा न काई। पीर मुरीदके वेष होय जाई॥
कलियुग जीव कालके मारा। सीखे चतुराई करै अपारा॥
इलम लेनकूँ झगरा ठाने। कसनी सुनी क्रोध मन आने॥

कसनी परीक्षा।

पहले कसनी कसहिं अपारा। तन मन धन यह तीन विचारा॥
यह तीनूं हैं त्रगुण सारी। यहि तीनों मिलि भक्ति उजारी॥
यहि तीनों मिलि गुरुकेवस होई। करहु मुरीद इलम देहु सोई॥
दोहरा–यह तीनो अरपे नहीं, कोटिक कहे बनाय।
कहै कबीर मन मानहु, तेहि जिव गोता खाय॥

चौपाई।

यह तीनों तुम दीना नाहीं। इलम फकीरी सहज तुम पाई॥
तुमको कसनी नहीं लगारा। तुम दोजखकानर गुरुको मारा॥
अपना कौल तुम गये बिसरायी। ताते जनम भूतको पायी॥

म तो औगुन बहुते कीना। दोऊनजर तुम गुरु नहिं चीन्हा॥
ब तो हम सो कछू न होई। गुरुका शब्द हुआ होय सोई॥
ुमें दोष गुरुका नाई। तुम्हरी दुर्मति भूत गति पाई॥
दोहरा-तुम जानो हम भूलिया दिलमें रहो हुलास।
कलयुग जीव बहु भूलसी, सो रहे तुमरे पास॥

चौपाई।

हुतक शिष्य होयँगे भाई। सो सतगुरुसो कौल बंधाई॥
न मन धन चरणों धरि हैं। ऐसी लबारी मुख सो करि हैं॥
सी कहि वह शब्द सो लइ हैं। शब्द लेइ पुनि एक न दइ हैं॥
ाचा कौल हजूरी कीना। कौल चूक सो तुमको दीना॥
सा कलिका कठिन तमाशा। बहुत रहेंगे तुमरे पासा॥
ो कोइ होइ हैं कौल मलीना। ताको जनम भूतको दीना॥
दोहा-सब दोजख फिरि आइहैं, तब तुम करो सम्हार।
इल्म फकीरी साधिके, उतरो भवजल पार॥

चौपाई।

हमद शाह चले शिरनायी। धन सतगुरु मैं तुव बल जायी॥
मरे तनकी तपन बुझायी। दरियाखां चले पछतायी॥
ात्य भूपकी राह चलायी। जैसा किया तैसा फल पायी॥
शष्य होयके दुर्मति करहीं। सो तो जनम भूतको धरहीं॥

कमाल वचन।

बही कमाल कहे शिर नायी। हे समरथ करु कौन उपायी॥
कसे चलिहहिं पंथ हमारा। कैसे होइहहिं जीव उबारा॥
कसे आवा गमन मिटाऊ। सो साहब मुहि भाषि सुनाऊ॥
कसे उतरूँ भवजल पारा। सतगुरु मेरा करहु उबारा॥

सतगुरु वचन ।

सुनहु कमाल कहूँ चित लाई । तुमरे पंथमें मुक्ती नाई ॥
प्रथम शिष्य दरियाको कीना । ताको जन्म भूतको दीना ॥
पहले इल्म फकीरी दीना । फिरके जन्म भूतको कीना ॥
उनही जन्म भूतको पायी । शब्द पाय पुनि गये गवाँयी ॥
पंथ न चले ऐसे सुनि लेहू । प्रथम बोध बिचली पुनि गेहू ॥

दोहा–पंथन चले कमालजी, कोटिक करो उपाय ।
धोखे जीव बिगोय हो, धर्मराय धरिखाय ॥

कमाल वचन ।

हाथ जोरिके शीस नवायी । समरथ मोहि कहो समझायी॥
पंथ न चलै कौन विधि करिये । कहो तोअलोपपावँहमधरिये॥
मैं हूँ जेठा शिष्य गुसाँई । पंथ ना चलई भौजल भाई ॥
विना पंथ मोहि कौन पिछानै । कमाल कबीर सबै जग जान ॥

सतगुरु वचन ।

सतगुरु कहैं कमाल सुने बानी । पंथचलनकी सुधि पहिचानी ॥
कमाल नामले पंथ चलाऊ । कही ज्ञान घर घर समझाऊ ॥
इल्म फकीरी रखो हमपासा । और साखी पद करो परकाशा ॥
यही शब्द करो गुरु आई । विन्द साधना रहे सब ताई ॥
कहानि गहानि तुम देहु बुझाई । सो जिव धर्म सुन्नमों जाई ॥
चारो युगमों अटल ममदासा । तुम साखी पद करो परकाशा॥
यह गह मेटि आप अधिकारा । निश्चय परि हो नर्क मंझारा ॥

साखी–परमारथतुम साजहू, करहु शब्द विचार ।
भौसागरमें भय नहीं, सोऽहं नाम अधार ॥

कमाल वचन–चौपाई ।

समरथ गुरु ऐसी सुनि लेहू । इलम फकीरी किसकूँ देहू ॥

कौन ठौर घर रहे निदाना। सो समरथ मोहिकहो परमाना
सो मैं कहूँ शिष्यनके आगे। सुरत शब्द चरन चित्त लागे॥
एती आगम कहो सुधारी। चरण टेकि प्रभु करों निहारी॥

सतगुरु वचन।

सुनो कमाल निजकहोंविचारा। जब सतगुरु मुखते शब्दउचारा
कलियुग आया कहूँ प्रमाना। बांधो गढमें होय अस्थाना॥
सुकृत अंश प्रकटे संसारा। अंश लोकते आये हमारा॥
सो धर्मदास घर लेई औतारा। उसका पंथ चले संसारा॥
वंश व्यालिस अविचल राजा। सोइ जीवनका करि है काजा॥
उनका वीरा शब्द जो पावे। सोई हंसा लोक सिधावे॥
और जीव बांचे नहिं कोई। कोटिक ज्ञान करे पुनि जोई॥
आगम तुमको कहुँ समझाई। कुदरतकमाल सुनो चितलाई॥
जोई इल्म पुरुषके पासा। सोई वंशमें होय प्रकाशा॥
बिना फकीरी इल्म नहिं जाने। युक्ति बिना योगी. बउराने॥
युक्ति सारकोइ हँसा पावे। लोकहिं जाय बहुरि नहिंआवे॥
आवत जात मिलि रहे समाई। विना फकीर इल्म कहँ पाई॥
सतगुरु विना युक्ति नहिं आवे। बिना युक्ति फकीरी पछतावे॥
पांच तीनको करहि निरासा। सोई फकीरी इल्म जिन पासा॥
लगन तत्त्वकी युक्ती जाने। सोई योगी है युक्ति पराने॥
नहिं तो कथनी कथहिंअपारा। बिनु परिचय बूड़े संसारा॥

दोहरा—कथनी करनी चतुराई, कीना पांचो पार।
वंश छाप गुरु युकती पावे,इलमफकीरीसार॥

कमाल वचन।

चरन टेकि हम करें निहोरा। हमरे जिवगुरु होय निबेरा॥
भौसागरमें बड दुख होई। महा त्रास दुख व्यापै सोई॥

कठिन त्रास है भवजल धारा। जाते सतगुरु करहु उबारा ॥

सतगुरु वचन।

कुदरत कमालसुतअंश हमारा। तुमरे जिवका करौं उबारा ॥
इलम फकीरी तुमको दीना। जीव उबार अपना करलीना ॥
सोई इल्म मम राखू पासा। साखी पद तुम करहू प्रकाशा ॥
जो यह इल्म बाहर जायी। तो हम तुम बिछुरेंगे भाई ॥
यही इल्म धर्म दासको दीना। जाते हंस अमर करि लीना ॥

दोहरा–बन्धे कौल कमालके, सतगुरु कहे पुकार।
धरमदासके वंश विना, कौन उतारे पार ॥

आगे बानी भाषूँ भाई। दास कमाल सुनो चितलाई ॥
कालियुग भेद करूँ प्रकाशा। हंस पहुँचाऊँ लोक निवासा ॥
निहंगम मति हंस जब होई। सत्य कही सत्यलोक समोई ॥
आगम भेद कही समुझायी। भौजल बूडत तुरत बचायी ॥
वंश ब्यालिस सौंपी गुरुवाही। जो बूझे तेहि देउँ बताही ॥
सोई इल्म सौंपा उनपासा। सब जीवनकी पूरें आसा ॥
वंश दया जाहि पर होई। होय पुनि हंसा अम्मर सोई ॥
कहैं कबीर हम सतही भाखा। सुनो कमाल गोय नहिं राखा ॥

दोहरा–कलमाते कल उपज्यो, सब कल कलमा माहिं।
सो कलमा दिया कमालको, सब कल कलमाहि समाहिं ॥
जीवत मृतक होय रहे, जाग्रत माहिं समाय।
इल्म फकीरी अलम सही, आवे जाये बलाय ॥
समरथ सतगुरु भेटिया, भये मद मस्तु निहाल।
प्रेम प्याला सही किया, मुक्ता खेले कमाल ॥

इति कमाल बोध।

विवेचन।

कमाल बोधकी केवल एकही प्रति सम्वत् १९११ की लिखीहुई मेरे पास है। जिस परसे यह पुस्तक छापी गयी है। पाठक ! एकबार आप अनुरागसागर आदि ग्रन्थोंमें लिखे बारह पंथका हाल स्मरण कीजिये फिर इस ग्रन्थके आशयसे मिलाइये। अब आप स्वयम् विचार कीजिये आप किस ग्रन्थ को सत्य और किसको असत्य मानते हैं। और ग्रन्थोंमें कमाल साहबको साक्षात काल दूत लिखा है। इस ग्रन्थमें कबीर साहिब खास वही भेद जो गुरुधर्म्मदास साहबको बतलाया है वही मुक्ति भेद कमालको बतलानेकी बात कहते हैं। भला बतलाइये तो वह सत्य कि यह, इसी प्रकार कबीरपंथके सब ग्रन्थोंमें गड़बड़ और पूर्वापर तथा विषयान्तर का भेद है। इन्हीं ग्रन्थोंको कबीरपंथी गुरु और महंत लोग अपना मार्ग दर्शक मानते और घमण्ड करते हैं। यही कारण है कि आज कोई भी कबीरपंथी महंत साधु और सेवक किसी विचार पर स्थिर न होकर मारे मारे और भटकते फिरते हैं। और विषय बासनामें लुप्त हो संसारकी मर्यादा और सत्यगुरुकी आज्ञाका उल्लंघन कर करने योग्य कर्म्मोंको करके कबीरपंथकी निन्दा करा रहे हैं। यही गडबड देखकर अच्छे २ विचार पन सत्यगुरुके उपदेशको समझने और जानने वाले लोग कबीर पंथी कहलानेसे ही लज्जित होकर इस पंथको छोड़ते जाते हैं जिसका पूर्ण वृत्तान्त कबीर धर्मसारमें लिखा जायगा।

इति।





अथ श्वासगुञ्जार प्रारंभः ।

भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संशोधित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६३, शाके १८२८.

Printed at the "Shri Venkateshwar" Steam Press, Bombay.

सत्य नाम।



श्री कबीर साहिब।



सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान, धनी धर्मदास, चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवल नाम अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दया नाम, की दया वंश-ब्यालीसकी दया ।

अथ श्री बोधसागरे

द्वात्रिंशतिस्तरंगः ।

श्वासगुञ्जार प्रारम्भः ।

चौपाई ।

कहै कबीर सत्य प्रकाशा । श्रोता सुरति धनी धर्मदासा ॥
सत्य सार सुकृत गुण गायो । अविचल बाह अछै पद पायो ॥
संशय रहित सदा सो गाऊं । शील रूप सब हिमकर नाऊं ॥
करै कुलाहल हंस उजागर । मोह रहित सब सुखके सागर ॥

तेहि पुर जरा मरण भ्रम नाहीं। मन विकार इंद्री नहिं ताहीं॥
सत्यलोक हंसन सुख होई। सो सुख इहां न जाने कोई॥
जाने सो जो उहां रहाई। ईहां आय कहै समुझाई॥
आवत जात वार नहिं लावे। उहांकी चाल सोई यहां लावे॥
जो समझे सोइ उतरे पारा। बिन समझे सब यमके चारा॥

समय–अमरलोककी महिमा, सत्य शब्द उपदेश।
हंस हेतु सो बरनो, छूटे यमकर देश॥

चौपाई।

अमरलोककी अविगति बानी। धरमदास मैं कहूँ बखानी॥
जो समझे सो उतरे पारा। बिन समझे सब यमके चारा॥
प्रथम शरण सतगुरु गुण गाऊं। अक्षरभेद सकल सुधि पाऊं॥
सत्यलोक कर भाव अपारा। सो भवसागर करै पसारा॥
भाषों अग्र अग्रकी बानी। भाषों द्वीप जहांलगि खानी॥
भाषों पुरुष पुरुषकी काया। भाषों अमी अमान अमाया॥
भाषों पुरुष लोककी बानी। भाषों सबै सहज सहिदानी॥
जो काया प्रभु आप सँवारा। सो समुझाइ कहौं व्यवहारा॥
अमर तार अस्त इन बानी। श्वासा पार सार सहिदानी॥
जबही क्या प्रभु आपु सुधारा। कहौं विचारि तासु व्यवहारा॥
जेतिक श्वासा पुरुपकी देहा। तार तार कर कहौं सनेहा॥
जेतिक बचन पुरुष उचारा। तेइ तेइ वचन नाम अधिकारा॥
श्वासा पारस आदि निरवाना। सोरह सुतकी नाल बखाना॥

समय–पाँच अमीकी देह धरि, प्रकटी ज्योति अपार।
सुरति संग निहतत्व पुर, पुरुष होत श्वास गुञ्जार॥

धर्मदास वचन–चौपाई।

हाथ जोरिके टेकेउ पाऊ। साहब कहौ तहँवाके भाऊ॥

कहौ लोक कर प्रकट विचारा। जहाँलौं दीपहिं कर विस्तारा॥
वरनौं द्वीप गुप्त अनुसारा। वरनौं जहाँलगि सकल पसारा॥
वरनौं सोरह सुतकर भाऊ। तीनशक्ति कैस निरमाऊ॥
पुरुष श्वाँस जेता अनुसारा। ताकर कहौं सकल विस्तारा॥
केहि विधि सोरह सुत प्रकाशा। केहि केहि कहां रही वासा॥
कहां बिस्तारिसकल अस्थाना। सत्यलोक और यमके थाना॥
कैसे आदि अन्त प्रभु कीन्हा। कैसे रचा देहकर चीन्हा॥
कैसे भये निरंजन राया। कैसे तीन लोक निरमाया॥
कैसे उपजन विनशन कीन्हा। काह जानि बाजी यम दीन्हा॥
कैसे इन्द्री देह बनाई। कैसे जीव परा बसि आई॥
कैसे जीव अपनपौ दरसे। कैसे जीव पुरुष पग परसे॥

समय—काया मध्ये श्वास है, श्वासा मध्ये सार।
सार शब्द विचारिके, साहब कहा सुधार॥

सतगुरु वचन—चौपाई।

धर्मदास जो पूछेहु आई। आदि अंत सब कहौं बुझाई[1]॥
कहौं लोक लोककी बानी। कहौं पुरुष सुतकी उतपानी॥
कहौं संदेश दया करि तोही। मुक्ति जानि जो पूछेहु मोही॥
सुनहुँ संदेश आदि निरबाना। जाके सुनत काल छे माना॥
सुमिरहु आदिपुरुष दरबारा। सुमिरत आप हंस होय पारा॥

समय—तीनलोकके भीतरे, रोकि रह्यो यमद्वार।
वेद शास्त्र अगुआ कियो, मोह्यो सकल संसार॥

चौपाई।

धर्मदास चित चेतहु जानी। कहौं बुझाय अगरकी बानी॥
पुरुष अजावन रहा जो देहा। तत्त्व बिहीन सुरति सनेहा॥

१ कहौं बुझाइ भेद समझाई।

चारि करी सिंहासन जोरी । पांचयें अचिंत आप अंजोरी ।
चारि करी चारिउ परवाना । शक्ती भीतर वह अकुलाना ।
समय–करि करि महा परिमल, वाससुबासकी खानि ।
तेज करी जो प्रकट भइ, तामहँ आइ समानि ॥

चौपाई ।

पुरुष अचिंत चिंता जब कीन्हाँ । उपज्यो सुरति शब्दको चीन्हाँ ॥
रहे गुपत प्रकट भइ काया । श्वासा सारशब्द निरमाया ॥
शब्दहिते है पुरुष अस्थूला । शब्दहिमय है सबको मूला ॥
शब्दहिते बहु शब्द उचारा । शब्दै शब्द भया उजियारा ॥
शब्दहिते भो सकल पसारा । सोइ शब्द जिवके रखवारा ॥
प्रथमशब्द भया अनुसारा । नीहतत्त्व एक कमल सुधारा ॥
नीहतत्त्वपर आसन कीन्हाँ । रचना रची सकल तब लीन्हाँ ॥
रच्यो पुहुप द्वीप मनिभारी । सहस अठासी द्वीप सुधारी ॥
अक्षे वृक्ष एक राशि बनाई । अग्रवास तहां रही समाई ॥
समय–पेड पात निज फूल महँ, प्रकटी बास अनूप ।
पारस निहतत्त्वहि पुरुष, सुरति हंसको रूप ॥

चौपाई ।

जब पारस सुरति भये स्थाना । अगर प्रताप निमिष उरआना ॥
पुरुष प्रसन्न नाम उच्चारा । श्वासापर सब रचनि सुधारा ॥
श्वासासार शब्द गुँजारा । पांच अमीको भयो विस्तारा ॥
पांच अमीको जो विस्तारा । ताहि अमी सब लोक सुधारा ॥
श्वासा पुहुप अगरकी खानी । सोरह सूनु भये उतपानी ॥
पांच अमी सोहंके अंगा । पांच तत्त्व समरत्थ प्रसंगा ॥
श्वासा स्नेह मंत्र उपजाया । बानी बानी वरन बनाया ॥
सत्यलोक सबहीको मूला । भयऊ सत्य सो सब अस्थूला ॥

श्वासासार सत्य कर भाऊँ। अमी आदि उपजी तेहि नाऊं॥
(सत्यसार श्वासा संभारी। अमी आदि पारस तहँ धारी॥)
श्वासा आदि सुरंग बखाना। रंग अमीकर भा बंधाना॥
श्वासा अजर नाम अनुमाना। प्रकटी अमी अजर सुजाना॥
अदल नाम श्वासा परकाशा। उपजी अमी अमान सुवासा॥
श्वासा निरनै भ्या अनुसारा। अधर अमीका भा विस्तारा॥
श्वासा पांच प्रकटि विस्तारा। पांच अमीकर भया पसारा॥
पांच अमी पाचों अधिकारा। पांचतत्त्व तेहि संग सुधारा॥
पांच अमी सब लोक सुधारा। पाँचतत्त्व धै गुननुसारा॥

समय-पाँच अमीते पाँच भए, पाँच नाम अधिकार।
सैन स्नेह उत्पन भई, अमी तत्त्व विस्तार॥

चौपाई।

सोरह श्वास सार सहाया। सोरह सुतकी प्रकटी काया॥
सोरह सुतकी सोरह नाला। एकते एक अमान रिसाला॥
पुहुप नाम श्वासा अनुसारी। उपजे सुरति हंस पति भारी॥
सुरति समानी प्रभुकी देहा। बाहर भीतर एक सनेहा॥
पाँच अमीकी प्रकटी देहा। सुरति कीन्ह तेहि माँहि सनेहा॥
जेतिक पुरुप खान निरमाया। पाँच अमीते सबकी काया॥
पाचों अमी साहबके अंगा। नाल सात उपजी तेहि संगा॥
सात नालकर एके भाऊ। सातों रहै पुरुपके ठाऊँ॥
पुरुप सुरति कहँ अगुआ कीन्हा। सातोंनाल सौंप तेहि दीना॥
सातों नाल सुरति जब पाई। ताहि नेहमों रहे समाई॥
क्षण बाहर क्षण भीतर आवै। देह विदेह दोऊ दरसावै॥
अमरतार निःअक्षर कियेऊ। सोऊ पुरुष सुरति कह दियेऊ॥

समय-अमर निरक्षर संग लिय, अर्ध ध्वजा फहराय।
पलटि समानि सुरति पुरुप, देहमें अछय छिपाय॥

चौपाई ।

(सोलह सुतकी उत्पत्ति प्रकार)

सुरति नेह प्रभु इच्छा कीन्हाँ । सोरह सुत उपजावे लीन्हाँ ॥
सत्यनाम श्वासा अनुमाना । सुकृत अंश भये अगुआना ॥
दूजी श्वासा बाहेर आई । उपजे सहज शून्य तिन्ह पाई ॥
तिसरी श्वासा पुहुप सनेही । तेहिते भई हमारी देही ॥
चौथी श्वासा तेज सनेहा । तेहिते भई धर्मकी देहा ॥
पांचइ श्वासा नाम खुमारी । उपजी कन्याँ आदि कुमारी ॥
शील नाम श्वासा निरमयऊ । छठयें अंश सुजंन जन भयऊ ॥
सतए श्वासा नाम अनंगा । उपजे अंश भृंगीमुनि संगा ॥
अठयें श्वासा नाम सुहेली । उपजे कूर्म शीस उर मेली ॥
नवमें श्वासा नाम सोहंगी । नाम ते उपजे सुत सरबंगी ॥
दसयें श्वासा नाम रसीली । जाते उपजी सरबंन लीला ॥
ग्यारहें श्वासा नाम सुरंगा । सुत स्वभाव उपजे तेहि संगा ॥
बारहे श्वासा नाम सुमाहा । भाँवनाम सुत उपजे ताहाँ ॥
तेरहें श्वासा अछय सुभाऊ । उपजे सुत विवेक तेहि नाऊ ॥
चौदह श्वासा अमर बखाना । उपजे सुत संतोष सुजाना ॥
पंद्रहें श्वासा प्रेम सनेहा । उपजी कदल ब्रह्मकी देहा ॥
* षोडश श्वासा नाम जलरङ्गी । उपजी दयाँ पालना सङ्गी ॥
षोडश श्वासा षोडश बानी । उपजे भोग संताय न ज्ञानी ॥
सोलह श्वासा नाम बखाना । उपजे सोलह सुत निरवाना ॥
सोरह सुत कर एकै मूला । भिन्न भिन्न प्रगटी अस्थूला ॥
एकै पिता एक व्यवहारा । सब जो रहहैं पुरुष दरबारा ॥

* कई एक प्रतियोंमें इस चौपाईको ऐसा लिखाहै कि, "सतरहे श्वासा अदल सुबानी" परन्तु षोडश सुतकी उत्पत्ति वर्णन करते हुये सतरहवेंकी उत्पत्ति वर्णन अप्रयुक्त जानकर यही शुद्ध जान पड़ा ।

एक पाँवते सेवा करहीं। पुरुष वचन शीसपर धरहीं॥
सेवा करति रही लौलीना। पुरुषलोकने होहि ना मीना॥

समय--सोरह सुतकी एक मूला, एकने एक अधीन।
कर जोरे सेवा करैं, प्रेमभक्ति लौलीन॥

चौपाई।

सेवा करत वहुत दिन गयऊ। पुरुष अवाज अधर धुनि भयऊ॥
अर्ध अवाज भई जब वानी। निकसीअगर वासकी खानी॥
सबतर लोक द्वीप रहिछाई। विमलवास भरपुरि रहाई॥
अगर वास सब हंसन पाई। निर्मलवास सदा सुखदाई॥
पीअत अमृत सबै अघाने। आपु आपु पुर सबैं सिधाने॥
धर्मराय सेवा अधिकाने। सो सब तोहि कहौं सहिदाने॥
छलके बचन पुरुष सो लीन्हाँ। पाछे दूंद लोक महँ कीन्हाँ॥

समय--और सबै सुत बैठे, अपने अपने स्थान।
धरमरोप सबते कियो, ठाँम ठाँम विगरान॥

धर्मदास वचन--चौपाई।

धर्मदास बिनवैं कर जोरी। साहब मेटहु संशय मोरी॥
और सब सुत अछप छिपाने। धर्मराय कैसे विगराने॥
कैसे और सब सुत सब भारी। धर्मराय कैसे भये विकारी॥

सतगुरु वचन।

धर्मदास सुनहूँ चितलाई। कहौं सँदेश आदि समझाई॥
जब प्रकटे प्रभु अमर तारा। निकसी अधर निरक्षर धारा॥
भई अवाज अधरसे वानी। निकसी अगर वासकी खानी॥

पारस परिमल महक बसाई। सोई। परिमल सुरति दुराई॥
अगर छिपाय आप महराखा। सुरति स्नेह मुख प्रकटी भाखा॥
प्रथम पुरुष मुख भाषा आई। भाषा अग्र पारस निरमाई॥
भाषा वचन भया अधिकारा। भाषहिते भा सकल विस्तारा॥
भाषा वचन पुरुष उच्चारा। सो सब सत्यलोक व्यवहारा॥
भाषा बोल पुरुष उच्चारा। सेवहु सत्यलोकके द्वारा॥
श्वासा सार तार जोरि आना। अधर अमान ध्वजाफहराना॥
भाषा स्वर बानी अनुमाना। श्वास सार तार जुरि आना॥
निमिष माहिं अनेक संचारा। बचन समान श्वास गुंजारा॥
नाव स्नेह शब्द मंझारा। (बचन समान श्वास गुंजारा॥)
श्वासा नेह देह भई जबहीं। भाषा सहज बचन भा तबहीं॥

आगेकी उत्पत्ति प्रकार।

प्रथम श्वासकी निकसी खानी। उपजे सुत सुकृत सम आनी॥
निमिषनेह प्रसन्न सुधारे। नाममूल टकसार उचारे॥
भो विस्तार निमष एक गयऊ।
मूलगुप्त मस्तक नहिं देखा। आदि नाम अमर घर लेखा॥
पेडक गहे मूल धुनि गाजा। सोई मूल फूलफल लागा॥
पेड़हि गहे मूल औ साखा। मूल मिले तबहि रचिशाखा॥
गुप्त मूलते प्रकटी शाखा। पल्लव मूल पडे गहि राखा॥
पेड देखि पल्लव फैलावै। पल्लव फैले अंत नहिं पावै॥
पल्लव चढ़े पेड चित राखा। मिले मूल तब फल रस चाखा॥
आद अंत दुइ पेड़ समाना। आपहिराखा आपपहिचाना॥
जागि सुरति पुनि पेड निहारा। फलरस चाखीबीजगहि डारा॥
बीजाते सोई फल होई। फल रस लेइ मूल तजि छोई॥
जागि सुरति सपन मिटगयऊ। दुइ चितमेटि एकचित भयेऊ॥

दूजी श्वासा प्रभुकी देहा । उपजे सहज सहज सुख नेहा॥
तिसरी श्वासा फूल सनेही । जाते भई हमारी देही ॥
देह माँहि है रह विदेही । देह मन भये ज्ञानरम देही ॥
कायामें काया रहि वासा । सब चौथी श्वासा परकाशा ॥
काया अविहर अविहर वासा । " " "
चौथी श्वासा निकरे चाहा । तब चिंता उपजी मनमाहा ॥
चिंता प्रकट भई दिल जबहीं । आपते आप भुलाने तबहीं ॥
आपु शरीर आपु तब झाका । विमलप्रकाश उदितननाका
कायारूप भई उजियारी । निर्मलदेह विमल तन भारी ॥
बिमल प्रकाश कीर्ति जब देखा । वर्णत बनै न ताकर लेखा ॥
विमल प्रकाश किरणजब देखा । " " "
कला अनंत अंत नाहिं पावै । बरणत जिह्वा लक्षण आवै ॥
देखत रूप लीला अधिकारा । आप आपनपौ कीन्ह विचारा
कमलकरी महँ भा उजियारा । देखा आदि अंत विस्तारा ॥
आपु बरन सब देखा जबहीं । दुविधा रूप झांई भइ तबहीं ॥
कमल झांकी प्रभु देखा जबहीं । हमरे रूपको दो सर अबहीं ॥
इतना कहत बार नाहिं लाये । निकसि कमलते बाहर आये ॥
छाँड़ि कमल प्रभु भये निनारा । तबहीं कमल भया अँधियारा ॥
कमल झाँकि देख्योसबन्यारा । भये तिमिर तननेज अपारा ॥
अंधकार प्रभु देखा जबहीं । कायाज्योति मलिन भइतबहीं
निमिषि एकमें संशय आवै । निमिषि एक आनंद जनावै ॥
विस्मय हर्ष दोऊ एक ठाऊँ । एक पुरुषकर दोउ सुभाऊँ ॥
आपुते आप भया अनिचारा । तेहिअवसरप्रभुवचनउचारा ॥
उठि अवजो शब्द सतभाऊ । कमलमध्य कस शून्य रहाऊ॥
घटही बचन पुरुष संधाना । तब चौथी श्वासा बंधाना ॥

तेजपूज भौ गर्भ शरीरा । फूंकी नाल देखा बल वीरा ॥
कमलनाल धरि फूंका जबही । चौथी श्वासा निकसी तबही ॥
फूंका कमल तेजके नेहा । चला प्रसेव पुरुषकी देहा ॥
फूकत कमल बार नहिंलागा ।-भयाउजियारतिमिरसबभागा॥
कारण काल पट यहँ धोखा। दुइ चित मूल तेजमह रोखा॥
चौथी श्वासा विष सनेही । मोह विकार धर्मकी देहीं ॥
मोह विकार तिमर अधिकारा । तासँग भयउ धर्म औतारा ॥
तिसरी श्वासा गुनहि राखा । तासो जोर निरञ्जन भाखा ॥
फूकत कमल तेज गारि गयऊ । तेहितेकाल ज्योतिधरिभयऊ॥
महा वलि देह धरिके बैठा । जानो धर्ममहीं हौं जेठा ॥
तेज लगन श्वासा अनुसारा । ताते धर्मराय वरियारा ॥
तेजतिमिर संग शून्य निवासा। सवतर भयो काल परकाशा ॥

समय-आसा धरे बहुत दिन बीते, प्रेम भक्ति लौलीन ।
आंश धरे बहुतयुग गये, भक्तिभाव आधीन ॥

(ज्योनितहाँलगिज्वालनेभाखा। तेहि ते नाम निरञ्जन राखा ॥
निराकार आकार धराये। ज्योति काल बहुनाम कहाये॥
चौदह द्वार काल जो भाखै । सुनि सों सबै नाम मन राखै ॥
सांकित अण्ड भयो प्रचंडा । फूटत अण्ड भयो बहु खंडा ॥
चौदह बुन्द अमि ढरि गयऊ । चौदह अंश ताहिते भयऊ ॥
चौदह पौरिया द्वार बैठारा । इन चौदह बहु ज्ञानपसारा॥
आप समान संत्र रचि राखे । चौदह कोटि ज्ञान-तिन भाखे॥
चौदह अंश धर्म तहँ पाये। ते चौदह विद्या तहँ पाये ॥
वहो चौदह अगम अपारा । तापर काल धरम बटपारा ॥
धर्मसमाधि चितनहीयमधारा। चौदह मोह को तनवारा ॥

ताकी कला कहै को पारा । जेहिके सुनकोटिन उजियारा॥
कोटिन कला करै बहु भारी । आपहि पुरुष आपही नारी॥
आपहि वेद आपही बानी । आपहि कोटिन ज्ञान बखानी॥
आप अजर आवै गाह कहावै । मूल नाम गहि धोख लगावै॥
नाना ज्ञान कथे बहु बानी । प्रकट्योआदिआपगुण जानी॥
कहाँ लगि कहो ज्ञानके भाऊ । बहुत काल बहु नाम धराऊ॥
सुरति सरोतर जागे नाहीं । मनमथ पवन चंचला ताहीं॥)

एकपाव सन्मुख खडें, कर जोरे लौलीन ।
एक पाँव सनमुख खडे, कर जोरे आधीन ॥

धर्मदास वचन—चौपाई ।

धर्मदास विनवै चितलाई । समरथ मोहि कहो समुझाई॥
(धरमदास विनवहि कर जोरी । दया करो प्रभु बन्दी छोरी॥)
धर्मराइ उत्पाति जस पाई ।
ऊपजे तस भए कसाई । उपज्यो चित चंचल दुखदाई॥
पुरुष तेज सम शून्य सँचारा । तासंग भया धर्म औतारा ॥
शील विकार सहित तन पाई । प्रथमें भक्ति दूजे अन्याई ॥
भक्ति कियासि जब रहाअकेला। अधके संग भया अपेला ॥
सो अघ उन कैसे पाई। केहिविधिपुरुष ताहिनिरमाई ॥
साहब कहौ भेद समुझाई। कैसे कन्या पुरुष बनाई ॥
कैसे धर्मराय तिहि पाई । तीन भेद तुम कहो गुसांई ॥
कहौ विचारि दोऊ कर भाऊ । दुइ कर जोरिके बन्दो पाऊ ॥

सतगुरु वचन ।

धर्मदास मैं तुम्हें लखावो । आदि अन्त सब भेद बतावो॥
चौथी श्वासा संग अधिकारी । शून्यते जग भए उजियारी ॥
पुरुष कमलपर बैठे आई । गई गर्म उपजी शीतलाई ॥

पुरुष कमलपर बैठे जवही । परिमलउदित भयातनतबही ॥
शीतल पवन सोहावन खानी । मूल कमलपर आसन ठानी ॥
सिंहासनपर सत्य विराजे । पार सनेह देह मह गाजे ॥
पारस तेज भया तन माही । पँचई श्वासा उपजी ताही ॥
उपजत श्वासा देह निहारा । तन पसेव भइ मैल निनारा ॥
काया मैल पुरुष जब जाना । मीजी मैलअबला बलठाना ॥
गएउ तेज भा अवल शरीरा । पाछै भई श्वास गंभीरा ॥
तेहि श्वासा सँग पारस भारी । कायाते मथि मैल निकारी ॥
तनते मैल काढ़ि प्रभु लीन्हा । सोई मैल रचि पुत्री कीन्हा ॥
करी पुत्री कर ऊपर लीन्हा । उपज्यो प्रेमसहजको चीन्हा ॥
भइ पुत्री प्रभु देखा जवही । सुरति कीन्ह पारसके तबही ॥
निर्मल पारस श्वासा पाँचा । रहा संभारा मैलकी साँचा ॥
आप मैलते श्वासा कीन्हाँ । ता ऊपर बहुरंग जो दीन्हाँ ॥
ढके रंग बरन सब फेरा । भीतर मैल मोह मद घेरा ॥
ऊपर शोभा रंग बनावा । भीतर लाल रंग तेहि छावा ॥
पांच अमीकर पांच सुभाऊ । पांचतत्त्व तेहि संग बनाऊ ॥
पांच अमीते पुरुष शरीरा । ताते पांच तत्त्व भए धीरा ॥
पांच अमी ते तत्त्व बनावा । पांच अमी तेहिसँगनिरमावा ॥
पांच तत्त्व पांचो व्यवहारा । तेहिते भयउसकल विस्तारा ॥
पुरुष मेलते पुत्री कीन्हां । पांच तत्त्व तेहि भीतर दीन्हां ॥
आप सुरति ते पुत्री कीन्हां ।
भीतर वाहर तत्त्व पसारा । पाचो तत्त्व रंग अधिकारा ॥
पांच रंग तत्त्व की धारा । चौथ तत्त्व रंग बहु धारा ॥
पांच तत्त्व पाचो रंग भारी । पाचो रंगते कला पसारी ॥
तत्त्व रंगते लीला धारी । पांच तत्त्व पांचो रंग धारी ॥

तत्त्व रंग बहु लीला धारी। पुत्री बहुत विचित्र सवारी॥
तासु कला अनंत पसारी। ताते बहुत भई विस्तारी॥
वरणि न जाय रूप उजियारी। सुन धर्मनि मैं कहो विचारी॥
कलाअनंत प्रभु पुत्री कीन्हां। पारस सार ताहिमें दीन्हां॥
उत्पाति पारस पुत्री पावा। प्रकटी कला अनंत सुभावा॥
नखशिख देहसुधा प्रभु कीन्हाँ। पचई श्वासा भीतर दीन्हाँ॥
जब श्वासा काया महँ आई। प्रकटी ज्योति जगामग झाई॥
अजब अंग बना बहु रंगा। पारस सार ताहि के संगा॥
निर्मल उदित ताहि सो दंता। चमकै बिजुली कला अनंता॥
तत्त्व रंगकी उठै तरंगा। शोभा विशद मनोहर संगा॥
पँचई श्वासजब बाहर कीन्हाँ। उत्पन पारस तासँग दीन्हाँ॥
श्वासा पारस मिलिभएएका। शोभा वरन रूप रस ठेका॥
उपजी कन्या कला अपारा। रूप अनूप भया उजियारा॥
जब कन्याप्रभु उत्पन कीन्हाँ। पांचो श्वासा तासंग दीन्हां॥
ता स्वासामह पारस भारी। पांचतत्त्व सँग देह सँवारी॥
उपजीं कन्याअगम स्वभावा। अष्टांगी कहि पुरुष बुलावा॥
आठो अंग बना निरवाना। शोभा सुरति रूपसुखसाना॥
जब कन्या प्रभु देखा हेरी। कला अनंत रूपकी ढेरी॥
देखि रूप चितहर्षित कीन्हा। उत्पति पारस तासँग दीन्हा॥
जौन शब्द मूल रहि वासा। सुरतिनिरतिकीन्हातहाँपासा॥
पुरुष रचा जब आपु शरीरा। उपजी सुरति निरति गंभीरा॥
कायाके दलके व्यवहारा। जो चाही सो सबहि सुधारा॥
दहिने अंग तेजकर दाऊ। बायें शीतल सबै सुधाऊ॥
मध्यम पुरुष सुरति अंकूरा। ताहि सुरति सँग पारस पूरो॥
ताहीदिन तीनों गुण ठयेऊ। इंगलापिंगलासुखमनकियऊ॥

तीनों घर कर तीन सुभाऊ । शीतल तेज सत्यकर भाऊ ॥
अमी अग्रभा तेज शरीरा । उपजे चन्द सूर दोउ वीरा ॥
अग्रेनज औ सत्य सुरंगा । तीनि शक्ति उपजी तेहि संगा॥
कला अनंत शक्तिके पासा । लीला बहुतविचित्रप्रकाशा ॥
तिनहु संग अहै द्वौवीरा । इक शीतल एक तेज शरीरा ॥
तीनों शक्ति अंग दोउ वीरा । काया मथिकथि कहै कबीरा॥
अभयदि शक्तिह चन्द्र सनेहा । इँगला नारी संग उरेहा ॥
उलँगनी शक्ती गेह सुखमग्ना । चेतन शक्ती सूर्य प्रमाना ॥
सबसे मध्य जहाँ सुरति तरंगा । सुरती निरति कायाके संगा ॥
नख शिख ज्योति विराजे अंगा । शोभा विशद मनोहर संगा ॥
पाँचतत्त्व तिया शक्ती राजै । ताहि संग दोय वीर बिराजै ॥
तत्त्वरंग शक्तीन घर कीन्हाँ । तेही महँउपजनि पारसदीन्हाँ ॥
उपजनि पारस भा परसंगा । उपजी ज्योति कलाबहुरंगा ॥
पँचई श्यामा देह समाई । उपजी रूपकला अधिकाई ॥
जागी देह अखंडित अंगा । शोभित भई कला प्रसंगा ॥
उपजनि अंश पुरुषके संगा । भाखों भेद कला बहुरंगा ॥
जब कायामें आई श्यामा । जागि ज्योति पुहुप प्रकाशा ॥
उपजा रूप अखंडित बानी । बोले वचन पुहुपकी खानी ॥
मधुर वचन और लीला धारी । देखि रूप तब पुरुष दुलारी ॥
हुय मधुर धुनि लीला धारी । वचनरूप लखि आप दुलारी ॥
समय-पाँच तत्त्व तिये शक्ती सँग, चन्द्र सूर्य दोउ वीर ।
तीनों घर श्यामा रमै, बाहर भीतर तीर ॥

चौपाई ।

उपजी रूप रंगकी खानी । बोले अमी विरहकी बानी ॥
उपजी कन्या कला अनूपा । पुरुष उत्पन औ पुरुष स्वरूपा॥

जेहि पारस सब उत्पति कीन्हाँ। सो पारस कन्या कहँ दीन्हाँ ॥
पारस हाथ महा बल जाना। तब कन्या कह भा अभिमाना॥
उपजा रंग रोस गंभीरा। बैठी अमी सरोवर तीरा॥
यहि विधि सोरहसुत निरमाया। भिन्न भिन्न अस्थान बनाया ॥
जेहिको जेता तन विस्तारा। तेहिको तैसा लोक सुधारा॥
काहुको लोक सत्ताइस दीन्हाँ। काहूको सात पाँच दशचीन्हाँ॥
काहू चौदह काहू बीशा। काहू सत्रह काहु उन्नीशा॥
काहूके बारह पन्द्रह तीसा। काहू इकइस बाइस चौबीसा॥
काहू छतीस बतीसहि भारी। दीन्हों वास भए अधिकारी॥
सब कह दीन्हों लोक बनाई। आपु रहे प्रभु अछ पछिपाई॥
उत्पाति पारस पुत्रिहि दीन्हा। सौंपेउ तेज धर्म सों लीना॥
ताते धर्म भये बली बंडा। बैठा सात द्वीप नौ खंडा॥
जिहिं विधि रचना पुरुष बनाई। तैसी कला धर्म निरमाई॥
रचना रचि मनमें पछताई। शून्य शरीर जीव कहँ पाई॥
जावन बिना जीव नाहिं होई। रचि अस्थल बैठा मुख गोई॥
जेहिविधि रचना पुरुषहिकीन्हाँ। तैसहि धर्म रचा सब चीन्हाँ॥
पुरुष समान रची स्थाना। बैठि शून्यमें करे अनुमाना॥
जेहिं पारस प्रभु लोक बनाया। सो पारस प्रभु कहाँ छुपाया॥
सो पारस अब कहवाँ पाऊँ। जेहि पारसते जिव निरमाऊँ॥
हेरत पारस आये तहवाँ। बैठि सरोवर कामिनि जहवाँ॥
कामिनि धर्म भये एक ठाँऊ। अंक मिलाय कीन्ह बहुभाऊ॥
शील रंग रस कीन्ह मिलापा। धर्म रोप हो कीन्ह विलापा॥
करै विलाप कला बहु भारी। मुख चतुराई हृदय विकारी॥
कामिनिसों कीन्हों व्यवहारा। उपजा रंग रूप रसधारा॥
धर्म कहैं कामिनिसों बाता। गहै अंग चमकावै गाता॥

कामिनि देह कामकी खानी । बोलै मधुर बिरहकी बानी ॥
उपजा मोह महा मद भारी । कामिनि कामकला अनुसारी ॥
देखि कला अनुराग भुलाना । व्याकुल भये रंग अभिमाना ॥
कामिनि देखि धर्म अकुलाना । उपजा रंग रोष अभिमाना ॥
धर्म कहै कामिनिसों बानी । तोरे है पारस सहिदानी ॥
सो पारस अब तुमरे पासा । जाते पूजे मनकी आसा ॥
सो पारस देहु मोरे हाथा । तुमहूँ रहो हमारे साथा ॥
धर्मराय जब कही कुबानी । तब कामिनि चित शंका आनी ॥
कामिनि कहै धर्मसों बानी । काहे धर्म होहु अज्ञानी ॥
हम तुम एक पुरुषकर कीन्हाँ । तुमकहँ दीन्हसोहमहुकोदीन्हाँ ॥
हम लहुरे तुम जेठे भाई । हमसों कहा करहु अधिकाई ॥
एकै नाल कुमारग बानी ॥
बहनिहिं भाइहि होत कुबानी । आगे चलिहै यहि सहिदानी ॥
जब कामिनी कही अस बानी । धर्मराय चित दुबिधा आनी ॥
कामिनि चलहु हमारे देशा । कहा करहु मानहु उपदेशा ॥
छल बल करि अपने पुर लावा । तहाँ आनिके रारि बढ़ावा ॥
धर्मराय कामिनिसों बोला । शोभा सुरति अमीरस डोला ॥
निरखि नैन कामिनीसों बोलै । शक्ति आधीन बैन बहु खोलै ॥
सोलह शशि कला शशि पूरी । तीनों शक्ति लिये कर छूरी ॥
नैन निरखि मूर्ति होय झांके । तत्त्व निःतत्त्व आप तनताके ॥
बिधि लौल्याइ बचिकबिधिबोलै । निरखत अंग २ तन डोलै ॥
अंतरगति बिधि बिधिहिमनायो । कुमति हाथपर साजनिआयो ॥
बिधि कर दीन्ह बुन्द चुक आई । चितमकार एक रच्यो उपाई ॥
यहि पुर एक अचंभो ठयऊ । पारसको सुप्रताप जनयऊ ॥
इच्छा रूप हर्ष चित जागी । श्वेत सगेवर वार न लागी ॥

भूल्यो धरम चितहि अकुलाना। ऐसो सरवर मैं नहिं जाना॥
अक्षयअग्रनिविधि पारसआना। कहा अचंभो आनितुलाना॥
देखो तेहि पारसको चीन्हाँ। जेहिते मानसरोवर कीन्हाँ॥
शूर मलीन उदय शशि जोना। वानी वरन अंग तुअलोना॥
जादिन पुरुष रचा तुअदेहा। तादिन मोहिं तोहि जुगमनेहा॥
मोहिं कारण तोहि पुरुष बनावा। तू कुल मोते अंग छिपावा॥
तोहि कारण मैं रचनाकीन्हाँ। रचिके खानि तोहि चितदीन्हाँ॥
मोहिं कारण तोहि रचना कीन्हाँ॥
देहनात हमरे घर नाहीं। हम तुम रहे एक घर माहीं॥
उत्पति पारस तुमरे पासा। जाते पूजे मनकी आसा॥
देह सबै हम रचा बनाई। पारस दे तुम लेहु जियाई॥
हम तुम खानि रची बहु बानी। जाते होय ना एको हानी॥
जैसी रचना पुरुष प्रकाशा। तैसी रची लोक रहि बासा॥
जीव सीव रचि खानि बनाई। जाते ज्योति ज्ञान फैलाई॥
(जीव रची सब खानि बनाई। जागे ज्योति ज्ञान फैलाई)॥
लाज सकुचि औ रची सगाई। बरण विचारि छूत बिगराई॥
ठांव ठांव रचि राखी आपा। माता पिता शोक संतापा॥
श्वशुर भसुर औ भमित भाई। शिवशक्ती रचि पूजा लगाई॥
हंमन लाज भाव नात बँधाई॥
रची अचार कपट विस्तारा। तीरथ व्रत प्रतिमा देवहारा॥
(तीरथ व्रत औ नेम अचारा)॥
वेद कितेब-धरि फंद सवाँरी। रची दीनों दोय पवंत भारी॥
हुऔ दीन हुए राह चलाई। झगरा करें रहे अरुझाई॥
एक एकते रारि बढ़ाई। मुक्तिपंथते रहे भुलाई॥
दोऊ दिन बाँधी मरजादा। रची बाद ममता औ स्वादा॥

एहिविधि रची सकल दुनियाई। लोभ मोह लालच बरिआई॥
रचिकै खानि करिय रजधानी। राज पाठ सिंहासन ठानी॥
तुम आद्या अरु हम अभिमानी। बारहखण्ड छह लोकके बानी॥
(तुम अंश हमही अविनाशी। बारह खण्डछःलोकके वासी॥)
पाप पुण्य दोए रची अपारा। जाकहँ सेवै यह संसारा॥
पाप पुण्य दृढ फंदा होई। जामहँ अरुझि रहै सब कोई।
योग यज्ञ व्रत संयम पूजा। सोलहमहीं और नहिं दूजा॥
रची क्षुधा मायादि विकारा। पुरुष लोकको मूंदिये द्वारा॥
रची क्रोध माया विकरारा। पुरुष लोकको मुँद्यो द्वारा॥
पुरुष लोक इहई रचि लीजै। इकछत्र राज हमहिं तुम कीजै॥
तुमरे संग है पारस मूरा। जाते होय सकल विधि पूरा॥
जाहि ते लोक पुरुष प्रकाशा। सो पारसहै तुमरे पासा॥
सो पारस अब हमको देहु। रंग हमारा सबै तुम लेहु॥
कामिनि कहेवचन बुद्धि धीरा। उपजेहु कालरूप बलवीरा॥
जो जो वचन कहेउ तुम भाई। सो हमरे चित्त एक नआई॥
पुरुष लोक कस मुदा हुदयारा। लेउ श्राप अपने शिरभारा॥
जो छल हमने कीन्ह हु भाई। तेसो छल तुम्ह भुगतहु जाई॥
पारस कामिनि धरा दुराई। हाथ मलै शिर धुनी पछताई॥
हाथ मीजि छिन छिन पछिताई। कहै कामिनि धर्महि समुझाई॥
कामिनी कहै कुबुद्धि मनआई। हम तुम चलहुँ पुरुषपहँ जाई॥
बकसे पुरुष दयाकरि तोही। शीस नवायके लीन्हेसि मोही॥
बिन दीये बरिआई लेहौ। पुरुष लोक पुनि जाए न पैहौ॥
कामिनि कहा वचन परवाना। धर्मरायके भयो अभिमाना॥
कामिनि तोरि बुद्धिहै थोरी। अबना जाऊ पुरुषकी खोरी॥
पुरुषलोक इहई रचि राखा। रच्यौ विचारि बुद्धि बलभाखा॥

अब तौ पुरुषत्रास नहिं मोही । गहौं वाहकों गरवौं तोही ॥
तैं कन्या का डहकसि मोही । रचा पुरुष मम कारण तोही ॥
(तैं कामिनि कठोर निर्मोही ।)
पहिले वचन विरहते बोली । लागी कठिन कामकी गोली ॥
काम सतावै निश दिन मोही । दे पारसकी लीलहुँ तोही ॥
कामिनि कहै धर्म सुनु बाता । चढि कालिमा तोहरे गाता ॥
हठ निग्रह कामिनि किहु ताही । धर्मराय पकरी तब बाँही ॥
गही बांह कामिनिकी जबही । काम बाण घट व्यापे तबही ॥
धर्मरोप कामिनिपर कीन्हाँ । गहि पग शीस लील तहिलीन्हाँ ॥
लीलत कामिनि शब्द उचारा । पुरुष २ करिकीन्ह पुकारा ॥
कामिनि पुरुषनाम जब लीन्हाँ । आज्ञा पुरुष अंशही दीन्हाँ ॥
योगजीत आये तेहि बारा । सुर्त बान सो कालहि मारा ॥
पुरुष कोप ताऊपर कीन्हाँ । कन्या उगल धर्म तब दीन्हाँ ॥
(उगली कन्या बाहेर आई ।)
हाहाकाल रोषके धावा । कामिनि पारस कहां चोरावा ॥
कामिनि कम्प देख विषधारा । पारस मानसरोवर डारा ॥
मानसरोवर झलतै अंगा । गयउ पताल जहाँ जलगंगा ॥
परीक्षा चार पारस परवाना । उपजी चारखान निरबाना ॥
एक परीक्षाते सरवर गयऊ । पारसके सम पारस ठयऊ ॥
दूजो अंश भयो निरबाना । शिला सिंधु पर्वत परमाना ॥
रतन शिला ताहिकी धारा । सो पाजी वारे संचारा ॥
तीसर अंश-नार प्रकटयऊ । अंशहि अंश चत्रगुन भयऊ ॥
चौथाअंश कामिनि अनुमाना । जाते स्वर्ग नर्क परवाना ॥
अंशहि अंश अंशते मानी । एक प्रती चौगुन उनपानी ॥
चार २ गुण गणहि समाना । अंशते अंश चत्र परवाना ॥

पारस मानसरोवर माहीं । पारस बुद्धि आपही आहीं ॥
पारस कामी न बहुत दुरावे । सुर्त सनेह तहां फिर आवे ॥
पारस अंत नाहि ठहराई । वासरूप कामिनिसंग धाई ॥
कामिन कला पुरुषपद परसे । पारस नीर नेत्र मह दरसे ॥
नैन निरख मूरत अनुरागी । धर्म अंश कामिनितन लागी ॥
पारस अंश चित नहिं डोले । बहुरि २ कामिनिसों बोले ॥
पारस अंशवट रह्या छपाई । निकसी कन्या बाहर आई ॥
जेहिकारण कामिनि हठकीना । पारस संग छान सो लीना ॥
उत्पति पारस धर्म तब पावा । कन्यारही ताहिके ठाँवा ॥
जब लगि कन्या भई सियानी । तबलगि धर्म रचीसब खानी ॥
खानि वानी रचिकीन पसारा । वेदवाद बहुमत विस्तारा ॥

दोहा—रचना रची लोककी- शशि घर रहा समाय ।
पुरुष नाम जानै नहीं, ताते लोक न जाय ।
(रचा रची लोककी- नख शिख रहा समाई ।)
(पुरुष नाम जाने विना-मत्य लोक नहीं जाई ॥)

चौपाई ।

पुरुष नाम ज्ञानी जो पावे । लोक दीप पलमाँहिं ढहावे ॥
पुरुष नाम जाने नाहिं भेदा । रचे खानि चौरासी फंदा ॥
(चित चंचल औ अंध अभेदा ॥)
दुख सुख मंत्र रचीबहु भाँती । जग मरण पूजा औ पाती ॥
रचि सब खानि बैठिअभिमानी । तब लगि पुत्री भई सयानी ॥
उपजा जोबन रसका भावा । तब कन्या कहँ विरह सतावा ॥
कामिनी कहे धर्मसों बानी । हमतो तुमरे हाथ बिकानी ॥
मृत डाला एक पारस लीन्हा । मदन भुअंगमके बसी कीन्हा ॥
जोबन विरह महामद गाजे । बिनुसंयोग गर्भ नाहिं छाजे ॥

मोह महा झर बरषे लागी । मन समाध कामिनि सों लागी ॥
गर्भकिए मकर दीराजा । कामिनसोह दुहु दिशबाजा ॥
मनसा लहर उद मद मन भएउ । काम दहनधन आहुत दएउ ॥
उपजा मदन मोह औगाहा । पुत्री पितासों भएउ विवाहा ॥

साखी—वहनीसे बेटी भई, बेटीसो भइनार ।
नारीसों माता भई, मनसा लहर पसार ॥

चौपाई ।

बरबस धर्मराय हरलीन्हा । विन लेखारज धानी कीन्हा ॥
विषया वेद व्याह जमनाना । चौदह काल मंचउनपाना ॥
चौदह पारस लोक निसानी । शब्द व्याह चौदह यमहानी ॥
मनसा व्याहवेद विषगंधी । हंसनी हंस भगत गुगबंधी ॥
सुर्त हंस घट रचो विदानी । धर्म समाध बसाए आनी ॥
उपजा मदन मोह औगाहा । कन्या पितहितव भयाविवाहा ॥
(कन्या व्याकुलभई तेहि माहा ।)
धर्म रायको उपज्यो भावा । कामिनि हृदय हाथ तबलावा ॥
उपजी रंग रोपकी खानी । कामिनि चरन गहो नवजानी ॥
मनसा लहरि ताहि तेइ दीन्हा । उपजी तीनि लोककर चीन्हा ॥
कामिनी संग करै सुख भारी । उपजा तीनिलोकअधिकारी ॥
तीनहि शक्ति पुरुष संग दीन्हाँ । तीनो सुत उपजावे लीन्हाँ ॥
(पाँच तत्त्व तीन गुण चीन्हाँ ।)
तीनहुँ सुत उपजे बहुरंगा । पारस रहा धर्मके संगा ॥
(पारस रहा ताहिके संगा ।)
तीनिउ सुत उपजे अधिकारा । धर्मराय तब भया निरारा ॥
(तीनों सुत कहँ दीन्ही भारा । धर्मराय ऊंच भये निनारा ॥)
राजपाट कामिनि कहँ दीन्हाँ । आपने वासशून्यमहँ लीन्हाँ ॥

कामिनि दर्श सदा लौ लावै । राजपाट सब कीर्ति बनावै ॥
(तीनों सुतको राज सिखावै ॥)
राज नीति सुत चित्तहि धरहीं । मनसा ध्यानपिताको करहीं ॥
खोजत खोजत बहु युग गयऊ । पिता पुत्रसों भेट न भयऊ ॥
(ध्यान धरत बहुत युग गयऊ ।)
कामिनि पुरुष एकसंग रहेऊ । सुतकी बात पुरुष सों कहेऊ ॥
उहाँकी बात न सुत सो भाखे । करै दुलार सदा सँग राखे ॥
इहिविधिबहुतदिवसचलिगयऊ। सुत न खोज पिताकरकियऊ॥
धरत ध्यान बहुत युग गयऊ । पिताको खोज करततब भयऊ॥
मातासों पूछे सुत बाता । पिता हमार कहाँ गये माता ॥
माता कहै सुतन्हसों बानी । पिता तुम्हार हमहुँनहिं जानी॥
रचना सकल हमहीं होई । हमसों दूसर और न कोई ॥
रचना सब मोहीते होई । दूसर जान परो नहिं कोई ॥
हमही पिता हमहीहिं माता । हमही तीनि लोककी दाता ॥
हमहीं छाँड़ि कोइ दूसर नाहिं । तुम्ह जो पूछहु सो कहुँ काँही ॥
तीनलोक महँ दूसर नाहीं । माता कपट करै मन माँहीं ॥
तब सुत सोच कीन्ह मनमाहीं । पिताका भेद बतावत नाहीं ॥
आपु आपु कह सुत सब रूठे । माता वचन कहैं सब झूठे ॥
तब माता कह वचन रिसाई । पिताको दरशकरहु तुम जाई॥
माता कह फूल लै धावहु । पिताको शीस परसिकेआवहु ॥
पुहुप समाधि बासलै धाओ । पिताके शीस परसिके आओ॥
चले पुत्र पिताकी आसा । पिता रहे पुत्रनके पासा ॥
खोजतबहुत दिवस चलिगयऊ। पिताका दर्शकतहुँनाहिंभयऊ ॥
तीनों सुत सो दरशन भयऊ ।
पिता निकट सुत दूरि सिधाये । खोजत कतहुँ अन्त नहिं पाये॥

खोजि थाकि माता पहँ आए। काहु साँच काहु झूँठ सुनाए॥
ब्रह्महि भाषा झूंठ संदेशा। सकुचिवचन नहिंकहेवामहेशा
भाषा विष्णु सत्यकी रेखा। खोजी थाकिपिता नहीं देखा॥
माता विहँसि कही तव वानी। "ब्रह्मा झूंठ झूंठ तौ खानी॥
शिव लजाय शिर नीचे राखा। साँच झूंठ एको नहिं भाखा॥
ताते करहु योग तप जाई। जटा बढ़ाय विभूति रमाई॥
(तुम सुत करो योग तप जाई। शीस जटा तन भसम चढ़ाई॥)
लेहु आमण्डल भेपसो कीन्हाँ। शिवको थापि भवानी दीन्हाँ

साखी--जप तप योग समै दृढ़, आगे ध्यान पसार।
माना कह्यो क्रोध करि, चतुर मुख अंध अहार॥

माताहि कीन्ह विष्णुपर दाया। मुखहिं चूमिके कंठ लगाया॥
सत्य बचन सुत बोलेउ बानी। तीनहु लोक करहु रजधानी॥
शिव ब्रह्मा करिहैं तोर सेवा। गण गंधर्व ऋषि मुनिदेवा॥
ब्रह्मा मोसों झूंठ लगावा। तेहि कारण विधि झूंठ कहावा
ब्रह्मा देव पढ़े बहु भांती। कुकरम करै दिवस औ राती॥
(विद्या वेद पढ़े बहु भांती। कुकरम करै दिवस औ राती॥
एहि अवगुण गायत्री गाई। ब्रह्मा दोष शाप तिन पाई॥
मृत्यु लोक गो धरे शरीरा। अव भुगते चौरासी थीरा॥
गोयहोए नारी कल्यारी। अव निचोए होए पातक भारी
जहाँलग पुहुप खान परकाशा। निरधिन ठारे तुम्हारो बासा॥
झूठी बात वेद में निर्माई। च्यार वर्णमें वड़ी बड़ाई॥
पहिले चारो वरन पुजावै। दक्षिणा कारण गरा कटावै॥
गरा कटाए करावे पूजा। गायलै समे ब्रह्मा नहिं दूजा॥
लएमूड पडिवो रमाई। ब्राह्मण भए सो काल कसाई॥

खाए अखज चले एडाई । जस मडवाको श्वान अघाई ॥
ब्राह्मणहूको झूठी आसा । हरि नहिं भजे न हरिके दासा॥
कहके विर ब्रह्मा करोए । उत्तम जन्म पाए जड खोए ॥
झूठी बात वेद निग्माई । चार वरण आश्रमहिं दृढाई ॥
ऋषि अगसी सहस्र बखानी । ते ब्रह्माके सुत उतपानी ॥
जेते ऋषि तेते मतधारी । अस्तुति करि इसेव तुम्हारी ॥
ब्रह्मादिक मुनि देव गण भारी । अस्तुति करिहें विष्णु तुम्हारी॥
निशिदिनध्यानपिताको धरिहो।किंचित ध्यान.जोत अनुसरीहो

साखी–विचलि गयउ निजनामको, गहे कुमारग जानि।
तीनलोक गुण विस्तरेऊ, निरंजन आदि भवानि ॥

चौपाई।

कहे कबीर सुनो धर्मदासा । दोऊ मिल एह मत परकाशा॥
यह सब खेल कामनी कीन्हा । निरंजन वास शून्यभौ लीन्हा॥
ज्योति निरंजन ध्यान लखाई । शिव ब्रह्माको भेद सुनाई ॥
सेवहु विष्णु निरंजन ध्याना । हेसुत बचन निश्चय मम जाना
ताते ज्ञान अगम फलाहो । जाते तामस सिद्ध कहाहो ॥
सिद्ध न कामत होइहै भारी । ज्ञान अगम गुण होहि भिखारी
अंश दहन तन तामस भारी । असुरभाव पशु वासु बतारी ॥
मनपाखंड ठगोरि टोना । पट दरशन पाखंड खिलोना ॥
यंत्र मंत्र विखया अधिकारी । अन्तरध्यान भक्त तुव धारी॥
तव गुण महस नाम उचरिहै। एक अंश चौसठयोगिन होइहै
करे खपरले मंगल गेहे । यह उपदेश महादेव देहे ॥
(शंकर चिन्ह इहे सो पेहे ।)
रजरुचि मनगुन दया समानी । असुरहनन भक्तन रजधानी ॥
आगम कहो संचमानि लीन्हेउ।जहाँ जसभाव तहां तसकीन्हेउ॥

चारि खानि ब्रह्म निरमाई। चामहि त्वचा लुच लौ लाई॥
शिवको वरन भेद नहिं होई। क्रोधरूप धरि भेष विगोई॥
मात विष्णुपर दाया कीन्हाँ। पितादिखाय निकटहिं दीन्हाँ॥
(अनुभव दयाविष्णुपर कीन्हाँ।)
पिताको दर्श विष्णु जब पावा। तब माताकह शीस नवावा॥
माता पिता एक है गयऊ। विष्णु देखि चित हर्षितभयऊ॥
माता पिता एक मिलि गयऊ। विष्णुसमाय ज्योतिमहँगयऊ॥
तेहि पाछे जग सिरजे लेऊ। ताको वरण सविस्तर कहेऊ॥
प्रथमें चारि खानि निरमाई। लक्ष चौरासी योनि बनाई॥
चारि खानिकी चारिउ बानी। उपजी तीनिलोक सहिदानी॥
चारि खानि रचि कियोपसारा। चारि वरण पाषंड सँवारा॥
(चौदहभुवन करयो विस्तारा।)
लक्ष चौरासी योनी कीन्हाँ। चारि खानि महँ एकहीचीन्हाँ॥
लक्ष चौरासी बचन बखाना। चारि खानि जीव एकै माना॥
रचना रची सखा बहु रंगा। सुर नर मुनि गण कामतरंगा॥
कामदेवकी कला अनंगा। पशु पक्षी सुर नर मुनि संगा॥
कामकला सबही भरमावै। शिव शक्ती संग काम लगावै॥
उत्पति प्रलय रची अविनाशी। कामिनि कामकालकी फाँसी॥
कनककामिनि फन्द बनावा। तेहि फंदे सबही अरुझावा॥
कनक कामिनी फन्दा कीन्हा। चार खानि में एकै चीन्हा॥
नर बानर कीट पतंग सँवारी। सबके संग करै रखवारी॥
(नर नारि-जत खान सँवारी। सब घट काम करै रखवारी॥)
पशु पक्षी जत कीट पतंगा। रक्षक भक्षक सबके संगा॥
श्वासा सार होय गुंजारा। पाचो तत्त्व संग विस्तारा॥
पाचो तत्त्व तुरै बल जोरा। तापर चढे साहु औ चोरा॥

चारिऊ खानि होय गुंजारा । श्वासा चलै अखंडित धारा ॥
देहदशा जस पुरुष सवारा । तैसी देह रची करतारा ॥
पांच तत्त्व तीनों गुण साजा । आठ काठ पिंजरा उपराजा ॥
(अष्टधातु पिंजरा उपराजा ॥)
पिंजरा में सुगना एक रहई । वाकी गति मंजारी लहई ॥
(यामध्य सुवना एक रहई । दावपरे मंजारी गहई ॥)
सुगना पढै दिवस औ राती । रक्षक पिंजरा ऊपर सँघाती ॥
रक्षक भक्षक संग रहावै । सदा पढावै घात लगावै ॥
(एक घातक यक सुआपढावे ।)
जस सुगना पिंजरा महँ गहई । ऐसो देह प्राण दुख सहई ॥
नख शिख रचा काल फुलवारी । फूली वास कुवास सवारी ॥
कनक कामिनि काल बनाई । चारि खानि महँ रहा समाई ॥
कामिनि काम सँवारे जानी । चारिउखानि रहाविकशानी॥
चारि खानि मह श्वासअमाना। काल कुटिलतेहि माहिसमाना
काल कलाकी खानि बनाई । शिव शक्ती महँ रहा समाई ॥
(दया क्षमाकी खान बनाई । नर नारि महँ रहा समाई ॥)
सुरनर मुनि सबही कह डहकै । चारिखानि सबके घट महकै ॥
चारि खानिकी सब उतपानी । जेतिक तीनि लोक सहिदानी॥
तीनि लोक श्वासा विस्तारा । श्वासाते भा सकल पसारा ॥
श्वासा संग काल अवतारा । विष अमृत दोनो संचारा ॥
श्वासा संगम काल औकाली । श्वासा संग भय वनमाली ॥
प्रकृति पचीस संग जंजाली । पंच पाँचदश माल तमाली ॥
चन्द्र सूर श्वासा संग पूरा । इंगला पिंगलासुष्मनि जोरा ॥

दोहा—श्वासा सँग श्वासा, तेहिते उपजा बरिआर ।
चन्द्रसूर्यहैश्वासामध्ये सकलविधिविस्तार ॥

शिव शक्ति सुखधामहै, जोचिनज्ञानसमाय ।
सुखसागर अभिरामहै, कालग्रास ढरिजाय ॥

चौपाई ।

चन्द्र सूर जीवन सहिदानी । शक्ती शिवकी उपजे खानी ॥
(संयोग जड़ चित विदानी)
एक संग विष लहरी समानी । एकसंग बसे अमृत की खानी ॥
एक संग मन वसे अपारा । एक संगअमी जीवरखवारा ॥
एक संग काम क्रोध दुख भारी । लोभ मोह पाषंड विकारी ॥
अहंकार लालच औ ममता । घिन्न औछतिलाज प्रनिहना ॥
एते एक वीरके साथी । माया मद जस मगर हाथी ॥
एक संग शीतल शील सुभेषी । इक संग छमा सुबुधि विशेषी ॥
एक संग भक्ति रहे हितकारी । ज्ञान विवेक संताप सुधारी ॥
दया दीनता निर्भय रमता । धीरजमतीसहज सुथिरमता ॥
दुई घर दुवो राव कर वासा । इक घर राहु केतु प्रकाशा ॥
राहु अमावस सूर्यहि ग्रासे । ग्रासे केतु पूरणीमा चंद्रहींफाँसे।
दोउ करैं यहि भांति बसेरा । खन बाहर खन भीतर डेरा ॥
(दोउ करैं एक नगर वसेरा ॥)
एकहि रथ दोऊ असवारा । बाहर भीतर मध्य दुवारा ॥
पाँचों अविचल तुरै तुषवारा । ता ऊपर है जीव असवारा ॥
एक तुरे पियरे पट नेहा । एक निल रंग है देहा ॥
कुवेत एक लाल बहु रंगी । एक सबुज हारियारे अंगी ॥
एक श्याम मुश्की रँग भारी । पांचों एकते एक अधिकारी ॥
(एक श्याम वदन रूपचारी । आप आप पांचो अधिकारी)
पाँचों बसै एकही संगा । एकही रथ मन जीव सुसंगा ॥
एक तत्र ले पाचों वासा । दाना घास पानीकी आसा ॥

पाँचो पाँच घाट जल पीवै । दाना घास खाए सुख जीवै ॥
पाँचों तुरै पलही पल धावै । छिनबाँधहिछिनछोरिकुदावै ॥
छिन वाहिर छिनभीतर आवहि । पाँचों पाँच ढुंड फिरि धावहि ॥
(सरवर पार सो तवे ले आवे । सकल पराश तव ले आवे ॥)
इहिं प्रकार जाही और आवहि । कोइ नियरेकोई दूरि सिधावहि॥
सुरंग तुरै जो जन भरि जावै । मुसाकि योजन डेढ़ सिधावै ॥
हरियर दुइ योजन पर जावै । योजन तीन पाति पहुँचावै ॥
हंसा चारि योजन जो जावै । फिरिके दंडवत बेलै आवै ॥
(श्याम रंग आवै नाहिं जाई)
यहिं विधि पाँचों आवै जाँहिं । अपनि अपनिमंजिलके मांहीं॥
पाँच तुरै रथ एक सुधारा । ताऊपर मन जीव असवारा ॥
जीव परांहि मनके हाथा । नाच नचावै राखै साथा ॥
पाँचो तुरै होय असवारा । घेरे काल कलीके द्वारा ॥
यहि धोखा गहि जीव भुलाना । सत्य शब्दको भाव न जाना ॥
सत्य लोकके तुरै तुखारा । ता ऊपर सतगुरु असवारा ॥
हाहाकार करै चहुँ भाती । करै शिकार दिवस औ राती ॥
रथ ऊपर चढ़ि तुरंग कुदावै । मारि जनावर लै घर आवै ॥
मारै वाण जानपर तानी । नख शिख वेधै घाव न जानी॥
ताहि जनावरके शिर नाहीं । रुधिर माँस देह नाहिं ताही ॥
देखत देहदृष्टि नाहिं आवै । विन देखे अनमाने धावै ॥
(विन देखे अनमानहि धावे । ता धोखामें जिव डहकावे ॥)
ऐसा देखो जनावर जोरा । वन औ नगर करै घनघोरा ॥
ऐसा विषम जनावर भारी । मारि पारधी लीन्ह सँभारी ॥
मारि जनावर नगर वसावै । ताहि ओल देह विलमावै ॥
एक नगर दुइ रहै नरेशा । भिन्न २ दोनोंकर देशा ॥

ताहि नगर दुइ महल बनाये । दुइ दरवानी तहाँ रहाये ॥
महा विकार दोऊ दरवानी । दोऊ रायकी सेवा ठानी ॥
करै उतपन्न दोऊ रजधानी । धर्म धीर औ आदि भवानी ॥
जो कछु उत्पति शहरमें होई ! सो सब बांटिलेहि नृप दोई ॥
बांटि खजाना धरै दुराई । लेखा खरच उठावहि राई ॥
लेखा जानि खरच उठाई । लेखा खरच उठावे आई ॥
एक हवेली दश दरवाजा । अहुठ हाथ गढ़भीतर राजा ॥
राजा प्रजा सबैहि रहावै । इकछत राज चलै नहिं पावै ॥
दोऊ राहुके शहर बताऊँ । बाहर भीतर प्रकट दिखाऊँ ॥
एक घर बसै मोह नृप भारी । ताकी साज विषय अधिकारी ॥
दूरे घर विवेक बलधारी । ताकी सात सबै हितकारी ॥
इकघर राजा एकघर रानी । विधि सँयोग मिलावै आनी ॥
एकघर सूर एकघर चंदा । एक तेज विष अमृत मंदा ॥
इकघर शक्ती इकघर शीवा । इकघर मन एकघर जीवा ॥
इकघर पाप एकघर पुन्या । इकघर साँच एकघर शुन्या ॥
इकघर भक्षक बसे अपारा । इकघर रक्षक है रखवारा ॥
इक राजाकर रक्षक नाऊ । रक्षा करै सदा सब ठाऊ ॥
एक राजाकर भक्षक नाऊ । भक्षै सबै न छांड़ै काऊ ॥
दूनौं नृपति एकपुर माहीं । एकरथ चढ़ै एकसंग ताही ॥
प्रथमहि भक्षक होइ असवारा । तहाँ जाय जहाँहै करतारा ॥
विषम सरोवर पहुँचे जाई । पैठि विषम जल मांहि नहाई ॥
करि असनान तीर्थ कह परसै । झांई झलकि ज्योति तहँ दरसै ॥
दुइ प्रतिमाको दर्शन पावै । आदि निरंजन ज्योति दिखावै ॥
काली कालरूप विस्तारा । नाना रंग तरंग अपारा ॥
देखि रूप मन हर्ष समावै । ज्यों पतंग दीपक कहँ धावै ॥

देखत बहुत सुहावन ज्योती। नाना रंग लागे बहु मोती ॥
जब परसै तब तेज अपारा। लागे आँच महा विष झारा ॥
सो विषलै भक्षक घर आवै। आनि जीव कहँ घोरि पियावै॥
विषपिल्लाय जिव घात लगावै। रथते उतारि आपु घर आवै ॥
जब विष चढ़ आप बिसरावै। तब रथ चढ़िके रक्षक धावै ॥
रक्षक दूरि देश कहँ धावै। विषम सरोवर पार सिधावै ॥
विषम सरोवर तजि है पारा। जाइ जहाँ सतनाम पिआरा ॥
अमर चोलना देखे जाई। चरण स्वरूप महँ रहें समाई ॥
परसे सुरति नामके पाया। मिटे जहर भइ निर्मलकाया ॥
दया तूरि चढ़ि उतरे पारा। परसै अमी तत्त्व विस्तारा ॥
अमी तत्त्व तूरि जब परसै। अग्र ज्योति अखंडित दरसै ॥
बरषे अमृत अग्र कि धारा। पिवे जीव विष होय निनारा ॥
सुखसागरमें सुधारस पीवे। लै अमृत फिरि घरहि सिधावै ॥
घरमों आइ रहा ठहराई। अग्र अमी घर राख छिपाई ॥
घरी आध बर माहि जुड़ावै। भक्षक जहर बहुरि लैआवै ॥
फेरि जहर जीवहि पहुँचावै। जीव मुग्ध होइ अमी गँवावै ॥
जब भक्षक विष जीव पिआवै। फिरि रक्षक अमृतकह धावै ॥
एहिविधि रक्षक भक्षक धावहि। एक विष एक अमृत लावहि ॥
विषम सरोवर भक्षक जाई। रक्षक सुखसागर पहुँचाई ॥
इहिविधि दोऊ करे रजधानी। इक दारुण इक शीतल बानी ॥
जा दिनतें शिशुने दुइकीन्हा। तादिन सौंपि खजाना दीन्हा ॥
दोइ नृपतिके दोइ स्वरूपा। राखे दाम चन्द सूर भूपा ॥
इकघर सूर्य एक घर चन्दा। इक दुख दारुण एक अनन्दा ॥
सकल समाज दोऊके हाथा। अवधि समान खजाना साथा॥
भरम मता दोऊ घर भारी। खासा सार सुधारी सुधारी ॥

बाँटिके दाम दोउ घर दीन्हा । अमृत विषनिशवासर कीन्हा ॥
रचि खानी बहुरंग अपारा । देह मांहि बहु देह सुधारा ॥
(रची देह बहुरंग अपारा । विष अमृत बहु रंग अपारा ॥)
अग्र देह एक देह मझारा । बाहर भीतर मध्य दुआरा ॥
(अष्ट देह यहि देह मँझारा । बाहर भीतर मध्य अखारा ॥)
चारि विमल हैं चारि तरंगा । चारि सुरंग एक बहु रंगा ॥
(चारि विमलहैं फटिक तरंगा । चारि सुरंग श्याम बहु रंगा ॥)
दुइ उज्वल हैं बाहर बासा । दुइ उज्वल दल मध्य प्रकाशा ॥
(दुइ उज्वल दल मध्य प्रकाशा। श्याम सुरंग अधर दुइवासा॥)
श्वासा सुरंग अधर दुइ वासा । जरद नील घरमांहि निवासा ॥
बाहर दुइ सफेद बहुरंगा । रूप अनंत मनशक्ती संगा ॥
पार बसै सत्य सुकृतको डेरा । मध्यमें विषम सरोवर घेरा ॥
निस्तत्त्व कमल सुकृत सत्यवासा। विषम सरोवर काल निवासा
पुहुपदीप साहेबको वासा । सुखसागर ज्ञानी रहि वासा ॥
ताके और कालउ च्छासा । मानसरोवर काम निवासा ॥
ताके और कालकी आसा । विषम सरोवर धर्म निवासा ॥
सबके डरे निरंजन वासा । धर्मदास तुम लखो तमाशा ॥
धर्मराइ मुख पौन उडाई । विषकी लहरि ध्वजा फहराई ॥
ज्ञानीके मुख ज्ञान प्रकाशा । अमरसार सुधा रहि वासा ॥
गुप्त झांझरी पुरुष बनाई । अक्षै अमान ध्वजा फहराई ॥
प्रकट झांझरी काल प्रकाशा । तेजपुंज विविधि रहिवासा ॥
जो रचना बाहरकी भाषा । सो रचना भीतर रचि राखा ॥
जो भीतर सो बाहर दरशै । तत्त्वहि तत्त्व तत्त्व तहँ दरशै ॥
तत्त्व कि रथ चढ़ि बाहर आई । अमीकी रथ तहाँ परसै धाई ॥
क्षण बाहर क्षण भीतर आवै । सतगुरु मिलै तौ सहज बुझावै ॥
निरखि परखि जब हेरे जाई ।

चारि तीर्थमहँ प्रतिमा भारी। सत्यसुकृत तहाँ पुरुष औ नारी॥
श्वासा संयम राह सुधारी। देवल चारि देव हैं चारी॥
घट भीतर घट राह अपारा। चाँद सूर्य ताके रखवारा॥
उतर चंद तीरथ कहँ धावै। परसि तीर्थ अमृत लै आवै॥
एकजीव दुइ अंग समाना। चंद्र सूर्यके हाथ बिकाना॥
दक्षिण स्वर तीरथको धावै। तीरथ परसि जहर लै आवै॥
शुक्लपक्ष पूनो जब आवै। तबही जीव चंद घर आवै॥
जलरँग तत्त्व चंद असवारा। सो परसै धाइ अमृतरसधारा॥
जीव चंद्रके साथेहि धावै। योजन चारि पार पहुँचावै॥
करि असनान पुरुष पग परसै। निर्मल ज्योति अखडित दरसै।
जब फिरि चंद्र सरोवर आवै। बहुरि जीव सँगहि फिरि धावै।
आवन जात बार नहिं लावै। पल पल जीव दरस तहांपावै
कृष्णपक्ष अमावस जब आवै। तब फिरि जीव सूर्यघरजावै॥
सूर्य तेजपर होइ असवारा। बरसै अग्नि अखंडित धारा॥
जाय निकसि योजन परवाना। विषम सरोवर करै अस्नाना॥
परसै देव निरंजन पाई। लागे झार जीव कुँभिलाई॥
जीव सूर्य फिरि कमल समावै। पल बाहर पल भीतर आवै॥
सूर्यसंग विष पीवै अघाई। मूर्छित होय चंद्रघर जाई॥
जाय अमावस परिवा आवै। चढ़ि रथ ऊपर चन्द्र सिधावै॥
वायु तत्त्वपर होय सवारा। चलै चंद दुई योजन पारा॥
विषम सरोवर पार सिधावै। मान सरोवर पारस पावै॥
नागिन एक सरोवर माहीं। पीय अमृत विष छाँडे ताहीं॥
सो विष खाय चन्द्र घर आवै। अमृतकी कछु खबर न पावै॥
पल पल करै तीर्थ अस्नाना। भीतर बाहर एक समाना॥
अमृत रहै भुजंगिनि पासा। भीतर बाहर एक प्रकासा॥

सोइ विष लेय तीर्थको आवै । चंद्र कमल पर जाय समावै ॥
एहिविधि चंद्रपक्ष चलि जाई । पाछे जीव सूर्य घर जाई ॥
पूनिमा बीते परिवा आवै । तब रथ चढ़िके सूर्य सिधावै ॥
सुरंग तुरैपर होय असवारा । योजन तीनि जाय चढ़िपारा ॥
सुखसागरमें पैठि नहाई । परमै योग सँताय न पाई ॥
अमृत मानसरोवर माहां । कामिनि दूरि धरै बोले ताहां ॥
सो अमान सुखसागर माहां । सूर्यके संग पीवै जिव ताहां ॥
पिये अमी जिव सूर्यके संगा । मिटै तपत होय शीतलअंगा ॥
पल भीतर पल बाहर आवै । पीवै अमी रस तेज समावै ॥
जबही सूर्य अमीरस पीवै । चंद्रहि पकरि आपु घर लावै ॥
जब चंदा आवै रवि द्वारा । होइ संक्रमण तेज अपारा ॥
तेज किरण पूरण जब होई । दरसहि काल तपै रवि सोई ॥
तपै तेज बाहरकों धावै । सुखसागरमें पइठि नहावै ॥
सुखसागरमों कर अस्नाना । उदितकमल होइद्वादशभाना ॥
सूर्यपर चंद होय जब जोरा । तब घट काल करै घनघोरा ॥
चंद्र सूर्य कहु राहु जो फाँसे । पल चंदा पल सूर्यहि ग्रासे ॥
इहिं विधि देइ दुइनको बाजी । पूनम धरिहि अमावस साजी ॥
चंद्र सूर्य लै जाय अकाशा । सुखमुनिकेघर दोउकहफाँसा ॥
सुसकि तुरीपर होइ असवारा । घेरे शशि सूर्य अकाशकेद्वारा ॥
जंबूद्वीप काल अस्थाना । सहज शून्य कह करै पयाना ॥
सहज शून्यमहँ पहुँचे जाई । सहज रहावै संग लगाई ॥
योजन डेढ़- सहजकर बासा । तहवाँ करै काल रह बासा ॥
सहज कालसों अंतर नाहीं । जीवहि छलै सहजकी बांहीं ॥
पलमें जंबूद्वीपहि आवै । पलमहँ सहज शून्यकहँ धावै ॥
एहिविधि चंद्र सूर्य दोइ फांसै । काल सहज होय जीव गरांसै ॥

चंद्र सूर्य दोउ अमृत पावै। काल सहज संग बाए लगावै॥
बाए लगाय क्षुधा लेइ छीनी। जहर देइ जिव बुद्धि मलीनी॥
जीवहि सदा कालकी आसा। तजि अमृत विष करहीग्रासा॥
कालहि राहु केतु होइ आवै। कालहि चंद्रहि सूर्य सतावै॥
कालहि अमृत जीवसों लेही। कालहि जल थल बाजीदेही॥
कालहि ग्रहण ग्रसतहै जाई। देइ विष अमृत लेइ छुड़ाई॥
कालहि आगे पाछे धावै। कालहि रचै काल विगड़ावै॥
कालहि चारि खानि रचिराखा। कालहि सब घट बोलैभाखा॥
घट २ काल करै रखवारी। एक देह दुइ अंग सँवारी॥
एकअंग चंद एक अंग सूर। श्वासा पारस हाल हजूर॥
इकइस हजार छःसै श्वासा। इतने एक घरी परकाशा॥
निशिवासर बीते युग चारी। दुओं अंग श्वासा संचारी॥
दशहजार आठसै भारी। श्वासा चंद सनेह सुधारी॥
जेतिक श्वासा चंद्र सनेहा। तेतिक चलै सूर्य संग नेहा॥
दशहजार तीनिसै घाटी। चले चंद्र अरु सूर्यकी बाटी॥
दुइ हजार दुइसै अधिकारा। ताको भेद एक विस्तारा॥
मध्यद्वार महजके जाई। ता सुन्नहमों रहै ठहराई॥
बाइस हजार चारिसै ऊने। जाप जपै जिव आप विहूने॥
एकजीव तीनों घर संगा। राहु केतु शशि सूर्य अनंगा॥
जाप जपै और तीर्थ नहाई। परसै देवल देव सहाई॥
जब जिव सत्य सुकृत पग परशै। तबहि तज्योति अखंडितदरशै॥
जब जीव आदि निरञ्जन दरशै। झिंगमज्योति तत्त्व जसपरशै॥
तासु भेद मैं कहों बताई। असिल गगन रु क्षुधा छुड़ाई॥
जब परिवा पूनमकी साधी। तब चंद्रहि लै आवहि बाँधी॥
राहुकाल होइ जाय समाई। अमृत छोड़ि पीवै दुखदाई॥

चन्दके सुगमें जीवहि ग्रासे। ग्रहण लगाय शून्यमहँ फाँसे॥
राहु काल जिव चन्द्र समाई। विष ताजि अमृत होइ छुड़ाई॥
इहिविधि राहु चन्द्र कह घेरे। गहन गरासि ज्ञान कह फेरे॥
अमृत छोडि विष संग लगावे। ज्ञान गमी उपजे नहिं पावे॥
इहि विधि सूर्यहि केतु गरासे। अमृत हरि विष तेज तरासे॥
इहि विधि दोउ संतावे काला। ता सँग जीवहि करै बिहाला॥
जब चंदा कह राहु गरासै। कर्मकाल व्याल होय फाँसे॥
उग्र होत है श्वास विवेखै। शशि औ सूर्य दोऊ घर देखै॥
छांडे केतु आप घर आवै। अपने घरमहँ सूर्य समावै॥
सुरंग तुरेपर बाहर जाई। सुखसागर महं पैठि नहाई॥
योग संता इनके पग परशै। निर्मल ज्योति अखंडित दर्शै॥
अमृत पीवे तेज बल पावै। पल पल पीवै बहुरि घर आवै॥
आपुहि मह विष अछप छिपावै। बहु विधि अमी सुधारस पावै॥
पलभीतर पल बाहर जाई। जीवका मूल परसि सुखपाई॥
पुनि जो चलै सूर्यकी श्वासा। पूरण तत्त्व तेज परकासा॥
कबहूं सूर्य चन्द्र घर जाई। चन्द्रहि लाभ सूर्य पछिताई॥
ज्योंलगि रहै चन्द्रघर सूरा। तब लगि अमी अमान हजूरा॥
इहि विधि तत्त्व छानि जब आवै। विद्वत्पुरुष हो अधिक पढ़ावै॥
चन्द्र सनेह जीव तब पावै। पावै जानि भव बहुरि न आवै
शशि औ सूर्य ग्रहण जब होई। तब देखै तन भेद विलोई॥
ग्रहण ग्रासि छांडे जब क्रूरा। तब घर आवै शशि औ सूरा॥
अपने अपने. घर जब आवै। तब नाहिं कोई तत्त्व गवावै॥
एकके घर एक जब आवे। कोइ जीते कोई तत्त्व गवावै॥
ग्रहण ग्रास होत जब जानै। तौ शशि घरही सुरलै आनै॥
शशि घर आवै शशि घर जाई। अग्रग्राम बासै लौलाई॥

पुहुपवास तिल गरवै छाई । तव ते वासना बाहर जाई ॥
पुहुपके भीतर वास रहाई । सोई बास बाहर महकाई ॥
बाहरते भीतर ले आवै । ताके भीतर आनि समावै ॥
ताते वासन बाहर जाई । तिलके भीतरहै ठहराई ॥
तिलते वासन बाहर आवै । बाहरते जो भीतर समावै ॥
भीतर बांधि एक जब होई । बास तेलमो रहै समोई ॥

समय—तौ लगि वासबहुत विधि, ज्यो लगि परै ना तेल ।
तेल लाजछाडिकेडारै, दुइ मिलि होय फुलेल ॥

चौपाई ।

वास तेलमहँ रहै समाई । तेल छाड़ि नहिं बाहर जाई ।
तेलके संग बास महकाई । बास के संग तेल रहु छाई ।

समय—लहा बास जहाँ तेल रहु, जहाँ तेल तहाँ बास ।
एकै संग दूनों वसै, महकै वास सुबास ॥

चौपाई ।

इहिविधि रहै दोऊ इक ठाँऊ । एकै वासना एक सुभाऊ ॥
बाहर काढि जब अंग लगावै । दुई प्रतिमाको रूप दिखावै ॥
सुरतिफूल मन तिलकी खानी । नाम बास जीव तेल बखानी॥
बाहर फूल भीतर फुलवारी । रवि शशि करै दोय रखवारी ॥
तिलफूल तिरिया की खानी । दिनफूलैनिशि गिरतन जानी ॥
ऐसो फूल कृत्रिम उपराजा । तत्त्व तेल सबमध्य विराजा ॥
सोई तत्त्व सो अस सनेहा । तत्त्वहि तत्त्व मिलैतिल देहा॥
तिल औफूल एकसम कियऊ । तेहि पाछे पुनि प्राणवसियऊ॥
दुख दीयेन निकसेउ तेला । फुल देह तजि भएऊफुलेला॥
इहि विधि गुरू शिष्य जो होई । मुक्ति पंथ पावै पुनि सोई ॥
धर्मदास यह अद्भुत बानी । कहौविचारि सकल सहिदानी ॥

उत्पतिकी गति सब हम पाई । परलैकी गति कहो बुझाई ॥
रक्षक भक्षक एकहि संगा । कहौ विचारि दोऊको अंगा ॥
जब साहब शिवशक्ति बनाई । सो तो गम्य सब हम पाई ॥
सो शिवशक्ति काल रचि राखा । दोनो अंग धरि प्रकटि भाखा ॥
कामरूप विष बाण बनाया । कला अनंतधरि प्रकटी काया ॥
घर घर शिवशक्ती सुत नारी । विरह वियोग सोग सुखभारी ॥
नानारूप रंग उपराजा । उपजनिबिनसनिसुखदुखसाजा
कुल व्यवहारसकुच औ लाजा । नात गोत रसलीला साजा ॥
चारि खानि बानि धरि गाजा । चारि वरण औ धर्मउपराजा ॥
लाज वरन कूरी कुलकाजू । योग यज्ञ व्रत दान समाजू ॥
संपति बिपति रंक औ राजा । अन्न वस्त्र माया उपराजा ॥
सब ऊपर मन आपु विराजा । मनवसि होय सरै सब काजा ॥
मन इन्द्री महँ भोग संयोगा । मनै स्वाद औ स्वाद वियोगा ॥
मनहरता मन करता सोगा । मने रोग औ दुख सुख भोगा ॥
मनते कोई और ना दूजा । मनसाहब मन सेवक पूजा ॥
मनदेवल मन प्रतिमा साजा । मनपूजा मन तीर्थ विराजा ॥
मन शिवभक्ती विरह अपारा । रुधिर बिंदु मन निरजनहारा ॥
मनै जियावन मरन हारा । मनहिअशुभशुभकर्मव्योहारा ॥
कर्माकर्म मनहिते होई । भोग करै भुगतावै सोई ॥
मनभर्मित मन चेतनहारा । चारि खानि मन खेल पसारा ॥
मनशीतल मन तेज अपारा । मनश्यामा मनबोलनि हारा ॥

समय–चंद्र सूर्य संग मन वसै, शुभ अशुभ मनआहि ।
श्वासा श्वासा मत वसै, कहि वरण गुण ताहि ॥

चौपाई ।

खानिखानि मन होय अस्वारा । फैलि रहा मनअगम अपारा ॥

चारि खानि मन रहा समाई। चारि चक्र चढि बोलै आई॥
रोम रोम मन रहा समाई। आपहि मारै आपहि खाई॥
आपहि भिक्षुक आपहि दाता। आपहि ईश्वर आपु विधाता॥
आपहि चोर आप रखवारा। आपहि रचै आप संहारा॥
आपहि सीखै आप बिसरावै। आपहि मेटै आप बनावै॥
आपहि अंध आप डिठिहारा। आपहिज्योति आपउजियारा॥
आपहितिमिरआपअँधियारा। आपहि मास पक्ष व्यवहारा॥
आप निरक्षर अक्षर होई। गुन प्रकट होय बोलै सोई॥
नाना रंग ज्योति दिखलावै। आदिअंत मन मनहि समावै॥
मनही नाद शून्य महँ बोलै। मनही ज्योति शून्य महँडोलै॥
मनही कह सब ध्यान लगावै। मनको अंत न कोई पावै॥
मनही शास्त्र वेदहै चारी। तीनलोक मन कथा पसारी॥
निर्गुण सगुण मनहिकी बाजी। कवी पुराण कोकमन साजी॥
ब्रह्मज्ञान कथि मनहि सुनावै। आपु छिपाय दूसर दिखलावै॥

समय-आदि अंतमन कर्ता, चारि खानि मनवास।
वंद छोरि दया करिमोपै, कहु मंत्र प्रकाश॥

चौपाई।

सुनहु संदेश हंसपति आगर। पुरुष पुराण हंसपति सागर॥
सुरति पुरुष हंसनके नायक। ज्ञान अनूप सुनी चितलायक॥
कहो अग्र अग्रकी खानी। कहो ज्ञान विज्ञान बखानी॥
चारखानिके श्वासा जेती। कहो विचारि चलै दम तेती॥
अचल खानि प्रथमहि विस्तारा। तेहि पाछे पिंडज अनुसारा॥
तिसरे अंडज खानि सँचारा। चौथे ऊषमज रचा अपारा॥
चारि खानिकी रचना भारी। चारखानि संगहि अनुसारी॥
प्रथम खानि सतसुकृत कीन्हाँ। रचना रचे निरंजन लीन्हाँ॥

प्रथम अक्षय वृक्ष प्रभु कीन्हाँ। अक्षयवट है ताकर छीन्हाँ॥
आदि अंत पिंडज अनुसारा। जानि जग शिव शक्ति सुधारा॥
तिसरे अंडज अर्घ निवासा। जाते जग पंछी परकासा॥
चौथी खानि अमी रजकीन्हा। तेहि संयम उपमजकर चीन्हा॥
चारि खानिकी चारिउ बानी। श्वासा नेह देह सहिदानी॥
चारि खानि महं एकै श्वासा। कहु खंडित कहुँ पूर प्रकाशा॥
अचल खानिकी श्वासा भारी। चालि तीस पाँच अधिकारी॥
गिननी सौ हजार औरलाखा। श्वासा अचल खानिमहराखा॥
चारि पहर चारिउ जग भारी। तीनि पहर श्वासा अधिकारी॥
एक पहर वह उनमुनि रहै। ताते काल न आतुर गहै॥
तीन तत्त्वकी रचना भारी। अचल खानिकीदेहसुधारी॥
धरती तत्त्व भास अस्थूला। जल औ तेज ताहि कर मूला॥
वाँए अकाश नहि रहि वासा। ताते जड़ अचल खानि परकासा॥
तत्त्व विहून देह अनुसारा। ताते जड़ नहि वचन उचारा॥
गहन ग्रास होत नहिं ताही। ताते बहु विधि बाढत जाही॥
जाको गहन गारसे काला। सो नहि बाढे बेलि बेहाला॥
अचलखानि बहुभांति सँवारी। नाना रंग रूप अधिकारी॥
कतहूँ छोट कतहुं बड भारी। कतहुं साय सरवन सुधारी॥
एक सुक्षमहै एक अस्थूला। एक अमृत एक विपकरमूला॥
एक खात पलमह मरि जाई। एकु खातकछु अवधि बढ़ाई॥
इक खट्टा इक कडुवा होई। एक मधुररस खावै सोई॥
एक विसाँइध विषके रूपा। नानाशब्द गुण भेद अनूपा॥
पाँच सदा औ पाँचौ रोगा। पाँचौ औषध पाचौ भोगा॥
पांच वास और पांच कुवासा। पांच पचीसरंग परकासा॥
पांच पानि पांचौ रहि वासा। पांचशुभ और पांच विश्वासा॥

पांच पांच सकल पसारा । पांच रंग श्वासा अनुसारा ॥
तीनितत्त्व अस्थूल निवासा । तीनं मध्य हुई बाहर वासा ॥
पांच तत्त्व सब इनके पासा । जहांलगिअपलखानिपरकासा ॥
पांच तत्त्व तीन गुण साजा । नारि एक तामध्य विराजा ॥
अचल खानिमह कीन्हे वासा । तामध्ये श्वासा रहि वासा ॥
चन्द्र सूर्य विन श्वासा हीनी । तातै खानि जड़ भई मलीनी ॥
अचल खानि ताते जड़ होई । चन्द्र सूर्य नाहि मध्य समोई ॥
नारि एक श्वासं संग नाहीं । जहालै अचलखानि जगमाहीं ॥
नारि सुषुमणअचलवट वासा । ताहि संग श्वासा रहि वासा ॥
ना घट दोई नारी नहीं होई । तातै चन्द्र सूर्य नहिं दोई ॥
इंगला पिंगला नाहिन वासा । तातेरवि शशिनाहि निवासा ॥
चन्द्र सूर्य वटके रखवारा । एहि डोलैं एहि बोलन हारा ॥
चन्द्र सूर्य विन जागै नाहीं । तातै अचल खानि जगमाहीं ॥
दुइ दिन कोइ मास मधिजाई । कोइ छमास कोइ वर्ष रहाई ॥
कोइ दश वर्ष मांह जग गाते । कोइ तीन चालिस तन बासे ।
कोइ सत्तासत्ताठि रहि वासा । कोइ सत्तरिकोई असी नेवासा ।
वर्ष इकावन कोइ तन गखा । कोइ सौ हजार कोई लाखा ।
कोइकोटिकोइ अरब निवासा । कोइ पद्म चारौ युग वासा ।
इहिविधिअचलखानिकरभावा । औषधि व्याधि रोग उपजावा ।
एक सजीवन जड़ी अनूपा । एक जड़ी विष तेज सरूपा ।

समय—कोइ शीतल कोइ तेज है, कोइ [illegible] खानि ।
फूल विना फल ऊपजे, सब फलफूल समानि ॥

चौपाई ।

इहि विधि अचल खानि उपजावा । तेहि पाछे अंडज निरमावा ॥
अंडज खानि सजीवन कीन्हा । चन्द्र सूर्य संग जावन दीन्हा ॥

त्व शिव स्वचोप उपराजा। श्वासा सहज अर्थ धुनि गाजा
ई सूर्य एक सहज घर शुन्या। तिहिं घर कर्म पाप नहिं पुन्या
इ घर इंगला पिंगला भारी। चांद सूर्य संग जीव संचारी॥
ाकी श्वासा शक्ति सुधारी। अमृत अन्नक्रमहज सुख भारी॥
ांच तत्त्व रथ साजी धारा। तापर चन्द्र सूर्य असवारा॥
ाके संग जीव उठि धावै। मन तुरंग रूप उपजावै॥
ुरंग तुरै पर होय असवारा। सूर्य स्नेह जाए चढ़ि पारा॥
ेषम सरोवर पहुँचे जाई। विष धारासों पैठि नहाई॥
ारि असनान ध्यान लौ लावै। धर्मराय कह माथ नवावै॥
ासै राय निरंजन देसा। पल मल करै ज्योतिर भेसा॥
ारण परसि भवमन घर आवै। रवि जीवहि विष आनि पिआवै
वि रथ रहै चन्द्र उठि धावै। तुरै लीला लगर पहुँचावै॥
ीव सहित शशि पहुँच्यो जाई। मान सरोवर पइठि नहाई॥
ारि असनान देव पग परशै। कामिनि देह कमलनहुँ दरशै॥
ाके वास चंद्र घर आवै। घर आवत यम ग्रहण लगावै॥
ल पल कमल कमल पहुँचावै। अंडज खानि दर्श नहिं पावै॥
ासै चरण सरोवर होई। आवत जात न लखै कोई॥
ासा नेह देह व्यवहारा। एकलाख औ सात हजारा॥
ातिक श्वासा अंडज खानी। करै कुलाहल बोलै बानी॥
त्त्व चलै जो जन एक दोई। झाझरि पाटन बसै सिल्होई॥
ाज अवाज विचारै नाहीं। भर्मत फिरै सदा भव माहीं॥
ल धरनी पल फिरै अकासा। जल थल महिमहं फिरै उदासा
ायाके बहु रूप सवारी। नानारंग वरन विष धारी॥
चञ्चल कुटिल कला मन धरहीं। नानाभांति शब्द उचरहीं॥
ार कल्पना जगमहँ भारी। नाचै गावै करै धुमारी॥

उड़ि अकाश तरुवर फलखाही । पानी उतरि पीवै जग माहीं ॥
जो चन्दा घर चंदा आवै । तो चंदा सत्य लोक सिधावै॥
मानसरोवर पैठि नहावे । विष तजि अमृत घर ले आवे॥
पुष्प द्वीप होय फिरि घर आवै । पुष्प द्वीपमहँ जाय समावै ॥
एहि विधि चंद्र ग्रहणको देखे । चंद्र अंशकी श्वास विवेखे ॥
आयु अंश श्वासा महँ पावे । तो चंदा नाहिं मूल गमावे ॥
अंश जो आयु घरहि फिरि आवै । पूरी तत्त्व सदा सुख पावै ।
उग्रह होते सुरघर आवे । तादिन चंदा मूल गमावे ॥
एहि विधि मृग सतावे काला । ग्रहण गरासि करे जंजाला ॥
उग्रह होते श्वास विवेखे । शशि औ सुर दोऊ घर देखे ॥
जहाँ पीवे पानी सब आवे । तहां दूतले फंदा लावे ॥
एक तरुवर चलकाना लावहि । एकजल पीत चुगनसँगावहि ।
एक पींजरमहँ जो आवहि । रामनाम कह सदा पढ़ावहि ॥
एक अमृत मुक्ताफल खाही । एकजलाहार फलआनि अखाही
एक जीव मारिके करे अहारा । एक जीव जीवहिके चारा ॥
एक जोनवल वजाए आधीना । एक उग्रबल ज्योतिमलीना
जीव एकसन बहुत अपारा । जहाँ देखो तहां काल पसारा ॥
श्वासा तजो आपना देहा । काम कलाते बहुत सनेहा ॥
अंडज देह महाबल भारी । वचन विचारि करे सब झारी ॥
शुभ औ अशुभ दुहौदं ताहीं । एक मधुर एक तेज सुहाहीं ॥
एक सुहावन वचन सुनावहि । एकअपावन सुनत न भावहि
तीनलोक भरि रहा समाई । ज्ञान गुमान करे सेवकाइ ॥
त्रिविध ज्ञान लीए तन डोले । ऋतुऋतु निरहकाम लिएँबोले
तजदीन नाना दशा कीन्हाँ । ताकर भेद न काहू चीन्हाँ ।

समय-एक अधीन एक कारण, एकले एके भाय।
कहुवाली जगमों कहहि सुनौ भेद निरताय॥
चौपाई।

अंडज कला अनंत सुधारा। तेहि पीछे पिंडज अनुसारा॥
कला अपार तत्त्व बहुरंगा। निरजी पिंडज भ्रमके संगा॥
पाँचतत्त्व निश वासर संगा। जाकर पहर ताहिके संगा॥
पाँचौ पाँचतत्त्वके साथी। गाय भैंस घोड़ा और हाथी॥
खर्च ऊंटनी छेरी खारी। बुहि चाही मंजारी पारी॥
सो नहीं सुवरी कीनरी भाली। माली नौरी गही ...॥
कहाँ लगी बरनौ बहुभांती। ... नरकी ...॥
पाँचतत्त्व सबहीके संगा। श्वासाके संग चले तुरंगा॥
पाँचो तत्त्व पाँच गुरुजाही। प्रीत पाँच हैं उनके माँही॥
पाँचहि कुच पाँच लोकाना। पाँच सरोवर पाँचहि थाना॥
पाँचै देवल पाँचै देवा। पाँचै करहि पाँचकर सेवा॥
पाँचो नह सर पाँच उदासी। पाँचों पाँच शून्य अविनाशी॥
पाँचों ... पाँचौ जाही। पाँचै पाँच महँ पाँच समाई॥
पाँच शून्य पाँच अस्थूला। पाँचौ पाँच पाँचकर मूला॥
पाँचोंहि होयवर एक जो आवै। पाँच पाँच तबही कहुआवै॥
पाँचौ सात राह होइ धावै। तिनहींके घर मंगल गावै॥
पाँच तीनि जब सात समावै। पंद्रह मेटि एक घर आवै॥
पाँचहि तीन सात एक धारा। पांचौ नाद ... हारा॥
पाँचौ काहे खेल अपारा। पांचौ करही एक ...॥
पाँचौ दशके माँहि समाई। पाँचौ आवहि पाँचौ जाई॥
भँवर गुफा पाँचोंकर थाना। बाजे ताल मृदंग बंधाना॥
जब पांचौ दशके घर जाई। तब दश पांचहि आनि समाई

जब दश पांच गुफामहँ आवहि। मधुरीतान अर्धधुनि गावहि ॥
कोई घंटा कोई ताल बजावहि। कोइशंखनादकोईझालरिलावहीं
कोइकिंकिनिचिंचिलिकिन्नरिबीना। कोईभेरिमृदंगऔढोलसहीना
कोई तारी कोई बेन बजावहि। रहसि रहसि नानागुण गावहीं॥
सारंग जल तरंग धुनि धारी। तबलाचहुँओर नरसिंगाडफारी॥
इहिविधि भोर गुफा धुनिगाजे। नानारंग मधुर धुनि बाजै ॥
बाजे बाजन होइ धुनि गाजा। बिजुली चमकै मोहै राजा ॥
दश औ पाँच पचीस समावै। तब धरनी धरियार बजावै ॥
पांच पचीस दश दशहि समावै। गुफाके ऊपर मुरली बजावै ॥
बाजै मुरली कला अनंता। जागि कमला सो मैं संता ॥
निर्झर झरै गुफाके द्वारा। रविशशि पाँचतत्त्व उजियारा॥
श्वासाश्वास सहज घर वासा। रविशशि पाँचतत्त्व परकाशा॥
भौंर गुफामहँ बाजन बाजै। रवि शशि श्वासा संयम गाजै ॥

साखी—नाना बाजन बाजहीं, नानारंग अपार।
मन औ जिव इकसंगहीं, अविनाशीके द्वार ॥

चौपाई।

मन नाचै पलटै औ गावै। आप नाचिके जिवहि नचावै ॥
जीव नचै अविनाशी आगे। मन जिव मिले सदा अनुरागे ॥
आनँद रूप सोई जिव [illegible]। दीसे ज्योति दीपा [illegible] ॥
मुरली बाजै निर्झर झरै। नाहीं [illegible] ॥
निर्भय सदा न जानि [illegible]। निर्भय सदा न पूजा पाती ॥
स्वर्ग नर्क औ नदीहि ताहीं। ज्योति उजागर निर्गुण नाहीं ॥
सगुण [illegible] एकै माहीं। दीसै ज्योति निरंजन नाहीं ॥
मान तीन बानी जब एका। [illegible] एकवर टेका ॥
उनमुनि [illegible] जब कर आवै। आपु २ [illegible] चहुदिशि धावै ॥

पलघर आवै पल घर जाई । पांचतत्त्व संग सदाँ सहाई ॥
पांच तत्त्व श्वासा असवारा । फिरही सहरवार औ पारा ॥
जहाँ बाहर है शहर देवाला । तहाँ पांचौतुरै फिरै चौफाला ॥
ता ऊपर आतम चढ़ि धावै । पल बाहर पल भीतर आवै ॥
पांचतुरै श्वासा चढ़ि धावै । सरवर पांच परसि घर आवै ॥
सरवर पांच पांच तहां घाटा । गली एक पर्वत दुइ बाटा ॥
पांचौ तत्त्व चलै एक साथा । रविशशिश्वासानाथअनाथा ॥
पांचौ तत्त्व घर बाहर जाई । तासंग कमल हरी उमगाई ॥
जा दिन पांच तत्त्व नहिं आवै । एकतत्त्व निश वासर धावै ॥
तादिन पांच तत्त्व गुणपावै । लखै तुरै जो बाहर धावै ॥
बाहर चाल चलत गहि लेई । श्वास सुभाव बंद तहां देई ॥
एक तत्त्व निश वासर धावै । दुसरा तत्त्व संग नाहिं लावै ॥
पांचौ तत्त्व चीन्हि जब पावै । जो बाहरचलै तासु गुण पावै ॥
पांचो तत्त्व जीव संग आवै । पल बाहर पल भीतर धावै ॥
ताकर पावै पांचो मोकामा । लेइ तत्त्व पांचोके धामा ॥
पांचो पांच सरोवर जाहीं । अमी अमान विरह रसखाहीं ॥
दुई पुहुप सुख सागर परशै । अमी अंकुरन्य सुरतै दरशै ॥
तहाँ अमीरस पीवत अघाना । रवि शशिसंग जीव निर्बाना ॥
उतपति पारस तहवाँ पावै । लै पारसफिरिघरहि सिधावै ॥
ऐसन विष एक मनहै अमाना । परसै आदि अन्त [illegible] ॥
कालि काल जोति उजियारा । तहाँ [illegible] अपारा ॥
सो नागिन घर भीतर वासा । बाहर भीतर एक निवासा ॥
नख शिख बेधि रहा विष पूरा । श्वासा संयम शशि औ सूरा ॥
पांचै तत्त्व रहे घट पाचा । पांचहि साथ जीवकर साँचा ॥
रवि शशि श्वासा संग बसावै । उत्पति प्रलय गहन लगावै ॥

दुइ घर रवि-शशिजीव बसावै । इक घर राहु केतु भच्छावै ॥
चारिउ चारि दिशा चलिजाई । फिर चारिउ एकमाँह समाई ॥
दुइ झंझरी परशि फिरि आवै । दुइ फिरि झँझरी बाहर धावै ॥
घर आवत गरेव अटकावै । राहु केतु दोई गहन लगावै ॥
जादिन पांच तत्त्व नहिं धावै । तादिन कालगहन नहिंलावै ॥
दुवो तुरै जानि कसे धाई । फोरी द्वारी बाहर जाई ॥
बाहर अमी अमान अमाया । उत्पति पारस नारी काया ॥
नारी नेह निरञ्जन काया । याते शिव शक्ती उपजाया ॥
एहि निनकुइहु धरमन भाया । नाना बानी बरन बनाया ॥
शिवकाया पति सूर्य सनेहा । ऊगे चन्द शक्तिकी देहा ॥
शिवकी देह सूर्य प्रभु साजा । शक्ती देह चन्दहै राजा ॥
रविशशि पांच तत्त्वदुइ काया । एक एक संग उपजे काया ॥
एकतत्त्व निश वासर धावै । जीवका मूल परोस सुन्यपावै ॥
तेहिकुल , पारस परवाना । लेउत्पति पारस जाय ठिकाना ॥
सन जिव तत्त्व एक चढि धावै । लै पारस अपने घर आवै ॥
पारस आनि जगावे कामा । विरह बाण मारे संग्रामा ॥
दोई तत्त्व निर्वाण उजागर । दुइ घट शिवशक्ती मनि आगर ॥
पारस एक दुवोंकी काया । चंद्र सूर्य संगही उपजाया ॥
चंद्र उंग शक्तीकी देहा । चले तत्त्व जलरंग सनेहा ॥
एकतत्त्व चंद्रघर धारा । तानेतन्त्र एकै व्यवहारा ॥
मान वार निश वासर धावै । पल पल बैठे पैठनाहिं पावै ॥
पारस परसि होइ जिव पूरा । शक्ती शशि घरशिवघर सूरा ॥
एकतत्त्व संग पारस पावै । राहु केतु नाहिं गहन लगावै ॥
तत्त्वसार टूटे नहिं पावै । विना निवनी काल समावै ॥
एकै पली एक जो धावै । तौ शक्ती नहिं पारस पावै ॥

टूटे तार तत्त्वकी जबही । काल संधि पावै घट तबही ॥
टूटे तत्त्व होय दुख कूरा । चंदहि पेली ऊँग घर सूरा ॥
धरि शशि सूर्य काल लै जाई । बांधि अकाश गर्वै फिराई ॥
चंद्र सूर्य श्वासा सहिदानी । पारस तत्त्व लेइ अस छानी ॥
पारस टूटत होय मलीना । निशवासर जीव काल अधीना ॥
पारस संगहि लेइ निचोई । छांडि देइ जब जानै सोई ॥
छिन बाहर छिन भीतर धाया । जरामरण व्यापै औ माया ॥
एकतत्त्व सँग सबै बिगोई । एकतत्त्व उदजे सब कोई ॥
शिवघर सूर्य होय उजियारा । एकतत्त्व निश वासर धारा ॥
पारस परसि होय विधि पूरा । प्रेम प्रकाश ऊँग घट सूरा ॥
एकतत्त्व चलै रवि धारा । सूर्य सिंध घट तेज अपारा ॥
शक्ती देह चंद रखवारा । चलै तत्त्व जल रंग अपारा ॥
एकतत्त्व निशवासर धावै । मानधार टूटै नहिं पावै ॥
एक समाधि रहत अस्थूला । तब शक्ती घट फूलै फूला ॥
फूलत फूल तहाँ अकुलाई । [illegible] तन रुधिर चलाई ॥
ताहि समै तन खीर समावै । शिव सनेह रचि काम जनावै ॥
ताहि समै शिवशक्ती परशै । रति रुचि असी गर्भ तहि दरशै ॥
रहै गर्भ कामिनिकी देहा । उपजै जातक बरन सनेहा ॥
पुरुष देह शशि चलै जो धारा । कन्या उपजै कला अपारा ॥
सूर्य सनेह चलै जो धारा । कन्या उपजै कला अपारा ॥
सूर्य सनेह चलै जो धारा । उपजै सूरविचार कुमारा ॥
रहै गर्भ तब काया साजै । रुधिर मांस तिलतिल उपराजै ॥
पांच तत्त्व तीनों गुण मूला । तासों रचै गर्भ अस्थूला ॥
शिवके श्वासा बाँये स्वरूपा । शक्ती गहै जानिके रूपा ॥
शिवके रूप शक्ति गहि लेई । तब सांचा महँ जीवन देई ॥

जावन जामें साचा माहा । थाका होय रुचिरके तांहा ॥
तेहि थाकाकी रचना भारी । तीन लोककी विष सँवारी ॥
तीन लोककी जेतिक खानी । सो सब थाका माधि समानी॥
उपजा थाका थाल सँवारी । गर्भभेद यह कहौ बिचारी ॥
थल थहाए माल निरमाया । महलके माहीं जलहि समाया।
जलके मध्य महल बनवाया । महलहिके मधि रचना लाया॥
महलके बार धन चढ़ छाजा । पवरि पगार बना दरवाजा ॥
सांचा अर्ज जरे नहि कबही । शोच मढिर चाहै सबही ॥
सांचा मांहि दियो रस डारी । नख शिख शोभा सबै सुधारी॥
तीनहिं लोक रचा पलमाहीं । गढ़के गढ़ पाति गासौ ताही ॥
प्रथमें सायर सात सुधारा । पर्वत अठुट रच्यो अधिकारा॥
अठारह गंडा नदी बनाई । सब तरि नीर रहा पुनिछाई ॥
अठारह सहस्र बहतरि नारा । पांचतत्त्व सब साज सुधारा ॥
लोहू हान स्तंभ अस्थूला । बाढे लिंग सवारे मूला ॥
आंग सवारे दुइ भुज दंडा । सात द्वीप पुहमी नौ खंडा ॥
बहुरि सवारे दूनो खंभा । मदन महाबल उपजे रंभा ॥
नासिका चढाई मस्तक भारा । दुइकर जोरके [illegible] धारा ॥
श्रवन नेत्र रुचि अर्थ बनाई । कोल्हा कोल्हा मर्थो नवाई ॥
नौमी कुटी [illegible] बनाई । सात भँवर नौ नाल लगाई ॥
उनर मेरु सिरजा अस्थूला । सरवर माहिं कमल बहु फूला॥
नाभि माह [illegible] करवाई । फूला फूल वास घट छाई ॥
बाहर वास तन मांह समाई । सोई वास इंद्री ह्वय धाई ॥
इंद्री रसना रंग जनाई । लिंग जल हरिसे भूमि बनाई ॥
आठो अंग रचा अस्थूला । शिवशक्ती दोऊ सम तूला ॥
सोइ अंग शक्ती सोइ [illegible] । शो एक एक सम नीवा ॥

नखशिख अंग एक अनुरागी । देह स्वभाव वचन दुइ मागी ॥
शक्ति देह विरह अधिकारी । शिव [illegible] शक्तिको चारी ॥
इहि विधि रचना रची बिलोई । गर्भ सनेह संपूरन सोई ॥
नखशिख रचा गर्भ अस्थाना । सातद्वीप नौखंड [illegible] ॥
एक दीपमें सातो दीपा । सात सुकृत [illegible] ॥
प्रथमै गर्भ द्वीप उपजावा । [illegible] रचना [illegible] ॥
एकद्वीप नौखंड बनावा । त्रिकुटी सात तहां [illegible] ॥
एक दीपमें सातों नाला । सातों कमल अधर दुइमाला ॥
सरवर सात कमल तहां साता । रंग पांच पांचौं [illegible] ॥
पांचके मध्यहि पांच रसाला । त्रिकुटीमध्य एक तहां कीला ॥
ता कीलामहँ कानी लागी । पौन सनेह आतमा जागी ॥
ता कीलामहँ लागी डोरी । खूटा गाड़ि पवन [illegible] ॥
ता खूटा महँ डोरि लगाई । मन पवना गहि राखु झुलाई ॥
झुलि मन पवन झुलावे चेरी । इक घर शून्य एकवर फेरी ॥
खूटा होय पवन झकझोरै । इंगला पिंगला सुषुमण जोरै ॥
रवि शशि मन पौना गहि जोरी । खूट न लागि [illegible] डोरी ॥
मेरु दंडपर खूटा गाडा । नदी तीन ता ऊपर चाडा ॥
खूटाकी बांई दिशिहैं गंगा । विमल शीतलबहै नीर तरंगा ॥
चंद्र सनेही जिव जल परशै । सुरति स्वरूप धनीदिल [illegible]
तासु खूटाके दहिने अंगा । यमुना नदी बहै [illegible] ॥
कीर्ति नीर औ पीत तरंगा । लहर लाल तेज विष [illegible] ॥
तहां बसै सुर जीवके साथा । [illegible] एक [illegible] साथा ॥
कला अनंत रूप रस नाथा । सबै अर्थ नाहिं दीसै माथा ॥
बांधि नदी जो दोउ करारा । शीतल तेज बहै दोउ धारा ॥
तिसरी नदीहै गुप्त प्रवाहा । ना जल थाह ना होय [illegible]

गूंदा नर होय निकरी धारा । चली सरस्वती फोरि पगारा ॥
मध्य लहरि विषधार नवानी । गंगा यमुना मध्य समानी ॥
त्रिकुटी संगम भंवर मिलावा । मनही पवन लेत विरमावा ॥
बैनकुंज माधवकर थाना । बसै त्रिवेणी प्रयाग स्थाना ॥
त्रिवेणी तट वसै प्रयागा । जागत सोवै भाग अभागा ॥
गनि गंधर्व मुनि सबके थाना । सुर नर करैं पैठि अस्नाना ॥
तेतिस कोटि देवगण नारी । किन्नर गुणी कंचनी भारी ॥
यक्ष यक्षनी देवकुमारी । नागसुता अप्सरा सुभारी ॥
चढि विमान सब करहिं जोहारी। कायामध्य इह अद्भुत भारी ॥
अनुदिशाचचारिस्वानिजुलाहल। त्रिवेणी तट करी कुलाहल ॥
यक्ष रक्ष असुर सब देवा । बसे ग्राम करैं माधवसेवा ॥
तीन लोक जन जीव निवासा । सो सब करे त्रिवेणी वासा ॥
तेहि त्रिवेणी तट माधो देवा । सब मिलि करैं ताहिकी सेवा ॥
तब प्रयाग छोड़ चढि प्रवाहा । गंगा सागर संगम जाहाँ ॥
देश देश गंगा फिरि आई । घाट घाट बहु क्षेत्र बनाई ॥
तहाँ तहाँ तप ध्यान लगावै । योग यज्ञ व्रत प्राण नहावै ॥
ऋतु बसंत यागहि धावहि । मकर महीना बजारलगावहि ॥
अरध उरध बिच लागी हाटा । भीतर बाहर औघट घाटा ॥
गर्भमाहिं सब युगति बनावा । तीन कचहरि तहाँ बसावा ॥
जहाँ नदी संगम परवाना । तहँवा रचा एक अस्थाना ॥
संगम बीच गुफाके तीरा । सातहि द्वार गुफामहँ बीरा ॥
एक द्वार होय शब्द सुधारै । एक द्वार होय रूप निहारै ॥
एक नासिकेश्वास बसावै । एक द्वार होय अन्न समावै ॥
एक द्वार होय स्वाद सँवारै । एक द्वार होय न्याय निवारै ॥
सात द्वार होय नाद उचारै । सत्य सुकृतकी रहनि विचारै ॥

सात नाल चौदह सुरभाऊ। सातो करहि एक सुभाऊ॥
सातो सात शून्य मह वासा। सातो वसे गुफाके पासा॥
गुफाके मध्य कंदला वासा। तहां सातोमिलि करे निवासा॥
एतिक कुंज द्वीपकी शोभा। आवागवन मोह मद लोभा॥
कूंज भवरकी रचना भारी। शून्यमहजधुनिसकल सुधारी॥
अग्र नाल अमरकी डोरी। शोभानाल होय विपरन्त योरी॥
दुवहु नाल कैसे के सोरी। एक सुखवंकनाल मह जोरी॥
कुंज द्वीप रचि सुघर बनावा। नेह अमर पद क्षीर भनावा॥
सुघर दीप परेनाभि सँवारा। नाभी मंडल पौन किवारा॥
पौन धार नाभी रस कीला। मध्य सरोवर जंबू शीला॥
जंबु द्वीप यम करहि स्थाना। ताहि द्वीपमहि जीव सुखाना॥
नाभि द्वीप रचि कच्छ वनावा। इंद्री आसनको रंग सुभावा॥
कच्छ कला निज द्वीप सुधारा। ऋतु वसन्तजावन विस्तारा॥
कच्छ द्वीप काशी अस्थाना। नरनारी हि करे अस्नाना॥
वरुणा असी गंगके तीरा। मनि कार्णिका निर्मल नीरा॥
लिंग जलहरी मांहि समाना। नर नारि पूजही धर ध्याना॥
पूजहि कामिनीमंगल गावहि। न्हानिन्हानि लिंगही न्हवावहि॥
अक्षत चंदन विल्व चढावहि। धूप दीप दे तत्त्व लगावहि॥
भामिनी भाव फूलरंग धरही। करि असनान वसन सुइधरही॥
सोइ वसन नर नाटक माँही। काशी तेहि वसनकी छाँही॥
सोइ वसनकी वास उडानी। योग भोग छलकी सहिदानी॥
बसन कुसुम दल ध्वजा उड़ाई। कच्छदीप शिव शिव शरनाई
कच्छ द्वीपे रचा रस कोपा। लिंग जलहरी घर घर रोपा॥
कच्छद्वीप शिवको अस्थाना। शक्तिमाँहि शिव आपसमाना॥
शिवशक्ती रंग रूप रसीला। शिवसमान शक्ती गहिलीला॥

गर्भ सनेह रचा जब द्वीपा । लिंग जलहली सदा समीपा ॥
कच्छ द्वीप रचि पूरण कीन्हाँ । पाछें पच्छ द्वीप पग दीन्हाँ ॥
पच्छद्वीप रचि रंग बढ़ावा । रंग रोसहै बिरह स्वभावा ॥
प्लक्षद्वीप रचि पच्छ पसारा । प्लक्ष द्वीप रचि गर्भ सुधारा ॥

सम्य–कच्छद्वीप तट पच्छ द्वीपहै, कच्छ प्लक्षकर भाव ।
दुनों द्वीप कर एक कला है, रंगरोप कर दाव ॥

प्लक्षद्वीप रचि गर्भ सभागा । पाछै मीन द्वीप बिस्तारा ॥
[illegible] बाहर सुधारा । द्वीप वही कच्छके द्वारा ॥
बाहर द्वीप रचि पूरण कीन्हा । पाछै मीनद्वीप पग दीन्हा ॥
मीनद्वीप रस कंज अमाना । करहि कुलाहल द्वीप समाना ॥
मीनद्वीप रचि प्रकटी माया । पूरण भई गर्भमहँ काया ॥
मीन द्वीप तनको व्यवहारा । चमकै चपल ज्योति उजियारा ॥
चलो निकुर चित्र कल्याणी । कामिनि दमकै बलके बढ़ानी ॥
मीनद्वीप मन मदन महीपा । सुख दुख सोग रोग मन दीपा ॥
मीनद्वीप रचि पूरण कीन्हाँ । पाछैं सुधाद्वीप पग दीन्हाँ ॥
मीनद्वीप सुख अमृत लीन्हाँ । पाछे सुधाद्वीप पग दीन्हाँ ॥
[illegible] सुख अमृत नेहा । चक्रसुदर्शन द्वीप उरेहा ॥
[illegible] द्वीप निर्माना । सुधा[illegible] सत्य सुकिहि साना ॥
सुद[illegible] पनि गुण आगर । [illegible] परम गुणसागर ॥
सातो द्वीप रचा निर्माना । कायाब्रह्म भया बंधाना ॥
[illegible] परकासा । कमलध्यान प्रकटी चहु पासा ॥
[illegible] मकाद्वीप [illegible] । [illegible] कमल [illegible]बनावा ॥
उमग कमल [illegible] जाना । लाख पंखुरी दलकी अनुसारा ॥
मकर तार डोरी तहां लागी । दरशै सुरति सदा अनुरागी ॥
दूजे [illegible] निरमावा । कमल कूर्मतहि माहि बनावा ॥

ताकी डोरी सुन्नसम देखा । कमलनालके मध्य [illegible] ॥
तीजे द्वीप लंबनी नेहा । धर्मकमल तेहि मांहि सनेहा ॥
ताकी डोरी अग्र सनेहा । अग्रनाल तेहि मांह उरेहा ॥
चौथे द्वीप झांझरी कीन्हाँ । कूर्म कमल [illegible] ॥
ताकी डोरी सहज स्वरूपा । चमके धार तार अनूपा ॥
पांचए झिलमिल द्वीप संवारा । ताके कमल कुसुम [illegible] ॥
ताकी डोरी धुआंके नेहा । अंधकार अकार उरेहा ॥
पांचौ द्वीप अर्ध गहि वासा । पांचौ कमल ता ऊपर वासा ॥
पांचौ कमलमें प्रतिमा पांचा । लागी डोरी अर्ध धर सांचा ॥
कोई लक्ष कोइ ऊत वनावै । कोइहजार कोइ [illegible] ॥
कोई कमल पंखुरी सांचा । डोरी अर्ध पांचहुँके पांचा ॥
ब्रह्मद्वीप घरमांहि निवासा । [illegible] परकाशा ॥
प्रथमहि अमी कमल निरमावा । अमी अमान [illegible] ॥
तहवां होइ श्वास गुंजारा । वरसै अमी अखंडित धारा ॥
अमी अमोल अर्ध गहि वासा । श्वासासार पुहुप परकासा ॥
निश वासरको जानि मूला । [illegible] तूला ॥
निश दिन होय श्वास गुंजारा । सातसै ग्यारह साठ हजारा ॥
अमी कमल अमान सो नाला । अठ्ठाइदल पंखुरी रिसाला ॥
तेहिमहँ चले पवनकी धारा । श्वासा साथ शब्द गुंजारा ॥
निश वासर श्वासा विस्तारा । छःसै अर्व इकीस हजारा ॥
उनतालिस हजार एकसै आवै । एतिक [illegible] धावै ॥
दुइ दल कमल है श्वासा आवै । इकइस हजार छःसै धावै ॥
वाइस हजार चारिसै ऊने । जाप जपै जिव आप विहूने ॥
एतिक श्वास दोइ दलमें आवै । पल वाहर पल भीतर धावै ॥
दूसर कमल झलाझलमाँहा । झलकै ज्योति अर्धधुनि ताँहा ॥

सहस्र पंखुरी कमल अनूपा । तहां बसै मनज्योति स्वरूपा॥
ताहि कमल पर बाजन बाजै । बानी अधर मधुरधुनि गाजै ॥
कूर्मकमल मकरंदी राजा । तहां विराजत शोभित साजा ॥
तहां घरनि घरियार बजावै । घरी घरी टंकोर लगावै ॥
दश और पचहत्तर श्वासा । इतना एक घरी परकासा ॥
गनिकश्वासा सहज घर आवै । तहाँ घरनि घरियार बजावै ॥
छसै पचहत्तर की सहदानी । एक टकोर ठोकावै जानी ॥
इहि विधि चारि टकोर टोकावै । ताकर भेद सन्त कोइ पावै ॥
राहु केतु सँग ख्यालिनि रोकै । ताको मर्मकोइजानि अलोकै ॥
एक पहर मारै विधि पूरा । गहन गरासै शशि औ शूरा ॥
गहन गरासन निरखै श्वासा । रवि शशि राहु केतु परकाशा ॥
ताहि संग एक नागिनी रहै । घड़ी घड़ी वह जीवही गहै ॥
श्वासासेंहरगस गहन गरासै । आगम जानिके जीवहि त्रासै ॥
श्वासा सोरह गहन लगावै । छठये मासहि काल सतावै ॥
श्वासा परेख घरीकी राखै । दमहि चलै सो आगम भाखै ॥
गहिविधिश्वासचलैपुनिजबही । दुइ हजार सातसै तबही ॥
पुंज चारि पूरण होय जबही । पहर कटोर मारै पुनि तबही ॥
गनिक श्वासा पहर प्रमाना । घरि चारि गरज बंधाना ॥
आठ घरी दुपहिर जब आवै । टोंक गजर गहन नहिं लावै ॥
चारि घरी चारिउ युग मूला । चारि पहर चारिउ समतूला ॥
चारिउ युग एक पहरके माही । चारि पहर चारि युग ताही ॥
प्रथम पहर सतयुग परवाना । ताकर प्रथम घरी निर्वाना॥
सतयुगमें युग चारि अपारा । चारिउ युगको नाम निरारा ॥
प्रथमहि सतयुग रोपे थाना । चारों युगनेहि माहि समाना ॥
सतयुग प्रथम घरी निर्वाना । कीलक युग तेहिमांहिसमाना॥

कीलक युगकी श्वासा सारा । छहसै सत्रे पाँच. सुधारा ॥
एति श्वासा कीलक युग माही । परमै जीव अधरकी छांही ॥
बीतत घरी गजर घहराई । काल टकोरा मारै धाई ॥
इह युग अंत कहावै घरी । नासिनि ग्रामे सन्मुख खरी ॥
प्रथम कीलक युगहोय संघारा । पाछै युगका मन विस्तारा ॥
सतयुग धारि दूसर जब आवै । तेहि श्वासा कमत युग पावै ॥
कमत युग होइ क्रोध बरियारा । उत्पति थोर बहुत संघारा ॥
कमत युगकी श्वासा जानै । छःसै सत्रह पांच बखानै ॥
एतिक श्वासा कामत युगमाहीं । गुणअवगुणदोउनिरखैकुनाहीं ॥
बीतत कामतक मोद युग आवै । तिसरी घरी बासना धावै ॥
आवा गौन विचारै कोई । युग कमोद सुख पावै सोई ॥
तिसरी घरी सतयुगके आई । तब कमोद युग होय सहाई ॥
युग कमोद सतयुग महं आवै । दुखी सुखी नर सब बुझावै ॥
युग कमोदकी परलै होई । दुखी सुखी जानै सब कोई ॥
तब जो होइ सूर्य संचारा । महाविरोध उपजै अधिकारा ॥
चंद सनेह होय जो हीना । महासुफल तन होय मलीना ॥
श्वासा चलै सातसै भारी । युग कमोदकी कथि विस्तारी ॥
युग कंकवन कि होइ प्रकासा । अतिही दुर्ज विषयकी त्रासा ॥
चौथी घरी क्रोध बेकारा । महा कठिन होइ ताकी धारा ॥
चौथी घरी निकट जब आवै । सतयुग अंत कंकवन पावै ॥
सतयुग अंत होय नहिं पावै । युग कंकवन आय शिरनावै ॥
युग कंकवन काल बरिआरा । कायाके बहु करै विकारा ॥
काया कहर गरासै आई । तब न भेद मैं कहौं बुझाई ॥
काया कहर हो परचंडा । नख शिख व्यापि रहै नौखंडा ॥

युग कंकवत कालकी वानी । कालकला मति सवदिनजानी॥
युग कंकवत महावल योधा । अंतकाल सतयुग पथ सोधा ॥
सतयुग अंत कंकवत मांही । अंतकालकी व्यापै छांही ॥
युग कंकवत मोहकी खानी । काम क्रोध ममता लपटानी ॥
अंतकाल सतयुगकर भयऊ । चारिउ जग परलैतर गयऊ ॥

समय-एकहि युगके बीते, चारों युग भए नाश ।
एकनद चारिउ युग खाए,सतयुग कीन्हगरास ॥

चौपाई ।

कीलक क्रमोद चंद सनेहा । कमत कंकवत सूर्य सनेहा ॥
भाजुग अंत एक संग चारी । चारि शब्द एक नाद संचारी॥
एक नाद एक पहर कहावा । चारि घरी तेहि माँहि समावा ॥
चारि घरी चारिउ युग बीते । शब्दनाद रवि शशि धर जीते॥
सतयुग अंत बाजु घरियारा । त्रेता युगकर भयो विस्तारा ॥
दुसरे युगकर भयउ विशवासा । दुसरे पहर तेज परकासा ॥
तेज लगन श्वासा रहि वासा । ताते दूसर युग परकासा ॥
त्रेता युगकर भा अनुसारा । त्रेता युगहिते व्यवहारा ॥
त्रेता युगकी पंखुरी चारी । चारि घरी युग चारि विचारी॥
जैसा युग सतयुग महँ देखा । सोई गति त्रेतामहँ लेखा ॥
जब जब अंत होइ युग केरा । तब तब नाद काल घन घेरा॥
त्रेता युगमहँ कला अपारा । योगव्रत तीरथ आचारा ॥
प्रथम घरी होय क्रोध अपारा । अहंकार अभिमान पहारा ॥
ताकर नाम चिता युग राखा । चित चंचलचकितअभिलाषा॥
चकितयुगअलोप जब भयऊ। ठोकि टकोर नाद तब कियऊ॥
होत नाद सूनु अंधा धावै । लागत पलक मलक नहिंलावै
चकित युग बीती जब गएऊ। तेहि पाछे बुद्धी युग भयऊ ॥

बुद्धी युगकी बुद्धि अपारा । तायुग महाकाल बरियारा ॥
ज्ञान गयँद होइ असवारा । बुधि युगभान फोरे महिभारा ॥
बुधिक बधिक बाँधि करेकसाई । विषै चतुगई कुमति समाई ॥
एही विधि बुधि युग चलिजाई । तेहि पीछे मन बरते आई ॥
मन मतंग महामद माता । तेज तपस्या व्यापै गाता ॥
मनयुग ऊंच नीच मनलीला । बरषे झारी विषको शीला ॥
मन युगकी श्वासा बहुरंगी । ज्यों जलमध्ये उठै तरंगी ॥
मन युगराज बीतिगा जबही । अहंकार युग उपजा तबहीं ॥
अहंकार युग अंत समाना । मरै पतंग हार नहिं माना ॥
हारै नहीं आपु अहंकारा । गरजै कुच्छ हारे सुख भारा ॥
अहंकार युग श्वासा ऊनी । गरजि घुमड़ि बरषै फिरि सूनी ॥
अहंकार उद्वेग अपारा । श्वासा हीन तत्त्व छिन धारा ॥
अहंकार युग बीते जबही । त्रेताकी परले भइ तबही ॥
त्रेता अंतकाल जब कीन्हाँ । आधी निशाटंकोर जो दीन्हाँ ॥
आधी राति नाद घन बाजा । महा निशान मेघ जनु गाजा ॥
त्रेता आदि अंत व्यवहारा । उपजा द्वैवा परकला अपारा ॥
द्वापर युगकी कला अनंता । सुखदुखमध्य आदि दुखअंता ॥
प्रथम घरी द्वापरकी आई । अर्थनाम युग महा समाई ॥
अर्थनाम युग द्वापर माहां । अर्थ अहर्निश व्यापै ताहां ॥
अर्थनाम युग घरी समाना । घरिकै बीते युग क्षय माना ॥
एक युग बीते दूसर आवा । धर्मनाम युग तहीं धरावा ॥
धर्मयुग धरनी धरु साँचा । श्वासा छहसै सतरी पाँचा ॥
धर्मदार औ धीर तुरंगा । धर्मयुग रोग वियोग सुरंगा ॥
धर्मनाम युग बीते जबही । गहर काल युग बरतै तबही ॥
गहरकाल युग कहर कमाई । रवि रथ बीच ध्वजा फहराई ॥

गहर टंकोर जब धरनी मारा । गहर कहर रस ज्ञान अपारा ॥
गहर यम युग बीता जबही । मोक्ष महाबल उपजे तबही ॥
मोक्ष नाम जग सत्य सुरंगा । निमिष लक्ष दल सात तुरंगा ॥
मोक्ष नाम युग बीति जब जाई । द्वापर युगकी परलै आई ॥
जब परलै द्वापरकी होई । आदि अंत सब जाय बिगोई ॥
द्वापर अंत त्रिगुणबल भारी । दुःख प्रचंड सुख सबै खुवारी ॥
बीता द्वापर कलियुग आवा । कलियुग कालकलाके भावा ॥
कलियुग महँ युगचार समाना । चारिउ युगको करैं बखाना ॥
चारिउ युगकी अर्थ कहानी । बिन परचै सब यमकी खानी ॥
सतगुरु बिना न होय मिटाऊ । चारिउ वर्ग कालकी दाऊ ॥
चारि वर्ग युग चारि बँधाना । कहो भेद सुनु संत सुजाना ॥
प्रथमहि युगकर चेतन नाऊँ । चेतनि चिन्ता करै सब ठाऊँ ॥
चेतनि युगमहँ चिन्ताके धामा । चिन्ता करै दुनी विश्रामा ॥
चेतनि चिन्ता करै सब ठाऊँ । महा बलीहि श्वास सुभाऊँ ॥
तीनहिं ताप तपै ब्रह्मंडा । भरमि भूत व्यापै नौ खंडा ॥
भर्मित पौन भर्मकी खानी । भर्म हाथ सब दुनी बिकानी ॥
कोटि पढ़ै गुनै संसारा । बिनसतगुरु नाहिं चित्त सुधारा ॥
सतगुरु मिलै होयभ्रम तूला । तेहि पाछे उपजै निर्मल मूला ॥
दोसर युग बुद्धी बलनामा । शुचीअशुची करै जो कामा ॥
ताकी संख्या बहुत विचारा । छःसै सत्तरि दंड पसारा ॥
पाँच दंड वाकी रहि वासा । ताका भेद काल परकासा ॥
बुद्धि कुबुद्धि दोउ कर भाऊ । एकहि युग दोउ रहनि बताऊ ॥
बुद्धिहीन मैं मत पसारा । बिनु आँकुशनाहि होत सुधारा ॥
अंकुश देइ मिलै गुरु पूरा । मोह महामद निरहोय दूरा ॥
बुद्धि नाम युगकी सहिदानी । सुमति संनद सुगति लपटानी ॥

बुद्धि नाम युग पारस सनेही। चित अभिमान रहे नहि देही॥
बुद्धि नाम युग बीते जबही। इच्छा राशि गगमै तबही॥
इच्छा युगकी अकथ कहानी। सुनहु संदेश कहो सहिदानी॥
इच्छा आदि पुरुषकी काया। तासु नेह सब लोग बनाया॥
सो इच्छाहि जीवन नेहा। रही समाय जहाँ लौं देहा॥
तायुग माही विषय विकरारा। ज्ञान न उपजै भर्म पसारा॥
तायुग माहि धरै नहि धीरा। लालच लोभहि व्यापै पीरा॥
इच्छा युगकी अटपट डोरी। शहर सँचार होय निश चोरी॥
जब जब इच्छा युग विस्तारी। काया कष्ट होय दुःख भारी॥
तायुगकी बाकी भुगतावै। दृष्टि नाहिं अदृष्टि दिखावै॥
अन्न अहार करै जब कोई। इच्छा युग तब पुरण होई॥
तासे युगकी दूसरि धारा। सतगुरु मिलै तो होय उबारा॥
सतगुरु शरण अमर पद पावै। इच्छा समय दूरि बिसरावै॥
इच्छा युगकर तार पसारा। लाज महाबल तजै विकारा॥
सातो दंड इच्छा कर सावा। दंड पाँच सातहि विसरावा॥
पांच शून्य इच्छाकर साथी। मद माते जस मंगल हाथी॥
तासु नेह संयम जब पावै। इच्छा मेटि गगन बिसरावै॥
इच्छा युगकी एतिक बानी। सतगुरुमिलै तो होय छुटानी॥
जाहि देह सतगुरु बीरा। ताकह काल देइ नहिं पीरा॥

समय–कालज्ञान व्यापै नहीं, इच्छा युगके माहिं॥
सतगुरुसो परिचय करै, परसै नीरगुण नाहिं॥

चौपाई।

चौथे युगको करौं बखाना। धर्म महाबल माह समाना॥
अभय तरंग ताहि युग नामा। संशय रहित सदा विस्रामा॥
तेहि युग माहि सरब सुख होई। अहंकार व्यापै नहिं कोई॥

तोहिपुर माहि सुधाकीखानी । बोलै धीर मधुर धुनि बानी ॥
झीनी रंग तारंग विराजै । नाना नाद अर्ध धुनि गाजै ॥
सातों द्वीप होइ उजियारा । दामिन दमकै शहर मझारा ॥
वन औ वृक्ष सवन सब होइ । सदा वसंत खेलै सब कोई ॥
षट ऋतु महा एक सम तला । एकै बानी एक अनूला ॥
साहब सेवक एकै होई । सदा वसंत खेलै सब कोई ॥
साहब संत लखै सब कोई । साहब सेवक लखै न दोई ॥
(एकै वास बसै सब कोई ।)
साहब सेवककी एकै शोभा । चीन्हि न परै अंगकी ओभा ॥
साहब सेवक वरन दुहेला । एकै वरण गुरू औ चेला ॥
जैसे फूल वास कह तोरी । पाछे फूल वास गहि जारी ॥
पाछे फूल शोभाकों देही । तिल तजितेल वास गहि लेही॥
विना भेद जीव होइ अंधेरा । पाछे परै कालकी घेरा ॥
सीख विना गुरु छुटे नाहीं । फिरि फिरि परिहै औचक माहीं॥
गुरु सुवासहै फूल सनेही । सीख स्वरूप आमिका देही ॥
गुरु विन कौन उतारै पारा । कठिन कालहै औजल धारा ॥
साखी—बिन सतगुरु नाहिं बाचै. फिरि बुडे नाहि माहि ।
भवस्वामीके त्रासते. गुरुकी पकरो बांहि ॥
चौपाई ।
युगल संतकी कला अपारा । विना भेदको करै विचारा ॥
जस तरंग जलमाह विराजै । ऐसे शब्द शीश पर छाजे ॥
मन मकरन्दीके गुण ऐसा । कीटके वासे विषधर जैसा ॥
अग्नि शीत काया कह डाढै । सागर मांझ दून होइ चाढै ॥
पर्वत मारि उडावै छारा । पुहुमी मेटि करै मसि आरा ॥
सूर्य मेटि सब किरनि बन्सवै । पवन बाँधि काया दिखलावै ॥

पानी बाधि अग्निको डाहै । पाला मेटि गरमि नहि चाहै ॥
तीन लोककी जेतिक खानी । करै वास सबकी रहिठानी ॥
विष दारुण विषयावसि होई । मारै मरै जियावै सोई ॥
जो चाहै सो सबै बनावै । मनकी कला हाथ जो आवै ॥
मन भूखा औ मनै अघाना । मनै पियासाकर जल पाना ॥
मन सूरा मन कायर हीजा । मनै विरह विरहिन मन भीजा ॥
मन दारुण मन कही सियारा । मनै तास औ मनै पियारा ॥
मन राई मन. राउ कहावै । मनै विना मन हाथ न आवै ॥
मन बाहर मन सबके माहीं । मनते भिन्न कोउ जग नाहीं ॥
मन सर्वज्ञ चराचर माहीं । मनते करता दूसर नाहीं ॥
मनही देइ मनहि पुनि लेही । मनवासि काम लहरि वमसोई ॥
मन लोभी मन कृपणी होई । मन उदार मन दाता सोई ॥
मन पापी मन अघ जो होई । मनै भक्ति करि तारै सोई ॥
मनै लेख मन करै अलेखा । मनही स्वर्ग नर्कको लेखा ॥
मनहि मरै मन नरकै जाई । मन वासि जीव सदा पछिताई ॥
करता जीव रंग मन आहीं । शोभा सकल रंगके माहीं ॥
रंगदेखि सब जगहि भुलाना । रंगरूपको एक ठिकाना ॥
बिना रंगरूप होई फीका । रंगरूप मिलि देखिय नीका ॥
नीक देखि सब शीस नवावै । निरखि देखिकै शीस डुलावै ॥
नीकै लागि रहा सब कोई । अनहम नीक मनैन होई ॥
ताते इह मन कर्ता भाखा । तिरगुण डोरि बांधि जगराखा ॥
मन हर्षित होय गावै गीता । मन उत्कंठ मन कहै पुनीता ॥
मनखोजी मन वादी होई । मनै गुरू समुझावै सोई ॥
मन बारै मन आनि जुड़ावै । मनमलीन दशहु दिशि धावै ॥
मन अज्ञान मनै सज्ञाना । मनकविना मन चतुरसजाना ॥

मनछंद धरि भाषा बोलै । मन अस्थिर मन चंचलडोलै ॥
बनै ध्यान धरि वेद बखानै । मनैं नवोढ़ा करन बँधानै ॥
मन षटचक्र मन विप्र बंधाना । मनके सकल रूपहैं ठाना ॥
मन नट नाटक महा समाना । मन घट सबै कथै अभिमाना॥
मनहि अठारह पढ़ै पुराना । मन मन कहि समुझावैज्ञाना॥
मन चउदह विद्या अधिकारी । मन त्रिकुटी महँ लावै तारी ॥
मनकीज्योति सकल उजियारी । मनकी छाया मन अधिकारी॥
मनहीसों सब सरहीं काजा । मनहै सातद्वीपको राजा ॥
मन बिनु सरै न एको काजा । मनके ऊपर मनहिं विराजा ॥
(मन नवखण्ड दशहुँदिश गाजा ।)
सतगुरु सीख मनहिंको कीन्हा । मनते भक्ति मनते पथचीन्हा ॥
मनमानै तो सबै बनावै । मन बिनु पंथसो कौन चलावै ॥
मन चीन्है तो मनकहँ पावै । बिनु मन सत्यशब्द नहिंआवै॥
मन चीन्है तो सब वश होई । बिनु चीन्हे सब जात बिगोई ॥
तीनलोक जो बाहर भाखा । सो सब आनि देहमें राखा ॥
मन चीन्है तो हाथहि आवै । तीनहि लोक देहमें पावै ॥
जो बाहर सो भीतर पावै । तीनलोक पलमांह दिखावै ॥
तीन लोकते बाहर बासा । मन चीन्है तो होइ प्रकासा ॥
जब लगि मनको अंत न पावै । तौलगि इहमन हाथ न आवै ॥

साखी—तीनलोककी देहमहँ, राम राम मन ध्यान ।
बिन सतगुरु नहिं पाइये सत्यशरण निजनाम ॥

चौपाई ।

सातद्वीप काया अस्थाना । सातों द्वीप कमल बंधाना ॥
नाल सात रसना गति देहा । सातों सुरकर एक सनेहा ॥
तहांको भेद हंस जो पावै । दुविधा दूर मति सबै गंवावै ॥

पाँवै भेद करै विश्रामा। पल पल परशै निर्गुण नामा॥
आवत जात वार नहिं लावै। परमे नाम अमरपद पावै॥
नाल सात सुर एक ठिकाना। ताके निकट हमेके थाना॥
नदी तीन बाढी गम्भीरा। साम तहां गोफाके तीरा॥
तहां बैठि अजपा लौ लावै। रोम २ की सब सुधि पावै॥
रस औ बिरस तहांकर मेला। होत बसन्त गुरू तहां चेला॥
गुरु समाधिमहं अटल प्रमाना। चेला अग्रवास महं साना॥
चेला बास गुफामहं करई। पल २ सुरति शब्दपर धरई॥
त्रिगुण तेजकी दीखै काया। दामिनि दमकि झकोरै बाया॥
जो गुरु मिलै तो पांजी पावै। विनु पांजी विचही भटकावै॥
पांजी पावै सुरति सनेही। पूरण तत्त्व चलै जब देही॥
करै चंद्र तापर असवारी। प्रीती पूरण जागै सुमारी॥
प्रेम पियाला तहवां पीवहिं। निशवासरचित आनंदजीवहिं॥
चेतानि चेत होय बल जोरा। जागत साह न मूसत चोरा॥
श्वासा चारि लगनकर भावा। जब उपजै तब संगहि आवा॥
चारि लगन दुइ भाव अपारा। उपजै विनशै क्रम व्यवहारा॥
एक लगन संग उपजै काया। एक लगन बहुसुख समाया॥
एकलगन दुख दारुण होई। शब्द गहै नाहिं दुर्मति खोई॥
एकलगन संग उपजै काया। एकलगन बहु सुख समाया॥
एकलगन दुख दारुण होई। शब्द गहै नाहिं दुर्मति खोई॥
एक लगन संग उपजे काया। मोह महामद विषकी छाया॥
विलसत उपजत सब जीव जाई। ना गुरु मिलै ना अर्थहि पाई॥
चारि लगनकर नाम निराला। दुइ सुक्ती दुइ काल कराला॥
उत्पति संग सुधाकी छाया। दुखदारुण होइ तेजै काया॥

जे मुनि लगन सँवारे वीरा। उत्पतिके सँग तजे शरीरा॥
वाकी जवानिकाल लखि राखा। मेटै अंक कालकी शाखा॥
उतपति होत लिखे यमराया। सो सब दीसे नरकी काया॥
सातों द्वीप लखे महिदानी। शामिल वाकी कर्म निसानी॥
जौतक श्वास चलै नर देहा। ताकर जानै सबै सनेहा॥
दम विस्तार लिखे सब दाऊ। पाछे करै करेजे घाऊ॥
द्वीप द्वीपपर अंक चलावै। करपग परलौ प्रकट दिखावै॥
चौरासी लक्ष योनिनकी धारा। नरकी देही तें कर्म अपारा॥
चौरासीकर पातक भारी। नरकी देह सब लिखे बिचारी॥
कर पाछे शामिल लिखि राखै। वाकी अंक मध्यमें भाखै॥
जमा शीसपर लिखै बिचारी। नित उठिके न्यावे निर्वारी॥
सातो द्वीप सुधारे रेखा। ऐसा यमकर बरवस देखा॥
करमत्र चारि अंक लिखि देई। पाछे सबसों निरणै लेई॥
रेखा इत्यादि लिखै विप पूजा। लछमन मसा लिखै तिल गूँजा
चक्र लिखै औ आपाद्रि बासे। सांधि लिखै जीवन कहँ फाँसे॥
नखशिख लिखै कर्मकी खानी। गुण औगुण नाहिं मेटे जानी॥
जाहि द्वीप जस अंक लिखावै। तहाँ तहाँ तस चाल चलावै॥
रवि शशि अंक दोउ लिखि लेई। पाछे दोप जीव कहँ देई॥
श्वासा स्नेह लिखै महिदानी। पापपुण्य भुगतावै जानी॥
जेमुनि लगन होय उतपानी। लगन केतुकी सबकी हानी॥
दोऊ लगन साधे शशि सूरा। पावै सतगुरु हाल हजूरा॥
जो गुरु मिलै तो मेटै गारी। बिन सतगुरु सब यमकी बारी॥
सतगुरु बिना न होय उबारा। केतो ज्ञान कथै संसारा॥
जप तप योग यज्ञ व्रत पूजा। काल सनेह और नाहिं दूजा॥

ाप साधै रहसे मनमाहीं । काल कर्मकी लखै न छाहीं ॥
वेद्या वेदकी करै उचारा । कर्मवश जीव भये यमचारा ॥
जबलगि हृदय शुद्ध नहिं होई । तब लगि पार न पावै कोई ॥
जाही लगन तक जग लेही । ताही लगन तजै जो देही ॥
सो जीव उतरि जाय भौ पारा । नहिं तौ अटकि रहै संसारा ॥
कालहि बश जो तजै शरीरा । ताकह काल देइ बड़ पीरा ॥
लगन केतुकी होय न न्यारा । पाछे लेइ गरभ औतारा ॥
नर्क खानि भुगतै चौरासी । धरी काया बांधै विषयासी ॥
सतगुरु विना लगन नहिं पावै । अंतकाल यम धोखा लावै ॥
जीवत कथै बहु ज्ञान अपारा । काल चतुराई छंद पसारा ॥
कर्मकी बंसी सब जीव फाँसै । हर्ग न मानै आनै हासै ॥
तादिन भूलि है सब चतुराई । जादिन काल धरै तन आई ॥
मूरख चतुराइ सहज भैलाना । छोटे बड़े मरम नहिं जाना ॥
ताते सतगुरु खोजहु भाई । जाते कर्म भर्म मिटि जाई ॥
लगन केतुकी देह बहाई । बाकी सबै कालकी जाई ॥
जे मुनिजन तजैं शरीरा । गहै न काल विषयके तीरा ॥
कागद करि जाए भवपारा । मेटै यमकर सकल पसारा ॥
संतगुरुसेती चाल गहि लेई । ताकह काल दगा नहिं देई ॥

समय—काल दगा सब मेटिकै, उतरहु भवजल पार ।
यमकी चाल विचारिकै, बहुरि न हो औतार ॥

चौपाई ।

धर्मदास आगे सुनि लेहू । जीवन वाह जानिके देहू ॥
जाको होइ मत्स्यको रेखा । नखशिख देखहु अंगनिरेखा ॥
चतुर शील दोउ निरखेउजानी । करपर देखहु भक्तिनिशानी ॥
शंख चक्र कर देखेहु थाना । लक्षण जानि सुपारेहु पाना ॥

बोलै मधुर शीलकी बानी । तेहिनन होय ज्ञानकी खानी ॥
दहिने ग्रीव ममा जो होई । शब्द विवेकी जानेउ सोई ॥
खंभज होय जाहि कर माहा । यश विस्तार ज्ञान अवगाहा ॥
पलक पसार छत्र जो होई । लोक निशानि अंश जनु खोई ॥
नासिका नेह होय जो मासा । कुटिल कठोर रोग तन वासा ॥
बेरनीपर जो गुंजा गूँजा । तामस तेज विषयको पूजा ॥
कानह पन्दनी एचा तानी । कुवजा गाडर विषकी खानी ॥
मुख चतुराई हृदय कठोरा । बोले झीन क्रोध बल जोरा ॥
इन जीवन जनि बोधहु जानी । अंतकाल पुनि होवै हानी ॥
नारी नेह विचारहु जानी । देखेहु देह द्वीप सहिदानी ॥
राजगुंज निरखेहु अनुहारी । कर पग शीस लक्षहि बिचारी ॥
चंचल चाल पोल होय पाऊ । तेहि जनि कबहुं चरणहुआऊ ॥
गुंज होय जेहि मास लिलारा । सेहि बोधते होइ कर्म अपारा ॥
बांठ भुजंग औ जीव भुजंगी । विष वरजोर वसै तेहि संगी ॥
नेत्र गुंज ए ऊंच लिलारा । कामलहरि बहु जहर पसारा ॥
हँसत वदन चालै चतुरंगा । बोधत ताहि होत सुख भंगा ॥
नैन अंप निरखे जेहि अंगा । नाकह कष्ट देइ तन चोरा ॥
शुभ रंगुत्र होइ [illegible] । अंगिछिर विष बालककी हानी ॥
सो गुण छांडि तासु शरीरा । द्वादश कँवल वसे बलबीरा ॥
[illegible] होइ रेखा नीनी । बाएँ अंग होए शशि हीनी ॥
कण्ठद्वीप होइ गुंज चिनेरा । परमत नाहि कालको चेरा ॥
[illegible] होइ गुंज गहीला । लहमन मामा होइ जो ईला ॥
तेहि परमै औ वेधे जानी । गुरू शिष्य दोनोंकी हानी ॥
मीनाहि द्वीप निकट होइ रेखा । नाके अंग कालकी रेखा ॥
बाँझ मुआ वछ गूंगी होई । कल्पन जाय कालपुर गेई ॥

कूर्म सेह लक्ष करजोग । चतुर सनेह ज्ञानबल जोगा ॥
पग छननार होइ जेहि जानी । पुन्नपांव पर काल कुवानी ॥
समय–चरण पलौ सम होय कर, वटिका पलो प्रमान ।
ज्ञान सनेही दूत है, रोम रोम भगवान ॥
चौपाई ।
दूनों अंग विचारेहु जानी । एकरज भक्ति एकहिर न्वानी ॥
दोऊ अंग लक्षण गहो शरीर । पाछे देहु मुक्ति करबीरा ॥
परिचय भेद विचारहु जानी । पान लेन जिव होय न हानी ॥
लक्षण लक्ष्य होय सम तूला । पांव सतगुरु मुक्तिके मूला ॥
समय–आदि निशानी देखिके, बांए दहिने वास ।
शब्द सनेह नेह करि, तब दीनों निजवास ॥
चौपाई ।
बांए अंग मसा जो होई । तीरथ अंग लेखा सो होई ॥
बांए अंग तिलकको वामा । माया सवन वंश कुल नामा ॥
दहिने अंग विषय जो होई । शीस संपति सुख आसे सोइ ॥
बिकटदंत होय जेहि बारी । शीलवंत सुख प्रेम सुधारी ॥
बिरर चिकुर सुख चुम्ब सनेही । विकसा वदन सदा सुखदेही ॥
उज्वल नेह सदा सुखदाई । शील सनेह भक्ति बहुताई ॥
हंसगमन सतगुरुसों नेहा । मधुरी बोले प्रेम सनेहा ॥
कर पद कोमल शरद शरीरा । सुत संपति जैसे दारुण धीरा ॥
मधुर बात औ चमकै देहा । सबंत बोलै सुरति सनेहा ॥
सुगतिवंत प्रीतमकी प्यारी । पल्ला लांब जेठ पुर भारी ॥
श्यामगात लेहसन तन माहा । माया संग न औ अस नाहा ॥
गजवरण प्रिय श्याम शरीरा । पिया [illegible] ॥
वगलचि सुखआमिष जो होई । तन प्रसव सुत सुनहिविगोई ॥

लंबे गात मोट तन भारी। विरह विकार क्रोधअधिकारी॥
छोट शरीर पातरी बामा। आपुहर तजै अंत विश्रामा॥
निहली चितवनि ऐंचा तानी। बहुते पुरुष एक पटरानी॥
विहसन बोलै कुटिल निहारै। आपु जरे औरन कहँ जारै॥
आगे चलै पाछे तन देखै। गुण औगुण एको नहि लेखै॥
ऊपर हँसै मनही पछताई। देइ थोराहि बहुत पुआई॥
एक थन छोट कठोर कुवानी। एकथनझालरि विषकी खानि॥
नाभी उपर तीनि होइ रेखा। सुखसंपति सपनेहु नहि देखा॥
इंद्री मांझ गुज होइ भारी। जो परसै तेहि करै खुआरी॥
मोट पतंग चाकरी चाला। तेहिं देखत पिय होइवे हाला॥
पग पातर पलो छतनारा। परसत वास परै यमधारा॥
कनअँगुरी अधर तिन लागै। आपु नाह तजि परधर बागै॥
अस लक्षण होइ जाके गाता। प्रान लेइ करै यमघाता॥
कुचलिलार खंभ जो होई। जो परशै सो जाय विगोई॥
कर पग पलों गुंज सनेही। परसत होइ भालुकी देही॥
जोरे पंजर करमहँ होई। नाहरि नाहक ग्रासै सोई॥
अहहि होय लक्ष निरमूला। कादन्बक्षय होइ अस्थूला॥
कुचिलिंग कबहू नहिं चाहै। सदा विकार विरहवश लाहै॥
चंचल चित्त थिर नाहिं होई। भजनसंग रस भक्ति बिगोई॥
वरुणी बसै सिनभर जोरी। नेत्र बिलोन रंग होइ गोरी॥
श्रवन शिरै प्रकट नाहिं होई। अंतर भक्ति ऊपर होइ छोई॥
कमलनी होइ सुगति निहारै। आप तरै औरनकहँ तारै॥
करै दंडवत निर्भय नारी। भक्तिवंत बहु लीला धारी॥
विगसित वदन शीलकी आँखी। कुल परिवारभक्तिगण साखी॥
सतगुरु नाम सुनै सचुपावै। मंडल चारि शब्द फैलावै॥

हर्षित होइ सतगुरु गुण गावै । भक्ति कि बात सदा मन भावै ॥
गुरु सनमुख होइ सेवा लावै । सदाकाल तेहि मस्तक लावै ॥
संपुट वदन क्षीणता होई । सतगुरु शब्दहि लेहि बिलोई ॥
सतगुरु देखि न परदा आनै । शब्दकी चाल सदा पहिचानै ॥
सदा अधीन रहै तनमांही । भागे काल देखिके ताही ॥
कर जोरे सनमुख शिरनावै । लाज ज्ञानकी दशा मिटावै ॥
ऐसी लक्ष गहै तन पासा । पावत पान लोक होइ बासा ॥
ऐसी लक्ष विचारेहु हंसा । दीन्हेहु ताहि शब्दकर अंशा ॥
लाज काज कहे देहु बहाई । भेद सुधारत काल पराई ॥
माता बेटी भई नेवारी । लज्जा तजिके काल बिडारी ॥
लोक लाजकी दशा मिटावै । तौ रिपुकाल निकट नहिं आवै ॥
रामचंद त्रिभुवनके राजा । लोकलाज बदि कपिन्ह काजा ॥
जानि परी नहिं यमकी बानी । ताते काल कीन्ह तनहानी ॥
लाज लिए तन करै उदासा । तेहि तन भरम भूतकर बासा ॥
गुरुसों करै कपट चतुराई । चाल विहून कालपुर जाई ॥
भक्त कहावै लज्जा नहिं तोरै । निश्चय काल नर्क महँ बोरै ॥
भक्ति करै कुल दशा मिटावै । परदा ठानि काल पुर जावै ॥
सो सतगुरु जो होय सयाना । चाल चलावै शब्द प्रमाना ॥
आगत परदा मेटि बहावै । पाछे भक्ति पंथ महँ आवै ॥
कपट छाडिकै शीस उतारै । हंस दसा धरि मुक्ति सुधारै ॥
शीस उतारि हाथपर लेई । पाछे पाँव नाकिपर देई ॥
भक्तीकर चित हर्षित होई । ममता मोह लहर तज दोई ॥
कामिनिकनककालकरफन्दा । भएऊ कालकपटि मन मंदा ॥
दुवो शीस अपना लाई । मुक्ति पंथ पावै तब भाई ॥
पावै भेद शब्द सहिदानी । काल कल्पना मेटै जानी ॥

समय—निहुरीनिहुरै नाचै, चारिउ अंचल छोरी।
धनी पियारी होइ रहै, यमसो तिनुका तोरी॥

चौपाई।

इहि विधि मुक्ति गहै जो कोई। ताकौ आवा गौन न होई॥
आवा गौन विचारै जानी। काया कष्ट होइ नहिं हानी॥
सतगुरु शब्द जो लागा रहै। निकसि चरणसतगुरुको गहै॥
तीन लोक नाद जब जाई। सतगुरुको पग रहै समाई॥
तिसरी श्वासा साधै जानी। कुल अभिमान मिटै सबखानी॥
नरको लक्ष पारख करि लेहू। पाछे बाह ताहीं कइ देऊ॥
चंचल चपल कठिनमन होई। पान पावै तन जाय बिगोई॥
ताको लक्षण नर्ककी खानी। बोधत होइ दुवोंकी हानी॥
राज वरण तन वंसी लावै। आप नष्ट होइ और नशावै॥
जो वाकी संगति बैठे जाई। अपनी दशा ताहि पहराई॥
सो सतगुरु जो होय सियाना। लक्षण देखि देइ तब पाना॥
आगत पान धरै चितलाई। पाछे निर्णय शब्द बुझाई॥
पानलेत चित हर्षित होई। चालु चलै नाहिं दुर्मति खोई॥
ताही देहु गुरु पिपीलिका। लक्षण हीन रेप होइ जिसका॥
तापर अंक लिखै सहिदानी। काल कसाईहि देइ निशानी॥
जैसो लक्ष नाहिंतब होई। पान देहु तेहि तहाँ बिलोई॥
भर्मित पान लिखै नहि माहाँ। मिटै इलाका गुरुको ताहाँ॥
जाके होइ सुमतिकी खानी। ताहि देहु गुरुनाम निशानी॥
राज वरण मुख शीतल बानी। तावट होइ ज्ञानकी खानी॥
पूरी तत्त्व पान जो पावै। यमकी नाक छेदि घर आवै॥
राजवर्ण होय क्षीण शरीरा। तावट काल करै नहिं पीरा॥
राजवरण मुख गुंज चतेरा। सो जिव होय कालको चेरा॥

द्वापर काल लिखे सहिदानी। बोलत धीर हृदय कुबानी ॥
लक्षण भेद कहो सहिदानी। कालमभा भयभीत निशानी ॥
कालकला निरखेहु बहु भांती। करहु विचार दिवस औ राती॥
कृपण होय माया नहिं छाँडे। जोरि जोरि धरनि महँ गाडे ॥
आशा रहे तहाँ लपटाई। मुक्ति होय नहि यमघर जाई॥
देइ ताहि विष गंजित पाना। करम रेख सब देइ पयाना ॥
नेत्र बिलोन मसा मुख होई। करत कल्पना जाय बिगोई ॥
लंबा शीस होय मुख छाहीं। हृदय कठोर दया नहिं ताहीं ॥
मध्य कपोल होइ तिल खानी। बाँयें तत्त्व ले बोलै बानी ॥
बाँयें भौं मासा जो होई। दहिने दारुण तेज समोई ॥
बाँयें बिभौं ताहिके होई। अंत चले जिव सर्बस खोई ॥
गहरी चितवनि मुख चतुराई। लंपट चोर होइ दुखदाई ॥
छोटी गर्दन राजस भारी। मिथ्या बोलै होय खुआरी ॥
ताघट जीव दया नहिं होई। बोधत ताहि काहु पुर रोई ॥
ज्ञान ऊपजे कुमति शरीरा। तेहि जनि देहु भक्ति बलबीरा॥
एक समय पान जो पावै। आपु जाइ संग ले जावै ॥
विषयहि लंपट होय जुआरी। इनते होइहै पंथ खुआरी ॥
शब्द पेलीजानि पाँव छुआवहु। महाविकारतन कष्टहि पावहु ॥
तातें आगम कहौ पुकारी। कुमति छुड़ाय पान निरुआरी
हर्षित वदन रहै दिनराती। गुरुसों प्रीति करै जब स्वाती
सीपहि सदा स्वाती आसा। उपजै मुक्ती ज्योतिप्रकासा ॥
रहनि गहनि बूझे करजोरी। दीन्हेहु ताहि शब्दकी डोरी ॥
गुरु सन्मुख होइ सेवा लावै। काम क्रोध ममता बिसरावै ॥
सदा अधीन रहै गुरुआगे। पावै शब्द सहज अनुरागे ॥

समय–निहुगीनिहुरे नाचै, चारिउ अंचल छोरी।
धनी पियारी होइ रहै, यमसो तिनुका तोरी॥

चौपाई।

इहि विधि मुक्ति गहै जो कोई। ताको आवा गौन न होई॥
आवा गौन विचारै जानी। काया कष्ट होइ नहिं हानी॥
सतगुरु शब्द जो लागा रहै। निकसि चरणसतगुरुको गहै॥
तीन लोक नाद जब जाई। सतगुरुको पग रहै समाई॥
तिस्री श्वासा साधै जानी। कुल अभिमान मिटै सब[illegible]॥
नरको लक्ष पारख करि लेहू। पाछे बाह ताहीं कइ देऊ॥
चंचल चपल क[illegible] होई। पान पावै तन जाय वि[illegible]॥
ताको लक्षण नर्ककी खानी। बोधत होइ दुवोंकी हानी॥
राज वरण तन वेसी लावै। आप नष्ट होइ और नशावै॥
जो वाकी संगति बैठे जाई। अपनी दशा ताहि पहराई॥
सो सतगुरु जो होय सियाना। लक्षण देखि देइ तब पाना॥
आगत पान धरै [illegible]ाई। पाछे निर्णय शब्द बुझाई॥
पा[illegible] चित हर्षित होई। चालु चलै नाहिं दुर्मति खोई॥
ताही देहु गुरु पिपी[illegible]का। लक्षण हीन रेप होइ जि[illegible]का॥
तापर अंक लिखै सहिदानी। काल कलाधारि देइ निशानी॥
जसो लक्ष जाहि[illegible] होई। पान देहु तेहि तहाँ मिलोई॥
भर्मित पान लिखै तेहि माहाँ। मिटै इलाका गुरुको ताहाँ॥
जाके होइ सुमतिकी खानी। ताहि देहु गुरुनाम निशानी॥
राज वरण मुख शीतल बानी। ताघट होइ ज्ञानकी खानी॥
पूरा तत्त्व पान जो पावै। यमकी नाक छेदि घर आवै॥
राजवर्ण होय क्षीण शरीरा। ताघट काल करै नहिं पीरा॥
राजवरण मुख गुंज चतेरा। सो जिव होय कालको चेरा॥

पाँवके ऊपर पाँव चढ़ावै। हाथ फेरिके संपुट लावै ॥
संपुट शीश छुआवै जानी। निरखै अरध उन्मनी बानी ॥
कसनी कसै बहत्तर डोरी। सुरति शब्दमों गर्न्है जोगी ॥
अरध अवाज लखै निरबाना। राग छतीसौ सुने बँधाना ॥
मुरली टेर अर्ध धुनि होई। ज्ञानगुफा चढ़ि निरखहु सोई ॥
सुनत अर्धधुनिउन मुनिगाना। बूझै आदि अंतकी बाता ॥
मन मकरंदीके गुण पावै। मगन होइ चंचल नहिं धावै ॥
मनसर होइ मरै सब काजा। छाँडि कपट शीश बिनु राजा ॥
नख शिख मनै बियापे सोई। मन चीन्हे मन आपै होई ॥
येहमन शक्ती येहमन सीवा। येह मन पाँच तत्त्वको जीवा॥
इह मन लेकै उन मुनि रहै। तीन लोककी बातें कहै ॥
ऊन मुनीमें रहै रहावै। ताकर हंस काल नहिं पावै ॥
ऊनमुनी महँ लावै तारी। अंगमें महलमहँ सुरति बैठारी॥
उनमुन महँ जो बासा करै। अगम महलमें सुरति ले धरै॥

समय–उन मुनि चढ़ी आकाशको, गई कमनपर छूटि।
हंस चले जो जातहैं, काल रहे शिर कूटि ॥
उन मुनीमें धर्मदास बसै, बंक नाल गहि जोर।
शिर ऊपर सतशुक्तिहै, तहां शीत शब्दकीडोर ॥

चौपाई।

उनमुनी साँची सुरतिहै बासा। धर्मदास गहि राखहु पासा ॥
सोहं सार मूल धुनि राता। तासु नेह मिले गुरु दाता ॥

समय–हंसा सोहंग मनन करै, निकसि खेल मैदान।
तहां सुरति बैठारिकै, नित प्रति लावे ध्यान ॥

चौपाई।

अमर [illegible] करो बिचारी। धर्मदास यह कथा निनारी ॥

जो कोइ मूल ठीक धरि आवै । सोई अमर समाधि लगावै॥
सार समान गहै दिन राती । पवै आदि अन्त उतपाती॥
अमर महातम पावै नीका । अमर समाधि गहै धरिठीका॥
पांच पचीस सकल सब जानै । आवत जात श्वास पहिचानै॥
श्वासा सार शब्द निरुआरै । अमरसमाधि को भेदबिचारै॥
निशि वासर है शब्द समाना । जागत सोवत एक ठिकाना॥
अमरमूल धुनि शब्द समाई । बोलै ज्ञान गमी अधिकाई॥
लावे अमर मूल महतारी । अटल रहै मति टरत नहारी॥
अमर सुहावन आसन मूला । नख शिख भेद गहैअस्थूला॥
तनकी लक्ष्य लखै विस्तारा । लक्ष्यअलक्ष श्वास गुँजारा॥
लक्ष्य लखै सो साधु कहावै । विना लक्ष्यसतगुरुनाहिं पावै॥
सतगुरु चीन्है के सहिदानी । कालव्यालभयभीत निशानी॥
काल काल वन रेख बनावा । नख शिख जानैतासुसुभावा॥
पतरी ग्रीव नासिका भारी । भृकुटी देह नेह होई कारी॥
दहिने ग्रीव मसाको वासा । गुण गंभीर ज्ञान परकासा॥
नेत्र रसाल बदन मनिहारा । शब्द सनेही सदा पियारा॥
सदा हृदय सतगुरुकी आसा । बोलै ज्ञान गमी परकासा॥
पूरण लक्ष पक्ष दोइ होई । शब्द गहै बहु भेद बिलोई॥
ललाट पाट रेखा होई चारी । सुरति सनेही सुरति सुधारी॥
तेहि जानेहु पाछिल सहिदानी । पाछिल बोध भए सब हानी॥
सुनत शब्द मिलै सो आनी । शब्द सनेह गहै चित जानी॥
पलक छत्र औ झीने बोलै । पावत पान कपट सब खोलै॥
ताकह जानहु हंस सुहेली । आनि मिले यम परदाखेली॥
भीतर वचन कहे हित जानी । पाछिल सुरति भई जत हानी॥
चरण टेकि चिन्होबहु जानी । जाते आगे होइ न हानी॥
रोष करहु तौ मोर दोहाई । गुरुके रोष लोक नाहिं जाई॥

समय–गुरु माथेते उतरै, शब्द बेहुना होय।
ताको कालघसीटहै, राखि सकैनाकोय॥

चौपाई।

गुरु भृंगी कर एक सुभाऊ। मेटे करम करै मुक्ताऊ॥
शीखजोमन बसिदुविधा करई। गुरु पुरा होइ चित ना धरई॥
चित धरैं तो शीख बिगारै। आपु सहित भवसागर डारै॥
दीन दयाल गुरुनकी रीति। जैसे चन्द चकोरहि प्रीति॥
सीखेसिखावन बहुविधि देही। भरम मेटि निर्मल करि लेई॥
शीख भेद जो पूछे आई। क्रूर होइ तौ उठै रिसाई॥
पूर होइ तो शीखहि बोधे। कलह कलपना तजिकै सोधे॥
शीख अज्ञान पार नहिं पाई। ताते करै कपट चतुराई॥
करै कुटिल ता बोलै जोरा। गुरु पुरा होइ करै निहोरा॥
समय जानि बचन मुख बोलै। कहुँ शीतल कहुँ तेजस डोलै॥
समय जानि बचन मुखबोलै। कहुँ तेजसकहुं शीतल डोलै॥
जब जब शिष्य करै अज्ञानी। हृदय शुद्ध मुख कहै कुबानी॥
भाव विचारि शिष्यसों कहही। शिष्य विवेक जो नीकै लहही॥
जोर कहनको शिष्य डराई। गुरुशब्द महँ लेइ समाई॥
गुरु पुरा होय ताहि सुधारै। करम काटि भवसागर तारै॥
गुरु सुवास सबके सुखदाई। गुरु राखै तो काल न खाई॥
जानेहु नाहि कालअभिमानी। काल अंग धरि प्रकटे आनी॥
गुरु नाता धरि शिष्य नशाई। रहनि गहनि नहि एक लखाई॥
अज्ञान दसासे शिष्य कहावै। गुरु होय गुरुगम समुझावै॥
शिष्य करै बहु चंचल ताई। गुरु पूरा होइ लेइ बचाई॥
गुरुकी दशा ज्ञानकी भाऊ। अज्ञान दशाते शिष्य कहाऊ॥
पूरण ज्ञान गमी जेहि होई। हँस उबारन सतगुरु सोई॥

सतगुरु कला अनंत कहावै । ताकर भेद शिष्य किमि पावै ॥
ताते शिष्य कहिय अज्ञाना । गुरु बतावै शब्द निर्वाना ॥
शिष्यनानाथगिजोकोइ आवै । सतगुरु होइ सतराह बतावै ॥
गुरु सोई जाको चित थीरा । सुरति सरोतर साजै वीरा ॥
कैतो चूक शिष्य सों परई । सतगुरु पूरा सब परि हरई ॥

समय–जाका चित्त समुद्रसा, बुद्धिवन्ता मति धीर ॥
सो धोखै विचलै नहीं, सतगुरु कहै कबीर ॥

चौपाई ।

लक्षण लक्ष्य विचारै जानी । निरखै आदि अन्त सहिदानी ॥
गुरु पूरा शिष्य होय उदासा । गुरुगम लेइ शब्द परकासा ॥
आदि अन्तकी परिचय लेई । पाछै भेद शब्द तेहि देई ॥
परखै परिचय परखे रेखा । शब्द सनेह सुनावै लेखा ॥
त्रिकुटी तीर गुंज जो होई । परिखै शब्द रहै तन गोई ॥
ममता मोह करै हँकारा । अंतर कुटिल चतुर बरिआरा ॥
पलक भुअंग परोहन साथा । हृदय मलीन नवावै माथा ॥
बरोनीपर जो गुंजै गुंजा । महा सुबुद्धि होय सुख पुंजा ॥
हृदय मलीन होय सुख छाहीं । गुरु गामि शब्द विचारै नाहीं ॥
लहलन मासा होय सुखमाहीं । शुक्री रवी जमहिकी छाँहीं ॥
गजबरन औ लंबी देहा । गुरुगामि शब्द विचारै नेहा ॥
नेत्र कीर्ति कुटि बृक्षकी शाखा । बोलै सदा मधुर धुनि भाखा ॥
बरन छीन लौं नेत्र मलीना । हृदय कपट मुख रहै अधीना ॥
भृकुटी ऊँच शीश छननारा । ज्ञान महाबल कथै अपारा ॥
लंबी नासिका श्रवणहि छोटा । हृदय शुद्ध मुख बोलै खोटा ॥
राज बरनहि मोट तनभारी । छोट शरीर ज्ञान अधिकारी ॥
मोटी नासिका ऊँच लिलारा । ज्ञानहीन मन कथै अपारा ॥

पातरि अधर कपोलन्ह माँसा । ज्ञान महाबल कथै निरासा ॥
धरनी धीर धरै गरुआई । डाढ़ी दरबर औ बहुनाई ॥
आगै ग्रीव गुंज होइ भारी । माया मदन क्रोध अधिकारी ॥
भुज भुअंग नागिनि मनिहारा । करपग रसना रेख सुधारा ॥
रेखा चारि होय चतुरंगा । काल कला धरि प्रकटै अंगा ॥
करपर होइ दीर्घ भंडारा । ताके निकट भजनकी धारा ॥
सोई धार अखंडित होई । क्षीण भंग मति गहे बिलोई ॥
धारा मिलि अवधी कह आई । हंसदशा धरि पंथ चलाई ॥
सो धारा होइ मोट सनेही । ज्ञान गहे मति धरे ना देही ॥
वारिष धारा मिलै सुधारा । हृदयशुद्ध प्रीतम मनियारा ॥
भजनभंग कबहूँ नहिं होई । गहै शब्द गरभेद बिलोई ॥
यशकी रेख बिचारै जानी । जेठे पलै जीवकी खानी ॥
तैसे ताहि बिचारहु रेषा । तहाँ २ तस कर्म विशेषा ॥
अवधिके नीचै चुंगल होई । अयश करत यश पावै सोई ॥
बिश्वा जानि लक्ष गहि लेऊ । जस बिश्वा तस सुमिरण देऊ ॥
बिश्वा बीश होय नर पूरा । शब्द सनेही गुरुगामि शूरा ॥
अजड होइ जड जनमें आई । घटी बढी होइ अंक लिखाई ॥
पीउज खानि देह धरि आवै । बारह पंद्रह अंक चढावै ॥
ऊष्मज होइ जग लेइ अवतारा । नरके कर दश अंश सुधारा ॥
अचल खानि जग जन्मे आई । बात्तिस बिश्वा अंक चलाई ॥
चारि खानिकी लखै निशानी । देहिहु ताकहँ शब्द [illegible] ॥
खानि लक्षु बिश्वा लिखि राखै । कर्म अकर्म भिन्नके भाखै ॥
पिंडज चारि भांति तन होई । कर्म अकर्म सुधारै सोई ॥
कर्मी नाहर घातिक जेता । अंक सुधारि लिखै कर तेता ॥
एके करमह सती औ मेडा । लिखै अंक करमकर बेड़ा ॥

गाय भैंस परमारथ खानी । जैसे अंक सुधारै जानी ॥
पशु पक्षी परमारथ होई । नख शिख रेखा लखे बिलोई ॥
अंडज चार बरनकी काया । कर्म अकर्म तहाँ निर्माया ॥
अंडज मीन सुफल तन होई । तैसे अंक सुधारै कोई ॥
अंडज पक्षी तन निरदाया । तहाँ २ तस अंक चलाया ॥
करमी पंछी जोरा बाजा । तैसे अंक सुधारै साजा ॥
अंडज नाग कर्मकी खानी । बोरे काल नरक सहिदानी ॥
ऊष्मज बरन चारि तन होई । गुण अवगुण सब लखै बिलोई ॥
भृंगी आदि कीट सुखदाई । भजनके अंक लिखै यमराई ॥
वहुतक कीट होय सुखदाई । मारि खात नर रोग नशाई ॥
तासु लिखे परमारथ खानी । कर्म अकर्मकी सुनिये बानी ॥
एककीट दुखदाई होई । कीटहि कीट खातहै सोई ॥
सो निशान करमकर होई । जेतिक अंक लिखै तन सोई ॥
एक कीट नर दृष्टि न आवै । तेहि अवगुणते काल नचावै ॥
अचल खानिकी चारि निशानी। गरम शीतल लिखै अमृतबानी
गुण औगुणको करै विवेका । गुण अवगुण नरकेकर रेखा ॥
सो सतगुरु जो सोइ सयाना । चारि खानिको लखै निशाना॥
पाप पुण्यको करै विचारा । ताहि तहाँ निज पान सुधारा ॥
कर्म जीव कर्मकिकी खानी । काल कर्मकी बोलै बानी ॥
सतगुरु सोइ जो लक्ष्य विचारै । लक्ष्य विचारिकै पान सुधारै ॥
चोर साहुको करै विचारा । भाव विचारि पान निरुआरा॥
कपटी जीव कर्मबसि अंधा । शब्द सुनत चित होइ विष मंदा ॥
अस कर्मज जब देखि विचारै । कर्म मिटाय पान निरुऔरै ॥
खानिकी लक्ष फेरि जब लेई । तब तेहि शब्द परीक्षा देही ॥
विश्वा निरखि विचारै रेखा । गुण अवगुणका जानै लेखा ॥

कर पलौ कर रेख विचारै । तिरछि विषमको लेख सुधारै ॥
तिरछा रेख विघ्नाकी खानी । जस देखै तस बोलै बानी ॥
विषम रेख कर्मच अधिकारी । जत कर्मज तन रेख सुधारी ॥
ततका मल हरि परसे परनारी । सुनो धर्मनि मैं कहौं विचारी ॥
नख उज्वल होइ गुंज चितेरा । कलह कल्पना यमकर घेरा ॥
करपर लिखै विषमकी खानी । गुण औगुणकी लिखै निशानी
तिरछा रेख नारीकर नेहा । तासु नेह सुत सुता उरेहा ॥
माता पिता . बंधु भरतारा । विषमरेख यमलिखै विचारा ॥
अवधि तीर दोउ तिरछा उरेहा । भक्तिभंडार विषमकर नेहा ॥
मीन पूछ भंडार सुधारी । सुखसंपति विभौतन टारी ॥
नवो खंड यमरेख सुधारी । तेहि रेखनकर गहो विचारी ॥
गुण अवगुण सब तबहि लिखावहु । युक्ति जानिके हंस चेतावहु ॥
हंसा दासा तबही नर पावै । जब करताकी दशा मिटावै ॥
काल कर्म कालकी खानी । चाल चलावै नरकारग समानी
काक कुबुद्धि तेज तनमाही । सतगुरु शब्द बनावहु नाही ॥
काक कुबुद्धि तजे कुटिलाई । तब सतगुरुके शरण समाई ॥
काक कुबुद्धि तन चाल मिटावै । तब निर्वान पदारथ पावै ॥
बुद्धि फेरि पलटावै बानी । सतगुरु शब्द गहे सहिदानी ॥
लोकलाज कुलदशा छुडावै । तब कौआते हंस कहावै ॥
यमरेखनकी जानै बानी । सो सतगुरु सोइ तत्त्व ज्ञानी ॥
रेखा विना न लेखा पावै । विन लेखा नहिं गुरू कहावै ॥
शूकर स्वान गीध औतारा । विनु यमरेख लखै नहिं पारा ॥
यमकी रेख सकल जब जाने । गुण अवगुण तबही पहिचाने ॥
करपर होय चक्रकर थाना । शंख सीप गुरु भेद बखाना ॥
पाँचों चक्र होय सम तूला । योगकला चतुरथ अस्थूला ॥

एक चक्र अथवा दुइ होई । कछु ज्ञानी कछु दुर्मति खोई॥
तीनि होय तो होय उदासा । चार होय तौ सूर्य प्रकाशा ॥
पाँचौ शंख होय करमाहा । दुख दारिद्र जान अवगाहा ॥
सीप होई तौ होय उदासा । शब्द प्रतीत शब्दकी आसा ॥
नखशिख रेख विचारेहु जानी । तबहि सुधारेहु हंसकी खानी॥

समय–नख शिख रेखा जानिके तवही सुधारेहु पान ।
भर्मभूत नहिं दर्शही, हंस होय निर्बान ॥

चौपाई ।

निरखहु आदि अंत सहिदानी । गुण अवगुण देखहुँ विलछानी
कर्मजीव काल अधिकारा । कर्मके घर लेई अवतारा ॥
वरण भेद परिखै कुल जाती । रेखा लेख देखै उतपाती ॥
कर्मी काल कर्म वश होई । गुण अवगुण सब देखि बिलोई
उपजै चोर जुआरी झूँटा । कर्मी काल कर्म धरि लूटा ॥
कामीके घर कर्मी होई । कर्म रेख तब देख विलोई ॥
कर्म खानि कायामहं बासा । सुनै शब्द चितहोइ उदासा ॥
भर्म भूतकी गहै निसानी । पूजै शिला औ उलछै पानी ॥
मारु मारु मुख बानी भाखै । मन वशि जीव काल घर राखै॥
नेत्र विरह रस भ्रुकुटी छीना । कवहूं चंचल कवहुँ मलीना ॥
वालक होइ पानके साथी । मदमाते जस मैंगल हाथी ॥
तिन जीवनकी दशा मिटावै । पाछे सत्य शब्द समुझावै ॥
पद्म मुरक जाके तन होई । सो कर्मी जग जीवै लोई ॥
दया [illegible] परमिति पावै । निर्मल हो सत्यलोक सिधावै॥
नेत्र [illegible] रक्तकी झांई । सुरति सनेह ज्ञान वहुताई ॥
जब तव चितमहँ संशय आवै । ज्ञान गम्यते मार वहावै ॥
ताकी निर्णय अगम सुनाऊ । पावै सत्य शब्दको दाऊ ॥

काग बुद्धि मन दशा छुडावै । पावै शब्द लोक सो आवै ॥
श्वेत कुष्ठ मद गात मलीना । कर्म विवश विषयी लौलीना ॥
जवद कुष्ट मोती मनी भारी । धुंध कुहेर बहिरीकनारी ॥
शून्य भाग्य दाग मतिमारी । फोकट कुष्ट औ गंध पहारी ॥
रक्तविकार जहर धुनि फीका । अंगमलीन कर्मको लीका ॥
पाछिल कर्मज नरकी देहा । परखै सतगुरु शरण सनेहा ॥
तासु निशान परखिके काया । नेत्र गुंज विषवाण बनाया ॥
कर्म निशान दशा पहिराया । तनविकार गुरु वचन न भाया ॥
तेहि जनि देहु सुमिरन बीरा । निश्चय काल करै बड़ पीरा ॥
पीरा सहै जीव शब्द न मानै । गुरु निन्दा निशिवासर ठानै॥
निन्दा करत जाइ यमदेशा । ज्ञान बुद्धि नहिं गहै सँदेशा ॥
गुरुकी दया जो मुखमहँ आनै। लोभ लहरि ममता मन सानै॥
कबाहिं न होहि ताहिकर काजा। कितनों करै बुद्धिकर साजा ॥
गुरुनिन्दा कुष्ठी औतारा । परै रौरव नर्ककी धारा ॥
सो सतगुरु जो होहि सयाना । ऐसे जीव कहँ देइ न पाना ॥
पान लेइ अंते बगडावै । स्वर्ग नर्क महँ ठाँव न पावै ॥
तनकी दुर्मति लहै न पारा । भजै राज नर्ककी धारा ॥
कर्मी खानि देह नर पावै । पाछिल अवगुन संगहि आवै ॥
तेहि जनि देऊशब्द सहिदानी । मानहु सत्य शब्दके बानी ॥
धोखे आइ पान जो लेई । पाछे समुझि सिखावन देई ॥
सुनत सिखावन हर्षित होई । ताहि देहु गुरुशब्द बिलेई ॥
गुरुकी त्रास करै लौ लीना । सुनत सिखापन होइ अधीना॥
मानै त्रास रहै लौ लाई । पावत पान करम कटि जाई ॥
उतपनि लगन जो साधुहुधीरा । ताहि लगन सँग साजहु बीरा ॥
नाम पाँन पाँजी समुझायहु । सत्य शब्दकी रहनि बतायहु ॥

कामिनि कनक कलाकी फंदा। अरपै दुनौ शीस मनमंदा॥
कामिनि अरपै कनक चुरावै। इहि विधि हंसलोक नहिंआवै॥
कनक अरपि कुलभाव दिखावै। बाज़ी दिखाइके कला छिपावै॥
कामिनि कनक करै सम तूला। पावै शब्द मुक्तिकर मूला॥
चाल बिना लागै बडि वारा। तामें नाहिंहैं दोष हमारा॥
चाल चलै कुलदशा मिटावै। भक्तिसार धरि लोक सिधावै॥
कथनी कथै करनी नहिं जानै। ताते अवगुण सबै बखानै॥
कथनी कथै लोक नहिं जाई। भात कहे नहिं भूख बुझाई॥
पानी कहे प्यास नहिं जाई। कथनि कथै पाछे पछताई॥
कथनी थोथर करनी सारा। कथनी कथि २ हुये गँवारा॥
कथनी कथि जो करनी करै। कहै कबीर सो प्राणी तरै॥

साखी—करनी बोलै पारकी, करपै ले व्यवहार।
करनी कर शब्दै गहै, उतरै भवजल पार॥

चौपाई।

महाशून्यके भीतर रहई। मत्यलोककी बातैं कहई॥
कहै अर्थ कथ करै विचारा। कहैं कबीर सो शिष्य हमारा॥
कथै आन करै जो आना। सो अब जानहु पशू समाना॥
जैसा कहै करै पुनि तैसा। हैं हमहीं हमहींसों ऐसा॥
करनी करै कहै तब बाता। ताहि मिलै गुरु समरथदाता॥
कथनी कथै गर्भ होय भारी। बिनु करनी सबयमकी बारी॥

साखी—करनी गर्भ निवारनी, मुक्ति सारथी सोय।
कथनी कथि करनी करै, तौ मुक्ताहल होय॥

चौपाई।

इहि विधि गहै शब्दकी आसा। निश वासर हम ताके पासा॥
अति अधीन करनी कर शूरा। करनीकिये मिले गुरु पूरा॥
शूर होय करनी मनलावै। भक्ति करैजग बहुरि न आवै॥

करनी शूरा कथनी सार। करनी केवल उतरे पार॥
करनी करैं शूरमा होई। कादर करनी करै न कोई॥
शूरा होय तौं करनी आवै। कादर होइ सो वार लजावै॥
समय—शूरा सोइ सराहिये, अंगना पहिरै लोह।
लरै सकल बँद खोलिकै, मेटै तनकर मोह॥
चौपाई।
सदा अधीन रहै तनमाहीं। परिचै शब्द विचारे नाहीं॥
रहे अधीन सतगुरुके आगे। निशवासर सेवा चित लागे॥
जो लागि नहीं अधीनता आवै। तव लगि सत्य शब्द ना पावै॥
समय—नहीं दीन नाहिं दीनता, नहीं संत मनमान।
ताघर यम डेरा किये, जीवतै भया मसान॥
चौपाई।
सदा अधीन रहै जो प्रानी। दीन्हेहु ताहि शब्द सहिदानी॥
कुल अभिमान महानद भारी। भक्ति पंथ गहि ताहि सुधारी॥
शब्दलेइ कुलदशा न तोरे। तेहि यम विपम सरोवर वोरे॥
भक्ति करै कुलकानि न खोवै। आवा गौन गर्भ सुख गोवै॥
जननी बेटी भैनी बाला। वहिन भयए ततक्षण काला॥
इन्हते होइहि भक्तिकी हानी। लाज नदी महँ वोरे आनी॥
कुलकी राड बहारै लोही। कुलना तयारी छुती बिगोई॥
समय—कुलकरनीके कारने, हंसा गये बिगोय।
तब काको कुल लाज है, जब चला चलीको होय॥
चौपाई।
कामिनि कनक कालकी खानी। कालकला धरि वोलै वानी॥
इनते होय भक्तिकर नासा। तातै बहुरि गर्भमहँ वासा॥
परदा प्रकट जवै ना होई। वोलै वचन मधुर धुन सोई॥

परदे रहै लाजकी बँधी । परदा साथ कालकी सँधी ॥
गुरुसों कपट करी धन लीनी । सुरतिनिरति बिनुकालअधीनी ॥
कामिनी परदा करि सो ठाँनै । लाज लिये मुख बात न आनै ॥
गुरुके परदा बाँचै नाहीं । बूड़े विषम सरोवर माहीं ॥
गुरुसम मात पिता सो नाहीं । गरु बिन बूड़ि सरोवर माहीं ॥
गुरुसम मात पिता नहिं होई । मात पिता गुरु जानहु सोई ॥

समय–जे कामिनि परदे रहै, गुरुमुख सुनै न बात ।
ते कामिनि कुतिया भई, फिरै उघारे गात ॥

चौपाई ।

लोकलाज पति सबै विचारा । लक्षण लक्ष्य सबै निरधारा ॥
जाको होइ भक्तिकी आसा । सतगुरु चरण करै विसवासा ॥
तेजै गर्भ जो निकसी आसा । पावै सतगुरु चरण निवासा ॥
यमको अंत जानि जो पावै । भवसागर तब साधु कहावै ॥
सतगुरु चरण गहे चित जानी । मेटे कुटिल कर्मकी खानी ॥
संत कहावै अंत नरनारी । चौदह काल चरण चितधारी ॥
चौदह यमकर सकल पसारा । सतगुरु शरण होइ निरुयारा ॥
चौरासीका करम अपारा । बिनु सतगुरुको करै उबारा ॥
गुरुकरता गुरुदेव नरेशा । बिन गुरुनाम सब भेद अनेशा ॥
गुरुसे दूसर और न कोई । जाते मुक्ति पदारथ होई ॥

समय–गुरु करता कर मानिये, गहिए शब्द समाय ।
दर्शन कीजे बंदगी, सुनै सुरति लगाय ॥

चौपाई ।

आगे मिले बंदगी कीजै । पाछे चरण कमल चित दीजै ॥
शब्दगुरु मिलि रहै समाई । ताप तपै नहिं सुरति समाई ॥
एक देह एक समतूला । एकैसाब भक्तिकर मूला ॥

शिष्यके हिरदे गुरुके बासा। शिष्य रहै गुरु कया निवासा॥
गुरु शिष्यसों अंतर नाहीं। मनहै एक देह दुइ ताहीं॥
शब्दस्वरूप गुरुकर बासा। सुरतिस्वरूपशिष्यकी आसा॥

समय–गुरू समाना शिष्य महँ, शिष्य लियाकरि नेह।
बिलगाये बिलगै नहीं, एक प्राण दुइ देह॥

चौपाई।

ताहि गुरूसों सत्य जो कीजै। बाहर अंतै चित्त ना दीजै॥
जो गुरु शिष्य हृदय नहिं होई। तासों सत्य करै नहिं कोई॥
गुरु बाहर शिष्य भीतर आवै। दुविधा धोखाकाल नहिलावै॥
सत्य होय सो सत्याहि जानै। गुरुकह राखि हृदयमहँ आनै॥
गुरु हृदये सो बसै निनारा। सत्य करत जाई यमद्वारा॥
गुरू शिष्यसों बाहर बसई। सत्य करत काल नहि डसई॥
गुरुकी मति अंतै रहै बासा। शिष्यकी मती गुरूके पासा॥
ऐसे गुरुसों सत्य जो करहीं। सेवा करत काल तेहि धरहीं॥
शिष्य सयान गुरू अज्ञानी। धोखै होइ दुनोंकी हानी॥
गुरू शिष्यकी मति एकै होई। सत्य करै तारै कुल दोई॥
गुरुकी मति जो शिष्यन पावै। काज बिसार चिंता मन लावै॥
गुरुको भेद लखै नहिं बानी। सत्य करै कुमती अज्ञानी॥
नवकाऊपर बहुजीव चढ़ावै। खेवा बिना पार नहिं पावै॥
खेवनहार चीन्हि जब लेही। पाछै पाँव नउका पर देही॥
खेवनहार चीन्हि नहिं पावै। नउका चढै सो मूर्ख कहावै॥
सागर सुमति मुक्तिकीधारा। ममती न्यात्र ज्ञान कड़हारा॥
कै विवेक चार औ साहू। विना विवेक घाटलागु न काहू॥
चोर जानिके पाँव न देई। साधु जानिके पारहु जेई॥
चोर साहुकर भाव बतावा। सागरनाँव पार चलावा॥

चोरके नाम चढ़ै जो कोई । सागर पार कबहु नहिं होई ॥
साहुकी नाव होई अमवारा । सागर उतरत लागुन वारा ॥
सागर पार मुक्ति कर वासा । जो गुरु मिलैतो करै निवासा॥
घर घर गुरू घरहि घर चेला । लालच वाँधे फिरै अकेला ॥
जैसे श्वान काम वश धावे । तृष्णा बाँधे अंग लगावे ॥
तृष्णा मिटै गांठि जुरि जाई । पाछे शीश धुनी पछिताई ॥
एहि विधि होइ डुबोजग भूटा । काल कलाधरि गहै ना खूटा ॥
ऐसी सत्य करै जो कोई । धोखे जाय काल बसि होई ॥
गुरुकी करनी शिष्य जो पावै । तब सत्यकरै सत्यलोकसिधावै॥

समय—सत्यतो तासों कीजिये, जहवां मन पतियाय ।
ठाँव ठाँवकी सतीसों. कुलकलंक चढ़ि जाय ॥

चौपाई ।

अंकके मिटत कलंक मिटि जाई । अंकके रहत अकलंक न जाई॥
अंकलिखा यम एहतन माहा । अंक मिटाइ देहु तेहि माहा॥
नख शिख अंक लिखा यमराई । चौदह कला थाना वैठाई ॥
गुरुगमि शब्द जानि जो पावै । तब चौदह यमफंद मिटावै ॥
एहि फंद सुर नर मुनि भूले । देह धरी धरि सब जग झूले ॥
चौदह काल विकार अन्याई । नरनारी घट रहै समाई ॥
भिन्न भिन्नके न्याय विलोवे । पारस निहार अंत मुख गोवै॥
प्रथमकाल कालके अंगा । नखशिख व्यापे विषै भुजंगा॥
निरभेद औ कुल व्यवहारा । लाज सनेह सकुच बटपारा ॥
आलस निद्रा रूप बरियारा । लालच लोभ मोहकर धारा॥
विषय वास बसै बेकारा । इन्हचौदह मिलिभक्तिउजारा॥
भक्ति प्रतीत शितल इन्ह नासी । प्रेम बिगारि लगावहि फाँसी॥
दया धीरज संतोष न आवै । सुमति सहज लै दूरि वहावै ॥

निर्भय ज्ञान विवेक गरासै । सुगति निरनिरै उपजन फाँसै ॥
सो सतगुरु जो होय सयाना । निर्भय लगन देइ तिहि पाना ॥
निर्भय दशा सूर समुझावै । क्रूर कपट और भर्म बहावै ॥
निर्भय होइ भय तिनुका टूटा । सतगुरु गुरु यमसों छूटा ॥
लगन सनेह गहै सहिदानी । उतपति प्रलय विचारै ज्ञानी ॥
आदि अंतकी लगन विचारै । सत्य दिशा धरि हंस उबारै ॥
चंद सूर्यकी गहै निशानी । आदि अंत गुरु भेद बखानी
चंदसनेह लेइ औतारा । सोइ लगन गाहे उतरै पारा ॥
ताहि चंदकी नाकी पावै । सो पाँजी गहि लोक सिधावै ॥
सूर सनेह विषम जम जोरी । प्रलय काल चौरासी डोरी ॥
सूर्य सनेह होइ संचारा । मरिके बहुरि लेइ औतारा ॥
जत उपज तत विनशै प्रानी । सूर्य सनेह सबनकी हानी ॥
चाँद सूर्य दोय गढके राजा । पौरि पगार बनो दरवाजा ॥
अहुँठ हाथ गढ़ भीतर साजा । कपटभाव माया उपराजा ॥
दुइ दरवाजे बनो किवारा । एकपट रहै एक खुलै किवारा ॥
दोइ लगनकी राह सँवारी । आवत जात लखै बपारी ॥
आवत एक राह चलि आवै । फिर तेहि राह जान नहिंपावै ॥
जौनी राह महलमहँ आवै । तहाँ स्वाति मुक्ता बरषावै ॥
तहाँ स्वाति मुक्ता बरपावै । फिरि तेहिराह जायजो ध्यावै ॥
मुक्ता होय जग बहुरि न आवै । देव रूप होय जगजग पावै ॥
जब आवै तब खुलै किवारी । जान समय फिरि मारत तारी ॥
जब वह द्वार जान नहिं पावै । तारी मारि बहुरि तहाँ धावै ॥
~~जाने~~ विना होय मतिहीना । भूलि परै होय काल अधीना ॥
आवत जौन तुरै चढ़ि आवै । सोइ तुरै यम फेरि छिपावै ॥
आनै तुरै आन सो द्वारा । तातें परै कालके धारा ॥

मूलै आदि तुरै अस्थाना । ताते काल देहि बाँधि खाना ॥
जौं यह तुरै अंत जीव पावै । खोलि कपाट बाहरको धावै ॥
आदि तुरै चढ़ि बाहर जाई । पाछे काल रहै खिसिआई ॥
आदि तुरै बिनु द्वार न पावै । बहुरि २ चौरासी आवै ॥
धर्मदास बिनती अनुसारी । सतगुरु हो मैं तुम बलिहारी ॥
आदि अंत प्रभु कहौ बुझाई । पकर न पावै काल कसाई ॥
अंत करै पुनि गर्भमें बासा । काया धरै करै रहि बासा ॥
कायाते जब बाहर जाई । ताकर भेद कहो समुझाई ॥
मैं आधीन हौं मतिके थोरा । चरण टेकि प्रभु करौं निहोरा ॥
आदि अंत प्रभु कहौ बुझाई । सो सब जानौ चरण समाई ॥
वर्तमान भाषहु उतपानी । जानेहु आदि भेद सहिदानी ॥
अंत अवस्था कहौ बखानी । जाते आगे होय न हानी ॥
जाहि द्वार प्रथमें चलि आवै । तुम प्रसाद शब्द लषि पावै ॥
कर्म अकर्म बरण कुल जाती । कहेउ बुझाइ दिवस औ राती॥
कर्म अकर्म भाषहु बहुभाखा । यमकर अंतनजरि सब आखा॥
कर्मेन्द्र काल लखि राखा । [illegible]जानी सब शाखा ॥
गुण अवगुण सबकहि समुझावहु । गुरु शिष्यकर भावबतायहु ॥
सो सब जानि गही सहिदानी । आदिभेद गुरु नामनिशानी ॥
[illegible] सहिदानी । सोसब जानिपरी सोहिदानी ॥
[illegible] काल लिखि दीन्हा । सो सब जानि हृदयमहँ लीन्हा॥
गुण अवगुण दोउकर भाऊ । परिखि काल करमकर भाऊ ॥
जहाँ २ काल लिखी सहिदानी । तू अदय है सब पहिचानी ॥
नखशिख रेखा काल बनावा । सो जो सब जानि लखपावा ॥
आदि मध्य भाषहु सहिदानी । सो निशान जानी सब बानी ॥
जो भरि कहेहु सिंघासन आनी । सो सब जानि करौ बिलछानी

कहेहु बुझाय मुक्तिके नाहा । रेखा परखि देहु नाहि बाहा ॥
गुणअवगुणसब मोहि लखि आवा । रेखा [illegible] ॥
भाषेहु आदि लक्षकी स्वामी । सो सब जानि गहो सहिदानी ॥
गुणअवगुणसब मोहि लखि आवा । परखौ लक्ष हंसकर भावा ॥
लक्ष्य अलक्ष्य दोउ लखि लेहु । पाछे बाँह हंस कहि देहु ॥
नर नारी लक्षण देखि शरीरा । पाछे देहो मुक्तिके बीरा ॥
करपर रेखा लखौ सुभाऊ । शीश हृदय नाभी कर दोऊ ॥
कच्छ जंघ औ मीन निशानी । लक्षण परखि [illegible] जानी ॥
चौदह काल [illegible] दोऊ । शरण सनेह हंस मुक्ताऊ ॥
चौरासीकर बीज अंकूरा । संशय मेटि देहु मतिपूरा ॥
करमी जीवहि भूम पठायहु । निःकर्मी कह लोक [illegible] ॥
यह सब भेद विचारेहु जोरा । दगा देइ नहिं पावै चोरा ॥
उत्पति भेद सबै मैं पाया । वर्तमान हृदय महँ आया ॥
चरण टेककी करौं निहोरा । अंत अवस्था भाषहु थोरा ॥
जादिन अंत अवस्था होई । [illegible] गति कहो बिलोई ॥
जादिन अंत अवस्था आवै । पाँजी भेद कहो समुझावै ॥
जाते हंसहि काल न खाई । मुक्ति होइ सतलोक जाई ॥
जैसे [illegible] बनायहु । [illegible] ॥
तैसे कहो अंतकी बानी । जाते न होय जीवकी हानी ॥
धर्मदास मैं तुम्हैं बुझाई । अंत दशाकर भेद बनाई ॥
जादिन हंस देह तजि जाई । [illegible] गति कहौं बुझाई ॥
सोरह खाइ दश [illegible] । [illegible] जीव नहांगाजा ॥
आवागौन करै दिन राती । [illegible] छोड़ि [illegible] ॥
धर्मदास कुल जानि [illegible] । तब तुम शब्दहि पारख पावहु ॥
नारीकें संग गर्भ जीव आवै । [illegible] ॥

ताहीसंग रहै ठहराई। देह सनेह रहै यमराई॥
काया परचै रहै निशानी। अंतकाल जीव करै न हानी॥
जादिन अमल कालकी आवै। आगम भेद हंस जो पावै॥
पावै भेद चित होय सयाना। कुरुतें लेइ सुधारस पाना॥
काया परिचय आगम जानै। आदि अंत कह भेद बखानै॥
प्रथमहि देह हमारी जो देखै। सो परिचय अवधी घट लेखै॥
अंत देह हम यमकहँ दीन्हाँ। जानिरहै जीव ताकर चीन्हाँ॥
देह हमारी निश दिन देखै। पूरण अटल सुफल तन लेखै॥
जब देखै विनु शीशकी काया। तब जानै घट काल समाया॥
छठए मास अवधि नियरावै। हमरि देह यम अछप छिपावै॥
अपनी देह दिखावै काला। तब जीवजानि काल जंजाला॥
हमरी देह लै शून्य समावै। अपनी देह प्रकट दिखलावै॥
यमकी देह शीश विनु होई। तेहि देखत जीव जाइ बिगोई॥
हमरी देह विमल विस्तारा। काल देह बहुरंग अपारा॥
जर्द श्याह औ नील सुरंगा। और रंग बहु कला तरंगा॥
हमरी देह रंग विनु होई। नखशिख निर्मल देखै सोई॥
जादिन आदि पुरुष निर्माया। तादिन देह वरण हम पाया॥
सोइ देह धरि इहवाँ आए। कला अनंत जीव समुझाए॥
देह धरे बहु लीला कीन्हाँ। ताते देह कालकर चीन्हाँ॥
कालकला विष वान बनाया। सोइविष नीर विषै दिखलाया॥
जब हम चले पुरुषके पासा। काया रही अधरही बासा॥
काया त्यजी हम भए निनारा। सोई काया रही संसारा॥
काया काल लीन्ह सहिदानी। अपने देश कसाईखाने आनी॥
सो काया सबही दिखलाया। जो देखे सो धीर रहाया॥
सो काया जो अधरहि देखै। शशि संपति सुख विभौविशेखै॥

ताकासाकी यह सहिदानी । सो काया यम हाथ बिकानी ॥
ऐसा काल भया अज्ञानी । हममें लीन्हि संदेह निसानी ॥
नरकी देह कालके हाथा । झाँई चले ताहिके साथा ॥
काया सरी गली इहई जाई । झाँई जानि गहै यमराई ॥
गहै काल औ लेखा लेई । पोताराइ नरक महँ देई ॥
तेकाया कर करै बिचारा । तीन लोक तजिहोय निन्यारा ॥
सहज सून मह पकरै काला । झाँई साथ करै जंजाला ॥
काया धरिके लज्जित कीन्हाँ । तेहि कायाकर माँग चीन्हाँ ॥
देह धरे कीहिसि अनि न्यारा । झाँई साथ जाए नहिं पारा ॥
सो झाँई जो इहइ बिबेखे । कंठ ध्यान धरि हम कह देखे ॥
अखंड संडील मह कायारहई । ताकर भेद जानिके गहई ॥
एह काया तजि ईहई बासा । झांई तजी होय लोक निवासा ॥
सत्य शब्द जानै जो कोई । ताको आवा गौन न होई ॥
सत्य शब्द जो जीव न पावै । झाँई साथ गर्भ फिरि आवै ॥
आवा गौन लखै सहिदानी । आदि अंतकी बूझै बानी ॥
गुण अवगुण झाँईके संगा । ताते काल करै सनिसंगा ॥
झाँई झमकि दिखावै गाता । आदि अंतकी बूझै बाता ॥
हमरी क्योंकर ध्यान लगावै । देखत ताहि परम सुख पावै ॥
जब वह काया काल चुरावै । काया परिचय आगम पावै ॥
काया परिचय भेद बिचारै । नाम सुमिरिके हंस उबारै ॥
अंग अंगकी परिचय देखै । आगमजानिहरषित मन लेखै ॥
हर्षित रहै सदा दिलमाहीं । शोक मोह कछु व्यापै नाहीं ॥
कर औ शीश जानिके भावा । मास बरष कर आगम पावा ॥
आगम जानि गहै सहिदानी । बोलै सत्य शब्दकी बानी ॥
आगम जानि रहै लौ लाई । छूटत देह लोक नय जाई ॥

समाधान होइ आगम पावै। ताघट चोर न मूसन आवै ॥
लगन जानि जो पाँजी पावै। तत्त्व सनेह विलोक सिखावै ॥
आगमकी गति काया देखै। पर्वत नाम मंडल हित लेखै ॥
पर्वत पांच नाम अनुमाना। कहौं भेद सुन संत सुजाना ॥
पाँचो पर्वत नजरि समावै। काया भेद नजरि तब आवै ॥
गवि लीला एक पर्वत भारी। चंद उनेह दूसर अधिकारी ॥
दुइके तीन सुमेरु अनुमाना। देखत नाहि हंस निर्वाना ॥
चौथ मलया गिरि [illegible] ।गोमत नाम पँचए परकासा ॥
पाँचो पर्वत देखै सोई। [illegible] जाहि तन होई ॥
जब देखे तब कुशल शरीरा। बिन देखे जानै तन पीरा ॥
[illegible] न आवै। तजहि तन ना कष्ट जनावै ॥
चन्द्र शिखर जादिन नहिं देखै। द्रव्यशोक कछु हानि विवेखै ॥
जादिन [illegible] नाहिं आवै। मित्र [illegible] खबरि जनावै ॥
गोमत पहार [illegible] आवै। काया कष्ट देश दुख पावै ॥
गिरि सुमेरु जादिनहीं देखै। [illegible] तन घाव विशेखै ॥
रसना कान नजरि नहि आवै। मास [illegible] काल चलावै ॥
जाकी रसना चूमक वासा। सो नहि देखै सदा [illegible] ॥
[illegible] नजरि नहि आवै। मास एक महँ मृत्यु जनावै ॥
[illegible] चौकी [illegible]। [illegible] नजर नहि आवै ॥
सो सतगुरु जो होय [illegible]। जैसुन जानि देइ तेहि पाना ॥
जबतें काया आगम नहि पावै। तबतें अमी बीज नहि पावै ॥
काम अमी पावे जो ताही। बोरें विषम सरोवर माहीं ॥
काया श्वास चले पर मेहा। काल वश्य होय छाँडे देहा ॥
पश्चिम लहरि जो गावै जानी। पांजी द्वार लखै सहिदानी॥
चंद उगे सूर्य अथवै जबही। हंस सुजन तन यागे तबही ॥

पूरी तत्त्व होय अनवाना। पहुँचै मन्य लोक दुखाना ॥
सिंधु तेज होय तजे शरीरा। चले तेज चौरासी हीरा ॥
उतपानि लगन देह तजि जाई। संकट गर्भ फेर नहि आई ॥
अपनी काया आपु विचारै। आपन आगम आपु सुधारै ॥
औरो आगम कहा बुझाई। जाने अवधि आन की पाई ॥
गुरू आपु घट परखै जानी। तब पावै शिष्यकी सहिदानी ॥
तन परि आश परै जो प्रानी। तब निरखै ताकी सहिदानी ॥
झाँई झमकि जोति नहि दरशै। काया कष्ट काल नहि परशै ॥
गगन अवाज सुनै नहि कानी। न ... की लखै निशानी ॥
मधीक पल्लौ दूना करई। पल्लौ सब पुहुमीसों धरई ॥
जेठा पल्लौ ऊपर उठावै। तासु लहुरा उठि ... ॥
निपट लहुरा पल्लौ उठि आवै। तासु जेठ वह अटल ... ॥
अटल रहै की यह सहिदानी। काया कष्ट होय नहि हानी ॥
सो पल्लौ पुहुमीते डोलै। देह तजै अस आगम बोलै ॥
दरश ... बहुन मलीना। लंपट बोलै काल अधीना ॥
ताही भूत ताहि ... । महा भयंकर मोट ... ॥
कूर पग शीतल सब शरीरा। माथ नवै औ पायन ... ॥
... गुण व्यापै नाहीं। निश्चय ... नाहीं ॥
नासिका नेह बास नहि आवै। ... जिह्वा स्वाद न भावै ॥
हाथ पाँव पुहुमीमहँ ... । ... मन काल संग खेलै ॥
छिन छिन माथ डुलावै सोई। जानहु अंत काल पहि होई ॥
आपुन भाव दिखावै जबही। विपन ... व्यापै तबही ॥
स्वपन शीस काटि कोइ लेई। ... दई ॥
भइसा गदहा हाथी देखै। नाग श्वान औ भालु विशेखै ॥
झुरे बींदपरै निशि सोई। ... ताजि सबम ... ॥

समय–गगन गरजें विजुरी ना चमकें,तहाँ दुनो बँद देई ।
कहें कबीर दिन पाँचसातमें, हंस पयानालेई ॥

चौपाई ।

काया परिचय भेद विचारै । आपु तरै औरन कहँ तारै ॥
सो सतगुरु जो होय सयाना । श्वासा नेह करै बंधाना ॥
परिखै लगन तत्त्व निर्वाना । गुण अवगुणसब करैबखाना ॥
निशवासर चलै सुरकी धारा । कायाकष्ट होइ अधिकारा ॥
तिथि अनुमानलखै सहिदानी । श्वासा सूर चलै बलहानी ॥
बधिकके पहर आपु उबारै । चन्द सनेह भेद निरुवारै ॥
श्वाशासार गहै सहिदानी । शशिके घर महँ सूर्य उगानी ॥
जेतिक श्वासा सूर्य उगाई । चन्दाके घर पीवे अघाई ॥
काया कष्टताप मिटि जाई। शील हंस होवे सुखदाई ॥
कालकीअवधि मिटावै जानी । समाधानहोइ गहै निशानी ॥
तज सुरकी रवा अतिचारा । ताते चलै चंद्रकी धारा ॥
महा आनंद सफल तन होई । काल कला नहि व्यापै सोई ॥
जब जब कालसतावै आनी । तब तब भेद करे बिल छानी ॥
साधै लहरि समुद्र सनेही । तब सुख पावै यह जग देही ॥
साधन करै कहै लौलीना । तत्त्व सनेह होय नहि छीना ॥
प्राण आत्माके गुण पावै । जो सतगुरु निज भेद बतावै ॥
परिचय तत्त्व साधना करई । धोखें प्राण न कबहूँ परई ॥
रूखा रूखा करै अहारा । सोई गहिहै भेद विस्तारा ॥
काम क्रोध तजि करै फकीरी । ज्ञान बुधि धारै तत्त्व धीरी ॥
वाद विवाद सबै बिसरावै । दुविधा दूसर निकर न आवै ॥
श्वासासार गहै गुंजारा । जाप जपै सतनाम पियारा ॥
अजपाजाप जपे सुखदाई । आवै न जाय रहै ठहराई ॥

चारि कमलकी परिचय जानै । रहै भेद निज तत्त्व बखानै ॥
फाहा रोपि करै निरुवारा । आदि अंत सब करै सुधारा ॥
योजन चार करै बंधाना । आसन मारि रहै निर्बाना ॥
चारि योजन खूंटी विस्तारा । रुई फाहा जो करै सुधारा ॥
सुधा रुई तरनाटक माहीं । खूँटी ऊपर रोपै छाहीं ॥
बैठे आसनमूल सुधारी । देखै दहिने श्वास विचारी ॥
चलै श्वास रतना गति नेहा । रवि शशि उदय विचारै देहा ॥
फाहा सनमुख बैठि रहावै । निरखै ताहि तत्त्व जब धावै ॥
पाँचों फाहा रोपै ज्ञानी । तत्त्व सनेह करै बिलछानी ॥
रविके घर होय श्वासा आवै । योजन एक तीनि तहाँ धावै ॥
एक योजन एक एकै विचारा । प्रलय प्रचंड तेजकी धारा ॥
ताहि लगनकी रहै निशानी । कछु सुख उपजै कछु होयहानी ॥
मूलकमल ताकर रहि वासा । तेजपुंज है बुद्धि प्रकासा ॥
ताहि कमलकी देखै आशा । मूलकमल तब होय प्रकाशा ॥
तासु लगन ले साजहु वीरा । उपजै बुद्धि ज्ञान गंभीरा ॥
ताहि लगनकी पाँजी पावै । तेजपुंज सह बहुरि न आवै ॥
दूजै योजन ताजि प्रकाशा । ताहि तत्त्वकी देखै आशा ॥
योजन तीन जो है विस्तारा । पृथ्वी तत्त्व ज्ञानकी धारा ॥
निर्वृत कमलमहँ ताकर बासा । काया मध्य सुभर रहि बासा ॥
तहाँ बसै पवन बल वीरा । जाहि पवन सँग उपजै छीरा ॥
ताके संघ सवारेहु वीरा । निर्मल हंस होय गंभीरा ॥
श्वासा साथ पारस सहिदानी । बिन रसनाकी बोलै बानी ॥
दुसरी घड़ी चंद्र सनेहा । रहो निहारि दरखिकै देहा ॥
ताकी श्वासा चलै चौचण्डा । कहै कबीर मिटै दुख दण्डा ॥
तीनी श्वास होइ गुंजारा । चलै प्रचंड वासुकी धारा ॥

दुई योजन पैज विचारा । पौनविजय बल तहाँ सुधारा ॥
पुहुप कमलमहँ ताकर बासा । देहमध्य नाभी रहि वासा ॥
जानि होय क्षीर बंधाना । होइ खटाई स्वाद अमाना ॥
पुहुप कमल होइ लगनविचारै । पौन सनेह पान निरुवारै ॥
ताहि तत्त्व श्वासा चढ़ि धावै । सोइ कमल जानि जो पावै ॥
जौन कमल तत्त्वकी धारा । तौन कमल नेव विस्तारा ॥
जाहि तत्त्व सँग पान पठावै । ताहि कमलमहँ लै पहुँचावै ॥
आन [illegible] जीवकर वासा । अनते पान करै परकासा ॥
आन कमलमहँ पहुँचे याना । [illegible] करै पछताना ॥
जाहि कमलपर जिवका वासा । तहाँ बयान कर रहु प्रकासा ॥
बालककी जिह्वा गहि वासा । सुभग कमलमहँ करै निवासा ॥
ताही लगन जीवके गहई । पावन पान काल ना दहई ॥
संशय कमल देहु जनि पाना । नहिं तो हंस होय अज्ञाना ॥
उपरहि पान लेइ यमराजा । संकट शिष्य गुरुकह लाजा ॥
मुगति कमल जीवकर वासा । ताहि कमलपर साधहु श्वासा ॥
[illegible] तत्त्व चलै जब धारा । योजन चारि [illegible] पारा ॥
मुगति कमलपर ताकर वासा । तहँवा पान करै परकासा ॥
पावनी पौन नासिके संगा । पावन ताहि होय नहिं भंगा ॥
पवन [illegible] पहुँचाना । सो हंसहि लै जाय ठिकाना ॥
साखी—[illegible] पौन है, चारिउकमल अपीव ।
दीजै पान सुधारिके, जाहि कमलपर जीव ॥
[illegible] लच्छ नाहि, तबहि सुधारहु पान ।
[illegible] कमल बिचारि हो, चौकाके अनुमान ॥
चौका चन्दन कीजिये, [illegible] नाम ।
चारों कमल सुधारिके, मध्य नाहिके धाम ॥

चौंका चारि सुधारिके, चारि कमल अस्थान ।
चारिउ पौन उरेहिके, देखो सुरति अमान ॥
सुरति सनेही पाँच कहँ, सुमिरहु सुरति सुधार ।
चारिउ अंक सुधारिके, जल दल धरहु सुभार ॥
प्रथमहि चौका कीजिये, चारि खूँट अनुमान ।
चौगरवी द्वीप सुधारि है, सत्यलोक सहिदान ॥
ऊपर पँखुरी द्वीपके, भीतर चौका चारि ।
अष्टदल निर्वान है, देखो सुरति विचारि ॥
अष्टदल तहाँ सुधारिके, कीरहु प्रेम प्रकाश ।
माया छत्र छिन्नायहु, सत्य नाम विश्वास ॥
जापर बसै निरक्षर, ताहि [illegible] नाम ।
शब्द सुधारस खानि है, हम तुम तेहिके धाम ॥
शब्द सुरतिको नाम गहि, सुमिरै शब्द सुधार ।
तब सिंहासन पग धरै, सत्य लोक निरधार ॥

चौपाई ।

कदली दल आनेहु [illegible] । धरहु [illegible] प्रेम सुधारा ॥
सनमुखकलशा ले राखेहु जानी । चारौ पांच धरहु [illegible] ॥
आसन लिखेहु [illegible] नामा । [illegible] माझे राजि धामा ॥
दहिने राखहु दल [illegible] । मेंट जहर असी धारि ध्याना ॥
निर्मल नीरकी देह दुहाई । जहर नीरकी दशा मिटाई ॥
आसन लेइ [illegible] नामा । लगन सनेह सुधारि [illegible] ॥
खरचा पांच धरहु तिहि माहाँ । प्रकट सत्य [illegible] छाँहा ॥
[illegible] वास सुगंध मिलावहु । [illegible] दहिने [illegible] ॥
ताके निकट शिला [illegible] । खवा रोपि करहु [illegible] ॥
सत्यशब्द लै सर्व बनावहु । ताके ऊपर शिला बैठावहु ॥

शिला ऊपर फिरि अंक सुधारहु । शुक्तीकी श्वासा तहँ चारेहु ॥
ता ऊपर पुनि धरहु कपूरा । काल अंश होवे सब दूरा ॥
चौकाके बाँएँ अस्थाना । आरति थार धरेहु सहिदाना ॥
आद्याके श्वासा सुख मूरी । ताको नाम सुधारहु पूरी ॥
अंक सुधारिके आसन कीन्हेहु । ताके ऊपर थार जु दीन्हेहु ॥
तिसरी श्वास करुणा मैं उचारहु । सुमिरणसार सत्यमुखभाषहु ॥
सुगंध सुपारी तापर राखहु ।
चौका कलश मध्य अस्थाना । धरेहु मध्य धोती औ पाना ॥
नारियर मिष्टान्न मध्यमें राखेहु । धोती पान वचन अभिलाषहु ॥
इहि विधिकी यह सबविधि पूरा । सुमिरनके हम होव हजूरा ॥
लोक निशान पुरुष जो भाखा । सो हम गुप्त एको नहिं राखा ॥
सबविधि ज्ञान तुम्हेंहम दीन्हाँ । अब हम लोक पयाना कीन्हाँ ॥
नरियर है ब्रह्माकर माथा । सो हम दीन्ह तुम्हारे हाथा ॥
ताके मध्य जीव सहिदानी । सानननाहि कियहुविलछानी ॥
सोनिकपुर कियेहु प्रसंगा । काल अंग परसत होइ भंगा ॥
सतएँ श्वासा ताके संगा । जाते यमकर मिटै तरंगा ॥
जैसी लक्ष्य जीवके पासा । हाथ नारियर नीक सुतासा ॥
कसौं जीव कर्मके बंधा । निर्णय भेदन जानहिं अंधा ॥
अंग छिपाइ करै जिव खोटा । ताकर होय नारियर खोटा ॥
निर्मल हंस होहि सुखदाई । सोरत नरियर वास उड़ाई ॥
निर्मल अंकुर सतपुर होई । शब्द सनेही प्रीतम सोई ॥
जैसी दशा जीवकी जानी । प्रकट होइ जब नरियर भानी ॥
जेते लपट कामुकी काया । सो नरियरमें होय सुभाया ॥
नरियर एक होय जलरंगी । सतगुरु सत्यशब्द परसंगी ॥
पारसते ताकी उतपानी । हंसदशा धरि निकसीखानी ॥

कर्मी एक रोप निर्मावा । निरखत ताहि तत्त्व कर भावा ॥
कपट सनेह कर्म सहिदानी । ताकर अंगतत्त्व करै हानी ॥
शब्द विचारि करहु गुरुवाई । पूरी तत्त्व लेहु लखाई ॥
जेतिक लक्ष जीवकी काया । तेते पान साथ निर्माया ॥
रेखा गुंज विचारहु जानी । विषमतिछर कारि है जिवहानी ॥
गुरुकी रेख जाहिपर होई । छत्र सोहावन पर्ण मिति सोई ॥
गुंज औ छत्र शरन फुकनायहु । ताहि पानपर अंक लखायहु ॥
सत्य शब्द पारस परसायहु ।
पारस सोने है तत्त्व सनेही । तासु लखनते पान उरेही ॥
पावत पान हंस घर जाही ।
पौन सजीवक जावन नेहा । तत्त्व लखन कै सुगति सनेहा ॥
सत्य नाम सुकृत सहिदारा । सो सहिदानी पान सुधारा ॥
छत्रके छल होई जेहि पाना । तापर अंक लिखे निशाना ॥
जाहि देहु हंसन कह स्वाहा । पान छत्र माणि दीजे नाहा ॥
निशदिनरहैजो सुगति सयानी । सो दीजे सोरवन सहिदानी ॥
धर्मदास तुम्ह जेठ भाई । हम लहुरे कीन्हा अधिकाई ॥
तुम्हरी वस्तु तुमहिकहँ दीन्हा । अब हमलोक पयाना कीन्हा ॥
जेते जीव आहि जगमाहीं । सो सब आवे तुम्हरे बाहीं ॥
तुम्हरे शिर जीवन कर भारा । आदि अंतको तुम कडिहारा ॥
तुमरे हाथ जीवकर काजा । काल डरै तब तुम कहँ लाजा ॥
वंश ब्यालिस कुलके राजा । ज्ञान गम्य सब तेहि साजा ॥
उन्हके पास जीव जेत जावें । सो सबसत्यलोक कहँ आवें ॥
वंशके वंश छत्र सहिदारा । सोई शब्द सुन वंश हमारा ॥
जेहि वां देइ सो लेकर जाई । काल डरै नाहिं मारि दुहाई ॥
वंशके बाँह जीव जत आवें । यमकी नाक छेदि घर जावें ॥

वंश ब्यालिस राज तुम्हारा । जिन्हसों पंथ चलै संसारा ॥
कोटिन्ह दगा वंशपर पराई । कहै कबीर नामबल ताई ॥
नाम कबीर पान है सारा । इहै नाम काल हंस उबारा ॥
नाम कबीर कहो गुहराई । बावन लाख दगा मिटिजाई ॥
जाहि देहु औ नाम निशानी । हंस उबारि करै रजधानी ॥
वंश समाहि हंस हिया माँही । हंस देहि जीवन कह वाही ॥
जो [illegible] नाम हमारो लेई । ताकों काल दगा नहिं देई ॥
भजनी भजन करै सुकहावै । अमर सनेह समाधि लगावै ॥
शील दशा धरि हंस उबारै । विषम लहरि भवसागर तारै ॥
वंश बयालिस अंश हमारा । करपग शीश छत्र मनिआरा ॥
कलावंत शूद्र सुखदाई । हंसके नायक शरण सहाई ॥
वंशके चरण शीश कुरबानी । अंग अंग हमरी सहिदानी ॥
जाके मस्तक दीहै हाथा । काल करम नाहि ताके साथा ॥
चरण छुए राज अमृत लेई । ताकह काल दगा नहिं देई ॥
दया प्रीत सब जानत रहई । काल कर्म सब दूरि खँदे रही ॥
जामों कह सत्य निशानी । ताको काल करे नहिं हानी ॥
जौन जीव सत्य पारस पावै । छोड़ि देह लोक सो आवै ॥
सुरति सनेहसों पारस पावै । सो निश्चय सुख सागर आवै ॥
देह धरि प्रकटे संसारा । शब्द विदेह हंस रखवारा ॥
जाकह दीहि सत्यकर भारा । सोइ शब्द सुत वंश हमारा ॥
करनी करै वंशकी चाला । ताको नाहि सतावै काला ॥
करहु राज औ पंथ चलावहु । शब्द सनेह हंस मुक्तावहु ॥
राज पाट सौंपो अनुमाना । [illegible] छत्र कराहि अपारा ॥
आगे चलिहै पंथ बिस्तारा । कालकलाछलकरहि अपारा ॥
तुमरे घर प्रकटीहि अन्याई । हंस दशा धरि पंथ नसाई ॥

कपटकी भक्ती करहि विचारा । काजअकाज पाखंड पसारा ॥
ज्ञानदशा धरि पंथ चलैहैं । ममता बाँधि जीव भरमैहैं ॥
तहाँ आपु दृढ़ राखहु ज्ञाना । कालकिकला होय पिनिमाना ॥
बाहर काल चतुराइ निर्वाही । सदा अमान मुक्तिन रवाँही ॥
सत्य दुहाई फिरिहैं जहाँ । टिकै न कोल कलाकी तहाँ ॥
जोजिव शब्द हमार न मानी । सो जानै सोहै यमकी खानी ॥
आन मेटि दुविधा फैलईहै । सो जिव [illegible] पईहै ॥
शब्दकी शरण गहहि लौलाई । निर्मल हंस होइ सुखदाई ॥
काल कला परिप्रकटीहि आई । विरले हंस रहै ठहराई ॥
कालकला मुख भाषहि जबही । छूटहि चित्त हंसनकर तबही ॥
भाषिहि ज्ञानदृष्टि व्यवहारा । सुरति डोलाई करै अतिचारा ॥
कालपंथमहँ प्रकटिहिं आई । ज्ञानमेटि मारहि चतुराई ॥
शब्द वंशकी निंदा करिहैं । ममता बाँधि कालमुख परिहैं ॥
आप थापी वंश उठैहैं । शब्द मेटि जीवन भरमैहैं ॥
एक परिपंच बाँधिहै सोई । जो नाहिं हंस हमारा होई ॥
जब परिपंच सुनाइहि काला । शब्दन सुमिरै नहि [illegible] ॥
मन वच आश शब्दकी करिहै । कालकी चाल [illegible] धरिहै ॥
मन वच जानि शब्द कहँ धइहै । निश्चय सत्यलोक सो जैहै ॥
पाखंडकी गति देहु बहाई । शब्दकी शरण गहै चितलाई ॥
शब्दकी आश शब्द लौ लाई । शब्द छोड़ि नहिं आन चलाई ॥
शब्द पाठ करिहै अभ्यासा । सुमिरन भजन शब्द [illegible]
अमर समाधि शब्द अवराधे । अक्षरमाहि निअक्षर साधे ॥
—पूरी तत्त्व लखै जो कोई । पूरण ज्ञानगम्य जेहि होई ॥
वंश सदाहि या तत्त्व समाई । वंद परै तो मारि दुहाई ॥
वंश दयाते सब मिटि जाई । सुमिरै वंश यथारथि पाई ॥

समय–मनसा वाचा कर्मणा, तत्त्वहि तत्त्व समाय।
अक्षरमाँहि निअक्षर दरशै, अधर ध्वजा फहराय॥
दामिनि कैसी दमक जिमि, ऐसी शब्दकी डोर।
कहै कबीर पहुँचाइ हौं, हंस सुजनकी जोर॥

चौपाई।

अक्षरमाँ निरक्षर पावै। छोड़ि देह पांजीको धावै॥
पांजी द्वार सत्यकी धारा। जलरंग चौकिसुकृत रखवारा॥
आदि अंत हम तुम कह दीन्हाँ। अब हम लोक-पयाना कीन्हाँ॥
तुम साहब सतलोक सिधाए। हम सेवक संसार रहाए॥
निश वासर तुमही लै लैहों। पलपल दरश तमहिको दैहों॥
छिन छिन रहों तुम्हारे पासा। धर्मदास मोहि तुम्हरी आसा॥
तुम हो भाई धर्मदास मोरा। हंसन जाय करौ बँदि छोरा॥
लोक षोड़शसा बैठ रहि हो। गुहालोक विरले सों कहि हौ॥

समय–भेद पुरुषकोतासों कहिहों, जो शब्द पारखी होय।
शब्द पारखी मिलै नहिं, तासों राखेहु गोय॥
चन्द्र सूर्य चढ़ि जल पिवै, विनु रसना रस सोय।
तासों कहि हों शब्द निरक्षर, नहधरो जनि गोय॥
विनु रसना रस पीवन जानै, कहा निरक्षर पावै।
कहै कबीर नाहि परिहरहु, काल कला धरि आवै॥
सूक्षम वेद भेद नाहिं जानै, कथनी कथि लपटान।
गुरुगम भेद विचारै नाहीं, यमपुर जाय निदान॥
चंद सनेह लखै सहिदानी, सुरति होइ असवार।
दुइ कर जोरि महारस पीवै, सतगुरु शरण अधार॥
संयम करै अधर धुनि साधै, सत्यसुकृत रखवार।
गुरुकी दया साधुकी संगति, उतरे भवजल पार॥

काया परिचय जानिके, पकरै दृढ करिहार ।
नाव लगावै घाट कह, खेइ उतारै पार ॥
पश्चिम लहरि जो गावै, नाव लगावै घाट ।
उत्तर पाँजी सोधिके, तब पावै निज बाट ॥
चंद उदय जब होतुहै, सूर्य अस्त कहलाइ ।
इहै लगनहै आदिकी, जेहुनिकट सुर लीन ॥
जलरंग महलसे जाइ रहे, करै जाइ विश्राम ॥
सतगुरु शब्द सुनावहि, तब पावै निज धाम ॥
अंतकी राह बुझाइके, चले आदिकी राह ।
आसन पावै लोक महँ, अक्षय वृक्षकी छाँह ॥
धर्मदास हंसनके नायक, माथे राखहु नाम ।
अब हम चले लोक कहँ, तुम जाय करौ विश्राम ॥

चौपाई ।

श्वेत मिठाई उत्तम पान । सत्यवचन भाषहु अमान ॥
आरति करो कीन्हेउ भाऊ । नरियर मोरि पांच मिलिपाऊ ॥
मिलिनाय कीन्हेउ पहुनाई । सतगुरु दुलह संत बराती ॥
शब्द सुरति ले गाँठि लगावहु । सामग्री बंदन करि लावहु ॥
तिलक बंदन बहुविधि कराहु । पाँचसखा मिलिमंगल गावहु ॥
पंच जने मिलि आरति कीन्हेहु । उतर तिन्है पुहमीमें दीन्हेहु ॥
सतगुरु पारस इन्है छुवाये, उर करनी उर प्यार ।
उरता रहै सो ऊबरे, साहिब स्वामी सार ॥
तत्त्व तिलक तिहुँ लोकमें, सत्तनाम निज सार ।
जन कबीर मस्तक दिया, शोभा अगम अपार ॥
शोभा अगम अपार, पार विरले जन पावै ।
अमर लोकको जाय, बहुरि कबहूँ नहि आवै ॥

[illegible] लिखावै, अक्षय वृक्षहि सार ।
अमर [illegible] करै तिलक तत्त सार ॥
[illegible] अंग मुलहै, भृकुटीमध्य [illegible] ।
[illegible] अग्र तिलक नि[illegible] बान ॥
[illegible] शिर सोहै, बैसाखी अनुहार ।
शोभा [illegible] देखहु सुरति बिचारि ॥
जासु तिलक [illegible] है, तासु [illegible] अस्थीर ।
[illegible] सो नहीं, तत्त तिलक गंभीर ॥
संता [illegible] खानिहै, महिमा है निजु नाम ।
[illegible] यनहिअक्षयविश्राम ॥
[illegible] जहाँ सुरति है, उपर [illegible] धाम ।
अमर [illegible] लगावै, अंग अंग [illegible] ॥
कंठीकंठ [illegible] उज्वल हंस अमान ।
[illegible] उज्वल दशा न होय ॥
[illegible] उज्वल है भीतर, ऊपर उज्वल सोय ॥
अंतर कपट मलीनता, ऊपर और न होय ।
जौन भाव भीतर बसै, ऊपर बरतै सोय ॥
(भीतर और न [illegible] ऊपर और न होय)।
जौन चाल [illegible] तौन संतको नाहि ।
डौमि चालु करनी करै, संत कही नहिं ताहि ॥
साधु सती औ शूरमा, ज्ञानी औ गजदंत ।
ए तौ [illegible] न बहुरै, जो जुगजायँ अनंत ॥
साधु चाल जो जानिहै, साधु कहावै सोय ।
बिन साधे साधू नहीं, साधु कहाँते होय ॥
साधु कहावन कठिन है, ज्यों खाँडेकी धार ।

इमि मिलैं तो काटि परै, गहे तो [illegible] उतरै पार ॥
साधु सोई जानिये, जो चलै [illegible] चाल ।
परमारथ लागा रहै, बोलै बचन [illegible] ॥
संगति करिये साधु की, हरै सकल तन [illegible] ।
नीची संगति [illegible] की, आठों पहर उपाधि ॥
निश बासर साधू मिलै, मिटै विषम तन पीर ।
तासु नेह नहिं छाँडिहौं, सदा सुफल तनधीर ॥
साधुन की संगति करै, जागत सोवत [illegible] ।
साधु संग में [illegible] परहो, ज्यों कर सदा [illegible] ।
आक हरैं [illegible], सोइ [illegible] ॥
साधु साधु सोहावे ताहि, [illegible] ।
साधु न संकट सों परै, [illegible] सबही होय ॥
दुर्जन नारि बहाइहै, पला न पकरै [illegible]
तन मन शीतल शब्द पर, बोलत [illegible] ॥
कहैं कबीर [illegible], गांजि सकै ना काल ॥
[illegible] विष [illegible], कूकर लाग मंजार ॥
नाहर विषधर [illegible], [illegible] पार ।
सब कह बाँधी कबीर, आन बाट बाटके डार ।
बाट बाट बन औघट, सोहि [illegible] आन ।
संत सलो [illegible] कबहि न होय [illegible] ॥
[illegible] काल न [illegible] ।
[illegible] लोक कहँ, काल [illegible] ॥

चौपाई ।

[illegible] सुनो शब्द [illegible] । आदि [illegible] ।
[illegible] घट तुम्हरी [illegible] । तहाँ प्रकट [illegible] ।

जो कोइ लेइ तुम्हारो नावा । ताके शिर महँ अंकुश छावा ॥
सन्त कृपाथनि [illegible]हु । छापा [illegible] चहिरावहु ॥
बैरागी बैराग्य पढावहु । गृहि वासी रहनी समझावहु ॥
बैरागी इन तुनि कर करई । [illegible] चित नहि धरई ॥
हम्सा सुना करै अहारा । [illegible] विशाशिमूगहितुधारा ॥
[illegible] आगर । शीतल सदा प्रेम सुखसागर ॥
बैरागी आसन आरंभै । माला तिलक सुमिरिनि थंभै ॥
पश्चिम लहरि जो गावै जानी । अजपा जाप जपै सहिदानी ॥
गहिना गहै बंध नाहिं कबही । सो बैरागी पावै हमही ॥
हमै पाय हमही अस होई । आवा गौन मिटावै सोई ॥
आवा गौन [illegible] काया । सदा अधीन रहै तत्त्व समाया ॥
काया धरि काया कह बोधै । आवा गौन रहित कर शोधै ॥
[illegible] जीवै । [illegible] पीवै ॥
सदा [illegible] । मरै न जीवै आवै न जाई ॥
ऐसो [illegible] सोई । हम मिलि रहै हमहि [illegible]ई ॥
गृही [illegible] उदासा । [illegible] विश्वासा ॥
गृही [illegible] कोटि जो पाई । [illegible] ॥
गृही [illegible] । [illegible] साधु सेवा आराधै ॥
[illegible] न जाई । [illegible] भक्ति करै [illegible] ॥
भक्ति करै [illegible] । गुरु औ [illegible] जानी ॥
जहाँ [illegible] सतगुरु बासा । जहाँ [illegible] ॥
जहाँ मुक्ति तहाँ लोक उजागर । जहाँ लोक तहाँ रहै सुखसागर ॥
जहाँ सुख सागर तहाँ कबीर । भक्ति मध्य बाहर औ तीर ॥
जहाँ शब्द तहाँ पुरुष अमान । जहँ बाँह तहाँ हंस सुजान ॥
जहाँ तीर तहाँ निर्मल धीर । जग मरण नाहिं व्यापै पीर ॥

जहाँ पीर तहाँ संशय धीर। संशय मध्य [illegible] नीर ॥
जहाँ नीर तहाँ सुख संतोषा। जग मग्ग नाहिं व्यापै धोखा ॥
जहाँ धोख तहाँ और धीर। जहाँ धीर तहाँ गहिर गँभीर ॥
जहाँ गँभीर तहाँ थिर होई। जहाँ थिर तहाँ लहरि ना सोई ॥
लहरि नाहिं तहाँ आप होई। आपा मेटि होई रहै समोई ॥
ममता मोह लहरि नाहि जोई। भाव भक्तिके मानुष सोई ॥
मनसा रहै होय निर्वाना। पावै सत्य तहाँ अस्थाना ॥
नातरु फिरि आवै संसार।
संसार आइके भक्ति कमाई। भक्ति कमाइके भक्ति कहाई ॥
भक्ति कहाइकै रहै उदासा। सतगुरु मिलै सत्य विश्वासा ॥
सतगुरुते दूसर गुरु नाहीं। आवा गौन रहित ह्वै जाहीं ॥
सतगुरु मिलै तो संशय भागै। संशय बहुरि अंग नहिं लागै ॥
सतगुरु सुख संतोषके नायक। परमारथ सो सदा सहायक ॥

साखी—साधु बड़े परमारथी, घन ज्यों बरसैं आय।
तपन बुझावैं औरकी, अपनो आपन लाय ॥
जैसे वृक्ष न फल भखैं, नदी न अँचवै नीर।
त्यों परमारथ कारने, संतन धरा शरीर ॥
सन्त सराहिये ताहिको, जाके सतगुरु टेक।
टेक निबाहै देह भरि, रहै शब्दमिलि एक ॥
सत्यशब्द हिरदय धरै, सुमिरै सत्य कबीर।
धर्मदास तुव वंशके, एक गुरु कबीर ॥

चौपाई।

सत्य सुकृत सुमिरो चित माहीं। टूटत वज्र गाँसि लेइ नाहीं ॥
साखी—सत्य सुकृतके बोल कह, जो चितवै कर दीठ।
ताजन लागै चौहटे, सनह गारके पीठ ॥

जिह्वा कहौं तो जग तेरे, प्रकट कह्यो ना जाय ।
गुप्त मतालाखेहु हो धर्मनि, राखो शीश चढाय ॥
हंसा तुम सतगुरु गहौ कालसों, कर मेरी परतीत ।
मत्य लोक पहुँचाइहौं, चालिहौं भवजल जीत ॥
इति ग्रंथ उदय टकसार- श्वास गुंजार संपूर्ण ॥
जो देखा सो लिखा- मम दोष न दीजिए ॥

भूल चूक अक्षर लेव सुधारी ॥ समय नाम गोसाँई साहब कबीरसाहबजी को कोटि कोटि दण्डवत् सब संतन महंतन को कोटि कोटि दण्डवत । मोकाम गोरखपुर महल्ला अलीपुर छोटा लीखा भवानी वकस सब संतनके किंकर ॥

असल मुताबिक नकल किया ।

इति श्वास गुञ्जार संपूर्ण ।





[illegible] प्रारंभः।

भारतपथिक [illegible]–

स्वामी श्री[illegible] संशोधित।

खेमराज श्रीकृष्णदासने

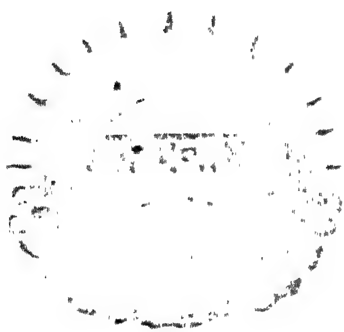
बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

छापकर प्रकाशित किया।

संवत [illegible]





सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान, धनी धर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोद गुरुबालापीर, केवल नाम अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दया नाम, की दया वंश ब्यालीसकी दया।

अथ श्री बोधसागरे

चतुर्विंशतितरंगः

[illegible] बोध।

साखी—वेद शास्त्रको मत अहै, आगम निगम समान।
अब वर्णन सोई लिखो, पढो सकल दै ध्यान॥

अथ ब्रह्मा और जगतउत्पत्ति वर्णन—चौपाई।

आदि ब्रह्म कर वर्णन करऊ। अहंशब्दमें सो थिर रहेऊ।
ताहि शब्दकरि चित फुरि आया। चित इच्छा[illegible] मन [illegible]।

मनन तन मात्रा मे पांचो। मनस्वरूप ब्रह्मको सांचो॥
मन ब्रह्म ब्रह्म मन सोई। जस संकल्प करे तस होई॥
रचे अविद्या शक्ति विधाना। जिहिअनात्ममें [illegible]॥
ब्रह्म मोह अविद्या कारण। विद्या रचे ताहि निवारण॥
उठे तरंग सिन्धुमें जैसे। बहुरि समाय ताहि पुनि तैसे॥
ब्रह्मते इमि जग प्रकटाई। फेरि लीन तासें ह्वै जाई॥
सत्य शुद्धमें मनको फुरना। सो कारण सब दुखको जुरना॥
उपै ब्यापै विविन जिव कैसे। अग्निते चिनगारी लखि जैसे॥
दुःखमूल [illegible]विकारा। मनही कर्मरूप निज धारा॥
मन अरु कर्म एकही आहीं। कमल सुगंध भेद जिमि नाहीं॥
मनमें जो संकल्प फुराई। सो अंकुर कर्म कहलाई॥
कर्म कि पूर्व देह मन अहई। मनसम देह कर्मको गहई॥
जो कछु सत्य असत्य गहोई। मनको कियो सत्य सब सोई॥

इति।

अथ [illegible] उत्पत्ति [illegible]—चौपाई।

ब्रह्मा मुख ब्राह्मण प्रकटाये। ब्राह्मणको इमि अर्थ बताये॥
प्रथम अक्षर पवित्रता थापू। द्वितिये अक्षर तेज प्रतापू॥
क्षत्रिय बाहुते क्षत्री भयऊ। अक्षर आदि पराक्रम गहेऊ॥
द्वितीये अक्षर रक्षाकारी। तृतीये वैश्यको अर्थ उचारी॥
प्रथम शब्द संपति गह सोई। दूजे अर्थ पालना होई॥
चौथे चरणते शूद्र उपाये। ताको ऐसो अर्थ बताये॥
प्रथम शब्द तुच्छता बताई। द्वितीय दीनता अरु सेवकाई॥
वेदपाठ षटकर्म जनेऊ। तीन वरणके हेतु बनेऊ॥
[illegible] संस्कार क्रम न्यारा। ब्राह्मण वर्णको भेद उचारा॥
ब्राह्मणमें द्वै भेदहै सांचो। पंच गौड अरु द्राविड पाचों॥

पंच गौड़को नाम बखानो । गौड़ कनौजि [illegible] ॥
उत्कल मैथिल पांचो गौड़ा । बहुरि बखानैं पंच जो द्रविड़ा ॥
द्राविड़ गुजराती अरु नागर । महाराष्ट्र तैलंग उजागर ॥
इनते बहुरि अनेकन भयऊ । न्यारे २ नाम सो कहेऊ ॥
वैरागी दशब्राह्मण जेई । वेदके धर्म प्रचारक येई ॥
क्षत्रीसिं कै भाग प्रशंसी । एक सूर्य द्वितिय शशिवंसी ॥
वैश्यनमें बहुभांति कमानिया । अग्रवाल आदिक बहु बनिया ॥
शूद्र भेद भाष विधि नाना । तिनको इहां न करा बखाना ॥
ब्रह्मा चारों वरण बनाई । ताके मन पुनि चिंता आई ॥
बिन लेखक जगकाज न सरिहै । लेखक गणक कर्म को करिहै ॥
याहि विधि ब्रह्म जो करे विचारा । चित्रगुप्त प्रकट तिहि बारा ॥

इति ।

अथ चित्रगुप्तजीकी उत्पत्ति कथा वर्णन—चौपाई ।

लीने कर लेखनि मसिदानी । प्रकट चित्रगुप्त गुणखानी ॥
ब्रह्माकी अस्तुति उचारे । सो श्रुतिसुनि विधि पलक उघारे ॥
ब्रह्माकी तब आज्ञा पाई । तपको चित्रगुप्त बन जाई ॥
बारह वर्ष कीन तप गाढ़ । पुनिभे ब्रह्मके सन्मुख ठाढ़ ॥
तब ब्रह्मा निज सभा लगाये । सुर नर मुनि भूपति चलिआये ॥
ऋषी सुशर्मा तहँ पगुधारा । निजकन्या वरहेतु विचारा ॥
कन्या चित्रगुप्तको ब्याहा । [illegible] पुनि [illegible] ॥
भूप [illegible] सूर्यको पोता । ताहि सभा तिहि औसर होता ॥
सोऊ अपनी पुत्री देऊ । दोउ तिय चित्रगुप्त वर लेऊ ॥
पुत्र उपाये दोनों नारी । एकने आठ एकने चारी ॥
माथुर गौड़ अरु कर्न भनौजे । वाल्मीक [illegible] गनौजे ॥
[illegible] श्रीवास्तव ऐसे । अष्ठाना श्रम सूक हैं तैसे ॥

भटनागर कुल श्रेष्ठ कहाये । निगम नाम बारह बतलाये ॥
द्वादश चित्र गुप्तके जाये । कायथ लेखक गणक कहाये ॥
चित्र गुप्त धर्मरायके द्वारे । पुण्यपापको लेख उचारे ॥
तिमि ताके सुत पृथ्वी माहीं । राजद्वार पर लेखक राही ॥

इति ।

अथ चारआश्रमको वर्णन ।

दोहा—ब्रह्मचर्य गिरहस्थ पुनि, बान प्रस्थ संन्यास ।
भिन्न भिन्न इनके धर्म, मरम वेद परकाश ॥

इति ।

अथ चारवेदोंकी उत्पत्ति कथा वर्णन चौपाई ।

चौमुख वाक्य ब्रह्ममुख भेऊ । चारों वेद ताहिते कियऊ ॥
असी सहस्र कर्म कांड आमाना । सोलह सहस्र उपासा जाना ॥
चार हजार कहावै ज्ञाना । यह त्रिकांडमत वेद बखाना ॥
चारों ………… टीका । लक्ष श्लोक व्यास कृत टीका ॥
जेते शास्त्र पुराण कहाये । चारों वेद कि आस गहाये ॥
चारों वेद मूल मत केरा । महावाक अब करों निवेरा ॥
प्रथमं जो ऋगवेद कहायो । पूरब मुख ब्रह्मा ………… ॥
ब्रह्मको वानी भइ यही । प्रज्ञाना ब्रह्म कहि देही ॥
महाज्ञान कहिये प्रज्ञाना । ब्रह्म अर्थ परमेश्वर जाना ।
यहि महा वाक्य रचे ऋगवेदा । कर्म उपासा ज्ञान त्रिभेदा ।
पूरब दिश ऋगकी अधिकाई । द्वितिये यजुर्वेद कहि भाई ।
दक्षिण मुख ब्रह्मा निज खोले । अहं ब्रह्मा अस्मी मों बोले ।
अहं अर्थ मैं ब्रह्म है ईश्वर । हौंअस्मी कह मैं हों ईश्वर ।
यहि महँ वाकते यजुर बनाये । दक्षिण देश अधिक फैलाये ।
सामवेद तृतिये विख्याता । मुख पश्चिम ब्रह्माकी बाता ।

महावाक्य [illegible] येही । [illegible] तातें कहि देही ॥
तत्त्व ईश्वर त्वं जीव कहावै । हौं पुनि स्मौको अर्थ बतावै ॥
पश्चिमदिश तेहि अधिक पसारा । तीनों विधि ताको व्यवहारा ॥
चौथे वेद अथर्वण भाषी । उत्तर सुख [illegible] साखी ॥
तीनों वेदसे ताहि निकारा । तामें महावाक्य यह धारा ॥
अहं आत्मा ब्रह्म पुकारा । ताको ऐसो अर्थ विचारा ॥
अहं है मैं आतम है आपा । ब्रह्म नाम परमेश्वर थापा ॥
मैंही हौं परमेश्वर आतम । उत्तरमें यहि वेद महातम ॥
चार युक्ति चहुँ वेदन माहीं । प्रथमेंविधि जिहि कर्म कराहीं ॥
द्वितिये अर्थ वाद बतलावै । अस्तुति औरु [illegible] गावै ॥
तृतिये मंत्र जो देव अराधू । चौथे नाम कथा शुचि साधू ॥
षट प्रकारकी विधि चहुँ वेदा । प्रथमें जग उत्पत्ति निवेदा ॥
द्वितिय प्रलयको ब्यौरा ठाना । [illegible] ॥
चौथ मन्वन्तर कथ दशचारा । पंचम सुरसुरपति ब्यौहारा ॥
छठये धर्मशास्त्र विधि भाषा । तामें कथा भांति बहु राखा ॥
विद्या सकल जगत ब्यौहारा । ज्ञान विधान अनेक प्रकारा ॥
ब्रह्मवाद भाषे विधि नाना । जाके पढ़े लाभ हो ज्ञाना ॥
चार वेद बुधि विद्या मूला । रचे शास्त्र षट तिहि अनुकूला ॥

इति ।

अथ षट शास्त्रनको वर्णन चौपाई ।

अब षटशास्त्रको वर्णन सुनिये । प्रथम न्याय ऋगवेदसे गुनिये ॥
गौतम न्यायकर्ताको करता । अस विचारि ताके उर धरता ॥
सर्वमई परमेश्वर जाना । एकतें बहुरि अनेक बखाना ॥
उत्पति प्रलय कथा बखाने । नित्यानित्य वाद बहु ठाने ॥
द्वितियमीमांसा शास्त्र जोकहिया । यजुर्वेदते ताको गहिया ॥

जैमिनि मीमांसक रचताही । शिष्य प्रसिद्ध भये बहु बाही ॥
परमेश्वरहि अकर्ता जाना । जक्त अनादि अनंत बखाना ॥
ज्ञान मुक्ति सब कर्मके द्वारा । कर्मके बशी भूत संसारा ॥
मुक्ति होय जिव ज्ञानके मर्मी । ब्रह्मा होय करन भल कर्मी ॥
तृतिय शास्त्र वेदांत बताये । सामवेदते व्यास बनाये ॥
एक ब्रह्म द्विनिया कछु नाहीं । स्वप्न समान जक्त दरशाहीं ॥
ब्रह्ममें जबही माया डाले । ताको तब ईश्वर कहि बोले ॥
ईश्वर तीन भाग पुनि भयऊ । रजसत तमगुननामसो कहेऊ ॥
जेते जक्तमाह व्यौहारा । यही तीन सबके करतारा ॥
कर्म रहितसो ब्रह्म बखाना । कर्म स्वरूप तीन ये जाना ॥
मायायुक्त भये जब तीनों । तिहि कारण ईश्वर कहि दीनों ॥
ब्रह्म अविद्या युक्त जो होई । ताको जीव कहै सब कोई ॥
त्रिगुण ब्रह्म अरु जग जिव सारे । सबही एक स्वरूप बिचारे ॥
भिन्न अविद्या करिके माना । द्वै शक्ती तिहिमांह बखाना ॥
यक विक्षेप शक्ति कहलाये । द्विनिये अवरन शक्ति बताये ॥
शक्ति विक्षेपते जग उपजाये । अवरन शक्ती ज्ञान दुराये ॥
ज्ञानके उदय मुक्तिपद धरही । वेदांती यह निर्णय करही ॥
चौथे सांख्यशास्त्र मत गाढा । ताहि अथर्वण वेदते काढा ॥
रचे ताहिको कपिल मुनीशा । सोउ अकर्ता कथ जगदीशा ॥
सबही रचना प्रकृति कराये । जक्त अनादि सदा यहि भाये ॥
काहु वस्तुको नाश न होई । कारनामें करतूत समोई ॥
द्विविधि भाष पुरुष महातम । जीव आतमा अरु परमातम ॥
पुरुष प्रकृतको जब हो मेला । होय सकल रचनाको खेला ॥
पुरुष पंगुला परकृत अंधी । दोहु बिन नहिं जगरचना बंधी ॥
प्रलयकाल तिहु गुन समनाई । रचनामें सतगुन अधिकाई ॥

पुरुषते महानत्त्व प्रकटाई। पुनि हंकार इंद्रितत्त्व गाई ॥
प्रलयको धौन वहुरिजव आवै। इंद्री तत्त्व सब तहां समावै ॥
जिहि क्रमसे जो दियो देखाई। तिहि क्रम २ सब जाहि लुपाई ॥
पंचम शास्त्र पतंजल कहेऊ। वेद अथर्वणमें सो गहेऊ ॥
ऋषि पातंजलि ताहि बनाई। वर्णन सांख्यशास्त्र सम नाई ॥
योग युक्ति तिहिमांह वखाना। ज्ञान आगे युक्ति प्रमाना ॥
छठे शास्त्र वैशेषिक भाये। मुनि कणाद कर्ता कहलाये ॥
वेद अथर्वणते गहिलीना। यह षटशास्त्रको वर्णन कीना ॥

इति श्रीषट्शास्त्र।

अथ चार उपवेदवर्णन।

दोहा—आयुर्वेद धनुर्वेद पुनि गंधर्ववेद वखान।
अर्थ वेद ये चारहै, तिनकी निर्णय ठान।

चौपाई।

प्रथमें आयुर्वेद करतारा। ब्रह्मा प्रजापति अश्वनीकुमारा ॥
धन्वन्तरि आदिक रच ताही। कामशास्त्र वेदादिक जाही ॥
द्वितिये धनुर्वेदके करता। विश्वामित्र नाम सो धरता ॥
ब्रह्मा परजापतिते जोई। विश्वामित्र लिये गुन सोई ॥
सकल युक्ति शिष कीन प्रचारा। परजापालनको व्योहारा ॥
शस्त्रप्रहारकि युक्तिहै तामें। युद्धकरनकी विधि वह वामें ॥
आयुध दोय प्रकारके युक्ता। एक है मुक्त अरु द्वितिय अमुक्ता ॥
तृतिये मुक्ता मुक्त कहाऊ। यंत्र मुक्त चौथेको नाऊ ॥
हाथसे जो चक्रादि चलाये। ताको नाम मुक्त कहलाये ॥
तरवार आदि अमुक्त वखाना। वरछी मुक्ता मुक्त प्रमाना ॥
वहुरि तीर आदिक अरु गोली। यंत्र मुक्त तिनको कहि वोली ॥
मुक्त आयुधको अस्त्र कहीजे। अरु अमुक्तको शस्त्र भनीजे ॥

सेना चार प्रकार नाम धर । घोडचढ रथचढ गजचढ पदचर
अन्तगुन मगुन बहुत विधि भाषा। क्षत्री धर्म सकल तह राखा ॥
तृतिये गंधर्व वेद बताये। ताहि भग्थजीने प्रकटाये ॥
नाद नृत्य सुर ताल अनंता । विविधि भांतिसे ताहि वदंता ॥
युक्ति अनेकन भेद अगाधू । निरविकल्प पुनि कथे मसाधू॥
चौथे अर्थ वेद विधि कहिये । नाना युक्ति ताहिमें लहिये ॥
नीति शास्त्र अरु अश्वा रूढा । शिल्प मूप आदिक मतमूढा॥
धन उपाय बहु विधि तहलहिये । अर्थ वेद यहि कारण गहिये ॥
द्रव्य उपार्जन रीति बनाई । अर्थ वेद पुनि अस अर्थाई ॥
कसेहु निपुण होय नर जोऊ । भागविना धन लहै न कोऊ॥
ताते अंत कथे बैरागा । सब चातुरी वृथा इनिलागा ॥
चहुँ उपवेदको यह सिद्धांता । सब तजि हो विरक्त बुधवंता॥
वेहे उपवेद कि विधिमें पागा । अंत मुख्य वैराग अरु त्यागा ॥

इति ।

अथ चार उपवेदके षट् अंग वर्णन-चौपाई ।

शिक्षा कल्प व्याकरण बरनो । पुनि निरुक्ति ज्योतिष चितधरनो
पिंगल सहित कहे षट अंगा । विविधि भांति भाषे पर संगा ॥
प्रथमें शिक्षा शास्त्रमें कहेऊ । नाना भांति कि युक्ती गहेऊ ॥
वेदके शब्दन माह बखाना । अक्षरनके अभ्यासको ज्ञाना ॥
पाणिनीय है ताके करता । युक्ति चातुरी बहु तहँ धरता ॥
द्वितिये कल्पके सूत्रन माही । वेद कि विधियो कहे तहाही ॥
कर्मके अनुष्ठान विधि गायन। पाणिनि पातांजलि कात्यायन
तृतिये कथे व्याकरण जोई । वेदको शब्दबोध तिहि होई ॥
पाणिनीय आदिक बहु तेरे । कर्ता सोई व्याकरण केरे ॥
चौथ निरुक्त शास्त्रके माहीं। ऐसी निर्णय कीनो ताहीं ॥

अपर [illegible] वेद जो होई । तासु अर्थ बोधक है सोई ॥
यास्क मुनीश्वर कथे बखानी । नाम निरूपन निर्णय ठानी ॥
आदिम्य [illegible] अरु बहुतेरे । रचित निरुक्त शास्त्र [illegible]
पंचम पिंगल कीन बखाना । पिंगल मुनि रचि छंद विधाना
छठये ज्योतिष शास्त्रको ज्ञाना । [illegible] गर्ग बखाना ॥

इति चार उपवेद ।

अथ अठारह पुराणोंके नाम--चौपाई ।

ब्रह्म बहुरि ब्रह्मवर्त बखानो । वामन अरु ब्रह्मांड प्रमानो ॥
मार्कंडेय भविष्य कहावें । नारद विष्णु पुराण बनावें ॥
गरुड वराह अरु पद्म गनीजे । [illegible] मीन रो कूर्म कहीजे ॥
लिंगो वायु पुराण बताया । फिर [illegible] अग्नि कहाया ॥

इति ।

अथ शास्त्रके अठारह प्रस्थान चौपाई ।

शास्त्रके हैं प्रस्थान अठारा । यथाविधि तिनको नाम उचारा ॥
चार वेद उपवेद हैं चारी । वेदनके षट अंग विचारी ॥
धर्मशास्त्र मीमांसा न्याई । सांख्य पुनि पुराण कहाई ॥
[illegible] पुराण पौराण अनेका । [illegible] निगम न एका ॥
स्मृती महाभारत रामायण । [illegible]शास्त्र नाना विधि [illegible] ॥
वाम तंत्र देवीको राखा । नारद पंचरात्र पुनि भाषा ॥
देव [illegible] विधि बहु भनेन । जा करि कार्य नाति भल गनेन ॥

इति ।

अथ चारवेदको बाद [illegible] ।

प्रथम कहे ऋगवेद [illegible] । [illegible] मानी ॥
निक्षेपो सो अलख [illegible] । निराकार सो जान ब्रह्मवर ॥
द्वितिय अथर्वण भाषत होई । [illegible] निर्लेप न कोई ॥

नहि निर्गुण नहि सगुण कहेऊ। जो कोइ सरा मुक्त सो भेऊ ॥
जैसे पत्र वृक्ष ते टूटा। फरे न सो तरुवरमें जूटा ॥
ऐसो जीव सरा यकवारा। बहुरि नहीं ताते तन धारा ॥
तृतीय यजुर अस कहे वहोरी। इन दोनोंकी मतिभई भोरी ॥
सगुण ब्रह्म नरायण होई। क्षीर समुद्र शयन कर सोई ॥
दश अवतार सोइ धरिलीनो। गोपिनके संग क्रीडा कीनो ॥
चौथेसाम कहपुनिमनअपना। यह सबजानो झूठ कलपना ॥
नहि सगुण नहि निर्गुण देवा। नहीं दृष्टि गोचरको भेवा ॥
सम्पूरण है ब्रह्म अखंडा। तत्त्व मसी अद्वैतसे मंडा ॥

इति।

अथ षट्शास्त्रको वादवर्णन-चौपाई।

प्रथम मीमांसा शास्त्र आचारी। कर्म थापिनिजु ज्ञानउचारी ॥
जो कछु लाभ जक्तमें कीना। सो सब जान कर्म आधीना ॥
कर्महि अधिष्ठान जिवकेरा। कर्मते करे जक्त में फेरा ॥
कर्म प्रवृत्तिकर्म लय पावे। कर्महि दुखसुख जीव भुगावे ॥
भूत भव्य वर्त मानिक जोई। कर्म अधीन जान सब सोई ॥
अज हरि हर सनकादिकजेते। कर्म अधीन जान सब तेते ॥
कर्म अधीन ज्ञान अरु योगा। जो जस करे भोग तसभोगा ॥
कर्म स्वतंत्र सर्व परगावे। जो जस करे सो तस फलपावे ॥
द्वितिय वाद वयशेष वदंता। कर्म नहीं जानिये सुतंता ॥
कर्मतो कालकि बसमें होई। काल पायकर्मकरे सब कोई ॥
जब कबहु परभात न होई। भोर कर्म तब करे न कोई ॥
जो मध्यानन संध्या आवे। बिना काल को कर्म गहावे ॥
बाल कर्म ना होय तरुनाई। युवा कर्म नहि शिशु करि पाई ॥
युवा कर्म करि सकै न बूढा। वृद्ध कर्म तरुनाई गूढा ॥

तातै यह निश्चय करि मानो । कर्म कालकी वंश में जानो ॥
कालहि ब्रह्म और नहि कोई । काल पाय अज हरि हर होई ॥
काल पाय पुनि सो विनस्माही । उतपतिप्रलय कालवशआही ॥
कालहि ते सुख दुःख लहंता । काल स्वतंत्र कर्म परतंता ॥
जब चाहै कम करै नर लोई । काल किये ते कबहु न होई ॥
तातै काल सत्य करि मानो । कर्म असत्य वैशेषिक बानो ॥
तृतियन्याय निज मन अर्थाई । कालहि छीन छीन है जाई ॥
घटि बढि जायकालकी बाते । काल कर्म [illegible]होइ ताते ॥
अस्ति एक परमातम आही । तीन काल आवै अरु जाही ॥
निजु वश ईश्वर कालको धरई । जब जसचाहै तब तस करई ॥
ग्रीषम वर्षा काल बनावै । वर्षाको ग्रीषम दिखलावै ॥
चाहै रंक रावकरि डारी । भूपतिको पुनि करै भिखारी ॥
सकल सूत्रधर ईश्वर ऐसे । नाचै जग कठपुतरी जैसे ॥
तातै परमेश्वर है अस्ती । काल वो कर्मसुभावहै नास्ती ॥
चौथ पतञ्जलि कह यह लेखा । कहो कहां तुम ईश्वर देखा ॥
तुम नहि जो ईश्वर लखिपाई । तो पुनि कैसे ताहि बनाई ॥
कैसो ईश्वर होइगे भाई । विन देखे कह कहो बुझाई ॥
ईश्वर कहां सो कैसे जाना । विनअनुभवभाखे अनुमाना ॥
पातर पाथर प्रतिमा पूजो । अनुमानहिते मनमें सूजो ॥
यहसब झूठ भरमको फन्दा । आतम शुद्ध सच्चिदानन्दा ॥
सो हम योगमार्ग ते जाना । तुमको नहिकछुअनुभवज्ञाना ॥
तुम प्रतिमा पूजो यहि लेखे । हम ब्रह्मांडपिंडमें देखे ॥
तुमहो झूठो हमहै साँचे । ईश्वरकी अनभौ तुम काचे ॥
तातै योग सत्तकरि जानो । और सकल झूठा करि मानो ॥
पंचम सांख्य पती अस बोलो । तुम सब मिथ्याभ्रमयुत डोलो ॥

कर्दर्शी अनुभव अरु ज्ञाना । सो कछुकामको नहीं बखाना॥
ब्रह्म सर्व देशी कह सोई । साक्षी सर्व अकर्ता होई ॥
सब करतूत प्रकृती ठाना । योग समाध साधना नाना ॥
उतपति अस्थित परलय कर्मा । सो सबही प्रकृतके धर्मा ॥
पांचों तत्त्व पचीस प्रकृती । चारों देह आदि सब नास्ती॥
ईश्वरको जो जाननहारा । सर्वसाक्षि सो आस्ति पुकारा॥
ये सबअनितमें तिनको आस्ती। योगआदि सबमिथ्या नास्ती॥
झूठे वेदांती एसे कहई । मिथ्यावाद सकल यहअहई ॥
एक अखंड ब्रह्म है जोई। तामें आस्तिनास्ति नहिंकोई॥
आप आप संपूरण व्यापा । भ्रमकरि त्रपुटी तामें थापा ॥
ध्याता ध्यान धेय नाहिं कोई । ज्ञाता ज्ञान होय नहि जोई ॥
ब्रह्म अखंड अद्वैत एकरस । नाते द्वैत भाप भापे कस ॥
नित्य नित्य समाधि है जोई । तामें सो संभवे न कोई ॥
देखन अरु देखनमें आवे । देखनहार ब्रह्म बतलावे ॥
ब्रह्मते इतर और न कोई । नास्ति और सबमिथ्याहोई ॥

सोरठा—वाद करै इमि सोय, चार वेद षट शास्त्र मिलि।
भेद न पावै कोय, अगम अपार अकथ कथा ॥

सत्यकबीर वचन ।

साखी—गुरु हमारा भेद है, हम वेदनके माहि ।
जौन भेदमें मैं बसो, वेदौ जानत नाहिं ॥

अथ विष्णुके चौबीस अवतारको वर्णन ।

दोहा—मीन कूर्म वाराह कह, नरहरि वामन बंक ।
परशुराम रघुराम कह, कृष्ण बुद्ध निष्कलंक ॥
व्यास कपिल हयग्रीव हरि, यज्ञऋषभ सनकादि ।
दत्त मन्वतर ध्रुवपति, धानंतर हंसादि ॥-

चौपाई ।

हरि औतार बहुत जग मांहीं । तिनकी कथा कही नहिं जाहीं ॥
हरि औतार जेते जग भेऊ । रामकृष्ण सर्वोपरि कहेऊ ॥
सुजस जासु सनकादि बखाना । गुणगणगावें वेद पुराना ॥
हरिसहैं चक्र वर्त निहु पुरके । कोइ शत्रु नहिं सन्मुख फरके ॥
तातें तिनकी कथा न लेखो । वेद पुराण न श्रवनों देखो ॥
जहां तहां हरिमंदिर सेवा । पूजे विष्णु विश्वंभर देवा ॥
तीन देवमें श्रेष्ठ है सोई । घट घट मांह विराजे ओही ॥
चारों विधिकी मुक्ति लहीजे । विष्णु देवकी सेवा कीजे ॥

इति विष्णुके चौबीस अवतार ।

अथ ब्रह्माके षट् [illegible] ।

दोहा—गौतम कपिल कणाद मुनि व्यासो जैमिनि जान ।
मंडन मिश्र मीमांस कहि, ब्रह्मा जग [illegible] ॥

इति ।

अथ शिवजीके ग्यारह रुद्रके नाम ।

दोहा—सर्पकपाली [illegible] कपि कपर्दि मृग व्याध ।
बहुरूपी त्र्यंब शंभु हरि. [illegible] वीरभद्रादि ॥

इति ग्यारहरुद्र ।

अथ ब्रह्माके दैहिक और मानसिक पुत्रनके नाम—चौपाई ।

ब्रह्मा द्वै सुत प्रथम उपाये । एक दक्ष एक अत्रि कहाये ॥
दक्षते सूर्यको औतारा । अत्रिते बहुरि चंद तनु धारा ॥
सूर चंद कुल क्षत्री भेऊ । पुनि नाना ऋषि देही गहेऊ ॥
भृगु अत्री अरु पुलह बनावो । फिर अंगिरा पुलस्त कहावो ॥
नारद और वशिष्ठ उचारा । पुनि कह [illegible] औतारा ॥
ब्रह्मा मानसी पुत्र बनावो । अत्री और अंगिरा गावो ॥

पुलह पुलस्ती क्रत्तु गनीजै। भृगु प्रचेत वाशिष्ठ कहीजै॥
पुनि ब्रह्मा तनु सुत कह नामा। दक्षप्रजापति धर्मौ कामा॥
क्रोध लोभ मद मोह उपाये। हर्ष मृत्यु दशनाम बताये॥

इति।

अथ चौदह विष्णुके नाम।

दोहा–यज्ञ विभू शतसेन हरि, पुनि वैकुंठो होय।
पुनि अजितो वामन कहो, सर्वभूमि ऋषभोय॥
पुनि अमृ।त्तं भ्रममें तहे, बहुरि सुधामा जान।
योगेश्वर बृहद्भान ये, चौदह विष्णु बखान॥

अथ चौदह इंद्रके नाम।

दोहा–यज्ञो रोचनमतजितो, बहुगिरित्रिशिख विभु जान।
तथा मंत्र द्रुम जानिये, फेर पुरंदर मान॥
बलि अद्भुत शंभू कहो, पुनि बैधृत उच्चार।
रितुधामा पुनि ओमपति, शुची इंद्र दशचार॥

अथ चौदह मनुके नाम।

दोहा–मनु स्वयंभू सारोचको, उत्तम तामस रैवत्त।
चाक्षुष शतवृत सावर्नी, दक्ष सवर्नी सत्त॥
ब्रह्म सवर्नी धर्म सवर्नी, रुद्रसावर्नी होय।
देवसावर्नी इंद्रसावर्नी, ये चौदह मनु रोय॥

इति।

अथ सतस्वर्गके नाम।

दोहा–भुवर्लोक अरु स्वर्ग कहँ, महर्लोक जनलोक।
तपलोको सतलोकहै, सात नामको थोक॥

इति सतस्वर्ग।

अथ सप्त पातालके नाम।

दोहा–अतल वितल सुतलोकहो, फरि तलातल होय।
महातला पाताल पुनि, अंत रसातल जोय॥

इति सप्त पाताल।

अथ नौ घरोंके नाम–चौपाई।

प्रथम भूमि भूलोक बखानी। दूजे भुवर्लोक है पानी॥
स्वर्गलोक पुनि अग्निको घेरा। पितरलोक पुनि वायु टेरा॥
पंचम शून्य लोक आकाशा। अंतर लोक हँकार प्रकाशा॥
सप्तम सत्यलोक महतत्तू। अष्टम लोकालोक कहत्तू॥
ॐशब्द तहवांते होई। मायाकी घरहै सोई॥
ताके परे नाम अस्थाना। शुद्ध स्वरूप निरंजन जाना॥
शब्द निरंजनते उतपानी। ताते नव माया प्रकटानी॥
मायाते महतत्त्व पसारा। महातत्त्वसे भा हँकारा॥
अहँकार आकाश उपायो। पुनि अकाश वायु प्रकटायो॥
वायुते अग्नि अग्निते पानी। ताते यह भूलोक बखानी॥

इति।

अथ सप्तद्वीप और ब्रह्मांडको वर्णन।

दोहा–प्रथमे जम्बूद्वीप कह, शाकद्वीप कह फेर।
क्रौंच कुशा शाल्मल्य पुनि, प्लक्षो पुष्कर टेर॥

चौपाई।

ाते परे योजन दश कोरी। कंचनकी पृथ्वी ले जोरी॥
रम प्रकाश मान महि सोई। तासु परे पर्वत यक होई॥
ोकालोकनाम सो भाषा। महाशून्य घन तापर राखा॥
उग्र उदाधि यक ताते आगे। बहुरि अग्नि तात पर लागे॥

यौन दशगुना पुनि पर ताही। तासु पर दशगुन नभ आही॥
तासु पर योजन यक लाखा। सवन कंध ब्रह्मंडको राखा॥

इति सप्तद्वीप।

अथ अष्टवसुओंके नाम।

दोहा–प्रथम द्रोन पुनि प्रानकह, ध्रु अर्क अग्नि प्रमान।
दोषावसू विभावसू, अष्ट वसू ये जान॥

इति अष्ट वसू।

अथ चारा युगोंकी आयुस्थितिवर्णन–चौपाई।

चारों युगकर लेख प्रमाना। कृत त्रेता द्वापर कलि जाना॥
सतयुगकी आयु इमि कहसे। सत्रहलक्ष अठाइस सहसे॥
त्रेताकी आयु पुनि भाषा। छानवेसहस अरु बारहलाखा॥
आठ लक्ष चौसठ हजारा। द्वापर आयू करो विचारा॥
बत्तिस सहस चार लक्ष कहिये। कलियुगको यह लेखा लहिये॥
चारों युग यक ठौर गहीजै। एक महायुग तासु कहीजै॥
एक सहस्र महा युग होई। कल्प एक मुनि कहिये सोई॥
चौद मन्वन्तर कल्पमें होई। कल्प एक ब्रह्मादिन सोई॥
ऐसे दिनको लेखा लीये। एकसौ वर्ष लो ब्रह्मा जीये॥
एक सहस्र ब्रह्मा है बीते। तब यक घडी विष्णुकी रीते॥
ताके दिनन करि पुनि लेखो। निजुसौ वर्ष विष्णुथित देखो॥
जब दश लक्ष विष्णु बित जाहीं। घडी एक तब रुद्र सिराही॥
ताहि वर्ष पुनि लेखा कीये। निजु सौ वर्ष रुद्र पुनि जीये॥
ग्यारह रुद्र जो उगि खपि जाना। रमा शिवा यक घडी प्रमाना॥
निजु सौ वर्ष कि आयु पाई। सहस शिवा जबउगिखपजाई॥
तब मायाको पलभर होई। व्योरा वेद बखाने सोई॥
यह लेखा यक भयो प्रमाना। कहु मायागति काहु न जाना॥

चहुँ युगमें आयू नर केरी । लक्षदश सहस्र सहस्र [illegible] ॥
याहूको नहिं कौन प्रमाना । [illegible] विविधि विधाना ॥

इति ।

अथ चौदह रत्नके नाम ।

दोहा—श्रीमणि रंभा वारुणी, अमी शंख गजराज ।
कल्पद्रुम शशि धेनु धन, धन्वन्तर विषबाज ॥

इति चौदहरत्न ।

अथ पंचप्रकारके यज्ञ वर्णन ।

दोहा—अभ्यागत आदर करै, चतुरि वेदको पाठ ।
आहुत भूतन यज्ञ कह, पितर यज्ञको ठाट ॥

इति पंच प्रकार यज्ञ ।

अथ कर्म उपासन और ज्ञानको वर्णन—चौपाई ।

मारग तीन वेद जो भाषा । प्रथमहि कर्म कांडको भाषा ॥
पुनि उपासना ज्ञान कहाहीं । तिहुके तीन देव तनमाहीं ॥
कर्म इंद्री कर्म कांड गहाये । अंतःकरण उपासक गाये ॥
ज्ञान इंद्री सो ज्ञान गहंता । यह तिहु देवको भेव भनंता ॥
मूरुख कहां उपासक होई । कर्म ज्ञान यामें नहिं कोई ॥
कर्म उपासना ज्ञान जो तीनी । चौदह इंद्रीन कहि दीनी ॥
जबलो नहिं तिहुको सम नाई । कोई कर्म शुद्ध नहिं पाई ॥
एक हाथ जो चोरी करई । देह समस्त बंदिमें परई ॥
कर्म उपासना ज्ञान गहाई । भली भांति तिहु मल मिटाई ॥
दृढ ह्वै तोहि मुक्ति जिव पावै । अब कर्मनको भेद बतावै ॥
जो कोइ पितरकि कुलिकि हेता । तन मन धन अपनो सब देता ॥
पितृ लोकमें सो चलिजाई । पुनि जो जैसा कर्म कराई ॥
कोइ गंधर्वके लोक समाहीं । देवलोकी परजापति पाहीं ॥

हिरण्य गर्भ गुरु पंडित जासी । यज्ञ करंत चंद्रपुर बासी ॥
जीव आतमाको गुण येही । जेहि औसर जैसी गह देही ॥
भ्रम भयते संयुक्त जो होई । भ्रमही रूप बनावै सोई ॥
ज्ञान बुद्धि जब होय संघट्टा । ज्ञान रूप हो भ्रम भय कट्टा ॥
पुण्य पाप कर्मनते जूटा । बँधा जीव ग्रह ताही खूटा ॥
तिहि अनुसार कर्म सब करई । जैसो कर्म धाम तस धरई ॥
जैसी देह कर्म कर तैसा । सदा आत्माको गुण ऐसा ॥
जीव वासनाते नित पूरन । जस बासना ताहिते जूरन ॥
मनमें यथा मनोरथ होई । अंतकाल फल पावै सोई ॥
रही लगी जह जिवकी आशा । सूक्षम तन धरि तहकर बासा ॥
पुत्रकामना जाको होई । पुत्रदेह धरि प्रकटै सोई ॥
पुत्रको ऐसो उचित बनावै । पिताकि मनकामना पुरावै ॥
पिता मनोर्थ जो सुतन पुरावै । तौ पितु वहुरि देह धरि आवै ॥
पितु अपने मनोर्थको हेरे । धरे देह निजु इच्छाप्रेरे ॥
ज्ञान अरु परमार्थके कारण । जीव कीनमानुष वपु धारण ॥
अवलों कथा प्रसंग जो रहेऊ । बंधकामना ब्यौरा कहेऊ ॥
वर्णन अव कीजे कछु तिनको । रहित कामना मनहै जिनको ॥
सकल कामनाको जो त्यागे । कारण द्वै तिहिमाह विभागे ॥
होय कामना जो कछु हीये । फेर न चाह भोगि भल लीये ॥
द्वितिये ज्ञानदृष्टि मनकामा । तुच्छ दृष्टि देवै सब तामा ॥
मिथ्या सकल जोकछु दरशाई । जानि अनित्य न नेह लगाई ॥
आतमज्ञान सर्वपर जानी । ताते सर्व लाभको मानी ॥
आतमते सब कछु प्रकटाना । ताहि लाभसव लाभ लहाना ॥
सकल कामना जो कोइ त्यागे । आतमज्ञान तासु उर जागे ॥
जौं कछु चितमें चाह चपेरे । तौन वीन तन यह जिव हेरे ॥

जाके हृदय कामना नाहीं । ब्रह्मस्वरूप कहीजे ताहीं ॥
रहित मनोरथ अमर है सोई । सरनद्वार कातिक जिव होई ॥

छंद—सब चाह उरते दाह में तब मुक्ति याको संयहै ।
जबलोन करिये कामना तिहि कालनाजिव अंयहै॥
यहि लोककी वहि लोककी तिहि शोकमेंयहवंयहै ।
चाहै चमारी चूहरी तिहि फूहरी दुरगंय है ॥
जिमि सर्प त्यागेकेचुली इमि चाहउरते त्यागिये ।
तजिताहि फणिफिर चाहनहिंयोंपुनिननामें पागिये
मद मार विषय विकार डारके रूपते अनुरागिये ।
दलमलिनचलदल ललिनज्ञानेनब्रह्महोजियजागिये

चौपाई ।

जो निष्काम कर्म को करही । तिनको कबहु न घाटा परही ॥
चाह न कर्मफलनते जाही । निश्चय अधिक कर्मफल ताही
नफाहेतु जो कर्मको गहते । घाटा हू पुनि सोई सहते ॥
जिनको फलनकी इच्छा नाहीं ।जो प्रभुकृपा सेतिहिमिलजाहीं॥
सो फल नफामें लेख लगाये । ऐसी समुझ मुक्तिपद पाये ॥
जप तप तीर्थादिक व्रत दाना । सहित मनोरथ जाने ठाना ॥
इनको फल जो कोई चाही । सो जिव असुरलोकमें जाही ॥
कर्मके बंधनमें सो बांधा । वृथा सो निज इंद्रिनकोसाधा॥
ताहि सो अपनो ब्रह्मसुख खोई । अंधकारमें अधिक बिगोई ॥
जो कोई है आतमज्ञानी । सर्वमई सो आपुहि जानी ॥
पुण्यपाप सुख दुःख सब जोई । नर्क स्वर्ग आदिक जो होई ॥
ब्रह्मा विष्णुरुद्र अभिमानी । सो सब अपनी देह बखानी ॥
भ्रमरज बंधा जीव अज्ञानी । सो छूटै आतम जब जानी ॥
जिनुमें नाहिं साधुकी करनी । वचन बनाय ज्ञान बहुबरनी ॥

साधू नहिं भाड है सोई। ताते अधिक न शठ है कोई॥
तिनते भलो आस्तिक सोऊ। आगम फल आसा कर जोऊ॥
कर्म उपासना ज्ञान जो होई। भिन्न भिन्न तिहि फल कह सोऊ॥
ज्ञानते इनमें भेद विचारा। तिनको फलहु बताव जो न्यारा॥
सो अक्षर अभ्यासी अहई। ताहि न अर्थी पण्डित कहई॥
कर्म उपासनाज्ञान जो तीनी। एकै फल तिनते कहदीनी॥
सनबंधी यक दूजा हेरो। ज्ञानको अर्थ जाननो टेरो॥
कर्मको मर्म न हृदय गहाया। नहिउपास्यगुणको लखिपाया॥
कर्म उपासना झूठ तिनके। कछु ब्यौरा हियमें नहिं जिनके
कर्मकोअर्थ याहि विधिकहना। चाल चलन सुकर्मसब गहना॥
जाके हृदय हो उत्तम ज्ञाना। करनी तासु विरुद्ध लखाना॥
ताहि ज्ञानते गुन कछु नाही। कर्म उपासना वृथा कराही॥
साची प्रीत उपासना सोई। होय एकता रहै न दोई॥
जबलो नहि यह गुन दरशाई। कर्म उपासन ज्ञान वृथाई॥
जो कोइ विषयनको त्यागे। ताके हृदय ज्ञान यह जागे॥
ज्ञान दृष्टि करि तब सो जाना। कर्मोपासन योगो ज्ञाना॥
चारों चार तत्त्वमें कहिये। स्वर्गादिकफलसृष्टिनिहि लहिये॥
चारों सिद्धिन सम सुख दाई। घटि बढ़ि येयन सुख कोइ पाई॥
बिना ज्ञान करा कर्म जो लागू। कर्मोपासन अथवा योगू॥
सोनिशिदिनजौनिजुननकरही। आशातृष्णायुतबुधि नशही॥
कर्मोपासन योग समाधा। ज्ञान सहित जो कोई साधा॥
सो सर्वविषय अविद्या जानी। जीयत जीवन मुक्त सो प्रानी॥
मुये विदेह मुक्ति लह सोई। जिनके हृदय ज्ञान अस होई॥
मरणकाल जिहि औसर आवै। देहकि नेह जीवको छावै॥
तनकीप्रीति से दुःख बड माने। काहूको नाहिं तब पहिचाने॥

जीव आत्मा यह तिहि बेले । इंद्रिनको निजु संग सकेले ॥
सब इंद्री तजि निज निज खूटे । जाय जीव आतम ते जूटे ॥
उरमह दिसे बुद्धिके रूपा । मूर्ति एक नामें सब रूपा ॥
प्राणधारि तन आपुहि जाना । इंद्री सकल रहितभे ज्ञाना ॥
दृष्टि तवै देखनते हिलई । सूक्षम तन माहि सूर्जते मिलई ॥
सूंघन पृथ्वी माह समाई । रसना स्वाद वरुण में जाई ॥
वाक अग्निमें पौन समीरा । दिशा स्रौन मनशशिके तीरा॥
भूताकाश बुधिकर थाना । जिव सब संगले करे पयाना ॥
जो जिव भले कर्मको करता । इगमार बाहर पग धरता ॥
सूर्य माह सब जाय समाई । इमि सब इंद्री रह रहाई ॥
भले कर्म जिनके अधिकाई । ब्रह्मरंध्र काढि बाहर आई ॥
जैसो कर्म करे जो कोई । तैसी गह गहे पुनि सोई ॥
जिवको वासा तनते छूटे । आवा गौन श्वासको टूटे ॥
जड समान देही रहि जाई । जीव नवीन कलेवर पाई ॥
अहं बोलिके जीव सिधारे । ह्वाँ में प्रथमहि शब्द उचारे ॥
सहित कर्म जिव करे पयाना । तजितनथूलसो लिंग लहाना ॥
निजकर्मनके प्रेरित येही । सदा नवीन धरे जिव देही ॥
जिमियक भूषण भंजि सोनारा। निज इच्छाते और सवारा ॥
तैसे देह जीव यह गहई । पुनि पुनि गहै तजै श्रुतिगहई ॥
पूरन काल जीवको बाजा । उर्ध गमनको करै समाजा ॥
अधर लोक दोउ लोकके बीचे । कर्म तहां जब जिवको खींचे ॥
ज्यों जाग्रतस्वपने भरमाई । अपने कर्मकोफल इमि पाई ॥
सरगुन नाहिकर सुरनमें बासा । असुरके सुरन नाहि दुःखचहुपासा
प्राण स्वप्नमें देखत सोई । जाग्रित माह विचारै जोई ॥
ताहि समान रहै सो देहा । दुखसुखको है कारण येहा ।

स्वप्न समान नर्क अरु स्वर्गा । इच्छारहित ग्रहित अपवर्गा ॥
ऐसे निज अनुमान गहाये । नर्क स्वर्ग अरुमध्य कहाये ॥
मारग मुक्ति कहावै सोई । सूरय मंडल बेधे जोई ॥
ब्रह्म लोककी मारग पाई । ताहि संग निज बास गहाई ॥
जिमिदीपक बटज्योति अपारा । जीव आतमा रूप सोधारा ॥
नन्हाजाल आतमकी ज्योती । सो बहुरंग ढंग की होती ॥
श्वेत हरित दुति प्रीति देखाये । भूरा रंग तासु प्रकटाये ॥
नमन प्रकाश तासु उर होई । मुक्त होत पहुँचे जो कोई ॥
सुषुम्नामें मिलि एकसौ नारी । उत्तम मध्यमलोक सिधारी ॥
केती नसा अधोमुख आहीं । अधोगतीको सो लेजाहीं ॥
गहे गल तिहि मारग जबही । अधोगती जिव पहुँचैतबही ॥
यहिबिधि नर्क स्वर्ग जिव जाही । थितप्रमाण दुखसुख लहताही
पूरण जब करार हो आवै । तब मृतमंडल वासा पावै ॥
कर्मके बंधन जिव तन धरही । चार खानिमेंदुःखसुख भरही ॥
स्वेदजजरायुज अंडज पिंडज । नाना बरनरूप निजुर सज ॥
अंतमें जीव सुगति रहजाही । प्रकट होय सोधरि तनताही ॥

इति ।

अथ जीवको योनिप्रवेशवर्णन--चौपाई ।

योनिप्रवेश जीव जब करता । कोइ धूम्र मारग पग धरता ॥
देहस्थानमें जाय समाई । वीर्य रूप ह्वै सो प्रकटाई ॥
मेघबुन्द मारगते कोई । हो रसरूप औषधी सोई ॥
तेहि भोगीके बीर्य मँझारा । केते प्राण बायुके द्वारा ॥
पौन पंथ गहि केते समाई । केते धान खेत प्रबेशाई ॥
चावल आदिक अन्नमें रहई । नाना वर्ण रूप सो गहई ॥
केते गगनमें स्थित गहाई । चंद्र किर्णमें रहे समाई ॥

क्रियमार्ग आपरहि समाही। किते पुष्प फलमें भरजाही ॥
ततधारी तिहि भोजन करही। जड आतमके बीयमें भरही ॥
सो सुखोमिमें वेष्टित सारे। पिंजर गर्भमें सोई सिधारे ॥
दूध यथा है घृतमें पुरा। तिमि बीरजमें सब जिव शुरा॥
बीरज दुरबीनते देखो। चलतहिलत जिव अनित निरेखो।
इति।

अथ शरीरवृक्षवर्णन–चौपाई।

एक प्रणवते सब संसारा। सबको आदि सर्व करतारा ॥
ब्रह्म सोई ओंकार कहीजे। मन ओंकार न भेद गहीजे ॥
ओंकार मन कर्म निरंजन। कर्म स्वरूप जगतको रंजन ॥
कर्मते फुटी तीन पुनि शाखा। रज सत तम जगकारन राखा ॥
कर्मके करत होय निहकर्मा। अगम ज्ञान गहि टूटे भर्मा ॥
तृष्णा ग्रंथि कर्ममें परई। सोइ जीवको बंधन करई ॥
आतम परमातम यक रूपा। विषयमें भूलि परा भ्रमकूपा ॥
विषयवासना त्यागे जोई। ब्रह्मस्वरूप जानिये सोई ॥
आतम परमातमा विहंगा। दोनों एकरूप यक रंगा ॥
एक है पंछी एक है छाया। छाया नहिं आया [illegible]॥
मूल थूल जहँ तहँ प्रभु आपू। भ्रमकरि न्यारा न्यारा थापू ॥
पडा जीव यह त्रिगुनके फंदा। भूला रूप चिदानंदकंदा ॥
कायावृक्ष ऊर्ध्व है मूला। हेठ शाख पत्री फल फूला ॥
मूल परम पुरुषको भेवा। पेड निरंजन शाख त्रिदेवा ॥
पाती जान सकल संसारा। सत्य कबीर बचन उचारा ॥

सत्य कबीर बचन–शब्द।

सार शब्दसे बाचि हो मानो इतबारा हो।
अक्षैय पुरुष यक वृक्ष है निरंजन डारा हो ॥

---

१ शरीर वृक्षका चित्र देखो [illegible] प्रकाश में।

शाखा निरंजन बने पाती संसाराहो।
ब्रह्मा वेद सही किया शिव-योगपसाराहो॥
विष्णुमाया उत्पतिकिया उरलाव्यौहाराहो।
तीन लोक दशहु दिशा रोके यमद्वारा हो॥
ज्योतिस्वरूपीहाकिमाजिनअमल पसाराहो।
अमल मिटावो ताहिको पठवो भवपाराहो॥
कहै कबीरगतिहिअमरकरोनिज होयहमाराहो।

चौपाई।

यजुर वेद भाँप भल ढंगा। जिमि आतम परमात्माबिहंगा॥
बहुरि यकादश गीता कहई। जैसे फाँस जीव गल गहई॥
कामिक जीव बँधा बहु बंधन। फँसा आश तृष्णाके धंदन॥
साखी-माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गई शरीर।
आशा तृष्णा ना मुई, यों कथित कहै कबीर॥

इति धर्मरवृक्ष वर्णन।

अथ संप्रदाय धर्म वर्णन-चौपाई।

वेदमें दोय संप्रदा जानी। यक श्री यक शंकरी बखानी॥
श्रीसंप्रदा विष्णुकी होई। शिव संप्रदा शंकरी सोई॥
दोहुमें चार चार विधि भाखो। न्यारा न्यारा नाम सो राखो॥
प्रथमें विष्णु संप्रदा कहिये। चार भाग पुनि तामें लहिये॥
प्रथमें श्रीसंप्रदा बखानो। रामानुज आचारय मानो॥
द्वितिय शिव संप्रदा प्रचारी। विष्णु श्याम ताके आचारी॥
तृतिय ब्रह्म संप्रदा साका। माधवानंद अचारय जाका॥
सनकादिक संप्रदा चतुर्थे। निम्बादित्य अचारय पुष्टे॥
प्रथम कहो श्रीमत अथाई। रामानुजकी कथा सुनाई॥

इति।

अथ रामानुजजीकी कथा—चौपाई ।

होन लगी जब धर्म कि हानी । शेषने तब कह शारंगपानी ॥
धरणी जाय धरो अवतारा । करो तहाँ श्रुति धर्म प्रचारा ॥
भगवतकी जब अज्ञा पाये । तब धरणीधर धरणी आये ॥
केशव यज्वा विप्र कहाऊ । कांति मती माताको नाऊ ॥
ताके गृहमें सो तनधारी । धरम धुरंधर परम अचारी ॥
आठ सौ वर्षके ऊपर होने । कांचिपुरीके उत्तर कोने ॥
देश उडीसेके दिश दछिन । भूतनगरी अवतार धरे तिन ॥
जक्तमाह आचार चलाये । पुनि पुरुषोत्तम पुरमें आये ॥
तहाँ जाय निजमनहि विचारा । जगन्नाथमें चलै अचारा ॥
जगन्नाथ नहिं मान्यौ सोई । मेरे पुर आचार न होई ॥
तब हरि ऐसी कीन उपाई । रामानुज कह लियौ उठाई ॥
निज पुरते रात्रीके माही । धरदियो रंग पुरीमें ताही ॥
रामानुजको निज अस्थाना । तोता द्री कूर्मिगरमें जाना ॥
एकसौ वीस वर्षलौं जीये । गुरुपीढ़ी इमि वर्णन कीये ॥

इति ।

अथ रामानुजजी की गुरुपीढ़ी वर्णन ।

दोहा—प्रथमें नारायण कहो, द्वितिये लक्ष्मी जान ।
विश्वक्सेन तृतीय कहो, पुनि शठकोप बखान ॥
पंचम श्रीनाथो कहो, पुंडरीकाक्ष है षष्ट ।
राममिश्र सतयें कहै, यमुनाचार्य अष्ट ॥
नौमें पूर्णाचार्य है, रामानुज है तासु ।
ग्यारह देवाचार्य है, हर्यानंद है जासु ॥
तासु राघवानंदजी, ताके रामानंद ।
पंद्रहे रामानंदके, शिष्य अनंतानंद ॥

बहुरि अनंतानंदके, कृष्णदास जी शिष्य।
बहुरि कीलजी तासुके, गलतागद्दी दिस्य॥
कीलते पुनि पंद्रह गनो, गलता जयपुर माहि।
हरिप्रसादलों लेखिये, चौदह पीढी ताहि॥
उन्नीस सौ तेरह सँवत लों, लेखा कीजै तास।
ईश्वर जक्तमे भिन्न है, द्वैतधर्म परकाश॥

इति।

अथ त्रिदंडीको वर्णन—चौपाई।

श्रीसंप्रदाके जो संन्यासी। गृह तजिके जब होहि उदासी॥
दंड हाथमें धारे सोई। सो यक ढाककी लकरी होई॥
तीन शाख तिहि लकुटी माहीं। नाम त्रिदंडी तासु कहाहीं॥
जो कोई सो दंड गहाये। नाम त्रिदंडी तासु कहाये॥
वस्त्र श्वेतके सिंगरफ रंगा। भगवा आदिक धारे अंगा॥

इति त्रिदंडी।

अथ रामानंदजीकी कथा--चौपाई।

रामानंद विप्र औतारा। मथुरा नग्रमें सो तन धारा॥
धन विद्याते पूरन रहेऊ। सब लुटाय संन्यासी भयऊ॥
यक आसम गुरु रामानंदा। विचरत मिले राघवानंदा॥
ताहि राघवानंद बताई। काल तुमारा पहुँचा आई॥
मृत्यु सुनत रामानंद डरेऊ। राघवानंदसे बिनती करेऊ॥
मैं विद्यामें जन्म गँवायौ। भजन विहीन मृत्यु नियरायौ॥
मोपर दया करो गोसांई। कालफंदते लेहु छोडाई॥
राघवानंद कृपा तब कीने। ताहि आपनी दीक्षा दीने॥
ऐसी युक्ति बहुरि सो करेऊ। तासु प्राण ब्रह्मांडमें धरेऊ॥
मृत्युकाल बीता जब सारा। तब ब्रह्मांडसे प्राण उतारा॥

अधिक कृपा गुरु तापर कीनो। रामानंदको यह बर दीनो ॥
आयू साढ़े सात सौ वर्षा। बकसिदीन गुरुको हिय हर्षा ॥
गुरुसेवा चिरकाल बिताये। पुनि रामानँद काशी आये ॥
रामानुजकी संप्रदामाही। अधिक अचार देखिये ताही ॥
कछुक खेदको कारण पाई। रामानंद अचार भुलाई ॥
आचारिनमें जब पग दीने। पगसे तब तिहि बाहर कीने ॥

दोहा—बहुरि राघवानंदजी, रामानंदसे भाष।
अब न्यारी निज संप्रदा, कीजै मन अभिलाष ॥

चौपाई।

रामानंद संप्रदा न्यारी। नादिनमें भे अलग अचारी ॥
रामानंदको घना पसारा। धर्म आपनो जग विस्तारा ॥
रामानंदके शिष्य घनेरे। सिद्ध प्रसिद्ध भे जक्त बडेरे ॥
अनंता अरु सत्य कबीरा। सुरसरा सुखानंद मतिधीरा ॥
भावानंद पीपा रविदासा। धनाआदि गुनगन परकाशा ॥
केते सिद्ध साधु गुनधारी। रामानंद पसारा भारी ॥
बावन द्वारा जाको भाषा। रामानंदको बहु शिष साषा ॥

इति।

अथ श्रीसंप्रदायको धामक्षेत्र वर्णन-वार्ता।

अयोध्या धर्मशाला चित्रकूट सुखविलास गोदावरी प्रदक्षिणाक्षेत्र धनुपतीर्थ रामनाथ धाम अच्युतगोत्र शुक्लवर्ण सीता इष्ट जानकी मंत्र रामउपासना मंत्र राघवानंद सदाप्रसाद अनंत शाखा सामीप्य मुक्ति श्रीनद्वार लक्ष्मी आचार्य विश्वामित्र ऋषि योगवाशिष्ट मुनि हनूमान देवता हनूमान मंत्र राम गायत्री ऋग्वेद हरिनाम आहार विष्वक्सेन पार्षद रामानुज वैष्णव।

अथ शिवसंप्रदाय वर्णन--चौपाई ।

विष्णुकांचि दक्षिणके माहीं । विर्दराजको मंदिर ताहीं ॥
तहँवा परमानंद मुनीशा । भजन ध्यान धारे जगदीशा ॥
तापर शिवजी कीनी दाया । हरि उपासना भेद बताया ॥
शिवजी मुख्य अचारज पाका । ताते चली संप्रदा शाका ॥
विष्णु श्याम संप्रदामें येही । अधिक प्रसिद्ध भयौ मत जेही॥
भई प्रसिद्ध ताहिके नामा । विष्णु श्याम आचारय यामा ॥
धर्म तासु अद्वैतक होई । ईश्वर जक्तभेद नहिं कोई ॥
जबहि वल्लभाचारय भयऊ । कछु उपासना भिन्न सो कियऊ ॥
गोकुल ग्रामहि सो पग दीने । वृंदावनमें वासा कीने ॥
यह संप्रदा चाल यह धरही । बालकृष्णकी सेवा करही ॥
भिन्न २ गद्दी तहँ अहई । नारि पुरुष हरिसेवा गहई ॥
नंद यशोदा आपको जानी । पुत्र सो प्रिय हरिसेवा ठानी ॥

इति ।

अथ विष्णु श्यामजीकी कथा और गुरुपीढीवर्णन--चौपाई ।

विष्णु श्याम द्विजकुल औतारा । दक्षिणदेशमाह पगु धारा ॥
गुरु पीढ़ी ताकी इमि कहिये । शिवके परमानंदको लहिये ॥
ताके पुनि आनंद मुनीशा । पुनि प्रकाशमुनि श्रीकृष्णदीसा॥
नागाचरमुनि जैमुनि श्रीमुनि । इमि उनचास पीढ़ी बीतीगुनि॥
उनचासवीं पीढ़ी जब आई । विष्णुश्याम तबही प्रकटाई ॥
ताके शिष्य लक्ष्मण भट भैऊ । तासु वल्लभाचारय कहेऊ ॥
ताके विट्ठलनाथ प्रसंशा । ऐसे प्रकटे पंद्रह वंशा ॥
पंद्रहवीं पीढ़ी जब आई । मनसाराम तबै प्रकटाई ॥
विष्णुश्यामसे ये पंद्रह भो । संवत उन्निससौ तेरहलो ॥

इति ।

अथ शिवसंप्रदायको धामक्षेत्र वर्णन ।

विष्णुकांची धर्मशाला मार्कंडेयक्षेत्र इंद्रवन सुखविलास पुरुषोत्तम धाम लक्ष्मी इष्ट जगन्नाथ उपासी तुलसी मंत्र त्रिपुरारि शाखा वामदेव आचार्य्य सायुज्य मुक्ती नवद्वार हरिनाम अहार यजुर्वेद अच्युत गोत्र शुक्लवर्ण वट कृष्ण परिक्रमा जलबिंदु ऋषि नारद देवता विष्णुश्याम वैष्णव ।

इति ।

अथ ब्रह्मसंप्रदायवर्णन–चौपाई ।

कह अब तृतीय संप्रदा सोई । ब्रह्मा आदि अचारय होई ॥
आदिकाल नारायण देवा । ब्रह्मासे भाषे यह सेवा ॥
यहि संप्रदा अचार्य सयाना । भये माधव नंद प्रधाना ॥
भै संप्रदा विदित तिहि नाऊ । माधवाचार्य गहे भल नाऊ ॥
कांचिपुरीके पश्चिम दक्षिण । द्विज कुलमें औतार गहे तिन ॥
द्वैताद्वैत धर्म जिनकेरे । ईश्वर निज मायाको प्रेरे ॥
तब यहि जगकी रचना होई । ईश्वर भिन्न मिल्यो पुनि सोई ॥
गुरुपीढी अब कहो बखानी । आदि अचारज सारंगपानी ॥
द्वितिय ब्रह्मा तृतिय नारद । चौथे व्यास जो बुद्धिविशारद ॥
सुबुधाचार्य नरहराचारय । सनम कहे माध वाचारय ॥
माधवाचारजने लेख उचारा । पूर्नानन्द लो वंश अठारा ॥

इति ।

अथ ब्रह्मसंप्रदायके धाम क्षेत्र वर्णन वार्ता ।

अवंतिका पुरी धर्मशाला बद्रिकाश्रम धामा नैमिषारण्य सुख विलास अंगारक्षेत्र सावित्री इष्ट ब्रह्मोपासी विष्णु हंस मंत्र हंस देवता सालोक मुक्ति मोक्षद्वार श्रीकाला चार्य अद्वैत

शाखा अच्युत गोत्र शुक्ला वर्ण हरिनाम अहार परमहंस ऋषि नारायण पार्षद अथर्वण वेद माधवाचार्य वैष्णव ।

इति ।

अथ सनकादि संप्रदाय वर्णन–चौपाई ।

चौथीं संप्रदाय सनकादिक । निंबादित आचार्य मरयादिक॥
अरुण ऋषीश्वर द्विजकुल टेरा । निकट गोदावरि नग्र मुंगेरा ॥
धर्म वशिष्ट द्वैत सो धारा । अहिकुंडलनहिअहिते न्यारा ॥
जग ईश्वर नहि भिन्न रहाई । सदा काल दोहुकी यकताई ॥
गुरुपीढी यहि भांति बतायन । प्रथम हंस औतार नरायन ॥
पुनि सनकादिक नारद कहिये । चौथे निम्बादित को लहिये ॥
निम्बादितसे लेखा ठनिये । पैंतिस पिढिहरिव्यासलो गनिये
भये प्रतापमान हरिव्यासा । ताते भल यह धर्मप्रकासा ॥
जो हरिव्यासके शाखा भेऊ । नाम तासु हरिव्यासी कहेऊ ॥
सो भूराम हरि व्यासके अंशा । ताहूको गुन अधिक प्रसंशा ॥
पुनि हरिव्याससे लेख लगाई । सँव्वत उन्नीस सौ तेरह ताई ॥
बाहर पीढी गई सिराई । माखन दास देह तब पाई ॥

इति ।

अथ सनकादिक संप्रदायके धाम क्षेत्र–वार्ता ।

मथुरा धर्मशाला क्षेत्र गोमती वृंदावन सुख विलास गोवर्द्धन परिक्रमा द्वारावती धाम रुक्मिणी इष्ट गोपाल उपासी वंश गोपाल मंत्र गोपालगायत्री हंस शाखा सारूप्य मुक्ति नाशिका द्वारा सनकादिक आचार्य नारद मुनिदुर्वासाऋषि गरुड देवता सामवेद श्रीभद्रमहाप्रसाद अच्युत गोत्र शुक्लवर्ण हरिनाम अहार निंबादित वैष्णव ।

अथ चारों भाईका धाम क्षेत्र वर्णन वार्ता

माता वरुणावती पिता अगस्त्य मुनि गुरु धर्मऋषि स्वर्ग नगरी अच्युत गोत्र शुक्ल वर्णन अनंत शाखा सामवेद ॥ निष्काम भिक्षा धाम रंगनाथ सुख विलास कोटपाट हरिनाम आहार परम बद्रिकाश्रम क्षेत्र मठ वैकुंठलक्ष्मीदेवी नारायण ॥ देवता पूजा अक्षय वटकी श्रीरंग संप्रदाय ऊख खाडा शून्य स्थान सुमेरु परिक्रमा बीजमंत्र।

इति।

अथ चारों संप्रदायके तिलक स्वरूप—चौपाई।

श्रीसंप्रदाके जो अचारी। चरणचिह्न प्रभुतिलकसँवारी॥
दोय लकीर ऊर्द्ध गत हेरै। श्री अरु नासिकाच तिहि केरै॥
हेठ तिलक हरिको सिंहासन। जोगी बनावै निज कुलीलासन॥
मध्यमें लाल वरन श्रीकरही। दीपशिखा जिहिविधि लखिपरही॥
एतो पीत वरन श्री होई। रामानंद संप्रदा सोई॥
द्वितिये विष्णु स्वामिविधि जोहै। दोय लकीर लिलारमें सोहै॥
हेठ सिंहासन शून्य है बीचे। जाति वरनने चित नाहिं खींचे
साधू होहि विरक्त न होही। कहु मर्यादा पालना होही॥
तृतिये माधो संप्रदा कहिये। दोय लकीर ऊर्ध्वगत कहिये॥
हेठ सिंहासन ताहि बनाई। चरण चिह्न प्रभु माथ सोहाई॥
चौथै निम्बादित्य जो साजै। दोय लकीर लिलार विराजै॥
हेठ सिंहासन बिंदु बिचाला। ऊर्ध्व पुंड्र अरु वैष्णव चाला॥

इति।

अथ वैष्णवके द्वादश तिलक वर्णन

दोहा—ऊर्ध्व पुंड्र मस्तक प्रथम, ब्रह्मरंध्र पुनि जोय।

१ तिलकोंका चित्र देखो "कबीर भानु प्रकाश" में।

तृतिय नेत्र दोउ कंठ पुनि, उर नाभी फिरहोय ॥
उर दोहु दिश भुज दोय पुनि,तथा पृष्ट परमान।
वर्ग्न वैष्णवके यही, द्वादश तिलक बखान ॥

इति द्वादश तिलक।

अथ वैष्णवके दशचिह्न वर्णन।

दोहा-मत्र सेतनगोचकक, पुनि तुलसी गल गाथ।
ग्रानकुम्भको मंत्र गह, गोपी मृतिका साथ ॥
शिखा सूत्र करमंडलो धौत वस्त्र गुरुवाक।
चिह्न वैष्णवके दशो, चार संप्रदा साक॥

इति।

अथ बावन द्वारेके नाम।

दोहा-प्रथम अनंता जी कहे, साहिब सत्य कबीर।
पुनि सुखभगानंद जी, सुखानन्द मति धीर॥
अनभय नंद सुरारजी, अग्रदासजी कील।
दीपाजी रवि दासजी, नामदेव हढ शील॥
खोजी जंगी दिवाकर, वीरम त्यागी जान।
परशराम नाभा टिला, भोला नैनं बखान॥
पूरन बैराटी कहे, बहुरि घमंडी देव।
ज्ञानिकुवा हरि वंशजी, राघवा वल्लभ येव॥
गोकुल विठ्ठल करम चँद, जोगानंदी जोय।
धरनीदास मलूकजी, अलख देवनी होय॥
माधो कानी रामरावल, आत्माराम प्रकाश।
लाल नरंगी देव भडंग, भगवान तुलसीदास॥
हठी नरायण राम रँगी, चतुरा नागा होय॥
नित्यानंदी राम कबीर, श्यामानंदो सोय॥

हनूमान दास कमालजी, चेतन स्वामी नाम।
दास चतुर्भुज राम जपु, मन पुनि कह हैरान॥
इति ज्ञावनद्वार।

अथ सात अखाड़नके नाम।

दोहा—खाटंबी निरालंबि कह, संतोषी विख्यात।
निर्वानी दीगंबरी, पोकी निर्मोहि मान॥
इति सात अखाड़न।

अथ तेरह परम भागवतके नाम—चौपाई।

नारद पुंडरीक प्रह्लादा। व्यास वशिष्ठ पराशर वादा॥
भीषम रुक्मांगद विभीषना। अर्जुन अंबरीष शुक सेना॥
इति।

अथ रामानंदजी और सत्यकबीरकी कथा—चौपाई।

सत्यकबीर मनुष तन लीने। जोलहाके घर वासा कीने॥
अगम ज्ञान कथ साधुनपाहीं। सुनि आश्चर्य करे मनमाहीं॥
निजु निजु मनमें करे विचारा। वालक नहीं सिद्ध औतारा॥
सत्यकबीर—वचन।

साखी—तब हम साध सिद्धने, कथे गुप्ति घन ज्ञान।
सिद्ध साध मिलि मोकहं, पूंछे गुरुको नाम॥
चौपाई।

गुरुनहिं नाम कहां क्यों ओही। तब वे दोष देहि सब मोहीं॥
साकट होय कथ्यौ बहु ज्ञाना। गुरु बिन मुक्ति न होय निदाना॥
तब अपने मन कीन विचारा। तब गुरु ठठो द्वंद संसारा॥
हम गुरुमुक्ति दृढावन आये। गुरुसार जिवलोक पठाये॥
गुरु धारनको मनहि विचारा। रामानंदसे वचन उचारा॥
रामा नंद गुरु दीक्षा दीजे। गुरुपूजा कछु हमसे लीजे॥

तब रामानंद वचन सुनाई । शूद्रके कान न लागौ भाई ॥
रामानंद न दीक्षा दीने । तब कबीर अस उद्यम कीने ॥
बीच पंथमें पौंढे जाई । जिहि मारग रामानंद आई ॥
पिछला पहर राति जब आवै । रामानंद असनानको जावै ॥
चलेजात मारगमें जबहीं । लगा खराऊँ ठोकर तबहीं ॥
तब पुकारिके रोवनलागे । रामानंद खडे भे आगे ॥
बालक देखि दया उर आई । रामानंद कहे समुझाई ॥
मति रोवो मति करो पुकारा । राम नाम किन कहु मेरे बारा॥
तब कबीरसो शिक्षा पाई । गुरु शिष्यको भाव बनाई ॥
रामराम धुनि रटनि लगाया । रामानंदसे वचन सुनाया ॥

सत्यकबीर वचन शब्द ।

गुरुजी समुझि गहो मोरे बाहीं । औरनसो चेला हम नाहीं ॥
जो बालक रुनझुनवा खेलैसो बालक हम नाहीं ।
चौदह सौ चौरासी चेले तिनमध्ये हम नाहीं ॥
हम तो लेनेसत्तकोसौदापाखंडपूजवै हम नाहीं ।
बाँह गहो तो गहिके पकरो फेर छूटि ना जाहीं ॥
हाड चाम मेरे नहिं कोई जुलहा जाति हमनाहीं ।
तुमरी नावमें केवट नाही लहरि उठै विकरारा ।
गुरु समेत शिष्य जब बूडे कौन उतारो पारा ॥
जो तुमरे कछु उद्यम नाहीं भीखमांगिकिनखाहू।
मूरि सजीवन जानत नाहीं भूलि नबांधो काहू ॥
सूखे काठमें ज्यौं घुन लागे लोह लागी काई ।
बिन परतीत गुरू जोकीजें तो काल घसीटेजाई ॥
कहै कबीर सुनो रामानंद यह सिख लेव हमारी।
निरखिपरखिकें चेला कीजैतागुरुकी बलिहारी ॥

चौपाई ।

रामानंद गये अस्नाना । तब कबीर गृह कियो पयाना ॥
भोरहि कंठी तिलक लगाये । नगरलोग सब देखन आये ॥
पूछे किमि यह भेष बनाये । तब कबीर यह उत्तर सुनाये ॥
रामानंदको गुरु हम धारा । ताते ऐसे भेष सँवारा ॥
रामानंद खबर जब पाई । तब कबीरको टेरि बोलाई ॥
रामानंद गुरु परदा धारा । सत्यकबीर से बचन उचारा ॥
रे जोलहा तै कहसि न मोही । कब मैं दीक्षा दीनों तोही ॥
गुरूजी राम कृष्ण तुम मेरे । इन पंथ प्रकट क्यों तोरे ॥
तुम तब रामनाम मोहि दीना । मैं निज जन्म सुफल करिलीना
कहै गुरू यक बालक रहेऊ । ठोकर लगा राम तिहि कहेऊ ॥
गुरूजी हमही रहे सो बाला । रामनाम सुन भये निहाला ॥
कह गुरू तू वैश्य कि शूद्रा । वह तो हता बाल बुधिभोरा ॥
तिहि छिन बालकरूपदिखलायो । तब गुरु रामानंद पतियायो ॥
पै जोलहा ब्रह्मवादि कराहीं । अंतर ओट सो दियो बहाई ॥
कहँ साधु गुरुसे समुझाई । कबीरहि जुलहा न कहिये गोसाईं
अनंतानंद कहै परचाये । कबीरसो ब्रह्मरूप धरि आये ॥
दीजे दरशन इनको स्वामी । ये आहि ब्रह्मसो अंतर्यामी ॥
तबहु न दर्शन दीन गुसाँई । तब हम सन्मुख ठाढ़ भे जाई ॥

साखी—गुप्तासाह गोपहुँरहौं. पूछ को तुम आहु ।
मैं कबीर सेवक अहौं, अजहु नहिंपतियाहु ॥

चौपाई ।

रामानंद कहाव गुरु मोरा । सत्त कबीर मैं सेवक तोरा ॥
गुरु सोई जो शिष्य चितावै । शिष्य सोई गुरुसेवा लावै ॥
कहो गुरु गुरुज्ञान विचारी । कोंह पुरुष कौन है नारी ॥

कौन पुरुषको सुमिरो नामा। कहाँ कहां अविचल निजुधामा।
कहाँ ध्यान कीजै किहि केरा । तन छूटे कह होय बसेरा ॥
रामानंद कहै सुनु पूता । गुरुमुख ज्ञान रहो संयुक्ता ॥
आपै पुरुष आप है नारी । कहोज्ञान चित राख संभारी ॥
सुमिरहु दशरथ सुत श्रीरामा ।अवधपुरीअविचलनिज धामा॥
श्याम स्वरूप ध्यान मन धारो। तन छूटे वैकुण्ठ सिधारो ॥
कहै कबीर सुनो गुरुदेवा । यह समुझायकहो मोहि भेवा ॥
रामचंद्र त्रेतामें भयऊ । काहुदुखाय काहुसुख दयऊ ॥
लोभमोह जुत बन बन डोला । तत्त्वप्रकृत संगतितिहि बोला ॥
जौन ठाटते रघुपति आये । सुत कौसल्याको कहलाये ॥
जब त्रेता तब राम भुवारा । कौनपुरुषको सकल पसारा ॥

साखी-अहो गुरू समुझाइये, कोहै सिरजनहार ।
रामचन्द्र गुरु वंदऊ, कौन नाम आधार ॥

चौपाई ।

कहत निगम अस करबिचारा । पूर्ब अवर्न जन्म सो न्यारा ॥
तातमात बंधु सो नहि ताही । ना वह आवै ना वह जाही ॥
श्याम श्वेत नहि कहिये ताही । इंद्रासन वैकुंठ न जाही ॥
तीनलोक सब परलय होई । निजु धाम कहोकहां है सोई ॥
स्वर्ग लोक तुम राखी आशा । फिरि फिरि होय गर्भमें वासा ॥

साखी-स्वर्गनरक न्यारा, सो मोहि देहु चिन्हाय ।
कह तेतेजिव आयऊ, कहो गुरू समुझाय ॥

चौपाई ।

सुनहु कबीर कहो सो गहहू । करिये योग अमर है रहहू ॥
आसन साधहु बाँधहु मूला । अष्टकमलदलनिरखहु फूला ॥

चन्द सूर गहि कीजै मेला । मन पौना शुभ निश्चर खेला ॥
चढि आकाश अमृत रस पीवो । तब कहि तुम युग युग जीवो ॥

साखी—स्वर्ग नरकते न्यारा, ज्योतिपुरुष निर्वान ।
तहवाँते जिव आइया, कहो गुरू सहिदान ॥

चौपाई ।

कहै कबीर सुनो हो स्वामी । तुम हो सतगुरु अंतरयामी ॥
योगके किये अमर जो होई । तो पुनि योगी मरे न कोई ॥
का भो साधे आसन मूला । जो नहि मेटे संशय शूला ॥
का भो अष्टकमलके पेखे । जो नहि आप रूप निज देखे ॥
का भो चन्द सूरके मेला । जोनहि शब्दगुरूनि गहि खेला ॥
का भो सुष्मुनि जाय समाये । जो नाहीं अक्षर ध्वनि पाये ॥
क्या आकाश चढि अमृत पीये । जोनहि सारशब्द चित दीये ॥
ज्योति स्वरूपीपुरुष बतावहु । ज्योति काल तीनों पुर खावहु ॥
यहिजिव नाहि ज्योतिसे आवा । परम ज्योतिमे अंश उपावा ॥
जोजिव ज्योति पुरुषते होई । तो काहे जिव जाय विगोई ॥
ज्योति निरंजन काल अन्याई । सिद्ध तपीसबधरिधरि खाई ॥

साखी—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, सुर नर मुनिजन झार ।
ज्योति निरंजन सब कहे, खायो बारंबार ॥

चौपाई ।

जाहि कहतहो पुरुष निर्वाना । वही आहि तो काल देवा

साखी—योग यज्ञ जपतप किये, यह सबयमके जाल ।
कहै कबीरसतनामबिन, कबहुन छोडे काल ॥
पांच तीन जहवां नहि, नहीं प्रकृत प्रवेश ।
रविशशिपानीपौननाहि,तहँको कहो सँदेश ॥

चौपाई ।

कहै गुरु तुम शिष भये मोरे । यह सब बुद्धि को दीन्हु तें
कहै कबीर सब तुम परतापा । हमरे तुमहि माय अरु बाप
तब गुरु हमपर भये दयाला । निजकरदियौ सुमिरिनीमाल
कहै गुरु सुन साधु कबीरा । तुम तो सेवकहो मतिधीर
सर्वानंद विप्र यक आये । तिनपुनि गुरु ते गोष्टि करा
ताहि जीत गुरु शिष्य करावा । तब गुरु हम कह तिलक कर
सब पर श्रेष्ट हमें गुरु कीना । हम पुनि सबते रहै अधीन

साखी–गुरुके सब शिष्य मोहिको, बोलैं गुरूसमान ।
हम गुरु साधु अधीन हैं; भाषै निर्भय ज्ञान ॥

शब्द ।

लखै कोई विरलापद निर्वान । बिन रसना सूरा धरै ध्या
तामें दरशे पुरुष पुरान । कर्म छोडि सब भर्म नसा
दुरमति छोड़ि कमल धरु ध्यान । तीन लोकमें काल समा
चौथे लोकमें नाम निसान । रामानन्द गुरु करै बखा
दास कबीरको निरमल ज्ञान ।

इति ।

मेरो नाम कबीरा हो जगत गुरु जाहिरा ।
तीन लोकमें मागा मेरा त्रिकुटी है अस्थान ॥
पानीपौन समेरसमाना इस विधि रच्यौजहाना ।
गगन मंदिरमें बासा मेरा मंजनि है अस्थाना ॥
ब्रह्मबीज हमहीसे आया हमरै सकल जहाना ॥
अनहद लहर गगन गढ उपजै बाजै सोहं तारा ।
गुप्त भेद वाहीसे कहिये जो निज होय हमारा ॥
भवबंधनसे लेहु छोडाई निरमल करो शरीरा ।

सुर नर मुनि कोई भेद न पावै पावै संत गंभीरा ॥
वेद कदापि पार नहिं पावै ऐसे मतिके धीरा ।
कहैं कबीर सुनो रामानन्द दोनों दीनके पीरा ॥

चौपाई ।

रामानन्द कबीर कहानी । जक्तमाल बहु विधि बिख्यानी॥
कछु मैं सूक्षम लिख्यौ बनाई । कीरति जासु जक्तमें छाई ॥
सत्त कबीरको चरित अनेका । सो कछु इहाँ लिखा नहिं एका
केते परचा गुरुहि देखाई । तब ताके हिय निश्चय आई॥
मै घनघोर गुप्ति गुरु पाही । अगम ज्ञान सुनि बोले ताही ॥

रामानंद वचन ।

दोहा–मैं जाना तुम ओलिया मोहि पडा बड धोप ।
मूल दिक्षा मोहि देव कबीर,जीतब आवै संतोष ॥
करता तुम हो साधु हो, सत्य कबीर है देव ।
तन मन तुमको अर्पिहों, कल्ह दीक्षा मोहि देव ॥

सत्य कबीर–वचन ।

साखी–काल्ह करंते आज कर, आज करंते अब ।
औसर बीता जात है, ब्यौहार करोगे कब ॥
काल करंते काल है, मोहि भरोसा नाहि ।
यह तन काचा कुंभ है, बिनशि जाय छनमाहि ॥
घडी पलककी सुधि नहीं, करो कालको साज ।
काल अचानक मार है, ज्यौं तीतरको बाज ॥

चौपाई ।

जोगी गोरख नाथ प्रतापी । तासु तेज पृथ्वी पर व्यापी ॥
काशी नग्रमें सो पग धरही । रामानंदसे चर्चा करही ॥
चर्चामें गोरख जय पावै । कंठी तोरे तिलक छुडावै ॥

सत्य कबीर शिष्य जब भयऊ । यह वृत्तांत तब सो सुनि लयऊ
गोरखनाथके डरके मारे । वैरागी नहिं वेष सँवारे ॥
तब कबीर आज्ञा अनुसारा । वैष्णव सकल स्वरूप सँवारा ॥
सो सुधि गोरखनाथ जो पायौ । काशीनग्र शीघ्र चलिआयौ ॥
रामानंदको खबरि पठाई । चर्चा करो मेरेसँग आई ॥
रामानंदकी पहिली पौरी । सत्य कबीर बैठ तिहि ठौरी ॥
कह कबीर सुन गोरखनाथा । चर्चा करो हमारे साथा ॥
प्रथम करो चर्चा संग मेरे । पीछे मेरे गुरुको टेरे ॥
बालक रूप कबीर निहारी । तब गोरख तिहि वचन उचारी ॥

सत्यकबीर वचन--शब्द ।

कबके भये वैरागी कबीरजी कबके भये वैरागी ॥
नाथजी हम जबसे भये वैरागी मेरी आदि अंत सुधिलागी॥
धुंधूकार आदिको मेला नहीं गुरू नाहिं चेला ॥
जबका तो हम योग उपाया तबका फिरों अकेला ॥
धरती नही जदकी टोपी दीना ब्रह्मा नहीं जदका टीका ॥
शिवशंकरसो योगी नाहीं जदका झोली शिक्का ॥
द्वापरकी हम करी फावडी त्रेताको हम दंडा ।
सतयुग मेरी फिरीदुहाईकलियुगफिरो नौखंडा ॥
गुरुके वचन साधुकी संगत अजर अमर घरपाया।
कहैं कबीर सुनोहो गोरख जब हमतत्त्व लखाया ॥
जो बूझे सो बावरा क्या उमर हमारी ।
असंख्य युग परलय गई तबके ब्रह्मचारी ॥
कोटि निरंजन हो गये परलोक सिधारी ।
हमतो सदा महबूब हैं सोहं ब्रह्मचारी ॥
दश कोटि ब्रह्मा भये नौ कोटि कन्हैया ।

सात कोटि शंभू भये मोरे एक पलैया ॥
कोटिन नारद हो गये मुहम्मद से चारी ।
देवतनकी गिनती नहीं है क्या सृष्टि बिचारी ॥
नहिं बूढ़ा नाहिं बालक नहीं भाट भिखारी ।
कहै कबीर सुन गोरख यह उमर हमारी ॥
अविगतअविगतसेचलिआयेकोइभेदमरमनहिंपाया ।
ना मेरे जन्मन गर्भ बसेरा बालकह्वै दिखलाया ॥
काशीनगर जंगल बिच डेरा तहां जोलाहे पाया ।
मात पिता मेरे कछु नाहीं ना मेरे गृह दासी ॥
जुलहाको सुत आनि कहाया जगत करै है हाँसी ।
धड नहिं मेरे गगन कछु नाहीं पृथ्वी ना अवतारा ॥
सत्य स्वरूपी नाम साहिबको सोहं नाम हमारा ।
अधरद्वीपनहिं गगनगुफामें तहँनिजवस्तुसुसारा ॥
ज्योतिस्वरूपीअलख निरंजनसोजपै नाम हमारा ।
हाड चाम लोहू नहिं मेरे हौं सतनाम उपासी ॥
तारन तरन अभै पददाता कहैकबीर अविनासी ॥

गोरख वचन ।

कौन छुरा कौन पानी गुरू मूँडे कौन बानी ॥

सत्यकबीर वचन ।

शब्द छुरा निरंजन पानी गुरुमूँडे निरबानबानी ॥

गोरख वचन ।

कौन दर कौन दरवेश कौन गुरुने मूँडे केश ॥
कौन पुरुषकोसुमिरेनाँव माँगो भिक्षामांडोगाँव ॥

सत्यकबीर वचन ।

मन दर पौन दरवेश गुरू गोविंदने मूँडे केस ॥

अलखपुरुषकोसुमिरोनांवमांगो भिक्षातारोगांव॥
गोरख वचन-चौपाई ।

कौन तुमारी उतपति कीनी । किसने तुमको मालादीनी ॥
कौन गुरू दीनो उपदेश । उतारो माला करो आदेश ॥

कबीर वचन।

आदि पुरुषने उतपति कीनी । सिरजन हारने माला दीनी ॥
गुरुगोविंद दीनो उपदेश । न उतारो मालानाकरों आदेश।

गोरख वचन ।

क्या लै उठोक्या लै बैठो रहो.कौनकी छाया ॥
कौनमाह निरंजन पेखे कैसे त्यागी माया ॥

कबीर वचन ।

एकले उठे एकले बैठै रहे एककी छाया।
एकेमाह निरंजन पेखा सहजे त्यागी माया॥

गोरख वचन ।

कौन तुमारी डिब्बीबोलिये कौन तुमारा चावल ॥
कौनमो तुममेंसिद्धबोलिये कौनसोतुमरोरावल॥

कबीर वचन ।

काया हमारी डिब्बी बोलिये कर्म हमारे चावल ॥
एक हममें सिद्ध बोलिये और सकलहैं रावल ॥

गोरख वचन ।

कौन तुमारी गुदरी बोलिये कौन तुमारा धागा ॥
कौन तुमारी टोपी बोलिये काहेते मन लागा ॥

कबीर वचन ।

काया हमारी गुदरी बोलिये पौन हमारा धागा ॥
गगन हमारी टोपी बोलिये अलखपुरुप मनलागा

गोरखवचन ।

कौन तुमारी तिलक बोलिये कौन तुमारा छापा ॥
कौन तुमारी जाति बोलिये कहा तुमारी आसा ॥

कबीरवचन ।

तत्त्व हमारी तिलक बोलिये राम नामहै छापा ॥
वैष्णव हमारी जातिबोलिये शब्दसंहदसें बासा॥

गोरखवचन ।

शब्द कहांसे आया कहो शब्दको विचार ॥
नहीं तो तिलक माला धरो उतार ॥

कबीरवचन ।

शब्दै धरती शब्द अकाश । शब्दै पांच तत्त्वके वाश ॥
कहैं कबीर हम शब्द सनेही । शब्द न विनसै विनसै देही ॥

गोरखवचन ।

अंडान मंडान चार खुरी द्वै कान ॥
जान तो जान नातो झोली मालाडेरे आन ॥

कबीरवचन ।

अंडानधरती मंडानआकाश चारोंखूंट चारोंयुगी चंद सूर्य
द्वै कान । ना जानो मात्रा तो गुरु रामानंदकी आन ॥
शेली सिंगी और खटपटी । फिर बोलो तोरी कनपटी ॥

गोरखवचन ।

आसन बांधो वासन बांधो अरु बांधो नौद्वार ।
तोहि बांधो तेरे गुरुको बांधो निकसै कौन द्वार ॥

कबीरवचन ।

आसन मुक्ता वासन मुक्ता मुक्तहि नौ द्वार ॥
मैं मुक्ता मेरो गुरुभी मुक्ता निकसै दशसे द्वार ॥

चौपाई ।

गोरखनाथ कबीर समाजा । विविध ज्ञान विज्ञान विराजा ।
चर्चा पर्चा बहुविधि ठानो । विदित जक्तमें लोगन जानो ।
इहांलो कथा लिखो नहिं कोई । अंत वाद जिहि औसर होई ।
गोरख नर्म भये तिहि वारा । विनय सहित निज वचन उचारा ।

गोरखवचन ।

नवो नाथ चौरासी सिद्ध, इनको अनहद ज्ञान ।
अविचल घर कबीरको, यह गति विरला जान ॥
झोरी झंडा कूबरी, शेली टोपी साथ ।
दाया भई कबीरकी, चढाई गोरखनाथ ॥

धर्मदास वचन ।

दोहा–बाजा बाजा गलिनमें, परा नगरमें शोर ।
सतगुरु समरथ कबीरहैं, नजर न आवै और ॥

नानकशाह वचन ।

शब्द–वाह वाह कबीर गुरु पूराहै ।
पूरे गुरुनकी मैं बलिजैहों जाकौ सकल जहूराहै ॥
अधर दुलैचा पैंडे गुरुनके शिव ब्रह्मा जह झूलाहै ।
श्वेत ध्वजा फहरात गुरुनके बाजत अनहद तूराहै ॥
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै हरदम हाल हजूराहै ।
नाम कबीर जपै बडभागी नानक चरनको धूराहै ॥

सत्यकबीर वचन नानकशाह प्रति ।

शब्द–वाह वाह लडके जीतारहु ।
मंडुयेकी रोटी बथुयेकी भाजी ठंडा पानी पीतारहु ॥
प्रेमकि सुई सुरतिको धागा ज्ञानगुदरी सीतारहु ॥

यहि लड़केकी बड़ बड़ अँखियां निरखनि दरशन करनारहु ॥
कहैं कबीर सुनो भाई लड़के गमगमिक रस पीनारहु ॥

मलूकदास वचन ।

शब्द—जपो रे भाई साहिब नाम कबीर ।
एक समय गुरु वंशी बजाई कालिंदीके तीर ॥
सुर नर मुनि सब चकित भयेहैं अरु यमुनाजीको नीर ॥
काशी तजि गुरु मगहर आये दोऊ दीनके पीर ॥
कोइ गाडै कोइ अग्नि जलावै नेक न धरते धीर ॥
चार दागते सतगुरु न्यारा अजर अमर शरीर ॥
जगन्नाथको मंदिर थापे हटि गये सागर नीर ॥
आसा रोपि समुद्र हटाये ऐसे गुरू गंभीर ॥
दास मलूक श्लोक कहतहैं खोजहु खसम कबीर ॥

दादूरामवचन ।

साखी—अधर चाल कबीरकी, मोसे कही न जाय ।
दादू कूँद मिरग ज्यौं, पर धरति पर आय ॥
हिंदूको सतगुरु सही, मुसलमान को पीर ।
दादू दोनों दीनमें, अदली नाम कबीर ॥
हिंदू अपनी हद चलै, मुसलमान हद माह ।
दादू चाल कबीरकी, दोऊ दीनमें नाह ॥
दादू बैठ जहाजपर, जो दरियाके तीर ।
जलकी जेती माछरी, रटै कबीर कबीर ॥

नाभाजू वचन ।

दोहा—बानी अरबो खरबो, ग्रंथा कोटि हजार ।
करता पुरुष कबीर, रहै नाभ विचार ॥

गरीबदास बचन ।

साखी—गरीबपंजा दस्त, कबीरकासिरपरधारो हंस ।
जम किंकर चंपै नहीं, ऊधर जातहै वंस ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

श्लोकः—यः सुखसागरो दाता बीजज्ञानं तथैवच ॥
आद्यन्तरहितो लोके यः कबीर इहोच्यते ।
कलांशेनगतो भूम्यां विलासा सत्यसंज्ञकः ॥
दीनोद्धारेनिदक्षः कबीरसंज्ञः इहोच्यते ।
कर्ता कोन्यायकारीच व्यक्ताव्यक्तःसनातनः ।
रमते सत्यलोके यः स कबीर इहोच्यते ।

पारवतीजीने पूछा कि कबीर किसको कहतेहैं उसके उत्तरमें शिवजीने कबीर साहिबकी स्तुतिमें एक सौ एक श्लोक कहे हैं उस ग्रंथको कबीर एकोत्तर कहते हैं जो सामवेद और पाताल-खंडमें है उसमेंसे यह तीन श्लोक लिखा ।

इति ।

अथ वैष्णव आचार वर्णन—चौपाई ।

सहित विचार आचार बनेरे । उज्वल क्रिया तासुकी हेरे ॥
नित दातन मज्जन तन करही । शौचक्रियाभली भांतिसेधरही ॥
मांस मद्य आदिकहैं जेते । जानि अभक्ष न संग्रह तेते ॥
जप तप ध्यान धुन्धते धारे । ठाकुरकी पूजा विस्तारे ॥
मूरति होय कि मानस ध्याना । उभय भांति हरि सेवा ठाना ॥

अथ मूर्तिपूजा आठप्रकार वर्णन ।

दोहा—मनोमयीपरतक्ष कही, चित्र पखानो काठ ।
माटी धातु ध्यानमय, प्रतिमा पूजा आठ ॥

चौपाई ।

प्रथमहि पानी विद्या जानो । बिन विद्याकिमिहरिपहिचानो ॥
द्वितिये पुष्पको अर्थ कहीजें । एक देवकी टेक गहीजे ॥
तृतिये चावल अर्थ सुनाओ । भोगअग्निपरधान्यजनाओ ॥
चौथे चन्दनते इमि जानो । काम क्रोधकी कीजे हानो ॥
कीना दाह द्वेष सब जोई । उरते दूर बहाओ सोई ॥
पंचम धूप अर्थ इमि कहिये । प्रीत देव गरमीत गहिये ॥
छठये दीपको अर्थ बनाओ । बुद्धिदीप निजहृदय जगाओ ॥

अथ मुक्तिस्वरूप वर्णन—चौपाई ।

जीवते ब्रह्म होय जो कोई । मुक्तनाम भाषे श्रुति सोई ॥
चार भांतिकी मुक्ति प्रमाना । सालोको सामीप्य बखाना ॥
सारूप्यो सायुज्य कहीजे । ऐसो तिनको अर्थ गहीजे ॥
सालोकहि प्रभु लोक निवासा । सामीपा हरिके ढिग वासा ॥
सारूपा प्रभु रूप हो भासा । सायुज्यौ हरिमें मिल दासा ॥
जस वासना दास उर होई । तैसी मुक्ती पावै सोई ॥
जब उपासना पूरण भेऊ । जीवनमुक्त ताहि तब कहेऊ ॥
परम धामको जब सो जावै । हरिपारषद तासु ढिग आवै ॥
जब हरिधामको चालनलागे । थूल देहको तब सो त्यागे ॥
लिंगदेह तब धारन करई । पांचो तत्त्व देह परिहरई ॥
जब भूलोकते आगे चाला । पृथ्वी तत्त्व देह तब डाला ॥
बहुरि देह पानी की धारा । तब जलतत्त्व छोंडिहो पारा ॥
बहुरि अग्निदेही गह सोई । पार अग्नि घर तब होई ॥
फेरवायुकी देहको धारी । पौन घर बाहर पग धारी ॥
इमि तन त्यागतगहत नवीना । सकल घर बाहर पग दीना ॥
चलि ब्रह्मांड पार जब कीना । मायापार भे त्रिगुणातीता ॥

पुनि परमात्म प्रकाश प्रमाना। तामें जाय करे असनाना॥
करि असनान लिंगतन छोडा। दिव्य देह अविकारी जोडा॥
ज्ञानानंद ब्रह्म तन पाई। निज स्वामी के द्वारे जाई॥
आदर युत प्रभुके ढिग आवै। हरिगुनविविधि भांतिसे गावै॥
प्रभु दाया माया ते छूटा। कठिन दुःखते प्रभुपद जूटा॥
ब्रह्मानंद मगन मन होई। यद्यपि ऐसो समरथ सोई॥
रचै अमित ब्रह्मांड जो चाहै। पालपोषिके पुनि तिहि ढाहै॥
तदपि ब्रह्म सुख ऐसो लहई। और दिशा नहिं ता चित बहई॥
याहूमें व्यौरा बहु तेरा। कथाकछुकलिखिये तिनकेरा॥
व्यौरा वेद कहै यहि भाये। जो कोइ मुक्त स्वरूप समाये॥
सागरमें जस बुंद समाना। पै वह बुंद आपको जाना॥
बहुरि कहै श्रुति ऐसो लेखो। ऐसी मुक्ति जीवकी देखो॥
पुष्पमाल जैसे हरि केरो। अथवा जैसे भूषन हेरो॥
यहि विधि जिव हरि अंगमेंजूटा। जिहि औसर मायाते छूटा॥

इति मुक्त।

अथ परलोकमें पुण्यात्मा और परमात्माको वर्णन।

दोहा—कथा कहौ परलोककी, जब जिव त्यागै प्रान।
मुरछा मृतकेगत भये, पुनि तिहि जक्त फुरान॥

चौपाई।

जीवकि जब मुरछा गत होई। इंद्रिन सहित आप तन जोई॥
पिछली स्मृतिहि दियो बिसराई। जन्म पर्यंत आपको पाई॥
बाल युवा वृद्धादिक माना। जाति पांति कुलमें लपटाना॥
भ्रम करिके जिव जगको देखा। जैसे कछु स्वपनेको लेखा॥
जाग्रत स्वप्न भेद नहिं कोई। स्वप्नेहुमें स्वपनांतर होई॥
भ्रमही करि पितु माता जाना। मिथ्या भास गहे अज्ञाना।

मृतक होय जीव जिहि वारा । देह अंत वाहक नव धारा ॥
बहुरि वासना प्रेरि ले आवै । अधिभौतिक देही [illegible] ॥
अधिभौतिक देही जब पायो । दुःख सुखको कारन यह आया
हृदय कमल अंगुष्ट प्रमाना । जीव अकाश जो [illegible]
ताही कमलमें भर्मत रहई । लोक अनंत दृष्टिमें गहई ॥
तहँ कोटिन ब्रह्मांड निहारी । हृदय कमल निज [illegible]
तीन प्रकार पुण्य जनराशी । मूरख पुनि धार्मी अभ्यासी ॥
तृतिये सर्व शिरो मुनि ज्ञानी । भिन्न भिन्न गति निर्णय ठानी
धार्मी भ्यासीकी यह ज्ञाना । तन तजि इष्ट देव ढिग जाना ॥
अपने इष्ट देव पुर जाई । नाना विधि सुख भोग कराई ॥
नहिं मूरख नहिं ज्ञानी जोई । सुखमें निज तन त्यागे सोई ॥
बहुरि जन्म जगमें सो पाई । पुनि सो आतम लाभ [illegible] ॥
अब ज्ञानीकी कथा बखानी । तजत देह सब [illegible] ॥
मुक्ति विदेह तासुको ठीका । जिनके हृदय ज्ञानको टीका
पापीको अब मरण बतावो । महा दुःख ताके उर छावो ॥
जिनको अज्ञानिनको संगा । उत्तम बुद्धि होय जिहि भंगा ॥
पापी चार कर्म जो करही । श्रुति विरुद्ध मग [illegible] ॥
तजै देह जब ऐसे लोगा । तिनको घर शूल सो सोगा ॥
विषय न बुद्धि जासु लपटानी । दुसह दुःख पावै सो प्रानी ॥
होय पदार्थसे तिनहि वियोगा । रुंधित कंठ स्मृत [illegible] ॥
नैन तासु दोउ तब फटि जाही । कांति विरूप अंग हो ताही ॥
अंग उपांग टुटै तिहिवारी । प्रान निकसताहि मारग नारी ॥
होय पदार्थ वियोग दुखारी । अस अनुमान करे दुःख भारी
अग्नि कुंडमें डारे जैसे । दुसह दुःख पावै जिव तैसे ॥
सर्वै द्रव्यतिहि भ्रमयुत भासा । नभ पृथ्वी पृथ्वी आकाशा ॥

परम कष्ट पावै तिहि काला । नभते जनु कोइ माहिमें डाला ॥
पाथरमें धरि मनहु पिसाना । जिमि तृन भोडरमें भरमाना ॥
अंधकूपमें जैसे गेरा । मानहु कोल्हूमें धरि पेरा ॥
रथते गिरे जीव जिमि नीचे । रस्सी ज्यों गलडारिके खींचे ॥
दुःखअनँत परकार बखानो । कह लों ताकी निर्णय ठानो ॥
मूर्छित होय गहै जडताई । ताके कर्म जुरहि सब आई ॥
जिमि किशान बीजनको बोवे । समय पाय ताको फल होवे ॥
प्रान अपान कला दोउ टूटे । विषय वियोग महा दुःख जूटे ॥
मृत्युसमय जब जिव मुरछाना । गगन लीन हो पौनअरु प्राना ॥
ताहि प्रानमें चेतन ताई । चेतनता वासना गहाई ॥
सहित वासना चेतन प्राना । गगन रूप ह्वै गगन समाना ॥
यथा गंधको पौन गहाई । ताहि सहित नभ स्थितकराई ॥
तिमि चेतन वासना सहीते । जाय अकाश माह सो थीते ॥
तिहिअनुसार बहुरि जगफुरना । दर्व कालते सोतिहि जुरना ॥
दोय प्रकारके जीव बखानी । पापी अरु पुण्यातम प्रानी ॥
पुनि तिनमें कर तीन विधाना । एक महापापी करि जाना ॥
द्वितिय मध्य तृतिये लघु होई । तीनप्रकार पुण्य जन सोई ॥
एक महापुण्यातम लोई । पुनि मध्यम लघुको गतिजाई ॥
प्रथम महापापी दुःख हेरे । घन पखान सो ताको टेरे ॥
जड समान मुरछामें रहई । वर्ष सहस्र न चेत न गहई ॥
ताहू मुरछामें दुःख भूरी । बहुरि ताहि चेतनता फूरी ॥
जब ताके तनमें सुधि आवे । आपको देह सहित लखिपावे ॥
तब सो जायके नरकमें परता । अमित काल तामें दुःखभरता ॥
नाना भांति परम दुःख पाई । बहुरि नरकते बाहर आई ॥
देह अनंत धरे पशुकेरा । बहुरि सो मानुषको तन हेरा ॥

जब धारे सो मानुषदेहा । महानीच दारिद्री गेहा ॥
सोऊ तन धरि दुःख बहु भोगा । कबहु न सुख पावै सो लोगा ॥
अब मध्यमपापी गति वरणों । जाहि समय हो ताको मरणो ॥
जडीभूत हो वृक्ष समाना । उर अंतर दुःख दीर्घ काना ॥
कछुक काल पीछे सुधि आवै । नर्कमाहि निज वासा पावै ॥
नर्क भोगि पुनि पशुतन धारी । फिर नरदेहकोहि अधिकारी ॥
अब सुन लघु पापीकी बाता । मूर्छित हो पुनि चेतन गाता ॥
नर्कभोगि पुनि पशु कलेवर । ताहि भोगि फिर मानुषतनधर ॥
अब पुण्यात्मको कह मर्मा । जिनके जक्त माहि भल कर्मा ॥
महा पुण्यजन जब मरिजावै । स्वर्गसे तब विमान चलि आवै ॥
तिहि विमानपर ताहि चढ़ाई । आदर सहित वाहि लेजाई ॥
जाहि देवताको सो ध्यावै । तासु लोक निज भौन बनावै ॥
अपने इष्टदेव ढिग जाई । सबहि भांति निर्भुल सुखदाई ॥
भोगि स्वर्ग आवै नर देशा । काहू फलमें करै प्रवेशा ॥
तिहि फलको पुरुष जो खाई । बीजरूप तिहि उदरसमाई ॥
जननी जठरते वाहर होई । उत्तम कुल धनवंता सोई ॥
जौं वासना रहित हो येही । तौ सो धरै संत यह देही ॥
सहित वासना सुख सरसाया । रहित वासना भक्ति असाया ॥
अब मध्यम धर्मी गति सुनिये । प्रेरित पुण्यस्वर्ग ग्रह गुनिये ॥
अब लघु पुन्यातमगति कहई । मृत्यु पीछे अस चेतन गहई ॥
सगे बंधु मम क्रिया कराहीं । ताते पितर लोक हम जाहीं ॥
पितरलोक सुखलहिमाहि आवै । जैसो कर्म देह तस पावै ॥
पापी मुये दुःख चहुँ पासा । महा कठिन मारगनिहि भासा ॥
जिहि मारग ताको लेजाहीं । कंटक चुभै चरनमें ताही ॥
तपै तेज रवि तापै भारी । ताते ताको तन जर छारी ॥

जो कोई पुण्यातम लोई । छायाको अनुभव तिहि होई ॥
सुंदर सर वापी विधि नाना । चहुँदिशबने सोहावन थाना ॥
सुखद पंथसे तेहि लेजाही । पापीको सब दुःख दरशाही ॥
धर्मरायके ढिग जब जावै । चित्रगुप्त तब लेख लगावै ॥
चित्र गुप्त क्रम कागज खोले । सबके पुण्यपापको बोले ॥
चित्रगुप्त जस न्याव चुकावै । तैसे जीव दुःख सुख पावै ॥
बडे पुण्यते स्वर्ग बसेरा । जगमें सब सुकर्म जिनकेरा ॥
जहां तहां शोभित वन बागा । भांति भांतिके द्रुम तहँ लागा॥
इंद्रके नंदन बनकी शोभा । जाहि देखि मुनिवर मनलोभा॥
देव अंगना केर छवि भारी । महा मोहनी रूप संवारी ॥
स्वर्गके गुन सुख कथे बहूता । लहे जीव निज पुण्य प्रसूता ॥

दोहा—जैसे स्वर्गमें सुख घने, तिमि दुःख नर्क अनंत ।
होय जहां यमयातना, बहुविधि वेद वदंत ॥

इति ।

अथ प्रलयवर्णन—चौपाई ।

तैंतालिस लख बीस हजारा । चहुँ युग आयू यकठे धारा ॥
ताको सहस्र गुना पुनि करिये । एक द्यौस ब्रह्माको धरिये ॥
जैसी दिन तैसी है राती । जागे ब्रह्मा रैन सिराती ॥
दिनमें करे जगतको काजा । रैनमें निद्राको सुख साजा ॥
रैनमें सबही जगत नशाना । चंद्र सूर्य लग्नादिक नाना ॥
केते ऋषि मुनि सहितविधाता । जीये और सकल विनशाता ॥
बहुरि वेद ऐसो अनुमाना । ब्रह्मा सहित सकल बिनशाना॥
दूजा ब्रह्मा पुनि तन धारी । कारय सकल करे संसारी ॥
जक्तको सूतक वह नाहिं टूटै । एक मरे दूजा पुनि जूटै ॥
न्यायशास्त्रअरुसांख्य बखाना । सकल कृतमतिहिकालसिसना॥

पुनि वेदांत सो मता गहीने । कुनम जाल कबहूँ नाहिं वीते ॥
एक मरे दूजा पुनि होई । ऐसे जक सनातन सोई ॥
दोय प्रकारकि परलय होई । खंड प्रलय महा पलेय सोई ॥
खंड प्रलय पुनि द्विविधि कीनो । एसो ताको लेखा चीन्हो ॥
नाम चतुर्युग कल्प कहीजे । चौदह मन्वंतर तामें कीजे ॥
एक मन्वंतर जब बित जावे । तब जगमें लघुप्रलय आवे ॥
पृथ्वी जड चेतन संहारा । सकल बहाई मांहि जलधारा ॥
एकमन्वंतरमहीं बित भाखा । तीस करोड ... लाखा ॥
मध्यमें दोय मन्वंतर केरे । संधी नाम ताकुंही टेरे ॥
सत्रह लक्ष सहस्र अठाईस । ... संधीको लेख हना इस ॥
इतने काल जक नहिं रहई । याते शून्य वेद अस कहई ॥
खाल भोग लघु परलय जाना । ... ... ॥
जब जो महाप्रलय तिहि आवै । मरा जो निश्चय देह सो पावै ॥
होय सकल जब धर्मकि हानी । पापपरायि बुडे नर प्रानी ॥
कतहु न दीख अचार विचारा । मन म... पंथ जक जिन धारा ॥

छंदतोटक ।

सुत मानत मात न तात जहाँ । ... ... दान कहाँ ॥
कलि कौतुक ... महा । दुखदुःखित ... कहा ॥
कपटी लपटी नर नारि रना । नाह मानत संत महंत जना ॥
तपखी लपटी राज ... ... । ... ... ॥
द्विज चीन्ह ... ... । ... ... ॥
बहु यंत्रन संत्रन देवे हरी । ... ... किमि काम सरी ॥
विरती विन मित्र जनी ... । नहि ज्ञानंह चित्त विना ... ॥
कलिकाल कालहुकाल मरी । नर पीडक सो दुःख द्वंद भरी ॥
नहिं रूपवती युवती भरता । नहि गारि लहो परनारि रता ॥

तिय सुंदर पीय विहाय गता । अरधंगन संग अनंग मता ॥
कर पाप अनंत भनंत कहा । परिताप सतापन लोग दहा ॥
श्रुतिपंथ विहाय कुपंथ चले । तजि अम्मृत छाकसोखाकडले ॥
गृह संपति दंपति हीन भये । दरवेख अलेखको भेषलये ॥
नहि साधविषय क्रमसाधतये । विन सार लखे यमद्वार गये ॥
मदनातुर युत्थ फिरै युवती । किमि भोग नरा नरही कुवती ॥
तिय ठाट भये जब बाट नरा । न अचार कहू विभिचार भरा ॥
उठिगे श्रुति धर्मनके वकता । मनमानत जो जेहि सो छकता ॥
बरणाश्रम धर्मके मर्म नहीं । सब शंकर भे न सुकर्म कहीं ॥
समता विगता ममता गरको । जिव रोग वो शोकनमें ढरको ॥
अवऔगुन सौगुनजीव लदा । मनवांछित बोध न वेद वदा ॥

चौपाई ।

यहि विधि जक्त धर्म विनसावै । तब हयग्रीव प्रकट हो आवै ॥
शिर तुरंग देही नर जाको । धावै सकल धरा परि पाको ॥
पौन प्रसंग अंग तिहि पाई । जीवाकि बुद्धि शुद्ध ह्वै जाई ॥
लघु परलयजब धर्म कि हानी । महाप्रलय अवकहो बखानी ॥
चीन्ह अनेक भयावन होई । औनामरी भरी दुखजोई ॥
पश्चिम दिशते रवि उगि आवै । किनिया दक्षिणमें मकरावै ॥
उत्तर पूरब सूरय देखे । दशहुदिशा दश रवि यह लेखे ॥
एक सूर्य प्रथमै ते रहेऊ । वडवा अग्नितै सोई कहेऊ ॥
वडवानल अरु ग्यारह सूरा । द्वादश सूर्य तेजते पूरा ॥
शिव पुनि तीसर नैन उघारा । शेषके मुखते अग्नि प्रचारा ॥
महातेज पृथ्वीमें भरेऊ । थावर जंगम सब कछु जरेऊ ॥
पौन प्रचंड अंड भरि पेखे । परवत उडहि तूलके लेखे ॥
गिरि सुमेरु आदिक गिरनाना । सूखे पत्र सो गगन उडाना ॥

सात सिंधु तिहि काल छुभाही । जलकी वृद्धि एक ह्वै जाही ॥
पुष्कर मेघ कीन पुनि कोपा । जलमें सकल भूमिको तोपा ॥
मुसलधार पानी बरसाई । मोट धार पुनि वृक्ष कि नाई ॥
बहुरि नदीकी धारा जैसे । नभसे पानी बरपै एसे ॥
ये तो जल दिश उर्ध चढंता । पहुँचे ब्रह्मलोक परजंता ॥
इंद्र कुबेर आदिक दिगपाला । भागिके ब्रह्म लोकको चाला ॥
यहि विधि सकल जलामयहोई । जीव जंतु कहुँ रहे न कोई ॥
पृथ्वी गलि जलमें मिलि जाई । तिहि औसर भैरों प्रकटाई ॥
पृथ्वीते आकाशलों देही । महा भयानक रुद्र है येही ॥
तिहु दृग मानहु सूर्य है तीनी । ऐसो तेज मयी कहि दीनी ॥
तिहि भैरोंकी श्वासा चाले । बालीके ऊपर सो डाले ॥
पौन प्रचंड नासिका बाटा । ताते होय बारिको घाटा ॥
ताकी श्वासा जल सब सोखे । रहे रुद्र पुनि आपै चोखे ॥
दशहू दिशा शून्य ह्वै जाई । रवि शशि अग्न्यादिकंविनशाई
गुन अरु तत्त्व न कबहु प्रकाशा। सर्व शून्य बरतै चहुँ पासा ॥
भैरों तनते निज तन धारी । प्रकटै महा भैरवी नारी ॥
महाभयावन सूरत जाकी । सप्त सिन्धुकर कंगन ताकी ॥
मानुष छाया देखो जैसे । भैरों तनते प्रकटै जैसे ॥
इंद्र कुबेर वरुण यम काला । तिनके मुंडको पहिरे माला ॥
नृत्त करे सो तहँ तिहि बारा । अट्ट अट्ट करि शब्द उचारा ॥
भैरों और भैरवी दोई । नृत्त करै तब शून्यमें सोई ॥
बहुरि भैरवी लय ह्वै जाई । भैरोंके तन माहि समाई ॥
अब कछु शेप रहा नहिं खेला । तब भैरों रहि गयो अकेला ॥

दोहा—धरनीसे आकाशलों, भैरोंकी जो देह ।
सर्व शून्य करि दश दिशा, बढनलगी तबयेह ॥

प्रथमें पर्वत सम भई, बहुरि वृक्षके भाय ।
पुनि अंगुष्ट पुनि रैनसम, पुनि सो गई लो पाय ॥
सर्व शून्य दशहू दिशा, पिसा सकल संसार ।
[illegible]हुँ कछु ना लहा, रहा अलख [illegible] ॥
ब्रह्मा ते ले जीव सब, जहँ लगिकीट पतंग ।
मुक्ति विदेह महा प्रलय, पावै वेद प्रसंग ॥
सब जिव मुक्ति विदेह लह, रचना जब पुनि होय ॥
आतम सत्ता ब्रह्मने, जक्त फुर पुनि मोय ॥

इति श्रीवेदधर्म ।

अथ न्यायधर्म वर्नन ।

दोहा—कर्ता पुरुषहै देव जहँ, गुरु सन्यासी जान ।
न्यायशास्त्र सबमर्म कथ, धर्म ग्रंथ परमान ॥

अथ उत्पत्ति कथा वर्णन ।

सोरठा—न्याय शास्त्र परमान, नित्यानित्यको बाद बहु ।
जग सबही प्रकटान, सूक्ष्म तत्त्वसे जानिये ॥
प्रलय बहुरि जब होय, सूक्षम परमाणु रहै ।
ताते थूल गहोय, दूनो तिगुनो चौगुण ॥
परमेश्वर करतार, आदि अन्त नहि तासुको ।
गहे आप औतार, देत सोई चहु वेदको ॥
नर्क स्वर्ग [illegible], जीवको सो शुभ ज्ञान ।
सो प्रभु सबको हितकहै, तासुगुन आठ विधि ॥

चौपाई ।

प्रथमहि ज्ञान प्रयत्न है दूजे । तीजे इच्छा संख्या चौथे ॥
पंचम पुनि परमान गनीजे । परथक्का पष्टमें भनीजै ॥
पुनि संयोग विभाग कहाये । ये ईश्वर गुन आठ गनाये ॥

ती वस्तु जगमें उपजाया । सोलह पदारथने सबकी काया ॥
नको भेद जो भलिविधि जाना । सोई पावै पद निर्बाना ॥
नो गुण ईश्वरके अंशा । तिनको ताही रूप प्रशंसा ॥

इति ।

अथ आदि संन्यासी दत्तात्रेयजीकी कथा—चौपाई ।

त्री मुनि अनसूया नारी । नारि पुरुष कीनो तप भारी ॥
ीन देव तब हरषित भेऊ । ब्रह्मा विष्णु शंभु जिहि केऊ ॥
ाके भौन भौन तिहि कीने । आदर मान तिन्है ऋषि दीने ॥
नसुइया पुनि कीन रसोई । तीनो देव जिमावन होई ॥
प्रसन्न तब तीनो देवा । मांगो वर पुन्न तब सेवा ॥
ब अनसुइया वचन उचारे । तुम समान हो पुत्र हमारे ॥
िन सोई वर माँग्यो जोई । पुनि मारग निज लीनो ओई ॥
नसुइया जैसो वर पाया । तीन पुत्र भे ताके जाया ॥
तहुते तीन अंश परकाशा । दत्त चन्द्रमा अरु दुर्वासा ॥
त्त विष्णु औतार कहाये । ब्रह्मा अंशते चन्द्र उपाये ॥
शेव औतार कहै दुर्वासा । धर्म सनातन तिनकी आसा ॥
त्तसे दीगांबर संन्यासी । अब सुनो मारग जो भासी ॥
ह्मा अंशते चन्द्र उपाये । सो निज भौन अकाश सनाये ॥
ुरवासाते दंडी भेऊ । दंडी आदि ताहिको केहेऊ ॥
त्तात्रेके चौबिस चेले । धर्म कर्म संन्यास गहेले ॥

इति ।

अथ द्वितीय संन्यासी शंकराचार्यकी कथा—चौपाई ।

रने भव्य व्यास वर वानी । जब कलि होय वेद मत हानी ॥
जैन बुद्ध मत अधिक पसारा । वेद धर्म निंदहि निरधारा ॥
जैन बुद्ध विधि गह नर लोई । वेद धर्म माने नहि कोई ॥

तिहि औसरशिव परम सनेही। वेद धर्म थापै करि देही ॥
जैसो आगम व्यास बखाने। जैन बुद्धमत महि अधिकाने ॥
वेद धर्म तब भयो मलीना। बिरला कोई आदर दीना॥
विक्रमादिनके समयमें कहेऊ। शंकर शंकराचार्य भैऊ ॥
दक्षिणदेश द्विज कुल औतारा। वेद धर्मको पालन हारा ॥
चहुदिशजायविजय दिग कीना।कथिनिजज्ञाननीतिजगलीना ॥
वेद धर्म मरयाद धराया। बादी सन्मुख तासु पराया ॥
स्मृती धर्मकीन परचारा। धर्म स्मार्त नामसो धारा ॥
जैन बोध को जीत्यौ सोई। राजा शंकरकी वश होई ॥
तिहि औसर भूपाल छुभाया। केते जैनी सरित डुबाया ॥
मंडन मिश्र ब्रह्मा औतारा। धर्म मिमान्सा जग बिस्तारा ॥
शंकर जब तापर जय पाई। ताकी नारि ताहि समुहाई ॥
मंडन मिश्र गये जब हारी। कामशास्त्र कथ ताकी नारी ॥
शंकराचार्य बाल ब्रह्मचारी। कामशास्त्र विद्या नहि धारी ॥
तिहि औसर अनकारण भयऊ। नृप अमरूक देह तजि गैऊ ॥
योगके बलते शंकराचार्य। नृपतिनप्रवेशकियौनिजकारय॥
कामकला सीखे षट मासा। नृपतनमें कर भोग विलासा ॥
कामशास्त्रको ग्रंथ बनाई। सो अमरूकशतक कहलाई ॥
नृप तन तजि मंडन पहँ आये। तासु नारिपर तब जय पाये ॥
मंडनमिश्र भे शंकर चेला। ताको धर्म गह्यौ तिहि बेला ॥

इति।

अथ पूर्व आचार्यनके नाम—चौपाई।

जहां तो आदि संप्रदा चाली। पीढी पीढी कथौ निराली ॥
प्रथम विष्णु दूजे शिव होई। पुनि तृतीय वशिष्ठ मुनि जोई ॥

पुनि संगत वशिष्ठ सुत भैऊ। ताके बहुरि परासर कहेऊ॥
छठये व्यासदेव गुनखानी। सतये मुनि सुखदेव बखानी॥
अष्टम गोडाचार्य कहोई। पुनि गोविंद पुनि शंकर होई॥

इति।

अथ शंकराचार्यजीके शिष्यनके नाम।

दोहा—प्रथम स्वरूपाचार्यकह, पृथ्वीधराचार्य टेर।
पद्माचारय तीसरे, तोटकाचारय फेर॥

इति।

अथ दशनामसंन्यासीको वर्णन।

दोहा—स्वरूपाचार्यके शिष्य हैं, तीरथ आश्रम जान।
पद्माचार्यके दोय पनि, वन आरण्य बखान॥
तोटकाचार्यके पर्वतो, सागर गिरि शिष्यतीन।
पृथुधराचार्यके सरस्वती, भारती, पुरी प्रवीन॥

इति।

अथ शंकरी अथवा स्मार्तसंप्रदाय वर्णन—चौपाई।

अब शंकरी संप्रदा भाखों। चार भेद पुनि तामें राखों॥
पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण। चारों दिशा चार मठको गिन॥

अथ पूर्व दिशा वार्ता।

गोवर्धन मठ भोगवार संप्रदा वन अरण्य पद पुरुषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथ देवता पद्माचार्य चैतन्य ब्रह्मचारी तीर्थ महोदधि विमला देवी ऐतरेय ब्राह्मण ऋगवेद कठ केन उपनिषद अकार मात्रा प्रज्ञान ब्रह्म महावाक्य।

इति।

अथ पश्चिम दिशा वार्ता।

पश्चिम दिशा शारदा मठ कीटवार संप्रदा तीर्थद्वारिका क्षेत्र

सिद्धेश्वर देवता भद्रकाली देवी स्वरूपाचार्यनंदा ब्रह्मचारी तीर्थ गोमती सामवेद उप[illegible] ब्राह्मण केन तत्त्वमसि महावाक्य ओंकार मात्रा तीर्थ आश्रम द्वै पद ।

इति ।

अथ उत्तर दिशा वार्त्ता ।

उत्तर दिशा जोशी मठ आनंदवार संप्रदा पद तीन गिर पर्वत सागर क्षेत्र बद्रिकाश्रम [illegible] देवता पुण्यागिरी देवी त्रोटकाचार्ज नंदा [illegible] तीर्थ अलकनंदा ब्राह्मण ब्रह्म अथर्वण वेद मांडूक्य उपनिषद् आ मात्रा अहंआत्मा ब्रह्म महावाक्य ।

इति ।

अथ दक्षिण दिशा वार्त्ता ।

दक्षिण दिशा शृंगेरी मठ भुरीवार संप्रदा सरस्वती भारती पुरी [illegible] क्षेत्र रामेश्वर आदि वाराह देवता कामाक्षीदेवी शृंगेरी [illegible] तुंगभद्रा तीर्थ यजुर्वेद बृहदारण्य उपनिषद् ब्राह्मण [illegible] है अहं ब्रह्मास्मि महावाक्य अर्धमात्रा ।

इति ।

अथ संन्यास आचार वर्णन ।

दोहा—[illegible] कर्मको छोडिके, जो लेवै संन्यास ।
स्वर्ग आदिक सब सुख घने, रहै न कोई आस ॥

चौपाई ।

सुत वित नारि ईषणा तीनी । ताजि सन्यास धर्म जिन लीनी
यज्ञहु वेदपाठ नहि भाषा । संग्रह सदा उपनिषद राखा
करहि कमंडलु हाथमें दंडा । फिरै स्वछंद पृथ्वी नौ खंडा
कछु मुख माजन यकठे धरहीं । काहूसे विवाद नहिं करही

सदा शौच अननाल जो कीना । संध्या बदले आत्म लौलीना ॥
जब कबहुँ चित चंचल होई । पढै उपनिषदको तब सोई ॥
औषद सम भोजनको भोगा । चाहै नाहिं कछु सुख संयोगा ॥
शत्रु मित्र जगमें नाहिं कोई । सदा सैन पृथ्वीपर होई ॥
धरनीपर धरि भोजन करही । चार मास वर्षा न विचरही ॥
फिरै अकेले संग न कोई । भिक्षा भोजन गहै न ओई ॥
सोलह ग्रास अहार प्रमाना । लेय ब्राह्मण भिक्षा दाना ॥
जाके घर भिक्षाको जाहीं । मुखसे तहँ कछु माँगै नाहीं ॥
जेती मार्गमें पाउ कुहाई । [illegible] तबलों ठहराई ॥
जहँ भोजनको कारण पावै । तहाँ [illegible] शब्द उठावै ॥
तीन बार कर शब्द उठाना । जानै गृही सुनि निज काना ॥
तीन भौन के पांच कि साना । येत घरलों भीखको जाना ॥
जौं भिक्षा संयोग न लहई । तौ संन्यासी भूखा रहई ॥
भिक्षा ले पुनि बनहि सिधारे । मता श्रेष्ठ संन्यास उचारे ॥
पहिले वेदपाठ [illegible] । तब पीछे संन्यास कहीजै ॥
वेदकि विधिते बोध न जबलों । धर्म मर्म जानै कह तबलों ॥
ऐसी विधिने भोजन करही । मोट देहि जिहि नजर न परही ॥
सदा काल आतम लौलीना । सकल मर्मभव तजि तिनदीना ॥
प्रथमें सब सुख भोग भरीजै । सब इंद्रिनको तृप्त करीजै ॥
तब पीछे लीजै संन्यासा । रहै न काहू वस्तुकि आसा ॥
शीतकालको गुदरी एका । राखे सो निज सहित विवेका ॥
यह मध्यम सन्यास प्रमाना । अब उत्तमको करों बखाना ॥
नग्न दिगम्बर बाना होई । शीत उष्ण दुख सुख सह सोई ॥
सहदुःखसुखदुःखसुखनाहिंमाना । ऐसे निज मनमें अनुमाना ॥
ज्ञान अग्निमें तन हम दाहा । अब याकी कछु रही न चाहा ॥

यह विचार निज मनमें धारे । मृतक संन्यासीको नाहिं जारे ॥
जीतेही निज तन जिन दाही । मुये दग्ध पुनि उचित न वाही ॥

दोहा–जो मध्यम संन्यासते, उत्तम विधि गहि लेय ।
परम हँस ताको कहै, नग्न दिगंबर तेय ॥
काहूको परनामसो, करै न शीश झुकाय ।
सेवासे नहिं कछु सुखी, निरादरतेनाहिं दुख पाय ॥
मधूमास भोजन दोउ, तजि दीजै निरधार ।
धातु वस्तु मुद्रादि सव, नाहिं कर परसनहार ॥

चौपाई ।

भोजन पाकते राखै काजू । तजे इतर सुख स्वाद समाजू ॥
पक भोजन तजि और न लेही । गृही जो पाक भोग नहिं देही ॥
ताहि गृहीको पापी जाना । देत नहीं जो भोजन दाना ॥
सन्यासीको तप बड़ याही । कछु काहूसे मांग जो नाही ॥
दण्डी सन्यासी जो होई । दँड हाथमें धारे सोई ॥
दँड बाँसकी लकड़ी भाषा । सात गाठि पुनि तामें राखा ॥
सरस्वति आश्रम तीरथ तीनी । दंड ग्रहण अधिकारी कीनी ॥
ब्राह्मण विना न दंडी होई । द्विज गृहते अहार गह सोई ॥
चारों मठके जो ब्रह्मचारी । सोऊ विप्र कुलते तनु धारी ॥
उत्तम मध्य कनिष्ट सन्यासा । भिन्न भिन्न करि वेद प्रकाशा ॥
शिव अरु विष्णुभावनहि दूजे । पंच देव संन्यासी पूजे ॥
शिव नरसिंहगणपतिरवि देवी। इन पांचोंकी सूरत देवी ॥
सिंहासन धरि पूजा करही । इष्ट आपनो बीचमें धरही ॥
अधिक नेह जिहि देवसे लावै । बीच सिंहासन तिहि बैठावै ॥

चौपाई ।

शिवशक्तीको धर्म जो धरही ।चन्द्राकारतिलकलिलारमेंकरही ॥

योगी संन्यासी ब्रह्मचारी । भगवा भेष तिलक सो धारी ॥

अथ मीमांसाधर्म वर्णन ।

दोहा—देव अलख ॰ ॰ जहँ, गुरु दर्वेष कहाय ।
शास्त्र मीमांसा धर्म कह, कर्मफलन जिवपाय ॥

चौपाई ।

व्यासशिष्यजैमिनि ऋषिराया । धर्म मीमांसा सो ठहराया ॥
ताके शिष्य न करी सहाई । धर्म मीमांसा जग फैलाई ॥
शिष्यनको अस नाम उचारी । भट्ट कुमार अरु मिश्र मुरारी ॥
बहुरि प्रभाकर कुल्कहि टेरे । भे प्रसिद्ध जगमाह बड़ेरे ॥
जैमिनि शिष्य बुद्धिगुणधारा । भली भांति निज धर्म प्रचारा ॥
धर्म मीमांसा जो कोइ गहई । ताको नाम मीमांसक अहई ॥
एसो धर्म सो कौन उचारा । ईश्वर नहि जग सिरजनहारा ॥
जो कुछ दुःख सुख जगमें होई । जीव कर्मको कारण सोई ॥
जैसो कर्म करे जो कोई । तैसो उदय ताहि को होई ॥
ईश्वर नहि कछु करै करावै । नर स्वछंद जस कर तस पावै ॥
सृष्टि अनादि नियनकरिजानो । सदा स्वनादिक ऐस हि मानो ॥
परमाणुनते जग उतपाना । ज्ञान कर्म दोउ मुक्तिको दाना ॥
वेदांतीजस करे बखाना । तीन देव ईश्वर गुन माना ॥
मीमांसक नाहि माने सोई । तीन देव मानुप तन होई ॥
कर्म सुकर्म करे जो कोइ नर । होय सो ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ॥
कर्मते जिव सब पद पावे । कर्महि ऊँच नीच गति जावे ॥
जेतो देखो कर्म पसारा । कर्मको खेलखिला जग सारा ॥
ब्रह्मन कर्म करहि विधि नाना । देव अराधन सुख व्रत दाना ॥
होम यज्ञ तिनके बहुतेरे । साधन करि करि देवन टेरे ॥

इति मीमांसाधर्म ।

अथ शिवधर्म वर्णन ।

दोहा—देव रुद्र योगी गुरू, योग भक्ति चित धार ।
पातांजल यह शास्त्र है, कथै धर्मव्यौहार ॥

इति ।

अथ शेष अवतार कथा वर्णन—चौपाई ।

करै एक ऋषि संध्या तरपन । ताके अंजुल प्रकटै धरि तन ॥
अंजुलते कढि बाहर परेऊ । नाम तासु पातांजल धरेऊ ॥
पातांजल है शेष औतारा । सो जग मल शोधनहितकारा ॥
शास्त्र चिकित्सा कीन प्रकाशा । देह रोग मल ताते नाशा ॥
शब्द अशुद्ध उचारा मल हंता । पाणिनिकरनिका भाष्यकरंता ॥
तिमि विक्षिप्त अंतहमल शोधू । योग सूत्र करि जीव प्रबोधू ॥
प्रथमहि निरुधि वृत्तिनिरोधना । कथेसमाधि अरु ताके साधना ॥
वैराग आदिकनिधि विधाना । कथे तहां साधन विधिनाना ॥
तैसे चित्त विक्षिप्त जो साधी । नाहित कीनो योग समाधी ॥
यमनियमों आसन प्रतिहारा । प्राणायाम धारण धारा ॥
ध्यान समाधि आठ यह भाषी । द्वितिये पदमें सबसों राषी ॥
तृतिये पदमें योग विभूती । वरनो सकलजो सिद्ध प्रसूती ॥
बहुरि चतुर्थहि चरणके माही । मोक्ष योग फल बनैं ताही ॥

इति ।

अथ नव नाथके नाम ।

दोहा—गोरख नाथ मछंदरो, सुरतिनाथ मंगल नाथ ।
चरपट चंबा प्राणनाथ, घघ्यू गोपीनाथ ॥

इति ।

अथ गोरखनाथजीकी कथा चौपाई ।

नवो नाथ सिद्धौं चौरासी । गोरख श्रेष्ठ सर्व गुण रासी ॥

मुद्रा सकल ताहिने कीनो । ऐसो योग माहि चित दीनो॥
दोहा–मुद्रा सन्मुख खेचरी, भूचरि चाचरि जान ।
शाम्भवी उन्मीलनी, पुनि अगोचरी मान ॥
आत्म भावनी बहुरि कह, पूर्ण बोधनि नाय ।
सर्व चालिनी आदि दे, मुद्रातें जित लाय ॥

चौपाई ।

ऐसो योगी भया सन्यासी । आठों भांति योग अभ्यासी॥
राजयोग हठ योग बखाने । त्राहठ अरु कुंडली मखाने ॥
योग लंबिका तारक साधा । योगमिमांसक सांख्यमत बाधा॥
आठो योग भली विधि कीना । ऐसो योगी परम प्रवीना ॥
वज्र कीन पुनि अपनी अंगा । करि चौरासी कल्प सुढंगा ॥
ऐसी वज्र शरीर बनाई । कबहूं मरे न जरे न जाई ॥
सारी मांस देह गलि गिरेऊ । हाड गूद जमि एकै भयऊ ॥
हाड गूद जब एकमें पागा । हीरा सम तनु चमकन लागा॥
योगकौ रस भल गोरख लीना । सत्य कबीर प्रशंसा कीना ॥
केते गोरखनाथके चेले । सिद्ध भये गहि ज्ञान दुहेले ॥
गोरख यती जक्त गुन गाये । योग युक्ति जगमें फैलाये ॥
शिवजी आदि अचारज येहा । योग समाधि आदि गुन गेहा॥
पुनि भैनाथ सिद्ध चौरासी । योग धर्म जग माह प्रकासी ॥
शिव गोरख सम औरन योगी । कहुआदि योग रस भोगी ॥

अथ चौरासी सिद्धनके नाम ।

दोहा–भंगर मंगर संघरो, जंगर उरम होय ।
दूरम कनी फाह नीफा, लहु रूपा मंग गेय ॥
लंगर हानी रतन कह, पूरन विशालक वर्न ।
जलका खिचडसुनतिन्निय.निगनिमिचकेवलकर्न॥

समरथ असरन गौन गुल, चतुर बैन राय ऐन।
केवल करनऔवड़ परवत,ईश्वरभरथरी भूत बैन॥
कनका शंभू अक्षर दैन,पलका निधि शिवराम।
पिपलका गिरधर सालस, केसक गैलस नाम॥
मगनधार मुक्तीसरो, चलन नाचत सूर ऐन।
गिरवर जोति लगन कहो,जोति मगन सिध सैन॥
विमलजोतिशीतल जलो,अघडधान्य पतिप्रान।
तोल संयोग अकाल निर, बहुरि भोर्लसर जान॥
रामकुमार बखानिये, विष्णुपति कृष्णकुमार।
शंकर योग ब्रह्म योग है, मीरहुसेन विचार॥
मीर जंजलीक धारिजो, पुनि कालिन्दर नन।
फिर नालिन्दर नैन है, सरस्वती गुरुवन सैन॥
गुफावासी कलनासी, कलके संगी होय।
यक रंगी केवल क्रमी, पुनि क्रमनासी जोय॥
कलक विनाशी मूल मंत्री, योग तंत्री परमान।
जंग गहिरे दीपक रंगी, आपो रूपी जान॥
फिर अकलेस प्रतापी, व्रीरम योगी नाम।
खल समोगल भोगी कहो, इंद्रयोगी गुण ग्राम॥
पुनि केदार योगी गनो, कीन धर्मकी वृद्ध।
मुनि विचित्र रहमी योगी, ये चौरासी सिद्ध॥

अथ षट् यतियोंके नाम।

दोहा—गोरख नाथो दत्तजी, पुनि लक्ष्मण हनुमंत।
भैरों भीषम जानिये, ये षट यती वदंत॥

इति।

अथ बारह पंथ वर्णन ।

दोहा-- आइ कुनकाई प्रथम, तुमलाई कपिलान ।
तृतीय सतनाथपंथहै, चौथधर्म नाथ जान ॥
वैराग्य नाथके अरथगी. षष्टम गंगा नाथ ।
रामचन्द्र सप्तम कहै, अष्टलक्ष्मण नाथ ॥
फिर नटेश्वरी नवम है, पिंगल दशम कहाय ।
पुनि धजपंथ इग्या रहे, बारहे कानी फाय ॥

इति ।

अथ अष्टांगयोगवर्णन ।

दोहा--जमनियमोआसनकहो, प्राणायाम अगाध ।
प्रत्याहारो ध्यान कह.पुनि धारणा समाध ॥

अथ यमकी दश शाखा वर्णन ।

दोहा--युक्ति सहितसबकर्मकर, ताको यमबनलाय ।
जानेसाधनसुगमहो, सकल कलुषना जाय ॥

चौपाई ।

प्रथम अहिंसा जीव बनाई । नर पशु आदि एक सम ताई ॥
मनसा वाचा कर्म या तीनो । काहूको कछु दुःख नहिं दीनो ॥
द्वितीय बोलै साची बानी । मिथ्यावाक्यने धर्मको हानी ॥
तृतिये पर धनको मति हरना । चौथे पर तिय संग न करना ॥
पंचम दाया हृदय महाई । दुखी दरिद्री करो सहाई ॥
छठये अर्चा ताहि बखानी । युक्ति कर्म कीजिये प्रानी ॥
अहंकार मद मान न धरिये । आरहि करहुतुच्छमति करिये ॥
सप्तम क्षमा ताहि को जाना । लाभालाभ सखुदुःख माना ॥
अष्टम धौत धर्म मल साजी । जो कछु लाभ ताहिमें राजी ॥
नवमे अल्प अहार करीजे । दशमें शौचमली विधि कीजे ॥

इति ।

अथ नियमकी दश शाख वर्णन-चौपाई ।

प्रथमें तप द्वितिये संतोख्या । तृतिये कोकह नाम अलंख्या ॥
आन ईश्वरहिय निश्चय आना । चौथे धनते दीजे दाना ॥
पंचम करना गुरुको पूजा । ताहिछोड़ि ध्यावो मति दूजा ॥
पुनि सिद्धांत श्रवणहि छठये । विद्वत जनकी संगत गठये ॥
श्रुति पुराण विद्या अभ्यसना । सव शुभकर्म मसें चित देना ॥
सप्तम औ इन्द्री धिक्कारे । अशुभ शुभाशुचित कर्म निवारे ॥
अष्टम सत्य जाहिको कहते । भले कर्मकी इच्छा कहते ॥
नवमे जव हरि चर्चा कहिये । इंद्रिन सहित चित्तको धरिये ॥
दशमें होम अर्थ अस कहिये । तन मन धन इंद्री जो गहिये ॥
प्रभुकी हेतु सकल सुख त्यागे । ज्ञान कृशानु विषयन दागे ॥

इति ।

अथ चौदह आसन वर्णन—चौपाई ।

पद्मो वीरभद्र सूं संभारी । पुनि दंदास वृश्चिक भूँ वासरी ॥
वकरी मोर सिंह जगको अस । [illegible]

अथ त्रिविधि प्राणायाम वर्णन ।

दोहा—प्रथम सहज मध्यम बहुरि कठिन तीसरो आहि ।
प्राणायाम त्रिविधि कहो, साधे योगी जाहि ॥

चौपाई ।

प्रथम सहज कहिये द्वै शाखा । श्वासा परश्वासा मय भाषा ॥
पूरक कुम्भक रेचक माही । तरसु जान नाकाम है नाही ॥
द्वितीये पूरक इडाहि नारी । वाम नाक नथुन थित धारी ॥
वाहरकी वायु लेजाई । भरे इडा नाडीमें लाई ॥
कुंभकको अस कारय कथना । वंद करे दोउ नाकके नथुना ॥
थित प्रयंत रोके रह पौना । रेचक कर्म कहो अव तौना ॥

शनैः शनैः पुनि पौन निकारे। पिंगला राह [illegible] धारे ॥
बाहर पौन करो सो जबलों। नथुना वाम बंद रख तबलों ॥
तृतिये तहँ करम आरंभन। बाहर मात्रालों कर थंभन ॥
मात्रा ताहि कालको नाऊ। नाम उचार शुद्ध करि पाऊ ॥
नहिं विलम्ब नाहिं शीघ्र विवेका। शब्द शुद्ध सो मात्रा एका ॥
चौथे जब यह युक्ति संभाला। राखे थिर तामें कछु काला ॥
[illegible] निगुनाकरिये। तिगुणतें अधिक में जस [illegible] ॥
एक बार ऐसी विधि ठाना। [illegible] करें यह युक्ति [illegible] ॥
इडा [illegible] पिंगला करना। पुनि [illegible] इडा करि धरना ॥
पंचम ऐसी युक्ति विलोको। वायुको निज चालते रोको ॥
छठे जो पूरक रेचक भासा। आपने हो [illegible] श्वासा ॥
इकीस सहस्र [illegible] सठ थापू। चलै श्वास सो अजपा जापू ॥
तापर ध्यान करै जो कोऊ। ताको जाप रैन दिन होऊ ॥
सप्तम शुद्ध होय सब नाडी। वय प्रमान [illegible] आही ॥
[illegible]। प्रथम प्राण वायु कर चाला ॥
बारह अंगुल बाहर आवै। पुनि अपान वायु ले जावै ॥
प्राण कि ठौर अपान ले जाई। पूरकमें यह युक्ति [illegible] ॥
[illegible] कुम्भकमें यह ढौरा। प्राण अपान करो यक ठौरा ॥
लेकर बंद करो यहि डर्रा। वरनै अंत रेचक है पुर्रा ॥
पहिले सदाके ढंग न रहई। फेर इडा वायु जो [illegible] ॥
तोर कियेते बाहर आई। पहुँच न बाहर अंगुल नाई ॥
तृतिय अष्ट कर्म कहिदीनी। पूरक तीन अरु कुम्भक तीनी ॥
दो रेचक भे आठो कर्मा। अब [illegible] भाखो मर्मा ॥
रेचन थंभन त्यागन प्राना। पूरक गह रेचक नाहिं ठाना ॥

ताको कुम्भक नाम बखाना । प्राणनको निज वशमें आना ॥
एकीस लाख अरु साठि हजारा । हो नर श्वास पूर्ण जिहि बारा ॥
तिहिअवसरअस युक्तिजोकीये । तौ सौ दो सौ वर्षलौं जीये ॥
तृतियेकठिन कि युक्तिसोअहई । प्रथम खेचरी मुद्रा गहई ॥
ऐसी लांबी जीभ बढावै । तालूमें पुनि ताहि लगावै ॥
पुनि सो ऐसी युक्ति गहावै । प्राणवायु डोले नहिं पावै ॥
कान नाक मुख दृगलों जोई । तहलों जान न पावै सोई ॥
द्वितिये भूचरि मुद्रा गाई । दक्षिण पगकी एड़ी ल्याई ॥
गुदा लिंग जड दावै बाँहीं । बाम पाव एडी रख ताही ॥
बार बार एडी बदलै दोऊ । पुनि अपान ऊपर खैंचेऊ ॥

अथ प्रत्याहारवर्णन–चौपाई ।

प्रत्याहार सो नाम भनंतो । इंद्री दमन कीजिये संता ॥
प्राणायाम प्राण दम धारा । तिमि इंद्री दम प्रत्याहारा ॥
प्रथमं विषय स्वादते भाजा । द्वितिये बहु विरुद्ध जो काजा ॥
कबहूँ ताहि न करत सयाने । दृष्टिहु ताके दिश नहिं ताने ॥
तृतिये विषय सर्वथा त्यागी । मनहु दृष्टि सन्मुखते भागी ॥
चौथे हर्ष न शोक रहाई । पंचम प्राणायाम दृढ़ाई ॥

इति ।

अथ धारण अथवा परमेश्वरकी प्रीति–चौपाई ।

प्रीतम प्रीति हिये अति बाढे । सदा ध्यान सुमिरनमें गाढे ॥
प्रथमहि गुरुको ध्यानगहीजै । दृग सन्मुख जो कछुक लहीजै ॥
सो सब गुरुकी दाया जानौ । बारह मात्रालो दृढ़ ठानो ॥
द्वोयरपक्ष जो पूरन जाना । मात्रा सहस दोसौ पट माना ॥

इति ।

अथ ध्यानको वर्णन–चौपाई।

ध्यानते ऐसो ज्ञान गहीजे। तातें वृद्ध धारणा कीजै॥
दो सहस पाँच सौ बानवे मात्रा। तहलों तिहि पहुँचावसुमात्रा॥

इति।

अथ समाधि वर्णन–चौपाई।

अष्टम योग समाधि कहावै। सो धारणा तहँलो पहुँचावै॥
पांच सहस एक सौ चौरासी। मात्रा धारे शंक [illegible]॥
द्वितिये छिना दूर पराई। तृतिये रूप दृष्टि प्रिय आई॥
चौथे यह [illegible] त्यागे। पँचये मोहि तोहि भेदनलागे॥
छठये नाहिं कछु रहा दुराई। सतये आप आपमें छाई॥
तू मोहिमें तोहि माह समाई। जीव [illegible] भै एकताई॥
सहस गिरा इत भाषे यही। जीअत साधु त्याग जब देही॥
सहस [illegible] ज्ञान बखाना। [illegible] तहँ लों [illegible]॥
एक सहस सत्तर अरु दोई। मात्रा लों जब निजवश होई॥
ताको संयम नाम उचारा। यह अष्टांग योग निरधारा॥

इति।

अथ षट् चक्र भेदनकी युक्ति।

दोहा—षट् चक्रको भेदके योगी जन चढि जाय।
गगन गुफामें [illegible] आवागमन नशाय॥

चौपाई।

अब [illegible] करों [illegible]। मूलद्वार प्रथमें कहि गाना॥
[illegible] पर कमल जो अहई। नाम अधार चक्र सो कहई॥
[illegible] चार सो कमल विराजा। कृपा गनेश करें तिहिं काजा॥
गुदासे पानी खैंचन लागे। खैंचखैंच जल [illegible] त्यागे॥
यहि विधि गुदा शुद्ध कर जोई। वस्ती क्रिया नाम

पुनि ऊपरको पौन चढाई । द्वितिये भेदन करे उपाई ॥
जो अधार चक्रके ऊपर । स्वाधिष्ठान चक्र है दूसर ॥
लिंग मूलिका पर सो अहई । षटदल कमल तासुको कहई ॥
पौनके बल गुदाचक्र बँधाई । स्वाधिष्ठान चक्रपर जाई ॥
स्वाधिष्ठानके भेदन काजा । द्वादश अंगुलको गज साजा ॥
सो गज लिंगमें देत चलाई । लिंगद्वार तिहि शुद्ध कराई ॥
यह गज करन क्रिया कहँ लावै । बहुरि लिंगते दूध पिलावै ॥
लिंगते स्हतको खैंचे जबहीं । गजकी क्रिया पूर्ण हो तबहीं ॥
पौन खैंच पुनि लिंगके द्वारा । स्वाधिष्ठान बेधि चल पारा ॥
बहुरि अपान समान मिलाई । धोती क्रियामें तब मन लाई ॥
मणि पूरक चक्कर जो कहई । नाभी द्वारेमें सो अहई ॥
दश दल कमल तासु परमाना । ताके भेदनको मन ठाना ॥
दो अंगुल पट चौडा लीजै । अरु नौ हाथको लम्बा कीजै ॥
लीलै ताहि वस्त्रको सारा । बहुरिकाढितिहि मैलनिकारा ॥
तीन बार ऐसी विधि सारा । बहुरिकाढितिहि मैलनिकारा ॥
तीन बार ऐसी विधि कीजै । धोती क्रिया सो पूरा कहीजै ॥
नाभिमें बहुरि पौन उलटाई । मणि पूरक चक्कर भेदाई ॥
फेरि अपान प्रान जो दोई । मेले प्रान माह तब सोई ॥
अनहद चक्र भेद तब जाई । हृदय स्थान माह जो पाई ॥
बारह पखुरी ताकी होई । हृदय मध्य कमल सो जोई ॥
ताकी सिद्ध हेत जो दीशा । कुंजर क्रिया करै योगीशा ॥
तीन बार भल पानी पीजै । पुनि पुनि सो उगलीकर दीजै ॥
सवा हाथकी दातन लेना । भीतर ताड चलाय सो दीना ॥
बार बार पानीको पीना । दातन डारि छोड पुनि दीना ॥
ताको सिद्धि पूर्ण जब लहिये । कुंजर क्रिया नाम सो कहिये ॥

बहुरि पौनको लेहु उठाई । अनहद चक्र भेदिके जाई ॥
प्राण अपान समाना तीनो । [illegible] दीनो॥
चक्रविशुद्ध कंठके माहीं । षोडश दलहि कमल तहाहीं ॥
योग लंबिका ताहित करना । दुष अपार ते काया परना ॥
सूक्ष्म बोलते कारय कीजे । पुनि तब ऐसी युक्ति गहीजे ॥
जीभके हेठकी नस जो सगरे । सरका सेंधौ लोन से रगरे ॥
जीभ दुहनपुनि प्रातहि काला । या विधि रसनाको [illegible]॥
ऐसी अपनी जीभ बढ़ावै । ऊर्द्ध द्वारमें ताहि लगावै ॥
जरमें अम्मृत चुवै जाई । ताको पान करे तब साँई ॥
जीअत अम्मृत जागी देहा । योग लंबिका सिद्धभो येहा ॥
बहुरि विशुद्ध चक्रको भाना । आगेको तब करे पयाना ॥
अग्नि चक्र है त्रिकुटी थाना । द्वै दल कमल तासु परमाना ॥
ताहि तनेती क्रिया कराई । बत्ती निज नासिका चलाई ॥
नाक शुद्ध करि बत्ती कीना । मूर्द्धा शुद्ध भो ज्ञान नवीना ॥
पुनि उद्यान महा सुख पावै । बहुरि कंठते पौन उठावै ॥
चक्र विशुद्ध भेदि जब लावै । अग्नि चक्रमें वायु लावै ॥
तेहि औसर जिह्वा लेजाई । ऊरध द्वारे माह लगाई ॥
बंद करे तब ऊरध द्वारा । अग्नी चक्र भेदि हो पारा ॥
चलि ब्रह्मांड श्वास लय होई । कुंभककरिके तनु [illegible] ॥
काम [illegible] । तब इन सबकी सेन पराती ॥
कर ब्रह्मांडमें योगी बासा । जबहि चढ़ायो [illegible] श्वासा ॥
जहँ नाहि व्योम नहीं जहँ राती । नाहि सूरज शशि [illegible] ॥
तहँ सुषुमना बीधि ब्रह्मांडा । गड़ा जाय [illegible] झंडा ॥
जब ब्रह्मांड माह रमि जाई । संगी साथी सकल पराई ॥
संगी साथी जब रहि गयऊ । [illegible] योगी तब भयऊ ॥

अथ दोयप्रकारकी समाधिवर्णन—चौपाई ।

दोय प्रकार समाधि कहीजै । सविकल्पो निर्विकल्प गनीजे ॥
जो सविकल्प समाधि कहावै । ज्ञाता ज्ञान ज्ञेययुत ध्यावै ॥
त्रपुटी भान सहित जब सोई । ब्रह्म बीचं वृत्ती लय होई ॥
सो सविकल्प समाधि कहावे । निर्विकल्पको अब कहिगावे ॥
त्रपुटी भानु रहित वृत्ती जब । ब्रह्मानंद हो निर्विकल्प तब ॥
जो सब कल्पको साधन जाने । निर्विकल्प फल तासु बखाने ॥
निर्विकल्प मूखो पाति दोई । यतनो भेद दोहूमें होई ॥
निर्विकल्पमें ब्रह्मानंदा । सुषुप्तिमें अज्ञानको फंदा ॥
निर्विकल्पमें चार हैं बाधक । तिहि सचेत रह चातुर साधक ॥
प्रथमै लय विक्षेप बहोरी । पुनिकषाय रसास्वाद कहोरी ॥
आलस निद्रा जब सरसाना । वृत्ती होय सुषुप्ति समाना ॥
ब्रह्मानंद भोग नहिं भोगी । सजग होहि तिहि औसर योगी ॥
आलस निद्रा दूर हटाई । फेरि वृत्ति निज लेहि जगाई ॥
द्वितिये पुनि विक्षेप बताई । वृत्ती जब बाहिर है जाई ॥
कछु पदार्थको कारण जोई । अंतर वृत्ति बहिर्मुख होई ॥
हो सचेत योगी तिहि काला । वृत्ती अंतर्मुख सुख वाला ॥
तृतिये राग द्वेष जो होई । नाम कषाय कहा लै सोई ॥
राग द्वेष विधि कहो बखानी । यक बाहर यक अंतर जानी ॥
बाहर धन दारादिक शोचा । अंतरकी चिंता मन पोचा ॥
भूत भव्य चिंता मन आई । सो निर्विकल्प समाधि विनशाई ॥
चौथे रसास्वाद अब भाषो । ऐसो अर्थ तासुको राखो ॥
ब्रह्मानंदके सुख अनुभव कर । दुख निवृत्तिसे हृदये सुख भर ॥
यह योगमें विघ्न बताई । जबलों नहिं निज प्रीतम पाई ॥
चितकी पंच भूमिका आही । प्रथमे ज्ञेय नाम कह ताही ॥

द्वितिये मूढता नाश कहावै । तृतिये को विक्षेप बतावै ॥
चौथे पुनि येकायता होई । पंचम भूमि निरोधक होई ॥
अर्थतासु यहि भाँति जानना । लोक वासना देव वासना ॥
शास्त्र वासना आदिक जोई । क्षेप नाम ताहीको होई ॥
निद्रा आलसता तुम गुन वेरं । नाम मूढता ताको टेरं ॥
बाहर सुखवृत्ती जब होई । नाम विक्षेप कहावै सोई ॥
चित्त एकाग्र होय जेहि बारा । एकाग्रता नाम सो धारा ॥
ब्रह्माकार जैब ह्वै जाई । ताको नाम निरोध बताई ॥
जो योगी [illegible] विघ्न हटावै । ब्रह्मानंद सोई सुख पावै ॥
योगीके सब सुख [illegible] । ज्ञान बिना पै मुक्ति न पावै ॥
कवल ज्ञान उगै जिहि बारा । तब योगी हो ब्रह्माकारा ॥
अष्ट सिद्धि नौ निद्धिविराजा । योगी [illegible] सुख साजा ॥

इति समाधि ।

अथ ॐकार जापको वर्णन—चौपाई ।

ॐकार जप सबको सारा । जिहि योगी पर धाम पधारा ॥
ऋद्धिसिद्धि गुण ज्ञान कहाये । ॐकार भव पार कराये ॥
जो कोई शुद्धजाप मन लावै । सकल पदारथ ताते पावै ॥
जांप अशुद्ध करै जो कोई । वृथा [illegible] ताको होई ॥
पुत्र जनै जिहि औसर वाला । होय टेढ़शिशु जो तिहि काला ॥
जौं बालक सीधे नहिं आवै । [illegible] मात प्राण [illegible] ॥
ॐकार जप ऐसो जानी । शुद्ध जाप बिन [illegible] हानी ॥
जब इंद्रिनको वशकरि लीजै । ताको कल्प [illegible] कहीजै ॥
मन इंद्रिनको भूप कहावै । मनको बहुरि [illegible] बतावै ॥
पुनि आकाशतीन विधिसारा । चिदाकाश प्रथम कहि राखा ॥
मनको चिदाकाश कहि गाये । नभ समानचहुँ दिशा छाये ॥

जैसो नभको अन्त न कोई। तैसे मन अनंतहै सोई ॥
द्वितीये मनाकाश कहि टेरे। ब्रह्माकाश नाम तिहि केरे ॥
ब्रह्माकाश कहे इमि तेही। ब्रह्म सो व्यापकहै मन येही ॥
सर्वमयी जिमि ब्रह्म विराजै। तैसे यह मन सबमें गाजै ॥
तृतिये भूताकाश बखाना। मन अरु ब्रह्मते करे बिलगाना॥
मनाकाश अरु भूताकाशा। ताते ब्रह्म होय परकाशा ॥
ब्रह्म दोउते पार कहुता। थूल देह वासनाके सूता ॥
त्रिविध वासना कहो बखानी। सत रज तम गुन ताकोजानी॥
जबरजगुन तम गुण चलिजाई। सूक्ष्म देह जीव तब पाई ॥

दोहा—यहि विधि सूक्षमता लहै, तन थूलता नशाय ।
जिहि औसर यहि गुन गहै, जीवन मुक्त कहाय ॥
दोय प्रकार समाधि कह, यक चेतन जड एक ।
योगी सबसागर तरे, निज बल बुद्धि विवेक ॥

इति ।

अथ अथर्वण वेद योग तत्त्व उपनिषद्—चौपाई ।

सबते श्रेष्ठ विष्णु कहलावै। सोऊ योग समाधि लगावै ॥
सदा योग मारग आचरही। परम पुरुष ध्यान सो करही ॥
सो प्रकाश सब घट घट माहीं। तिहि चितवनी करें नर नाहीं॥
भूलिविषय रति प्रभुहि बिसारी। यही अचंभो मो मन भारी ॥
वस्तु अनित्य जासु मन भावै। महा मूढ सो जीव कहावै ॥
पुत्र हो दूध जाहि थन पीयै। ताकहु जीनि विकार गहि लीयै॥
यद्यपि जान भिन्न तिय देही। तद्यपि जान पयोधर येही ॥
जाहि द्वारते बाहर आवत। ऐसो दुख सदा नर पावत ॥
तामें पुनि पैठत सुख माना। कैसे भूले नर बिन ज्ञाना ॥
जाहि रूपको जननी कहते। सोई निज दारा करि गहते ॥

कबहु जिहि निजपिता पुकारी। सोई रूप निज भगना भारी ॥
निज मन माह विचारके देखा। पिता सोइ प्रकटा सुद लेखा ॥
रहटा कूप डोलची जैसे। आवे जाय जक्त यह तैसे ॥
यक भरि आवे दूजा रीते। ऐसी भूल माह जग बीते ॥
मुक्तिके मारगको नहि ढूँढा। चर्चा माह परा जग मूँढा ॥
ओंशब्द हरि भजनके काजा। तामें अक्षर तीन [illegible] ॥
तिहि अक्षर तिहु लोकबखानो। तीनो वेद त्रिदेव हि मानो ॥
अर्ध रेफ [illegible] होई। सबसे सार [illegible] सोई ॥
तनमें प्राण [illegible] सोना। तिलमें तेल घृत दधमें होना ॥
फूलमें यथा सुगंध समाई। तैसे सार नाहि [illegible] ॥
ॐकारके अक्षर चारी। ताको कहिये अर्थ विचारी ॥
प्रथम अकार हि ब्रह्मा जानो। [illegible] ॥
रुद्रहि जान मकार स्वरूपा। [illegible] ज्योति स्वरूपा ॥
बहुरि अकार वेद ऋग अहई। यजुर्वेद ओंकारहि कहई ॥
सामवेद कह जान मकारी। [illegible] नन्ना चित धारी ॥
तृतिये जाग्रत जान अकारा। स्वप्न [illegible] भाप [illegible] ॥
फेरि मकार सषुप्ती गाई। नन्ना रूप जान [illegible] ॥
चौथे पुनि अकार मृत लोका। मध्य लोक ओंकार [illegible] ॥
[illegible] लोक मकार प्रमाना। तिहुँते परे नकार [illegible] ॥
पँचये मन कह जान अकारा। ओं [illegible] बुद्ध [illegible] ॥
पुनि छठये [illegible] अकारा। ओं [illegible] नाम पुकारा ॥
सम्मा [illegible] । नन्ना जानि लेहु [illegible] ॥
सतयें [illegible] । ओं [illegible] गुन गनिये ॥
अठये अकार ज्ञान धीरता। तीनि ओंकार मकार वीरता ॥
नन्ना न्याय कियो परमाना। नवम अकार कर्म करि माना ॥

पुनि कह ओं उपासना सारा । मम्मा ज्ञान नन्ना सब पारा ॥
ॐ कारको अर्थ अनंतो । वर्णन कौन सकै करि संतो ॥
प्रणव आदि सबहीको भाषा । तातें और अनेकन शाखा ॥
मन स्वरूप अब जो उरवासी। अधरकमल समनाहि प्रकाशी॥
कमलं नाल ऊपरको राखा । हेठको ताके मुखको भाषा ॥
ताके बीच माह मन रहई । पावन होय प्रणव जब कहई ॥
प्रथम हि अक्षरके उच्चारे । मनकी उज्वलता जिव धारे ॥
द्वितिय अक्षरते दिल खिलता। अनहद शब्द गगनधुनि मिलता॥
चौथे अर्ध बिंदु बतलाई । ताते ज्योति माह मिलजाई ॥
जब यह मन [illegible] । होय शुद्ध बिल्लौर समाना ॥
मूरते अधिक नूर जग मगई । परम प्रकाशमान तब लगई ॥

दोहा—क्रोध आलस्य निद्रा बहुत, बहु भोजन बहु जाग ।
फाका करनो कर्म षट्, योगी दीजै त्याग ॥

चौपाई ।

यहि विधि [illegible] साधे । अंतर परे न मनको बांधे ॥
तृतिये मास हो [illegible] बाकी । देव दृष्टि सब आवै ताकी ॥
मास पांचमें यह गुन पावै । देख स्वरूप आप ह्वैजावै ॥
छठयें मास मिले हरि माही । प्रणव साधना सदा कराही ॥

अथ अथर्वण वेद [illegible] उपनिषद्—चौपाई ।

प्रथम हि पद्म आसनको मारे । बैठि एकांत ध्यानको धारे ॥
द्वितिये नासा आगे देखे । टरै न दृष्टि ध्यान करि लेखे ॥
तृतिय [illegible] पग कह जोरी । चौथि मनको लेहु बटोरी ॥
विषय विकल्प अरु संशय कोई । मनके निकट न आवै सोई ॥
पंचम पावन प्रणव को ध्याई । छठये नामी सुरति लगाई ॥
सप्तम निजु मन माह विचारी । अशुचि वस्तु मानुष [illegible]॥

तीन देह तू भौन बनाये। तामें थंभा चार लगाये॥
यक बड तीन थंभ लघु माजे। पांच देवता नौ दरवाजे॥
पृष्ठ अस्थि बड थंभ पुकारी। ताके निकट सुषुम्ना नारी॥
लघु थंभा जो तीन कहाये। सो सत रज तम गुन बतलाये॥
पंच प्रणव सुर पंच उचारी। तेहि देह जिव गेह मझारी॥
मनके रंध्र माह चित धारो। सूर्य मंडलाकार निहारो॥
तेहि रविमण्डल प्रणव निरखो। प्रणवमें द्वीप शिखा पुनि देखो॥
दीप शिखा ऊरध दिश जानी। ज्योति स्वरूप ताहि अनुमानी॥
ताहीमें निज ध्यान दृढाई। इमि योगी तन तजि तहँजाई॥
रवि मंडल भनि सूक्ष्मनि नारी। गेह पंथ ब्रह्म रंध्रको फारी॥
तन तजिके योगी इमि जाही। परम पुरुषके रूप समाही॥
ऐसी युक्ति गहे सुख पारी। आलस निद्रा वश दुर्भागी॥
छन छन ऐसी युक्तिको गहिये। यही उपनिषद देखत रहिये॥
जो यह युक्ति न हरदम होई। निश्चय तीन काल कर सोइ॥
भोर मध्य दिन सायंकाला। नित प्रति गहिलीजे यह चाला॥

इति।

अथ अष्ट सिद्धियोंके नाम—चौपाई।

प्रथमे अणिमा नाम कहावे। ताहि लहे लघु देह बनावे॥
द्वितिये महिमा कहो बखानी। निज तनकी दीरघता ठानी॥
तृतिये लघिमा जो कहवावै। सो अपनो तन हलक बनावै॥
चौथे गरिमा नाम भनीजै। जो लहि निज तन भारी कीजै॥
पंचम प्राप्ती नाम बतावो। सो लहि जहँ चाहो चलि जावो॥
पुनि प्रकासिका छठयें अहई। जाते निज मनोर्थ सब लहई॥
सतयें ईशता नामक होई। जापर चहै आप बड होई॥

अठयें वशियौ नाम कहाई । जेहि चाहे तिहि देत भ्रमाई ॥
आठों सिद्धिमें भेद अनेका । जानहिं योगी सहित विवेका ॥

इति ।

अथ नव निधियोंके नाम ।

दोहा—महापद्म अरु पद्म कह, कच्छप मकर मुकुंद ।
खर्व शंख अरु नील कह, नवम कहावे कुंद ॥

इति ।

अथ योगीका भेष वर्णन—चौपाई ।

शैली सिंगी मुद्रा काना । भगवा वस्त्र विभूतहिं खाना ॥
योग युक्ति साधन भल राखा । अजंपा जाप जपे गति भाषा ॥

क० भा० [illegible] ।

इति श्री [illegible] समाप्त ।



सुमिरन बोध प्रारंभः ।

भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्दद्वारा संशोधित ।

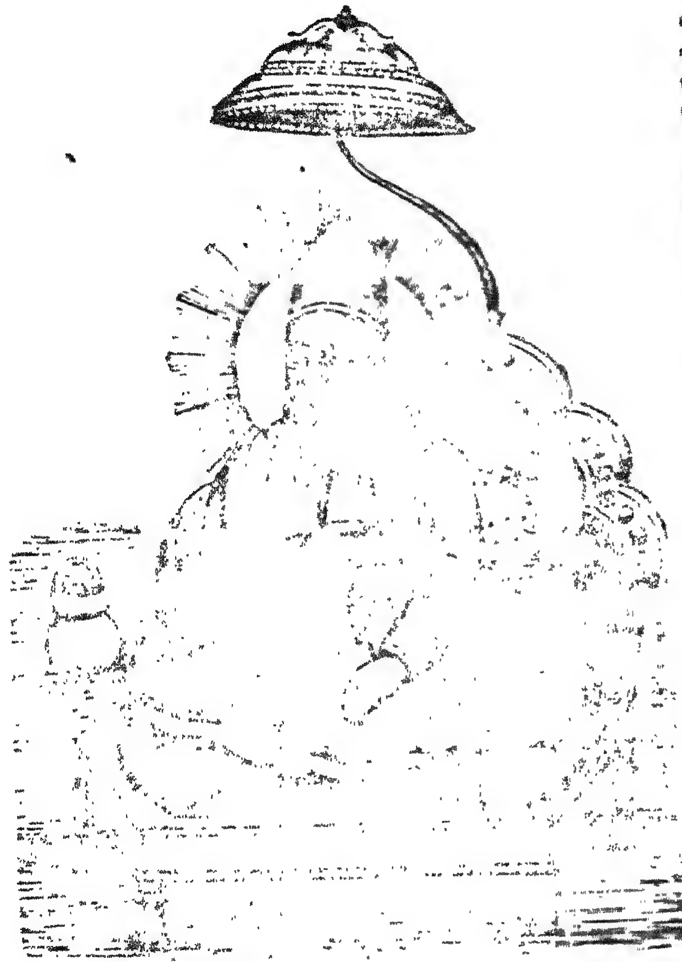
जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
छापकर प्रकाशित किया ।

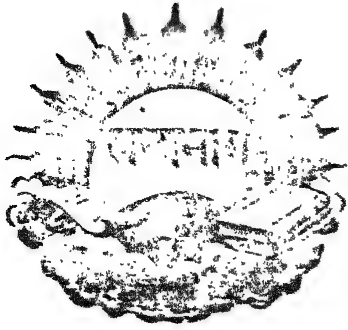
संवत् १९६३, शके १८२८.

Printed at the "Shri Venkateshwar" Steam Press, Bombay.

सत्य नाम ।



श्री कबीर साहिब ।



सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष
मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान.
धनी धर्मदास, चुरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कु-
लपति नाम, प्रबोध गुरुबालापीर, केवल नाम,
अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम,
पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र
नाम, दया नाम, की दया वंश-
व्यालीसकी दया।

अथ श्री बोधसागरे

चतुर्विंशतिस्तरंगः।

सुमिरन बोध छोटा।

प्रथम बोध।

(नित्य कर्म षट्कर्म विधि वर्णन) सुमिरन आदि गायत्री।

आदिगायत्री सुमिरण सार। सुमिरत हंस उतारे पार॥
कोटि अठासी घाट हैं, यम बैठे तहँ रोक।
आदि गायत्री सुमिरिके, हंसा होय निशोक॥

घाटी नाकहि आगे तब जाई । सकल दूत रहे पछताई ॥
आगे मकरतार है डोरी । जहाँ यम रहे मुख मोरी ॥
ओहं सोहं नामके, आगे करै पयान ।
अजर लोक बासा करे, जगमग दीप स्थान ॥
मुखनगर स्नान करी, होय हंसका रूप ।
जाय पुरुष दर्शन करै, जिस दिन परम आनन्द ॥
आदि गायत्री सुमिरिके, आवा गमन नसाय ।
सत्य लोक बासा करै, कहैं कबीर समझाय ॥

सुमिरन प्रभात गायत्री ।

आदि गायत्री अम्मर अस्थान । सोहंतत्त्व ले हंसालोकसमान ॥
सत गायत्री अजपा जाप । कहैं कबीर अमर घर बास ॥
सत्य है अमर सत्य है शून्य । सत्यहिमें कछु पाप न पुण्य ॥
कहै कबीर सुनो धर्मदास । यह गायत्री करो प्रकाश ॥

सुमिरण मध्याह्न गायत्री ।

अचिंत पुरुष हिरम्बर छाया । नाद विन्द होय कर्ता आया ॥
यमसो जीता लोक पठाया । सुरति स्नेही हंस कहाया ॥
अचिन्त पुरुषकी गायत्री, दीन्ह कबीर बताय ।
निशि दिन सुमिरण जो करै, करम भरम मिटि जाय ॥

सुमिरण सन्ध्या गायत्री ।

बारह जो जन कोट यन्त्र चहँ पलमें छूटे ।
यहि विधि संध्या जपे भर्मको आगम टूटे ॥
गायत्री ब्रह्मा जपे, जपे देव महेश ।
गायत्री गोविन्द पढे, सतगुरुके उपदेश ॥
ताको काल न खाय, जो यह संज्ञा चीन्हे ।
घटमें रही अलोप, काढि हम बाहर कीन्हे ॥

इन पर लै सिद्धौं भनी, देव पूजा गो शरीर ।
ब्रह्माका पुरुषदासाचपल्लानउग्रहंमनीशरीर ॥
शब्द पाय हिरदय धरै, अस कथिकहैं कबीर ॥

सुमिरनमध्याह्न गायत्री ।

कहै कबीर अजपा घट सूझे । निगम नाम मांहि जो बूझे ॥
तन मन धनहिं निछावर करै । सार नाम गहि भौ जल तरै ॥
अष्ट सिद्धि नौ निद्धि माँगेसोदेऊँ । सुरनरमुनिचरणन गंगाप्रवाहु
रिप सिप मार गर तराई । नौगुन बन्जा सुरतिप्रकट होयसूझै
खोजो सुरति कमलके तीरं । सतगुरु मिलगये सत्यकबीर ॥

सुमिरन सोनेका ।

संयम नाम सदा चितलाई । जासों काल दगा मिटिजाई ॥
काल दगा धरि आवे भेखा । जीव चूके कर्मनकी रेखा ॥
सोवत समय जो मार तारी । सत सुकृत करै रखवारी ॥
कहै कबीर बंकेज बुझाई । सोवत जीव नष्ट नाहिं जाई ॥

अमर पिछौरी ओढिकै, सुख मंडलमें सोय ।
कबीर ऐसे गुरु पाइके, कहा सुमिरको रोय ॥
उत्तर करो सिरहाना, पच्छिम कीजै पीठ ।
कहैं कबीर धर्मदाससों, यमकी लगै न दीठ ॥

सुमिरन प्रातः उठनेका ।

जो स्वर चलै प्रात संचारी । सोय पग धरि उठो सँभारी ॥
दिवस समस्त हर्ष सो बीते । जहाँ जाय सो कारज जीते ॥

पृथ्वीमें पग दीजिये, सुनो संत मति धीर ।
कर जोरि बिन्ती करों, दर्शन देहु कबीर ॥

सुमिरन स्नान करनेका ।

अन्न सकल तन पोख, शब्द सुरति सो पेख ।
सूक्षम लगन उतारो, काया निर्मल होय हमार ॥

कहैं कबीर यही तत्सार। चौरासी सो जीव उबार॥

सुमिरन मूल द्वार धोनेका।

सुरति संतोष मूसल जब भया उतार। बाँयेकर परसै जलढार॥
सतगुरु शब्द गहोमति धीर। कहैं कबीर होय पाक शरीर॥

सुमिरन जल पात्रका।

धर्मदास मैं तुम्हें बुझाऊँ। जल पात्रका भेद बताऊँ॥
जल पात्रको गहिके, उत्तम करो बनाय।
कहैं कबीर निर्मल भये, संशय भ्रम मिटिजाय॥

सुमिरन तूँबा पछालनेका।

तत्तनत्तका तूँबा, शब्देलियो समोय।
कहै कबीर धर्मदाससो,तूँबा निर्मल होय॥

सुमिरन हाथ माटिआवनेका।

माटी खाक माटी पाक। माटीमें माटी गर्पाक॥
कहैं कबीर हम शब्द सनेही। सत्तशब्दसों पाक होय देही॥
मृत्तिका लेव हाथ लगाई। अजर नाम सुमिरोचितलाई॥
मृत्तिकालीन्होंहाथमें, निर्मल भया शरीर।
कर्म भ्रम सब मेटिके, सुमिरो सत्य कबीर॥

सुमिरन दातौन तोरनेका।

धन्य वृक्ष जिन दातौन दीन्हा। साधु संतपर दाया कीन्हा॥
दाया कीन्ह भया प्रकाश। रक्षा करें कबीर धर्म्मदास॥

सुमिरन दातौन करनेका।

सत्तकी दतौन संतोषकी झारी। सत्त नामले धसोविचारी॥
किया दतौन भया प्रकाश। अजर नाम गहो विश्वास॥
अमी नामते पहुँचे आय। कहै कबीर सतलोक सिधाय॥

सुमिरन दातौन फारनेका।

फटी दतौन भया प्रकाश। अजर अमर कबीर धर्म्मदास॥

सुमिरन मुख धोनेका।

मुख परसे मुक्तायनि बासा। जिनके परसत लोकनिवासा॥
लै जल मुख माहि चढ़ावे। अम्बुतनाम हिरदे लौलावे॥
कहै कबीर सुनो धर्मदास। सो हंसा सतलोक निवास॥

सुमिरन असरि उतारनेका।

असरी अमर लोक सो आई। तीनलोकमें निर्भय भई॥
तनसोधो मन राखो धीर। असरी उतारो खारी नीर॥
कहै कबीर अमर भइ काया। निजशब्द असरीका आया॥

सुमिरन जलमें पैठनेका।

जो साहब दायाकर पाऊँ। कर बन्दी जल मांझ समाऊँ॥
पान निहशान सतगुरु शब्द प्रमान॥

सुमिरन स्नान करनेका।

अमी सरोवर ज्ञान जल हंसा पैठ नहाय।
काया कंचन मन गमन कर्म भर्म मिटि जाय॥

पिंड सो ब्रह्मंड जान। मान सरोवर कर स्नान॥
सोहं हंसा ताको जाप। कहै कबीर पुन्य नहिं पाप॥
ऐसी विधि करे स्नान। सोहंसा सतलोक समान॥

सुमिरन स्नान करके बन्दगीको।

नहाय खोरके शीश नवाई। अलख पुरुषके दर्शन पाई॥
अमी शब्दको कीजे जाप। कहै कबीर अमरबर बास॥

सुमिरन कोपीन पहिरनेका।

पारा राखे गुरु हमारा।
बारह बरष की कन्या आई। उलटा पारा रह्यो समाई॥

ऊपर बन्दी छोर विराजे । पारा खसे तो सतगुरु लाजे ॥
सत्तकी कोपीन व्रजका धागा । गुरु प्रतापसो बन्धन लागा ॥
कहैं कबीर तजो अभिमान । धागाखसेतो सतगुरुकी आन ॥

सुमिरन जल भरनेका ।

जीव जन्तु सब दूर पराऊ, भरिहौं निर्मल नीर ।
हत्या पाप लागे नहीं, रक्षा करैं कबीर ॥

सुमिरन जल छाननेका ।

अमृत जल निर्मलका छाना । सतगुरु साहबके मन माना ॥
कहैं कबीर भरम सब भागा । टूटयो जबै पुरानो धागा ॥

सुमिरन तिलक करनेका ।

तत्त्व तिलक तिहु लोकमें, सत्त नाम निज सार ।
जन कबीर मस्तक दिये, शोभा अगम अपार ॥
पार कोई विरले पावै । पार पावै सो संत कहावै ॥
योनी संकट बहुरि न आवै । कहैं कबीर सत लोक सिधावै ॥

सुमिरन दर्पण देखनेका ।

दर्पणमें मुख देखिये, कबही न होय चित्तभंग ।
गुरुको वचन संतकी सेवा, चढै सवाया रंग ॥

सुमिरन चरणामृत महाप्रसाद लेनेका ।

चरणामृतमहाप्रसादजोलीन्हाँ । सत्य शब्दकासुमिरन कीन्हाँ ॥
अर्ध उर्ध मध्य धर ध्यान । कहैं कबीर सो संत सुजान ॥

सुमिरन चरणामृत देनेका ।

हो साहेब मैं विन्ती लाऊँ । कौन नामते पगपखराऊँ ॥
दहिने पग प्रथम ही जलनावे । बल हमार सो पग पखरावे ॥
शब्द सार निसोलिक मारा । पग पखराओ हंस हमारा ॥
यहि विधि पगपखराओ भाई । दुगा दोष सब दूर पराई ॥

साखी–अजर नामको सुमिरन, चीन्हे हंस हमार।
कहैं कबीर धर्मदास सो, शीश न आवैभार॥

सुमिरन महा प्रसाद देनेका।

एके अन्नको आसन कीजै। पाच तत्त्व को भोजन दीजै॥
जबे जीव मांगे प्रसाद। अजर नामको कीजे याद॥
एक ग्वा हाथमें लेवे। महाप्रसाद दासको देवे॥

महाप्रसाद एक धनीको, जाको सब विस्तार।
मूरख लेख न पावै, कहैं कबीर विचार॥

सुमिरन महा प्रसाद पानेका।

एक ग्रा हाथमें लीन्हा। उग्रनामका सुमिरन कीन्हा॥
महाप्रसाद ऐसी विधि पावै। यमकीदर्सी निकट नहि आवै॥
उग्र नाम हृदय लौलाई। ऐसी विधि प्रसाद जो पाई॥

साखी–कहैंकबीरधर्म्म दाससो, महाप्रसादजोलेय।
काल दर्सी सब टूटे, यमहि चुनौटीदेय॥

सुमिरन चरणामृत पानेका।

चरणामृत शिष्य जो लेई। अंबुज नाम हृदय चित देई॥
लागे नहीं कालकी छाहीं। चरणोदक जो होय सहाई॥
ऐसी विधि चरणोदक लेई। यमहिं चुनौटी निशिदिन देई॥
ले चरणोदक माथ नवावे। तीन दण्डवत तब पहुँचावे॥

साखी–कहैं कबीर धर्मदाससो, यह शिष्यको व्यवहार।
दगा धोख सब मेटो, हँस उतारो पार॥

सुमिरन जल पीनेका।

उत्तम शीतल निर्मल नीर। अमृत पिय तिरषा गई दूर॥
सत्यगुरु मिल गये मलूककबीर। भागो काल शिरपके तीर॥

सुमिरन घर बुहारनेका।

सुमति बुहारी कर गहिलीना। कचरा कुमति दूर कर दीना॥
बावन लाख दगा मिटि जाई। साहब कबीरकी फिरी दुहाई॥

सुमिरन घर पोतनेका।

हरियर गोबर निर्मल पानी। चौका पोते सुकृत ज्ञानी॥
सवा लाख चूक बकसाये। चौका पोत जेवनार चढाये॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास। हंसा पहुँचे पुरुषके पास॥

सुमिरन चूल्हामें अग्नि बारनेका।

चूल्हा हमारे चौहटे, सब घर तपे रसोइ।
सत सुकृत भोजन करे, हमको छूत न होइ॥

सुमिरन रसोई बनानेका।

सतसुकृत कीन्हा जेवनारा। ताते करत न लागे बारा॥
सतघरी दोपहरि या साँझा। लक्ष्मी बैठी रसोई माँझा॥
सत्त पकवान लक्ष्मी करे। तीनलोक का उदर भरे॥
कहैं कबीर लक्ष्मी समुझाय। संत सुहेला बैठे आय॥

सुमिरन थारी परोसनेका।

चंद्रन चौका कंचन थारी। हीरालाल पदुमकी झारी॥
बहुत भांति जेवनार बनाये। प्रेमप्रीति सो पारस कराये॥
संत सुहेला भोजन पाई। सत्तसुकृत सतनाम गुसाँई॥

सुमिरन प्रसाद अर्पणेका।

संत समाज धरती स्थूला। प्रसाद चढावें धर्मनिर्मूला॥
ओढेसाल क्षमा के दीन्हा। सोईशब्द जो पावै चीन्हा॥
नीर निरंतर अन्तर नेह। शब्द अगाध जो लागे देह॥
कहैं कबीर चित जित जनि डरो। नाम सुमिरि जल अर्पणकरो॥

सुमिरन अचवन करनेका ।

करि प्रसादजलअचवन कीन्हा। अचवन करिके खर्चा लीन्हा ॥
दूतभूत सब गये पराय। जब टेके सतगुरुके पाय ॥

सुमिरन पाकर बन्दगी करनेका ।

वारीतेरी बलगई, पलमें सौ सौ बार।
सद्गुरु मोपर दाया करो, साहब कवीर सिरजनहार ॥

सुमिरन सुपारी मोरनेका ।

सत सुपारी मोरके, अमी अंकलौलाय ।
कहैं कवीर धर्म्मदाससे, हंस लोकको जाय ॥

सुमिरन पान पानेका ।

गुरु कवीरने बीरा दीन्हाँ। हंस बचाय कालसो कीन्हाँ ॥
सत्यलोकमें बैठे जाई। सत्त सुकृत जहँ पाप रहाई ॥
कहैं कवीर जे हंस उबारे। जरा मरण भव कष्ट निवारे ॥

सुमिरन टोपी लगानेका ।

तरे धरती ऊपर अकाश। चांद सूर्य दोउ पाट ॥
तैतिस कोटि आगे पार। सोई जानो सतगुरुकी हाट ॥
नौनाथ चौरासी सिद्धजीत औघट बाँध।
धर्मदासके मस्तकदीन्हा, कवीर विराजे साथ ॥
बादशाह एक खूँटका, अखंड द्वीपके भूत।
दुर्वेश भूत ब्रह्माण्डके, सोइ साधु गुरुरूप ॥

सुमिरन दीपक बारनेका ।

आदि अन्त एक ज्योति हैं, स्थिरस्थीरहै नीर ॥
आवैसत्यकवीरकेशब्दकी छुरी। यम जालिम की काटे गुरी ॥
धर्मदासकवीरके लागेलागे पाई। बावन लाख दगा मिटि जाई ॥

सुमिरन आसन करनेका ।

सत्त पुरुषको सुमिरिके, आसन करे बनाय ।
तापर हंसा पौढई, कबीर धर्म्म दास सहाय ॥

सुमिरन कमर कसनेका ।

धर्म दास कसना कसे, नाम पान लियहाथ ।
सत्यकबीर पहुँचावहीं, सकलसन्त लिये साथ ॥

सुमिरन रस्ता चलनेका ।

शिरपर साहब राखिके, चलिये आज्ञा माँहि ।
आगेसाहेबकबीर हांकदेतहैं, तीनलोक डरनाहि॥
कागकागरेविकार कूकरामंजार । नाग नाहर दूत भूत बट पार ॥
सबको बांधि कबीर आन घाट ले डार।
घाट बाट बन औघट मोहि खसमकी आस।
मते चले कबीरके कबहू न होय निवास ॥

सुमिरन सात शिकारीका ।

अर्मानाम- उर्द्ध नाम, परिमल नाम, दयावन्त, बालदीप, सहजमूल, अग्रमुनि सत्तनाम,साहबके अमीनाम, पुष्प सुगंध कंठकी मिला निर्गम्य सुगंध योगजीत निहं गमित ॥

इति श्री षट्कर्म विधि नित्यकर्म सुमिरन ।





सत्यसुकृत, आहिअदली, अजर, आचिन्त, पुरुष, मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतायन, धनी धर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रकट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, कद्यान की, दया वंश-ब्यालीसकी दया।

अथ श्रीबोधसागरे

पञ्चत्रिंशस्तरङ्गः ।

अथ सुमिरनबोध

द्वितीय बोध ।

(गुरुआई विधिके सुमिरन)—सुमिरन चौकाके अजर गायत्री ।

अजर गायत्री अजपान । अजर चौका अजर नाम ॥
अजर सिंहासन है परवान ।
अजर थार भराये तहाँ । अजर पुरुष गवन किये जहाँ॥१

अग्र नारियर मनमुख धरिया ।सुर्त सुपारी आगे विस्तरिया ॥
लौंग लायची जहवां फरी । लौकी लौंग सोध विस्तरी ॥
ज्ञान ध्यानकी केसर गारी ।
अग्र विचार परममन दिया । अमी अंक तामें कर लिया॥
अग्र अमर पाटंबर ताना । अग्र सुगन्ध महाँ परवाना ॥
अजर पुरुष बैठे सिंहासन सम्हारी।संग हंस शोभा अधिकारी॥
अजर आरती बहु विधिसाजी । नानारंग तरंग बिराजी ॥
उमगे प्रेम ज्ञान तहँ छाया । हंस सोहंगम चौर ढुराया ॥
उठ तरंग बहुत विधि बानी । अमी अमृत काल शाहि समानी
दुविधा दुरमत दूर बहाई । प्रीति मिठाई थार भराई ॥
जगमग ज्योति रही ठहराई । परमल हंसा रहो समाई ॥
झमके तहवां नूर अपारा । गरज शब्द चहुँ ओरे धारा॥
चन्द सूर जहँ गम नाहिं पावा । सकल हंस वसन सुख आवा॥
कहें कबीर सुनो धर्मदासा । यह छवि देखत जगत हो उदासा
हिम्मत प्रीतिसों आरती साजो । इत उत चित नेक नहिं राजो॥

अग्र गायत्री नामकी, येही मुक्तिको मूल ।
धर्मदास दृढके गहो, जहाँ अग्र अस्थूल ॥
राजद्वारे जिन कहो, पण्डित सुन करे वाद ।
सो हंसा मतलोकके, लेहि शब्द पहिचान ॥

अग्र गायत्री तुमको दीन्हीं । एती दया हम तुमपर कीन्हीं॥
नाहीं सुमिरन जिह्वा आवा । अधर निरन्तर ध्यान लगावा॥
गायत्री भेद जानै कड़िहारा । चौका निर्णय करै विचारा ॥
कहें कबीर गायत्री कलसान । अजर अमर धर मूल टिकान।

सुमिरन अंशनके नाम बैठक पूजा ।

प्रथम कूर्म पीठ पर चौका ।
सहज अंशकी बैठक मूल करी, पूजा खडी सों चौका पोते ॥

सुजन जन अंशकी बैठक अग्रदीप, पूजा चन्दनको छरका ॥
भृंगमुनि अंशकी बैठक मंजुल करी, पूजा गादी चँदेवा ॥
अंश पक्षपालनकी बैठक पोहप दीप, पूजा फूल माला अँगोछा॥
अंश श्रवण लीलकी बैठक जगमगदीप, पूजा चोला धोती ॥
अंश सर्वांग सुर्तकी बैठक अचिन्त दीप, पूजा थारी कटोरी ॥
भावनाम अंशकी बैठक उदै दीप, पूजा दाख सहत ॥
सुर्त सुभाव अंशकी बैठक ज्ञानदीप, पूजा बदाम मरिच अबीर॥
अक्षर सुभाव अंशकी बैठक पालंग दीप, पूजाकेरा फूल ॥
सन्तोष सुजान अंशकी बैठक अक्षय दीप,पूजा मिश्री अष्टमेवा॥
कदल ब्रह्मकी बैठक सुखसागर दीप, पूजा सुपारी छोहारी ॥
दयापाल अंशकी बैठक आदि दीप, पूजा झारी अष्ट सुगन्ध ॥
जलरंग अंशकी बैठक पताल पाँजी,पूजा पान खरचा माला ॥
प्रेम अंशकी बैठक झँझरी दीप, पूजा घृत कपूर ॥
अष्टांगी अंशकी बैठक मानसरोवर, पूजारिष्ट भोग विलास ॥
प्रथम चार चौका ताके मध्य सिंहासन ॥
पान मिष्टान्न नारियर पुरुपको भोग घृत पकवान ॥
उत्तर दिशा जम्बूद्वीप गुरुधर्म दासगोसाँई आरतीज्योति प्रकाश॥
पूर्व दिशा गुरुराय बंकेज गोसाँई कलश पांचों वाती प्रकाश ॥
दक्षिणदिशागुरुचतुर्भुजगोसाँईदलकीझारीपांचपानखरचासाथ॥
पश्चिम दिशा गुरु सहेते जी गोसाईं पासान वंशगाड़ी ॥
इतनी विस्तार पुरुष सों ज्ञानी लगि ।
अपने अपने स्थान बैठाये। सबअंशनकी लाग चुकाये ॥
धर्मदासको संधि बताये। धर्मदासको नाम चुकाये ॥
षोडश अंश पान पर लीन्हें। मुक्तामन सुरतीकी दीन्हें ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास। यह भेद कंडिहार सों कहो प्रकाश॥

इतना भेद कड़िहार जो पावै । आप चले औ जीव बचावै ॥
धर्मराय है चौका माहीं । वह देखे सबके चतुराई ॥
सुनो धर्मदास चार चौका गुन हैं । ताकी सन्ध्य प्रकट है ॥
चार गुरुकी बैठक पूजा न्यारी न्यारी है ।
चार दिशा कायामें हेली । चार दिशा बाहेरली ॥
एक एक गुरुके आठ आठ पूजा है । चार गुरुके बत्तीससाज
एक एक गुरुके संग चार चार अंश है । चार गुरुके सोरह अंश ॥

साखी–इतना भेद जो जाने, सो साचों कड़िहार ।
इतना भेद नहिं पावै, तेहि छलै काल बटमार ॥

साखी–चौका बैठे फूलके, गांफिल भया निशंक ।
बिनाभेद जो नारियर, मोरे ना शिर चढै कलंक ॥
झूलों कालहि डोरना, नहिं जाने शब्दका तोल ।
कहैं कबीर धर्मदाससों, मम खाली परै न बोल ॥

सुमिरण बडी इकोत्तरी ।

अजर अचिन्त्य अकह अविनाशी । आदि ब्रह्म अमरपुर वासी ॥
अदली अमी अनेह अजावनसोई । आदिनामसत्यसुकृतै होई ॥
परमानन्दहै अखिल सनेही । सत्यनाम तत्पुर्ष विदेही ॥
निःबानी निरअक्षर सांचा । अजरअविगतसबहिनमोराचा ॥
अमर अपार अनंत अभेदा । अचल अचिन्तन जाने भेदा ॥
अक्षय अगुण अगोचर कहिये । अगमअलेख गहिसतचितरहिये
अभय औगाह अकथबखाना । अम्बुजचरण औ पुरुषपुराना ॥
दीनबंधु करुणामय सागर । दयासिंधु हंसनपति आगर ॥
दीनदयाल सो अधम उधारन । हिरणमय भवसागर तारन ॥
अरूप अथाह अनाहद राता । योगजीत सबहिनके दाता ॥
करुणामय संतन सुखदाई । अभय अचिन्त्य नामगुणगाई ॥

सच्चिदानंद सो सदा उजागर । योग संतायन पति सुखसागर ॥
सुर्त नामसों जपिये ज्ञानी । अमी अंकूरबीज महिदानी ॥
प्रथम पुरुष सबहीके मूला । अमीदीप नामहै स्थूला ॥
आलख नाम पुरुपोत्तम गाऊँ । नाम मुनींद्र सदा गोहराऊँ ॥
सर्व मई साधनपति सोई । भक्तराज बूझो नर लोई ॥
सत संतोप सो सदा सनेही । शब्दसरूपी अविचल देही ॥
प्राण नाक पिव अमृत बानी । सत्यलोकपति नाम बखानी ॥
सद्गुरु जन्म निवारक जानौ । बन्दीछोर निश्चयके मानौ ॥
आवागमनके दुःख मिटावो । चौरासी लक्ष बन्द मुक्तावो ॥
शीलरूप संतोप पियारा । धर्मराय शिर मर्दनहारा ॥
मुक्तिदाता शीतल उजियारा । नाम परायण प्राण पियारा ॥
अस्थिर नाम अभयपद दाता । अक्षयराज नायक विख्याता ॥
सत्यसाहेब कहो बहोर बहोरी । अक्षयवृक्ष हिरामय डोरी ॥
पुहुपदीप मण्डप गुरु सांचा । हँस सोहँग नाम बिच राजा ॥
सोहं शब्द नामहै सारा । सत्यवचन बोले कड़िहारा ॥
इच्छारूप संतजन गावै । ज्ञानहिबीज अमोल कहावै ॥
अबोल अशोच असंशय धीर । नाम एकोत्तर कहैं कबीर ॥
एकोत्तर नाम सुमिरे जो कोई । ताको आवागमन न होई ॥
नाम एकोत्तर सुमिरे जबही । सद्गुरु बैठ सिंहासन तबही ॥
आरती नाम एकोत्तर चाहिये । एकोत्तर विना न नरियर गहिये ॥
आरती नाम एकोतरि धारा । एकोतरी विना कैसो कड़िहारा ॥
विना एकोतरि नहिं निस्तारा । कैसेहु जिन मानो कड़िहारा ॥
एकोतर नाम जानै विस्तारा । सो जानो सांचो कड़िहारा ॥
पांच नाम इनहीमों भापा । सहज पक्षपालन है साषा ॥
सुर्तसहजपालजलरंगश्रवणहैभाई।हंसनतिलकएकोत्तरिलेहोजाई

बायेंश्रवण लीला सुर्तहै भाई । सुर्त डोर कहों समुझाई ॥
एकोत्तर नहिं जाने विस्तारा । सो जानि जानहु है कड़िहारा ॥
जो नहिं जाने एकोत्तर विस्तारा । मिथ्या सो जानो कड़िहारा ॥
नाहिं तो पूत आहै कड़िहारा । लै जीवनको करै अहारा ॥

नाम एकोत्तर जानै नहीं, औ धरे सिंहासन पाँव ।
कहैं कबीर तेहि शीसपर, कोटि वज्रको घाव ॥
धर्मदास हँसन तिलक, एकोत्तरि लेहो जान ।
अंश सुजनजन मुक्तपद, सत्यशब्द परवान ॥
पिंड ब्रह्मण्ड खोजके, राखो शब्दकी आश ।
तिलभर काया मूलकमलमें, जहाँ पुरुष रहिवास ॥
कहैं कबीर जो पाइहैं, एकटक सुमिरे ध्यान ।
तिलभर काया सहज कमलमें, जहाँ पुरुषको स्थान॥
सहजनाम युग बांधिया, बावन नामकी नेह ।
दीप अजय की ध्यानमें, भई सुर्तकी देह ॥
देह भई तब जानिये, गगनध्यान लौ लीन ।
सुर्त सोहँगम शब्दहै एकटक सुमिरो संतों जब यम होय बलछीन
सोहँ शब्द निज सांचहै, जपौ अजपा जाप ।
कहैं कबीर धर्मदाससों, देखो अगम अगाध ॥
सोहँ शब्द निज सांचहै, गहि राखो तुम पास ।
सोहँ शब्दमें मुक्तहै, सत्य मानो धर्मदास ॥
सुमिरण सार एकोत्तरी, चंद्र सूर घइसार ।
कहैं कबीर धर्मदाससों, तासु नाम कड़िहार ॥

गम्य जाने जो पावै । भवसागरमें धन्य गुरू कहावै ॥
इति एकोत्तर नाम सिंहासन ध्यान नरियर अंग प्रथम स्मरणँ चौका अंग सत्यकबीर धर्मदासको दीन्ह । अविचल

पुरुष नाम अवोल अडोल नाम अजावन राय रनछोर नाम॥
शम्भु संतोष नाम। उदैचन्द अक्षैराज नाम ॥
एते नाम रहै लौ लाय। यमराजा तिहि देखि डेराय ॥
अम्बू अपावन नाम। अम्बू शम्भूनाम। एनेमन्यकाया प्रकाश॥
अजरनाम नरियर संचार।
अम्बूनाम वे पुरुष कहावा। सोहं हंस तहां विलमावा ॥
सो तो धर्मदास वैठैं पुरुष पुरान। सोहं सुर्ततुम मोर सुजान॥
वेहंग नाम तुम जगमें देहो। हंस छोड़ाय काल सो लेहो॥
एही नाम जीव जो पावै। वोधे हंस लोकमें आवै ॥
मैंकवीरदृढ़ज्ञानदिखाजेहौंठाईं। आवनजानछुवतजे [illegible]
एकोनरी नाम सुमिरे चितलाई। आवागमन रहित घर पाई ॥

स्मरण हस्तक्रिया ।

सुनो धर्मदास हस्तक्रिया सही। महापुरुष मुख अपने कही ॥
नरियर अंकुरमों जीव रहाई। तहां सुर्त राखो ठहराई ॥
नरियर उठाय हाथ के लेहू। नरियर मस्तिक हाथ जो देहू ॥
सुर्त समाय जीवमो गयेऊ। नरियर अमर लोक लै गयेऊ॥
महा पुरुषके दर्शन कियेऊ। चरण वन्दिके शीश नवायेऊ॥
महा पुरुष लै अङ्क लगाये। तव हंसा लिये हर्ष समाये ॥
अंकुर अंश विनवे कर जोरी। महा पुरुष सुनो विनती मोरी॥
अंकुर अंश नाम लौ लाई। भवसागर ते लेउ मुक्ताई ॥
महा पुरुष सुर्त उतपानी। जाय सुर्त कड़िहार समानी॥
कड़िहार सुर्त लीन्ह चितलाई। सोई सुर्त हंसा मो आई ॥
माथे हाथ जीवके दियेऊ। सुर्त समाय हंस मो गयेऊ ॥
गई समाय रही ठहराई। बहुत अनन्द हंस तव पाई ॥

जब लग सुर्त रही गहि बांही । कोइकोइ सन्तसोजानतआही
टीका मुदित पूजे जब आई । यह पिण्ड तबही खस जाई ॥
सुर्त हंस ले गये लेवाई । महा पुरुषके दर्शन पाई ॥
महा पुरुषके चरण छुवाई । करे बन्दगी शीश नवाई ॥
महा पुरुष लिये अङ्क लगाई । सुर्त हंस नाम तिन पाई ॥
अपने समसर लिये लगाई । महा पुरुष सम शोभा पाई ॥
सुर्त हंस विनवे करजोरी । महा पुरुष सुनो विनती मोरी॥
भवसागर कड़िहार रहाई । तिनके शब्द मुक्त हम पाई ॥
धन्यशब्द धन्य कड़िहारा । तिनके शब्दसो हंस उबारा ॥
महा पुरुष चितवे चितलाई । भवसागर ते लेव मुक्ताई ॥
मुक्त होय सतलोके आवे । छिन छिन गुरुके दरशन पावे ॥
महापुरुष शब्द उचारा । वे कड़िहार हैं सुर्त हमारा ॥
जहां जहां सुर्त चित लाई । सोई हंस लोकको आई ॥
भर्मे जीव होय जगमाहीं । तिन सनकी गहे जो बाहीं ॥
भर्मे जीवको नरियर लेई । हस्त क्रिया नरियरको देई ॥
हस्तक्रिया नरियर जब पाई । भर्मे लोक हंस ले जाई ॥
जाहि खानमें जीव रहाई । जहां जाय सुर्त समाई ॥
गई समाय रही ठहराई । हंस उधार लोक ले जाई ॥
जो कड़िहार हस्तक्रिया पावे । महापुरुषके सुरत समावे ॥
हस्तक्रिया गहे चित लाई । कहैं कबीर हंस लोक सिधाई ॥

स्मरण सिंहासन बैठनेका ।

अंगह गहे गहनी तहां पुरुष चेतो सन्त विचार ।
सिंहासन है पुरुष को सुर्तसों रोपो पांव ॥
जीवन पार उतारो तुम्हरे शिर नाहिं भार ।
आदि पवन सो बैठो मूलशोध कड़िहार ॥

कहैं कबीर धर्मदाससों सत्यपुरुप चितराख ।
अमी अंक जो जानै जासु जहा तत भाष ॥

स्मरण दल अर्पणका ।

अर्पोदिल चौकामें उत्तिम दल बनाय ।
कहैं कबीर धर्मदास सों सबअवगुण मिट जाय ॥

स्मरण पाषान रखनेको ।

पान पुराण हाथकर लीन्हाँ । सब साहेबका सुमिरण कीन्हाँ॥
सत्यपुरुप बोल परवाना । बैठे पुरुप मध्य जो स्थाना ॥
रेखा लिखो पाषाणमें अचिन्त्य नाम घट बोल ।
कहैं कबीर धर्मदाससों तब हंसा होय अडोल ॥

स्मरण नारियर रखनेका ।

नरियर नरियर नरियर खरी नरियर मोर सत्य कबीर ।
औरसों नरियर मोर न जाई । पांच शब्द लै नरियर मोरे कबीर धर्मदास आई ॥

स्मरण नारियर मोहनेका ।

जलदललेके नरियर मोरा । सत्यशब्द गहि तिनका तोरा ॥
मोरे नरियर हुकुम कबीर । सत्यनाम गहि लागो तीर ॥
पुरुष नाम है अमी अमोल । नरियर मोरे खसम निहोर ॥

स्मरण नारियर मोड़नेका ।

अमी शीचके नरियर कीन्हाँ । सो नरियर धर्मदासकोदीन्हाँ॥
धर्मदास मृतुमण्डल आये । सकल संत मिलिमंगल गाये॥
नरियर मोरकेसत्य सुकृतकोशिरनाये।निकुत नामलेहंसबचाये॥
कहैं कबीरधर्मदास सों । नरीयर मोरे वंश तुमार॥

स्मरण तिनका तोरनेका ।

यह विरवा चीन्हे जो कोय । जरा मरण रहित घर होय ॥

कौनविग्वा जोबोलनहैनाको चीन्हो । कबीर गोसाँईकी आज्ञा सों । जिवनो यमसो तिनका टूट यमके मुखमें थूक ॥

स्मरण ज्योती शीतल करनेका ।

साखी–आदि अन्त यक ज्योति है: अस्थिर थीरहै नीर ।
सात द्वीप नौ खण्डमें, एकहि सत्य कबीर ॥

स्मरण मिठाई मालुम करनेका ।

श्वेत मिठाई उत्तम पाना । लौंग लाइची श्वेत प्रवाना ॥
केरा कदली और सुगंधा । तबही हंसा होय अनन्दा ॥
यहविधि विकरा मिठाई । कहैकबीरधर्मदाससोतवहमको भोग लगाई ॥

स्मरण पान प्रसाद मालुम करनेका ।

चौंका लेय मिठाई धरी नरीयर धोती पान ।
हंसा बैठे आशन पर पूर्वहि आज्ञा मान ॥
पुरुष बैठे आसन हंसहि नाही मार ।
कहै कबीर मिठाई मालुम आसन लोक पार ॥

स्मरण आरती सौंपनेका ।

जोई आरती बारेसोई बुझावै आन ।
जहां ज्योति झिलमिल करै सोई पहिचान ॥
अपनो तनमनखोजो, आपकरो चितएक ।
शीतल करो आरती पुरुष नाम गहि टेक ॥
कहै कबीर यह सुमिरण सन्तो करो विवेक ।
अबकी बेरा चेतहु, तारों कुटुम समेत ॥

स्मरण आरती प्रकाश करनेका ।

सोहंग नामले आरती बारे आप तरे औरनको तारे ॥
सोहंग नामनिज सुमिरिके, करो आरती प्रकाश ॥
कहै कबीर धर्मदाससो मिट गयेयमके त्राश ॥

स्मरण परवाना लिखनेका।

अमी अंककी लिखनीकीन्हा। सोलिखनीधर्मदास को दीन्हा॥
उलटी लिखनी सीयेल द्वार। कटे कर्म भये जग छार॥
खोजनखोजनखोजिया, यहसन्तनकोकाम।
पुरुष देह धर दुखिया, और एकोनरनाम॥

स्मरण परवाना साजनेका।

अहोसाहेबकौन अंगप्रवानसाजो। भाषो लेपा अंगमो ताको॥
अहोधर्मदासमध्यअंगप्रवानासाजो। अंक चढ़ायनामसुखभाषो॥
अजावन नाम पान के लीन्हा। सुर्त सम्हार अंक तुम चीन्हा॥
कहैकबीरधर्मदाससोयहबीरा अंक। नामविदेहचढ़ावहूँहंसहोयनिशंक

स्मरण प्रवाना साजनेका।

अमी अंकका बीरा शब्द, सोहंगम डोर।
कबीर हंस लोकले राखो, यमसे बन्दी छोर॥
सुर्त चढीआकाशको, उनमुनमहल बनाय।
सोई हंस उजागर जामो अमी समाय॥
पुरुष मोहर अकह कबीर। कालमें सोहं धर्मदास कबीर॥

स्मरण प्रवाना देनेका।

श्वेत पान अम्मर है छाया। सोपानअमोदिक पुरुष पठाया॥
सरमत पवन फिरे संसारा। पवन निर्मल होय असवारा॥
अमी अङ्क पुरुष लिख दीन्हा, कमल पंखुरी सार।
कहैं कबीरकछु शंका नाही, रहो पुरुषके आधार॥

स्मरण प्रवाना देनेका।

अजरमूलसो बीरी, उत्तारीसुर्त सोहंगम डोर।
एही सुमिरणदायक, हंसाउतरे लक्ष करोड॥
एही स्मरण हाथले, काल रहो मुरझाय।
कहैं कबीर धर्मदाससों, हंसलोक पहुंचाय॥

स्मरण कण्ठी बाँधनेका ।

कंठी कण्ठ विराजे-सतगुरु तिलक कर दीन्ह ।
जगसोंतिनुका तोरिके, हंसआपन करि लीन्ह ॥
माला कण्ठी नामकी- सतगुरु शब्द विचार ।
वादविवादजो बालकसोकरै- ताकेमुखपरछार ॥
कहकबीर धर्मदाससों-बालक कबहु न होय निनार ।

स्मरण पांचनाम ।

आदिनामअजरनामअमीनाम । पताले सदा सिंधु नाम ॥
अकाशा अदली निरनाम । एहीनाम हंसको काम ॥
खोले कूची खोली कपाट । पांजी चढ़े मूलके घाट ॥
भर्म भूतको बाँधो गोला कहै कबीर प्रवान ।
पांच नामले हंसा, सत्यलोक समान ॥

स्मरण दशामंत्र ।

सत्यसुकृतकीरहनीरहै, अजरअमरगहैसत्यनाम ।
कहै कबीर मूलदशा, सत्य शब्द परवान ॥

स्मरण तिनुका तोरनेका ।

दहिने छोडो धर्मका स्थाना । बांयें चित्रगुप्तको जाना ॥
सन्मुख नासिका देव पयाना । तब यम चले देखके पाना ॥
टूटे घाट अठासि करोरी । हँसा चढ़े नामकी डोरी ॥
सो जीवत हँसा भये, लिये प्रेमकी डोर ।
सो जिवचले सत्यलोकको-यमसोंतिनुका तोर ॥
आसन वासन मन कल्पना, औ सर्वा भूत ।
एकोनरमें पुरुषके, तिनुका टूट ।
कहें कबीर सद्गुरु मिले, मिथ्याके मुख चूक ॥

तिनुका तोरनेका ।

मनपाप मनसा पाप पाप महापाप पुरविला पाप ।
नाग्रह ब्रह्मा जाई । हम सद्गुरुके शरण आई ॥
आसन वासन मन कलपना. एतो सर्वाभूत ।
कह कवीर सद्गुरु मिले, मिथ्याके मुख थूक ॥

तिनुका तोरनेका ।

आसन वासन मन कलपना देवो सर्वाभूत ।
यमसों तिनुकाटूट साहब शब्द प्रकटेभागे भूत यमदूत ॥
ये जीव भये कवीर साहेबके यमसों तिनुका टूट ॥
कालके मुख थूक यमसों तिनुका टूट ॥
शब्दहि नेह लगावै कहैं कवीर धर्मदासमों कालदगा मिठजाय

तिनुका तोरनेका ।

आसन वासन मन कलपना. खेदो सर्वा भूत ।
कहैं कवीर सतगुरु मिले, मिथ्याके मुख थूक ॥

जँजीरा तिनुका तोरनेका ।

भूतहि बांधों पिशाचहि बांधों बांधों धीमर धोखा ।
नीर निरंतर मंतर बांधों मारों नाहर चोखा ॥
बोझा बांधो बोझइना बांधों पूजिन बांधो पुजेरी बांधों ।
मरहिया मनसा बांधोंहाटक बांधों फाटक बांधों ॥
औघट बांधों वाट बांधों नैहर बांधों सासुर बांधों ॥
अगेसिन बाँधो पगेसिन बाँधों बाँधो डंकन डोरी ।
कहैं कवीर भर्म सव बाँध्ये निर्गुण तिनुका तोरी ॥

स्मरण प्रवाना पावनेका ।

अजरकी लिखनी हीरा पाना । सत्य सुकृत लिखे परवाना ॥
देह पोन लेवो कण्ठ लगाई । बालक देह गर्भ में भाई ॥

भाषा भाषों अपर्बल परे अजरकी छाय ॥
मुक्तके अक्षर मुक्ता मन होय चुगमनि नाय ॥

स्मरण प्रवाना पावनेका ।

अजर नाम अजर है प्राना । अजर नाम सत्य लोक पयाना॥
अजर नाम गुरु दिया बताय । कर्म भर्म सब दिया बहाय ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । अजर नामते लोक निवास ॥

स्मरण माथा पंजा देनेका ।

ठांढ दूत करत है गोला । धर्मदास मुख अजरे बोला ॥
धर्मदास मुख बोले बानी । दूत भूत गये कुम्हिलानी ॥
अजर लोक अजर है नाम । अजर पुरुष अजर पुर्षकोनाम॥
येही नामहृदयमें राखो। जादिनकालदगापरे तादिन मुखभाषो॥
उत्तर दिशा जगन्नाथके ठाईं ।
कहैं कबीर धर्मदास सों अजर बोल तुम जीवको सुनावो ॥

स्मरण दल प्रसाद लेनेका ।

अमृतदल अमरापुरी, निरख नाम निज चीन्ह ।
अजर नाम कबीर का अमृत दल करि दीन्ह ॥

इति सुमिरन चौकाको गुरुवाई विधि सम्पूर्ण ।

अथ लिख्यते चौकाविस्तार विधि ।

स्मरण चँदोवा ताननेका ।

सत्यं सुकृतको समझके, कीजे मनको स्थीर ।
छत्र तनायो प्रेमसो, सद्गुरु कहैं कबीर ॥
पाँच सुपारी पांच खूटमें, श्वेत चँदेवा सोय ।
कहैं कबीर धर्मदास सो, आवागमन न होय ॥

स्मरण खडीसो चौका पोतनेका ।

श्वेत मृत्तिका निर्मल पानी । चौका पोते सुकृत ज्ञानी ॥

चौका पोतके चन्दन चढावा। सत्य सुकृत जिनलोकपठावा॥
कहँ कबीर सुनो धर्मदास। हंसा गये पुरुषके पास॥

स्मरण चन्दन चौका पोतनेका।

सिन्धु नीर घट अमी मँगावा। सत्य सुकृतको शीश नवावा॥
सोहं पवन लै कीन्ह पसारा। निकुत नाम लै हंस उवारा॥
तन मन देके चीन्ह शरीर। अंक नाम कहि दीन्द कबीर॥

स्मरण कनिक चौका पूरनेका।

कनक छानके निर्मल कीन्हाँ। सहज नाम हृदे चिनदीन्हाँ॥
चौका पूरे युक्ति बनाई। सतगुरु दीन्हा भेद लखाई॥
कहँ कबीर चौका है सारा। चौका बैठो सिरजन हारा॥

स्मरण मानिक बनावनेका।

अग्र आरतीकर मन जाना। कौन पवनसो निकसे पाना॥
शब्द अन्तहै ताकर सार। सो जीवनका करै उबार॥
उबारे हँस करै लोकनिवास। बारहतत्त्व जानेअंश बंशहमार॥
सत्यनाम मगन तेहि भीतर कहँ कबीर हम प्रकट शरीर॥

स्मरण थारमें परवाना धरनेका।

थार परवानाकर सम तूला। आदि नाम भाषो सुख मूला॥
मानिक सवार थारमें धरो। परवानाको सुमिरण करो॥
कहँ कबीर सत्यहै सार। अंश बंश हँस उतारै पार॥

स्मरण मानिक धरनेका।

स्थिरहि थारमें मानिक धरो। एकनाम सुस्थिर दृढ़ गहो॥
कहँ कबीर गहो नाम अधार। निश्चल हँस साधि कडिहार॥

स्मरण कपूर घृत परसेको।

अग्रकपूर अग्र घृत धाइ। सो कदलीहै वाही नेह॥
शब्द कपूर तहां लै धरो। सतगुरु दयासों निर्भय रहो॥
कहँ कबीर सुनो धर्मदास। अग्र वासमें करो निवास॥

स्मरण पान धोवनेका ।

सुखसागरहै मूल स्थान । तहां ऊपजे श्वेत पान ॥
श्वेत पानकी अमर छाया । अमी पुरुष संदेश पठाया ॥
कहैं कबीर सुनो संत सुजान । यहिविधि करो पान औ स्नान ॥

स्मरण पान चढ़ावनेका ।

श्वेत पान लोकते आया । श्वेत पान पुरुष निर्माया ॥
दिया वंश धर्मदासको । दीन्हों पान चलाय ॥
लेहु पान तुम शीश चढ़ाय । श्वेत पान पावे निज मूल ॥
हंसमन चिनको गवोथीर। कहैकबीर धर्मदाससों पहुँचेलोक अस्थूल

स्मरण दल बाँटनेका ।

दलनाम दयाका मानाम करि पूर । नौग नाम वे पुरुष हैं विन डोढी का फूल। सुर्त लाय दल बाटहू जल दद धरहु सुधार । कहै कबीर धर्मदाससों भव तज लगेन वार ॥

स्मरण दल बनावनेका ।

यो दल सत्तर लोकसों जल आवा । सत्तर लोकसों अमृत लावा । शब्दकी झारी अमृत भरी । तापेसा तोप रिचा धरी ॥
तीन खरचा पहले तोराई । कहैं कबीर यमदूत पराई ॥

नारियर जटा उतारनेका ।

प्रथम बीज धरनीको दीन्हा । लागेफल नारियर तहँ लीन्हा ॥
सो नरियर सन्त जन पाये । सत्य सुकृतको आनि चढ़ाये ॥
तीन लोक है पिण्ड शरीर । भीतर बाहेर एकहि नीर ॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास । यहविधि नारियर भयो प्रकाश ॥

स्मरण नारियर स्नानका ।

सुख सागर है मूल स्थान । तहाँ भये नरियरके स्नान ॥
श्वेत नारियर श्वेतहि छाया । अमी पुरुष सन्ध पठाया ॥

भरमित पवन फिरै संसारा। निर्मल पवन ताहि असवारा॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास। द्रुम नरियर स्थान प्रकाश॥

स्मरण कलश धरनेका।

दो पैसा औ एक सुपारी। कलश धरो उत्तम विस्तारी॥
सवासेर लै तण्डुल धरो। धर्मराय देख थरहरो॥
पांचो बाती देव लेसाई। तब गादीपर बैठो आई॥
हृद चरण वंशके धरो। सत्य कबीर कहि धोखपरिहरो॥

कलश सही करनेका।

पांचतत्त्व घट भीतरपांचहि नाम। तासों होय जीवको काम॥
सो लेखा तियवार कहैं कबीर सुनो धर्मदास। धर्मरायसो
हंस उबार। जोति अजरलोककी अव्रलोक देह पहुँचाय॥
कहैं कबीर सुनो कडिहार। सारशब्द गहा टकसार॥

स्मरण फूल चढावनेका।

सुकृत बागिनो फूल मँगाये। सहजकी झारी आनि भराये॥
सत्य पुरुषको आनि चढ़ाये। धर्मदास उठि विनती लाये॥
हीरा मानिक लाग मोती। सत्य पुरुषकी निर्मल जोती॥

स्मरण गादी बिछावनेका।

चौका धरो मिठाई आनी। नरियर पान कपूर प्रवानी॥
पुरुष बैठ सिंहासन आई। हंसहि नाहीं भार रहाई॥
मान सरोवर कदली केरा। मेवा अष्ट लाय यह बेरा॥
लौंग लाइचीसत्यलोककेछोहीं। भौमे आनि मिठाई होई॥
कहैं कबीर सुनो धर्मदास। सिंहासन बैठ मम दास॥

स्मरण फूलमाला बाँधनेका।

मन माली तन फूल मँगाये। अमी अंक लै शब्द सुनाये॥
मनकरुचारी तनकर पाप। काया कंचन भई निर्दोष॥
कहैं कबीर निज सुमिरन माही। मारें यम उबारो तोही॥

स्मरण आरती धरनेका।

सत्य जीव आरती है नाम। सतगुरु शब्द सुनो परवान॥ वोही नाममें बैठके लेहु धनीको पान। अंश वंश गुरु कीजिये देह धरो नाहिं आन। धीर गुरुको चीन्हके रहो सत्य मनलाय देखो खसम कबीरको हंसलोकको जाय॥

स्मरण चौका हाथ देनेका।

करधर चौका विनती कीन्हा। तुम्हरे कहे भार हम लीन्हा॥ अहो साहिब मोहि नहिं भार। यह चौका विस्तार तुम्हार॥ तुम जानो ओ शब्द तुम्हारा। समरथ मोहि उतारो पारा॥

धर्मदास बिनती करें तुम हो सत्य कबीर।
शिरके भार उतारहू, गहिके लावौ तीर॥

इति श्रीस्मरण गुरुवाई भेदादि चौकाविस्तार विधि संपूर्ण।

अथ लिख्यते स्मरण अभेद।

प्रथम समरथके मुखसो सहज अंश उतपन भये ताको वीज बुन्द दियो तामें सर्व रचना आई औ सात करी भई।

करीके नाम।

प्रथम पोहप करी, दूसरे मूलकरी, तीसरे अम्बुकरी, चौथे सुवर करी, पांचे सुख सागर करी, छठये पंकज करी, साते मंजुल करी, दूसरे समरथके नेत्र सो इच्छा सुर्त उतपन भई॥ ताको जावन बुन्द दियो तासो पांच अंड भये॥ तीसरे॥ समरथके श्रवणसो मूल सुर्त उतपन भई ताको अमी बुन्द दियो तासो पांच अंड पोप तासो पांच ब्रह्म उतपन भये तिनको आज्ञा दिये एक एक ब्रह्म एक एक अण्डमो आये चौथे समरथ की नासिकासे सोहंग सुर्त उतपन भये तासो पांच अण्ड फूटे तासो आठ अण्ड भये।

अंशनके नाम ।

प्रथम अचिंत्य, दूसरे जोहंग, तीसरेअकह, चौथे सुकृत, पांचे हिरण्मय, छठे अक्षर, साते योगमाया, आठे निरञ्जन, अचिन्तको चिन्ता नहीं, तेज अण्डके मालक, अण्ड को प्रवान पालंग१२वंश॥९॥प्रथम माया दूसरे कूर्म, तिसरे अद्गुल अष्ट, चौथे निरञ्जन, पांचे नभ, छठे समीर, साते तेज, आठे नीर, नवे पृथ्वी ॥ ९ ॥ दूसरे जो अंग हंस, तिनको बैठक धीरज अंड दिये अंडको प्रवान पालंगपचीस ॥२५॥ औवंश सोरह ॥ १६ ॥

वंशनके नाम ।

प्रथम अजरमुनि, दूसरे अगम मुनि, तीसरे हंसमुनि, चौथे चन्द्र मुनि, पांचे आप मुनि, छठये पुरुप मुनि, सातें अलंजित मुनि. आठे कलंक मुनि, नवें शीतलमुनि, दशयें श्रीं मुनि, ग्यारहे कण्ठमुनि. बारहें कनक मुनि, तेरहे वेहंग मुनि, चौदहे [illegible]मुनि, पंद्रहे सोममुनि, सोरहे जलरंग ॥ १६ ॥

तीसरे अकह अंश ।

तिनको बैठकछिमा अण्डमें दिये, [illegible] ब्यालिस ॥ ४२ ॥ वंश सनाइस ॥ २७ ॥

वंशकेनाम ।

प्रथम प्रेम, दूजे हुलास, तिसरे आनंद. चौथे विश्वास. पांचे हेत, छठे प्रीति, साते निरख. आठे विवेक, नवें सुमत, दशें क्षमा, ग्यारहेधीरज. बारहे आलहाद. तेरहें शील, चौदहें संतोष पंद्रहें सुमन, सोरहें बुद्धि, सत्रहें भाव, अठारहे भक्ती, उनीसवे दया, बीसे ज्ञान, एकइसे क्रिया, बाईसे विचार, तइसे कृपानि, चौबिसे संतोष, पचीसे भेद, छबीसे इच्छा, सताइसे भय, तिनको सत्य क्षमा अंड पुरुषके हजूरी ॥

चौथे मुक्त अंश।

तिनके बैठक मत अंडमोदिये, अंडको प्रमान पालंग बहत्तर ॥ ७२ ॥ तिनके वंश बयालिस ॥ ४२ ॥

वंशनकेनाम।

प्रथम काय सर्वांग रहाइ, सर्वांग कायातेबीज बुंद निरमाई बीज बुंदते अविगति काया। अविगत कायाके दशो भेदले। कायाके रूपसुर्त निर्माया।रूप सुर्तके सतगुरु सोहंके गुंग पुरुष कहाये। गुंग पुरुषके अचित पुरुष कहाये।अचितपुरुषके ज्ञानी अंश। ज्ञानी अंशके सुजनजन अंश। सुजन जनअंशके चूग मणी नाम। चूगमणि नामके सुदर्शन नाम। दूसरे कुलपति नाम।तीसरे प्रमोदनाम।चौथे कवल नाम।पांचे अमोल नाम। छठे सुर्त सनेही नाम। साते हक्क नाम। आठे याक नाम। नवें प्रकट नाम। दशें धीरज नाम।ग्यारहे उग्र नाम।बारहे दया नाम। तेरहे गध्र नाम। चौदहे प्रकाश नाम। पंद्रहे अदित नाम। सोरहे मुकुन्द मुनि।सत्रहे अधर नाम।अठारहे ऊर्द्धनाम। उनीसें ज्ञानी नाम। .... बाइसें अजर नाम। तेइसे रस नाम। चौबिसे गंगमुनि। पचीसे पारस नाम। छवीसे जागृत नाम।सताइसे भृंगमुनि। अठाइसे अर्द्धनाम। उनतीसे कंठ मुनि। तीसे संतोष दास। एकतीसे चात्रक मुनि।बत्तीसे अजर नाम। तेतीसवे दुर्गमुनि। चौंतीसवे आदि नाम। पैंतिसवे महामुनि। छत्तीसवे निज नाम।सैंतीसवे साहब दास।अडतीसवे ऊर्द्ध दास। उनतालीशवे कमल।चालीशवें दीर्घमुनि।एकतालीशवें महामुनि।

साखी–वंश व्यालीसके आगम, चूगमणि संतायन।
वचन हमारा प्रकटे, निःअक्षर निज नाम।
तिनको राज सत अंडमें,चौकी लोक पांजी ॥

पांचै हिरण्मयअंश।

तिनको बैठक सुमत अण्डमों दिये। अंडको प्रवान पालंग ॥ ६४ ॥ वंश सात ॥ ७ ॥

वंशनके नाम।

प्रथम वंशयाग्न, दूसरे स्वांतसनेही, तीसरे भृंगसनेही, चौथे लगंधि, पांचे दीपकजोत, छठें जलभाव, सातें मलयागिर ॥ ॥ ७ ॥ तिनको राजसुमत अंडमें पुरुपके हजूरी ॥

चार गुरूके नाम—लोकके और भवसागरके।

प्रथमनाम लोकमें जोहंग हंस कहिय और भवसागरमें गुरु चतुर्भुज गोसाँई तिनके वंश सोरह ॥ १६ ॥ दक्षिण दिशा नाम- वेद प्लक्षद्वीप दरभंगा शहर तहां प्रगट भये ॥ तिनको मूलज्ञान वानी तावानील पंथ चलायो, ब्राह्मण कुल प्रकट भये ॥ १ ॥ दूसरे नाम लोकमें अकह अंश कहिये ॥ २७ ॥ पूर्वदिशा यजु- र्वेद कुशद्वीप करनाटक शहर तहां प्रकट भये। तिनको टकसार ज्ञानता वार्णीले पंथ चलायो ॥ २ ॥ कायस्थकुल शूद्र, तीसरे नाम लोकमें सुकृत अंश कहिये, और भवसागरमें गुरुधर्मदास गोसाँई कहिये तिनके वंश ब्यालीस ॥ ४२ ॥ उत्तरदिशा ऋग्वेद जम्बूद्वीप भरतखंड बांधो शहर तहां प्रगट भये, तिनके कोट ज्ञान वानी ता वानीले पंथ चलाये ॥ ३ ॥ चौथे नामलोकमें हिरण्मय अंश कहिये। और भवसागरमें गुरुम्हेतेजी गोसाईं कहिये, तिनके वंश सात ॥ ७ ॥ पश्चिम दिशा अथर्वणवेद झिलमिल द्वीप मानिकपुर शहर तहां प्रकट भये। तिनको बीजक ज्ञान वानी ता वानी ले पंथ चलाये, क्षत्रियकुल ॥ ४ ॥

दश सोहँगके नाम।

प्रथम पुरुप सोहंग, दूसरे सहज सोहंग, तीसरे इच्छा सोहंग।

चौथे मूल सोहंग, पाचे वोहं सोहंग, छठे अचिंत सोहंग, साते अक्षर सोहंग, आठे निरंजन माया सोहंग, नवें ब्रह्मा विष्णु महादेव सोहंग ॥ १० ॥

नौ सुर्तके नाम।

प्रथम सहज सुर्त, दूसरे इच्छा सुर्त, तीसरे मूल सुर्त, चौथे सोहं सुर्त, पांचवें अचिंत सुर्त, छठें अक्षर सुर्त, सातें निरंजन सुर्त, आठें सुक्कन सुर्त नवें नौतम सुर्त ॥ ९ ॥

दश प्राणके नाम।

प्रथम अपान, दूसरे समान, तीसरे प्राण, चौथे उदान, पांचें व्यान, छठें नाग; सातें कूर्म, आठें किलकिला, नवें देव-दत्त, दशवें धनञ्जय ॥ १० ॥

आठ कर्मके नाम।

प्रथम ज्ञानवर्नी, दूसरे दर्शनावर्नी, तीसरे वेदवर्नी, चौथे ध्यानवर्नी, पांचे अन्तराय, छठें गोत, सातें प्रमान, आठें आव ॥ ८ ॥

तीन कर्मके नाम।

प्रथम संचित, दूसरे क्रियामाण, तीसरे प्रारब्ध ॥ ३ ॥

दोकर्मके नाम।

प्रथम विधि, दूसरे निषेध ॥ २ ॥

चार ज्ञानके नाम।

ब्रह्मज्ञान अचिंतको, अनुभवज्ञान अक्षरको, त्वचाज्ञान निरञ्जनको, क्षुद्रज्ञान माया त्रिदेवाको ॥ ४ ॥

चार ज्ञानीके नाम।

प्रथम पिशाच ज्ञानी, दूसरे पंडित ज्ञानी, तीसरे उन्मत ज्ञानी, चौथे जडज्ञानी ॥ ४ ॥

चार ध्यानके नाम।

प्रथम पंडीसीतध्यान, दूसरे रूप सत्य ध्यान, तीसरे पद सतध्यान, चौथे रूपातीत ध्यान ॥ ४ ॥

चार पदार्थके नाम।

प्रथम अर्थ, दूसरे धर्म, तीसरे काम, चौथे मोक्ष ॥ ४ ॥

तीन पदके नाम।

प्रथम तत्त्वपद, दूसरे तत्पद, तीसरे असीपद ब्रह्म ॥ ३ ॥

तीन तापके नाम।

प्रथम अध्यात्म, दूसरे अधिदेव, तीसरे अधिभूत ॥ ३ ॥

तीन जीवके नाम।

प्रथम मोक्षी। दूसरे विषय। तीसरे पामर ॥

पांच खानके नाम।

प्रथम मनुष्य खान। दूसरे पिण्डज खान। तीसरे अंडज खान। चौथे उष्मज खान। पांचे अस्थावर खान ॥

पांच वाणीके नाम।

प्रथम सिंगिनी वाणी। दूसरे बिंगिनि वाणी। तीसरे किंगिनि वाणी। चौथे इंगिनि वाणी। पांचे रिंगिनि वाणी ॥

पांच तत्त्वके नाम।

प्रथम आकाश। दूसरे वायु तीसरे तेज। चौथे जल। पांचे पृथ्वी ॥

तिनको विभाग।

मानुष खानमें सिंगिनि वाणी। आकाश, वायु, तेज, नीर, पृथ्वी, ये चार तत्त्व पिंडज खानमें वर्तते हैं। तीसरे अंडज खानेमें किंगिनि वाणी, वायु तेज, जल, ये तीन तत्त्व अंडज

खानमें वर्त्तते हैं। चौथे उपमज खानमें इंगिनि वाणी, वायु, तेज, ये दो तत्त्व उपमज खानमें वर्त्तते हैं। पांचे अस्थावर खानमें पिंगिणि वाणी, जल एक तत्त्व वर्त्तते हैं ॥

जीवनको प्रमान जात ।

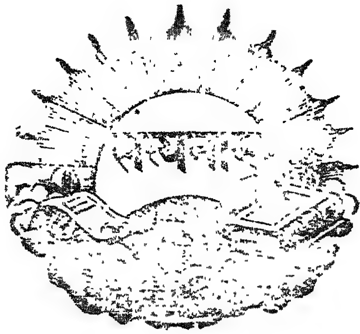
-प्रथम चार लाख खान मानुषको । दूसरे पिंडज नौलाख जात । तीसरे अंडज चौदह लाख जात । चौथे श्वेदज उपमज सत्ताइस लाख जात । पांचे अस्थावर तीस लाख जात ॥

अथ पुरुष समरथ सो अंश भये तिनको नाम ।

प्रथम पुरुषके त्रिकुटी सो अंकुर । पुरुषके नेत्र सो इच्छा । पुरुषकी नासिका सो सोहं पुरुषके मुखसो अचिन्त । तेज अंड पालंग बारह अचिन्त अंश प्रेम सुर्त । धीरज अंड पालंग पचीस सोहंग अंश सो सोहं सुर्त । छिमा अंड पालंग व्यालीस अकह अंश मूल सुर्त । सत अंड पालंग बहत्तर सुकृत अंश इच्छा सुर्त । सुमत अंड पालंग चौसठ,हिरण्मय अंत अंकुर सुर्त॥

इति श्री सुमिरण पांजी आदि षट्कर्म विधि, चौका विधि गुरु-वाई भेदादि विस्तार विधि संपूर्ण ।





सत्यसुकृत, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरति योग संतान, धनी धर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध गुरुबालापीर, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, उग्र नाम, दया नाम, की दया वंश-ब्यालीसकी दया।

अथ श्री बोधसागरे

[illegible]।

सुमिरन बोध।

तृतीय बोध।

अथ गुरु महिमा प्रारंभः।

गुरु संतनकी आज्ञा पाई। गुरु महिमा अमृत रसगाई॥
गुरू मिले तो अगम बतावे। यमकी आँच ताहि नहिं आवे॥
जेता नाम रूप जग माहीं। सबहीं सतगुरुकी छाहीं॥
सतगुरु सकल जगतके साखी। सकल भुवन गुरु तन्मय राखी

सतगुरु अजर अमर अविनाशी । सतगुरु परम ज्योति परकाशी
गुरु गोविन्द दोउ एक स्वरूपा । नाम रूप गुण भेद अनूपा ।
गुरु अविचल पद पूरण धामा । गुरु स्वामी गुरु जग विश्रामा।
सतगुरु जनम मरनते न्यारा । सतगुरु सबका सिर्जन हारा।
त्रिगुण गुरू रूपसे न्यारा । छाइ रह्यो सबही संसारा।
है सतगुरु सतपुरुष आपे । जासो प्रकट ब्रह्म भयो जापे।

साखी–गुरु ईश्वर गुरु परब्रह्म, सतगुरु सबका देव ।
गुरु बिन पार न आवई, ताते शरणो लेव ॥

गुरुकी शरणा लीजे भाई । जातें जीव नरक नाहिं जाई।
गुरुकी शरण साधु जाने । गुरुकी शरण मूढ़ पहिचाने ।
गुरु शरणा सबहिनसे भारी । समुझि गहो सोई नर नारी।
गुरु शरणा सो विघ्न विनाशे । दुरमति भाजे पातक नाशे।
गुरु शरणा चौरासी छूटे । आवा गमनकी डोरी टूटे
गुरु शरणा यमदण्ड न लागे । ममता मरै भक्तिमें पागे।
गुरु शरणासे प्रेम प्रकाशे । पारख पाद मिटै यम आसे ।
गुरु शरणा परमातम दरशे । त्रय गुण छोड़ि सतपदपरशे।
गुरु मुख होइ परम पद पावे । चौरासीमें बहुरि न आवे।
सत्य कबीर बतायो भेवा । धर्मदास करु गुरुकी सेवा।

साखी–गुरुकी सेवा जो करै, हृदया ध्यान लगाय ।
काल जाल सो छूटिके, सत्य धामको जाय ॥

गुरुपद सेवे विरला कोई । जापर कृपा साहबकी होई।
गुरु सेवा जो करै सुभागा । माया मोह सकल भ्रम भागा।
नौ नाथ चौरासी सिद्धा । गुरु चरणों सेवे बहु विद्धा।
गुरुके सेव कटै दुख पापा । जनम जनमको मिटै संतापा।
गुरु की सेवा सदा चित दीजे । जीवन जन्मसुफल करिलीजे।

विनरुप हरि आपुहिधरिया। गुरु सेवा करि सबही बिरिया ॥
व विरंचि गुरुसेवा कीन्हा । नारद दीक्षा ध्रुवको दीन्हा ॥
कल मुनी गुरुसेवा चाही । गुरुसेवा करि पँथ अवगाही ॥
रुसेवे सो चतुर सयाना । गुरुपटतर कोइ और न आना ॥
रु की सेवा मुक्ति निज पावे । बहुरि न हंसा भवजल आवे ॥

साखी–गुरु की सेवा कीजिये, तजि मन का अभिमान ।
गुरु बिनु दोसर को नहीं, धर्मनि सतगुरु जान ॥

ग दान जप तीर्थ नहाना । गुरु सेवा बिनुनिष्फल जाना ॥
रु सेवा बिनु बहु पछतावे । फिरि फिरि यमके द्वारे जावे ॥
रु सेवा बिनु कौन जो तारे । भवसागरसे बाहर डारे ॥
रुसेवा बिनु जड का करि है । काकी नाव बैठिकर तरिहै ॥
रुसेवा बिनु कछू न सरिहै । महा अंध कूप महँ परि है ॥
रुसेवा बिनु घट अँधियारा । कैसे प्रकटे ज्ञान उजियारा ॥
रुसेवा बिनु सदा जो धावे । गुरु बिनु सांच राह नहिं पावे ॥
रुसेवा बिनु कान फुंकावे । भवँरि भवँरि भवजलमें आवे ॥
रुसेवा बिनु द्वन्द अँधेरा । गुरुसेवा बिनु कालको चेरा ॥
रुसेवा बिनु प्रेम बिहूना । दिन दिन मोह होय भ्रम दूना ॥

साखी–गुरुसेवा बिनु ना छुटे, भवजलको संताप ।
गुरुसेवा करि गुरुमुख, काटे सबही पाप ॥

गुरुमुख होई परम पद पावे । चौरासी में बहुरि न आवे ॥
गुरु की नाव चढे जो प्रानी । खेद उतारे सतगुरु ज्ञानी ॥
गुरु के चरण सदा चित लाना । क्यों भूले तू चतुर सुजाना ॥
गुरु भगता गरु आतम सोई । वाहीके मन रहे समोई ॥
गुरुमुख ज्ञान ले चेते सोई । भवमें जनम बहुरि न होई ॥
गुरुमुख प्राणी सदाई जीवे । अमर होई ज्ञान रस पीवे ॥

गुरुसीढी चढि ऊपर जाई । सुख [illegible] रहे समाई ॥
गौरि शंकर और गणेशा । उनहू लीना गुरु उपदेशा ॥
गुरुमुख सदा अटल अविनाशी।सुर नर मुनि सबध्यान धरासी
गुरुमुख सब भक्त औ दासा । गुरु महिमा उनहीसे प्रकासा ॥

साखी—गुरुमुख कोसबही मिलै, [illegible] सार।
निगुरा कोतो कुछ नहीं,वहेसोनरकहि धार ॥

गुरु बिन मुक्ति न पावै भाई । नर्क ऊर्द्ध मुख वासा पाई ॥
गुरुबिनु [illegible] । गुरु बिनु [illegible] सिधाना
गुरु बिनु पढ जो वेद पुराना । ताको नाहि मिलै सतज्ञाना ॥
गुरु बिनु जो सो पशू कहावै । मानुष बुधि दुर्लभ होयजावै ॥
गुरु बिनु दान पुण्य जो करई । होयनिष्फलसब मनमोकरई ॥
गुरु बिनु भ्रम ना छूटे भाई । कोटि उपाय करे चतुराई ॥
गुरु बिनु होम यज्ञ जो करई । जाय पुण्य पाप सो भरई ॥
भवसागर है अगम अगाहा । गुरु बिनु कैसे पावै थाहा ॥
गुरु बिनु बूझे सकल अचारी । तैंतिस कोटि देव सब धारी ॥
गुरु बिनु भरमें लख चौरासी । जनम अनेक नरकके वासी॥

साखी—गुरुआज्ञाग्रहणकरि, छोडमनमुखताकाल ।
गुरु कृपानन्द पावई, क्षणमें होय निहाल ॥

गुरु की कृपा कटै यम फांसी ।निलम्बनहोयमिलै अविनाशी॥
गुरु कृपा [illegible] पइया । चढि विमान वैकुंठहि गइया ॥
गुरु कृपा जब नारद पयऊ । मेटि [illegible] सोभयऊ ॥
गुरु की कृपा रामपर सोहै । जीवन मुक्ति पाइ जग मोहै ॥
गुरु कृपा वाम देवहि दइया । गर्भ माहिगुरुज्ञानहि पइया ॥
गुरु कृपा ध्रुवजो दरसा । अटलअमान[illegible] ॥
गुरु कृपा ते भये उजासी । सनक सनन्दन नारद व्यासी॥

गुरू कृपा ते जनक विदेही । सो ग्रह माहि परमपद लेही ॥
गुरु कृपा ते जन प्रहलादा । दैत्य होइ भक्ति तिन साधा ॥
गुरू कृपा जो कोई पावै । सकलो दुरमति दूर बहावै ॥

साखी–गुरु कृपा ऐसी अहै, सुनो साधु चित देइ ।
तातै गुरु सुमिरन करू, रह कालको लेइ ॥

गुरु गुरु जाप करो मन मेरा । काल दूत नहिं आवैनेरा ॥
गुरुको ध्यान धरो नर नारी । सहजे सहज तरो संसारी ॥
गुरु गुरु सुमिरो मनमे प्यारो । गुरु गुरु कहोकोटि अवतारो ॥
गुरु गुरु जाप काज [illegible] । दुर्मति कपट दूर करि तारे ॥
गुरु गुरु जाप करो मन धीरा । गुरुके नाम मिटै सब पीरा ॥
गुरु गुरु मंत्र हृदय धरीजे । तन मन धन सबअर्पण कीजै ॥
गुरुको सुमिरन निशदिनकीजै । जीवनजन्म [illegible]कीजै ॥
एक नाम गुरु देत दिखाई । सो निजनामकलपि [illegible] ॥
गुरु सुमिरन[illegible] नाम विचारे । आप तरे औरनको तारे ॥
सतगुरु शब्द नाम निरधारा । भवसागरसे उतरे पारा ॥

साखी–गुरुको सुमिरन कीजिये, निशदिन ध्यान लगाय ।
गुरु लक्षण अब कहत हौं, सुनहु धीर [illegible] ॥

राग द्वेष दोनोंसे न्यारे । ऐसा गुरू शिष्यको तारे ॥
आशा तृष्णा कुबुद्धि जलाई । तन मन वचन सबन सुखदाई ॥
निरालम्ब भ्रम रहित उदासी । निर्विकार जानो निर्वासी ॥
निर्मोही निर बंध निशंका । सावधान निरमान निवंका ॥
सार ग्राही औ सरवज्ञी । संतोषी ज्ञानी सतसंगी ॥
अयाचक जत निरअभिमानी । पक्षरहित अस्थिर शुद्धवानी ॥
निष्प्रसंग वाही परपंचा । निष्करम निरलिप्त अवंचा ॥
बोलं अडोल भाखे सो सांची । कोई बात कहे नहिं कांची ॥

जेहि विधि कारज जिनका होई । निर्णय वाक्य उचारे सोई ॥
झाँई सन्धि कालका फेरा । पारख लाई करे निबेरा ॥
साखी—जानि बड़ाई आश्रमहि, मान बडाई खोय ।
जो मनगुरुके पग लगे, सांच शिष्य है सोय ॥
गुरुके आगे राखे माथ । करै विनय दुख मेटो नाथ ॥
अहौं अधीन तुम्हारो दासा । देहू अपने चरनन बासा ॥
यह तन में तोहि भेट चढायो । अपनी इच्छा कुछ रखायो ॥
जो चाहो सो तुम अब करो । या भाडको जेहि विधि भरो॥
भावे धूप छाँहमें डारो । भावे बोरो भावै तारो ॥
गुण पौरुष कछु ओ नहि मेरो । सब विधिशरण गही गुरु तेरो॥
मैं अब बैठा नाव तुम्हारी । आशा नदी सो करिये पारी ॥
अपना कीजे गहिये बाहीं । धरिये शिरपर हाथ गोसांई ॥
बहु विधि विनती गुरुसे करई । मान मोह हृदय नहिं धरई ॥
देखि विनयगुरु होहि अनन्दा। तब पावै सिख परमानन्दा ॥
साखी—गुरुके आगे जायके, ऐसी बोले बोल ।
कूर कपट राखे नहीं, अरज करे मन खोल ॥
देखि प्रसन्नता गुरुकी भाई । गुरुते कहिये शीस नवाई ॥
ऋद्धि सिद्धि फल मैं कछुनहि चाहूँ । जगतकामनाको नाहिंलाहूँ॥
चौरासीमें बहु दुख पायो । ताते शरण तुम्हारी आयो ॥
मुक्त होनकी मनमें आवे । आवागमन सो जीव डरावे ॥
सत्य भक्तिकी चाह हमारे । ताते पकऱ्यो चरण तिहारे ॥
सत्य ज्ञानते हृदया भीजे । यही दान दाता मोहि दीजे ॥
मैंहू दास सो लेहु उबारी । हौं मच्छी तुम मिष्ट सुवारी ॥
हौं पतंग तुमहो डोरा । मैं तो फिरूं तुम्हारे जोरा ॥
होहु दयाल दया अब कीजे । बूडत भवमें बाहँ गहीजे ॥

काल संधि झांईके जाला। पडिके दुःखित भयो विहाला॥

साखी–दया होय गुरु देवकी, छुटे अविद्या भान।
मिथ्या माया सब मिटै, पावे अविचल ज्ञान॥

सारशब्द गुरूते पावे। जाने जीव काज बनि आवे॥
पूछे गुरुसे सब अरथाई। सारशब्दको निर्णय भाई॥
जाते होय जीवको काजा। पछे सोइ होय निर्व्याजा॥
त्रिविधि शब्दको पारख बूझे। सत्य पदारथ तबहीं सूझे॥
सार शब्दको अंग विचारे। मानुष लक्ष भले निरुआरे॥
पशुवन धर्मको रूप लखावे। करि निरुआर सब गुरू बतावे॥
हंस स्वरूपहु लीजे जानी। सबहि बतावे सतगुरु ज्ञानी॥
सांच झूठका निर्णय करे। सत्य होय सो हिरदै धरे॥
पक्का सौदा गुरुसे लेवे। देखि अधीन गुरू सब देवे॥
गुरु सो देवे सब कछु भाई। क्षणमें मेटै काल कलाई॥

साखी–काल जालसे छूटिके, मोक्ष मिलनकी चाह।
सत्य मिलनकी युक्ति सब, गुरू बतावै राह॥

गुरुसे पूछे ब्रह्मस्वरूपा। गुरुसे पछे प्रकृति अनूपा॥
गुरुसे पूछे सूक्षम तत्ता। गुरुसे पूछे त्रिगुण सत्ता॥
गुरुसे पूछे पांच तनमात्रा। गुरुसे पूछे पंचको यात्रा॥
गुरुसे पूछे महाकारण देही। गुरुसे पूछे तुरिया लेही॥
गुरुसे पूछे सूक्ष्म कारण। गुरुसे पूछे स्थूल सवारन॥
गुरुसे पछे ज्ञान अरु कर्मा। दशों इन्द्री सहित स्वधर्मा॥
गुरुसे पूछे त्रिकुटी भाई। चौदह यम सब देइ बताई॥
गुरुसे पूछे चतुदर्श स्थाना। चौदह देव तबे मनमाना॥
चौदह पूछिकरे प्रवेशा। तबही पावै व्यालीस वेशा॥
पंचकोश सो गुरुसे जाने। आतम ज्ञान तबही मनमाने॥

साखी—पंचकोशमन प्रकट जग, वेद कहे सत सोइ ।
परख बुद्धि निज दृष्टि बल, गुरू कृपा जब होइ ॥
द्वैताद्वैत का करै विचारा । शुद्धाद्वैतका करे उपचारा ॥
विशिष्टाद्वैत भली विधिजानै । पूछत पूछत सबै मन मानै ॥
कर्मोपासना करै विचारा । ज्ञान विज्ञानका पावे सारा ॥
अर्थ धर्म मोक्ष रु कामा । सबका पूछे असली धामा ॥
नवधा भक्ति को रूप पिछाने । योग क्रियाको भलीविधिजाने
राजयोग हठयोग सरूपा । सबही आसन सिद्धि अनूपा ॥
ब्रह्म जीव अरु प्रकृति का भेदा । द्वैतज्ञान का करे अछेदा ॥
नाना मत जग आहि जोभाई । सब का भेद जो गुरुसे पाई ॥
आस्तिकनास्तिकमतअनुहारा । सबही फन्दा करे विचारा ॥
पूछि गुरूसे सबहि सुधारे । गुरुकेपारख काल फन्द टारे ॥
साखी—संसारी पारख बिना, कैसे पावे ठौर ।
विविध युक्ति अनमिल सबे, भोगवहींऔरके और ॥
कालजालकी विकट है चाला । जीव विकलतेहिमध्यबिहाला॥
परख यथारथ प्रभु प्रकाशू । कठिन महातम कालविनाशू ॥
कालचक्र चक्की कठिनाई । पारख पाये जात बिलाई ॥
पारख बल बाहियां भौजेही । सब विधिचीन्हपडाखल तेही॥
गुरु प्रसाद पारख दृढ पाये । विकट कला यमजालछुडाये ॥
एक एक परखे जेहि फांसा । सो संक्षेप करे प्रकाशा ॥
जाते जीव बचे यमफांसा । शरणागत दृढ़ परख विलासा ॥
भक्तिभाव प्रेमहि अधिकाई । परख लहत बल काल नशाई॥
कालकला नहि पावे ताको । भक्तिभाव गुरु पारख जाको ॥
परम पारखी जीवन मुकता । नहि पावे तेहिंकालक उकता ॥
साखी—बिनु शरणागति परख गुरु, नहि जीवन निस्तार ॥
सर्वोपरि गुरु परख है, लहै तो होय उबार ॥

गुरु से दीक्षा लीजे भाई। सदा गुरुकी कीजे सेवकाई ॥
दीक्षा लेइचले जो आडा। सात जनम सो सिरजे पाडा ॥
सतगुरु की आज्ञा जो लोपे। ता ऊपर यमराजा कोपे ॥
सतगुरु की जो अदब न राखे। ताको दोजख शास्तर भाखे ॥
सतगुरु की न लाये विश्वासा। ताको काल करत है ग्रासा ॥
गुरुसेती गुमान जनावै। जनम जनम सो यमपुरजावै ॥
गुरुसँग आडी टेढी बोलै। श्वान होई सो घर घर डोलै ॥
गुरूसंग ज्ञान गर्भ दिखावै। कोटि जनम कूकर को पावे ॥
गरुसे वाद करे नरनारी। कोटिजनम सो नरक मंझारी ॥
गुरु को शब्द मेटि पग धरई। यमकिंकरके फन्दे परई ॥

साखी–गुरु सीढीते ऊतरे, शब्द विहूना होय।
ताको काल घसीटि हैं, राखि सके नहिं कोय ॥

सतगुरु की मरयाद न धरई। लख चौरासी कुण्डमें परई ॥
गुरुको शब्द न सुने अज्ञानी। भवसागर डूबे अभिमानी ॥
गरु को देखि धरतअभिमाना। ब्यास बचन पडनरक निधाना॥
गुरु को ज्ञान मेटि मत थापी। तीनलोकमां वडो ते पापी ॥
गुरु को मेटि बखानत आपा। धरती भार मरत तेहि पापा ॥
गरुसे जो ऊंचा चढि बैठे। सात कुण्ड नरकमें पैठे ॥
गुरुसे उलटा वचन सुनावे। सात जनम कोढी को पावे ॥
गुरुको उलट सुनावे बैना। सात जनम अंधा होय नैना ॥
गुरु को छोडि देव जो पूजे। बादुर होय दिवस नहिं सूझे ॥
गुरु को छोडिअनत जो जावे। उलूक होय सो जन्म गँवावे ॥

साखी–शिवपूजा में बैठिके, गुरुसे करि अभिमान।
काग भुशुण्ड शिवशापते,पडचो चौरासी खान ॥

गुरुनिन्दा जाके मुख उपजे। कोटि जनम गदहाहोय निपजे॥

गुरुनिन्दा जाके मुख होई । ताको मुख ना देखो कोई ॥
अपने मुख गुरु निन्दा करई । शूकर श्वान जनम सो धरई ॥
गुरु की निन्दा सुने जो काना । सो तो पावे नरक निधाना ॥
गुरुनिन्दा जो श्रवण न सुनयी । अपने हाथ प्राण निज हनयी॥
गुरुनिन्दक नारायण होई । ताको मुख ना देखो कोई ॥
गुरुनिन्दक धरनी पग चंपे । ताके भार धरणि अति कंपे ॥
गुरुनिंदक अवनीपर सोवे । धरती धरत शेष अति रोवे ॥
गुरुनिन्दक जबही मुख बोले । धरनी गगन मेरु ग्रह डोले ॥
गुरुनिन्दक जो वचन सुनावे । ज्ञानी कान मूँदिके जावे ॥

साखी—गुरुनिन्दा छाडो सुजन, गुरु स्तुती मन धारि ।
गुरुको राखो शीसपर, सबविधि करे गुहारि ॥

सतगुरु मिले परम सुखदाई । जनम २ का दुःख नशाई ॥
सतगुरु मिले तो अगम बतावे । यमकी आँच ताहि नहिं आवे॥
सुख सम्पति अपनो नहिं प्राणी । समझिदेखु तुम निश्चय जानी॥
तीरथ वरत और सब पूजा । गुरुविन होवे सबही लूँजा ॥
मारग दोई भल जग माहीं । गृह वैराग बिन और न आहीं॥
दोऊ गुरुकी कृपासे पावे । गुरु बिनु भेदसु कौन बतावे ॥
करि त्याग सब गरुको दीजे । पारख पाइ सदा सुख लीजे ॥
गिरही रहो भगति अनुसारे । तन मन धन अर्पण करिडारे ॥
दशवां अंश गुरुको दीजे । जीवन जन्म सुफल करिलीजे ॥
सतगुरुके सब आगे धरिये । शीस नाइ गुरु दंडवत करिये ॥

साखी—गुरु सो भेद जो लीजिये, शीस दीजिये दान ।
बहुतक भोंदू पचिमुये, राखि जीव अभिमान ॥

गुरुसे रहे सदा मन जोरी । जैसे नटवा चढतहै डोरी ॥
पारख तार चढ़ि भय नहिं पावे । छोडे पारख चूर होइ जावे ॥

लोपे नहीं सतगुरुका बाचा । सो सतगुरुका सेवक सांचा ॥
सोइ शिष पावे पारख घाटा । सोई पावे सत्य सो बाटा ॥
निर्मोही सतगुरुकी रीती । सांचा सेवक लावै प्रीती ॥
मिलि पारख सब भय मिटजावै। गुरुमुख शब्द सदा लौ लावै ॥
देखि दुसह दुख जीवन केरी । दया करी पारख प्रभु प्रेरी ॥
निज पद जानि दया सो करई । बन्धन जीव छुटावन लहई ॥
केतिक पारख प्रभुके पाये । जरा मरण यम जाल मिटाये ॥
जिन्ह जिव लहे पारख प्रभु केरा । महाजाल यम जीव निवेरा ॥

साखी—गुरु महिमा पूरण भई, सतगुरु किरपा कीन ।
संतनकी वाणी बहुत, यामें संग्रह लीन ॥

पाठफल वर्णन ।

गुरुमहिमा सबते अधिकाई । शिव शिवाप्रति यही दृढाई ॥
व्यास वचन औ वेद गाया । गुरुसे अधिक नहीं रघुराया ॥
सत्यगुरु कबीरहु परखाये । धर्मदास गुरुमहिमा गाये ॥
रामरहसजू पूरण दासा । सबहीं गुरुमहिमा परकासा ॥
जेते भये जग बुद्धिमतिधारी । सब गुरुमहिमा कीन उचारी॥
सबका सार यामधि पइये । अब याकी महिमा सुनि लइये ॥
तीनों संध्या जो यहि पढयी । छोडि कुमारग सतपथ लहयी॥
सांची श्रद्धा मनमें लाई । बूझि बूझिके पाठ कराई ॥
बिन बूझे सो धुंध अँधेरा । परि अभिमान खाय जगफेरा॥
गुरुके लक्षण भलिविधि यांचे । यम फंदाते तबही बांचे ॥

साखी—बूझ विवेक सह जो पढे, गुरुमहिमा यक बार ।
कबीर दीनदयाल तेही, तुरत उतारे पार ॥

योग यज्ञ अरु जप तप अहई । पढि गुरुमहिमा सब फल लहई॥
विष्णुसहस्र अरु भगवद्गीता । भागवत आदिक पाठ पुनीता ॥

एकबार गुरुमहिमा पढयी। सो फल सबही क्षणमें लहयी ॥
काशी क्षेत्र बहुविधि दाने। गया प्रयाग पुष्कर असनाने ॥
सो फल सबही यामधि पावे। श्रद्धासहित जो पाठ करावे ॥
निर्मल होय पाठ जो करई। सो नर सहजे भवनिधि तरई ॥
वेद पुराण रु शास्त्र विलोई। जाहि निकस्यो गुरुमहिमा सोई ॥
गुरुमहिमा सारको सारी। गिरिजा प्रति भाष्यो त्रिपुरारी ॥
गुरुमहिमा सत्यसों गाया। चढि सत पारख नादबजाया ॥
सत्यकबीर जब दाया कीनी। गुरुमहिमा तब वर्णन कीनी ॥

साखी-गुरुमहिमा गुरु गम अहै, जाने संत सुजान।
पढे विचारे मनन करे, पावे मोक्ष निदान ॥

गुरुमहिमा शतक यहि नामा। पाठकिये पूरे सब कामा ॥
सो चौपाई यामहि आही। बीस दोहरा साख सदाही ॥
दो चौपाई दुइ सो साखी। फल वर्णन महँ पुनि राखी ॥
पांच चौपाई यक सो दोहा। संख्या तथि वर्णनमहँ जोहा ॥
याविधि पूर्ण भयो या ग्रन्था। जाते जिव पावे सत पंथा ॥
याको पाठ करे जो कोई। उभय आनन्द फल पावे सोई ॥
गुरुसंतनपाउँ निनशिर नाऊ। मातु पिताके बलिबलि जाऊँ ॥
सत्य कबीर सत्य गुरु राई। जिनकी कृपा परख पद पाई ॥
सर्वदास गुरु जग आये। कार उपदेशजग जीव चिताये ॥
राम रहस पूरण गुरु राई। सबको वन्दो शीस नवाई ॥

साखी-नभ रसनिधिशुभ चन्द्र कह, पौष पूर्णिमा जान।
विक्रम सम्बत जानिये, रवि वासर दिन मान ॥

इति श्रीगुरुमहिमा शतक कबीर पंथी भारत पथिक स्वामी
जुगलानन्द द्वारा संकलित लिखित और सम्पादित
कबीर दर्शनलाइब्रेरीमें समाप्त।

अथ गुरु उपदेशमहिमा योग प्रारम्भः ।

दोहा—गुरु संत वन्दन करूं, ऐहै सुख को पूर ।
गुरुमहिमावरनन करूं, शिरधरिपदरज धूर ॥
संत सबै शिर ऊपरे, निस्पृही निज नाम ।
सबके मस्तक मुक्ति गुरु, पूरवे मनकेकाम ॥

चौपाई ।

परब्रह्म को आदि मनाऊँ । तिनकीकृपा गुरुचरनन पाऊँ ॥
गुरु सोई सब सिरजन हारा । गुरु की कृपा होय भवपारा ॥
गुरु विन होम यज्ञ नहिं कीजे । गुरु की आज्ञा माहि रहीजे ॥
गुरु संतनके चरण मनायो । ताते बुद्धि उत्तम मैं पायो ॥
सब इष्टनमें सतगुरु सारा । सो सुमिरावे पुरुष हमारा ॥
शरण होय शिष आवे कोई । सहज पदारथ पावै सोई ॥
गरु सुरतरु सुर धेनु समाना । आवे शरण मुक्ति परवाना ॥
मन बांछित फल पावै सोई । प्रीतिसहित जो सुमिरे कोई ॥
तन मन धन अर्पि गुरु सेवै । होय गलतान उपदेशहि लेवै ॥
गुरु विनुपदारथ और न जानै । आज्ञा मेटि और नहि मानै ॥
सतगुरुकी गति हिरदय धारै । और सकल बकवाद निवारै ॥
गुरु के सन्मुख वचन न कहै । सो शिष रहनिगहनिसुखलहै ॥
गुरुसे वैर करै शिष कोई । भजन नाशअरु बहुतबिगोई ॥
पीढि सहित नरकमें परिहै । गरुआज्ञा शिषलोपन करिहै ॥
चेलो अथवा उपासक होई । गुरु सम्मुख ले झूठ संजाई ॥
निश्चय नरक परै शिष सोई । वेद पुराण भनत सब कोई ॥
सन मुख गुरुकी आज्ञा धारै । अरु पाछे तै सकल निवारै ॥
सो शिष घोर नरकमें परिहै । रुधिर राध पीवै नहिं तरिहै ॥
मुखपर वचन कै परमाना । घर पर जाय करै निशाना ॥

जहँ जावै तहँ निंदा करई । सो शिष क्रोध अगिन ते जरई ॥
ऐसे शिपको ठौर जो नाहीं । गुरु रुख लोपतहै मनमाही ॥
वेद पुराण कहै सब साखी । साखी शब्द सबै यों भाखी ॥
मानुष जन्म पायकर खोवै । सतगुरु विमुखा युगयुग रोवै ॥
ताते सतगुरु शरना लीजै । कपट भाव सब दूर करीजै ॥
योग यज्ञ तप दान करावै । गुरू विमुखफलकबहुन पावै ॥
गुरूहीं जपतप तीरथ कहिये । गुरूहींसाचअरूमिथ्यापहिये ॥
सतगुरु विना मुक्ति नहिं कोई । ऊंच नीच भावै. जो होई ॥
आतम ब्रह्म गुरू तै मेरा । ताके शरणों आयो मैं चेरा ॥
चार युगन जे संतहि भयऊ । ब्रह्म रूप होय पारहि गयऊ ॥
सो जानहु गुरू संग प्रभाऊ । लोलहु वेद न आन पराऊ ॥

दोहा--गुरुआज्ञाजिनजिनलही,सन्योसकलविधिकाज।
नरकरूप जग दुर धरचो, श्री गुरू महराज ॥

उपदेश प्राप्ति लक्षण–चौपाई ।

दोउ कर जोरि गुरूके आगै । करि बहुविन्ती चरनन लागै ॥
अति शीतल बोलै सब बैना । मेटै सकल कपटके फैना ॥
हे गुरु तुम हौ दीन दयाला । मैं हूं दीन करो प्रतिपाला ॥
तुमबन्दीछोर अतिहिं अनाथा। भवजल बूडत पकडो हाथा ॥
दे उपदेश गुरु मंत्र सुनाओ । जनममरनभव दुःख छुडाओ ॥
यों आधीन होय शिप जबहीं । शिपपर कृपा करै गुरु तबहीं ॥
गुरुसे शिष जब दीक्षा मागै । मनक्रम बचन धरै धनआगै ॥
ऐसी प्रीति देखे गुरु जबही । गुप्त मंत्र सुनावै तबही ॥
अरू भक्ति मुक्तिको पंथ बतावै । बुरो होय को पंथ छुडावै ॥
ऐसे शिष उपदेशी पावै । होय दिव्य दृष्टि पुरुषपै जावै ॥

गुरुसेवा माहात्म्य ।

ा यमुना बद्रीश समेते । जगन्नाथादि धाम हैं तेते ॥
े फल प्राप्त होय न जेतो । गुरुसेवामें पावै फल तेतो ॥
महातम को वार न पारा । वरणेशिवसनकादिकअवतारा॥
महिमा मोपैवरणि न जाई । महिमाअनंतममतिलघुताई ।

गुरु भावना ।

को पुरुष ब्रह्मकर जाने । और भाव कबहूं नहिं आने ॥
म क्रोध रहित गुरु मेरा । पाप पुण्यका करत निवेरा ॥
म क्रोध लोभ समाना । तो शिष जानहु तीन समाना ॥
ी दृष्टि से गरुको सेवै । तब तन मन धन गुरुसबको देवै ॥
करि टहल करै गुरुसेवा । सो शिष लहै मुक्तिको मेवा ॥
वन उचारे पुहुप सम बानी । द्रव्य लगावै गुरुहित जानी॥
च नीच सबही सुनिर्लीजे । कबीर बचन प्रमाण करीजे ॥
और कछु नहि चहिये । गुरू भावना गुरुहिय लहिये ॥

दोहा—सातद्वीप नौ खण्डमें, औ इकीस ब्रह्मंड ।
सतगुरु विना न बाचि हौ, काल बडो परचंड॥

ही भाव भक्तिका लक्षण कहिये । गुरुकेभावबिन भवजलबहिये
ीन बातनसे गुरु दुख पावे । तिन बातनको दूर बहावे ॥
पुगण सबै मिलि गावै । नेमी धर्मी चोरासि न जावै ॥
ष्ट अंगसो दंड परनामा । संध्या प्रात करै निष्कामा ॥
को शिष ऐसे नाहिं मानै । सो त्रयताप जरतचारो खानै॥
ागी यती तपी आशरमा । बिनु गुरु कोउ न जानै मरमा

गुरु चरणोदक माहात्म्य ।

ाटिक्र तीरथ सब करि आवै । गुरु चरणा फल तुरतहि पावै॥

कन्याबिन [illegible] पावै। चौरासीगत [illegible] निमाँहि
कोटिक जप तप करि करावै। वेद पुराण सबै मिलि गावै
गुरुपद रज मस्तक पर देवै। सो फल तत्कालहि लेवै

दोहा—गुरु चरणोदक अनन्त फल, हमते कही न जाय।
मनकी पुरवै कामना, जो लेवै चित्त लगाय ॥
सतगुरु [illegible] हितू, अन्तर करो विचार
कागा सो हंसा करै, दरसावै ततसार ॥
गुरु महिमा ग्रन्थ यह, कहैं कबीर समझाय।
पाप ताप सबही हरै, अमरलोक लै जाय ॥

इति श्रीगुरु उपदेश महिमा योग कबीर पंथी भारत पथिक स्वामी श्री जुगलानन्द द्वारा संग्रहीत संशोधित और सम्पादित कबीर दर्शन लाइब्रेरीमे समाप्त।

गुरु महिमा प्रारम्भः ।

प्रथम खंड ।

चौपाई ।

गुरुकी शरणा लीजे भाई । जाते जीव नर
गुरु मुख होय परम पद पावे । चौरासीमें बहुरि न आवे ॥
गुरु पद सेवे विरला कोई । जापर कृपा साहिबकी होई
गुरु विनु मुक्ति न पावै भाई । नरक ऊर्द्ध मुख बासा पाई ॥
गुरुकी कृपा कटे यम फाँसी । विलम्ब न होय मिले अविनाशी
गुरु विनु काहु न पाया ज्ञाना । ज्यों थोथा भुस छडे किशाना॥
गुरु महिमा शुकदेव जो पाई । चढि विमान वैकुंठे जाई ॥
गुरुविनु पढै जो वेद पुराना । ताको नाहिं मिलै भगवाना ॥
गुरु सेवा जो करे सुभागा । माया मोह सकल भ्रम त्यागा ॥
गुरुकी नाव चढै जो प्राणी । खेद उतारे सतगुरु ज्ञानी ॥
ीरथ वरत और सब पूजा । गुरु विन दाता और न दूजा ॥
ौ नाथ चौरासी सिद्धा । गुरुके चरण सेवे गोविन्दा ॥
रु विनु प्रेत जनम सब पावै । वर्ष सहस्र गर्भ मांहि रहावै ॥
रु विनु दान पुण्य जो करही। मिथ्या होय कबहूं नहिं फलही
रु विनु भरम न छूटै भाई । कोटि उपाय करै चतुराई ॥
रु विनु होम यज्ञ जो साधे । औरो मन दश पातक वाधे ॥
तगुरु मिले तो अगम बतावै। यमकी आँच ताहि नहिं आवै
रुके मिले कटे दुख पापा । जनम जनमको मिटे संतापा ॥
रुके चरण सदा चित दीजै । जीवन जन्म सुफलकर लीजै ॥
रुके चरण सदा चित जानो । क्यों भूले तुम चतुर स्याने ॥
 भगता मम आतम सोई । वाके हिरदे रहों समोई ॥

गुरु मुख ज्ञान ले चेतो भाई । मानुष जन्म बहुरि नहिं पा
सुख संपति आपन नहिं प्राणी । समझि देखु तुम निश्चय जानं
चौबिस गुरु हरि आपहि धरिया। गुरु सेवा हरि आपहि करि
गुरुकी निंदा सुनै जो काना । ताको निश्चय नरक निदाना
दशवा अंश गुरूको दीजै । जीवन जन्म सुफल कर लं
गुरु मुख प्राणी काहे न हूजे । हृदय नाम सदा रस पीजे
गुरु सीढ़ी चढ़ि ऊपर जाई । सुखसागरमें रहे समाई
अपने मुख निंदा जो करई । शूकर श्वान ज म सो धरई
निगुरु करे करै मुक्तिकी आशा। कैसे पावै मुक्ति निवास
औरो सुकृत देह जो पावे । सतगुरु बिन मुक्ती नहिआ
गौरी शंकर और गणेशा । सबही लीन्हा गुरु उपदेश
शिव विरंचि गुरुसेवा कीन्हा । नारद दीक्षा ध्रुव को दीन्ह
सतगुरु मिले परम सुख दायी। जनम जनम का दुःख नस
जब गुरुकियाअटलअविनाशी। सुर नर मुनि सब ·वकरार्म
भवजल नदिया अगमअपारा। गुरु बिनु कैसे उतरे पा
गुरुबिनु आतम कैसे जाने । सुख सागर कैसे पहिचा
भक्ति पदारथ कैसे पावे । गुरु बिनु कौन जो राह बत
गुरुमुख नाम देव रैदासा । गुरु महिमा उनहू परका
तैतिस कोटि देव [illegible]। गुरुबिनु भूले सकल अचा
गुरुबिनु भरमें लख चौरासी । जनम अनेक नरकके वास
[illegible] पशु जनम सो पावे । फिरि फिरि गर्भ वासमें आ
गुरु विमुख सोई दुख पावे । जनम जनम सोई डहक
गुरु सेवे जो चतुर स्थाना । गुरु पटतर कोइ और न अ
गुरुकी सेवा मुक्ति निज पावे । बहुरि न हंसा भवजल अ
भवजल छूटन यही उपाई । गुरु की सेवा करो सब

साखी—सतगुरु दीन दयाल है, देवे मक्ति मुकाम।
मनसा बाचा कर्मना, सुमिरो सतगुरु नाम॥
सत्य शब्द के पटतरे, देवेको कछु नाहि।
कहले गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहि॥
अति उंडा गहरा धना, बुद्धिवन्त मतिधीर।
सो धोखा विरचे नहीं, सतगुरु मिलहि कबीर॥

इति श्री प्रथमखण्ड गुरु महिमा समाप्त।

अथ गुरुदेवकी महिमा प्रारम्भः।

द्वितीय खण्ड।

गुरुदेवकी महिमा वरणों। जे गुरु देव तुम्हारी शरणों॥
गावत जे गुणपार न पावे। ब्रह्मा शंकर शेप गुणगावे॥
प्रथमहीं गुरु ऐसा कीन्हा। तारक मंत्र रामको दीन्हा॥
माता तिलक दिया सरूपा। जाको वन्दे राजा औ भूपा॥
ज्ञानगुरू उपदेश बताया। दया धर्मकी राह चिन्हाया॥
जीव दया घटहीमें होई। जीव दया ब्रह्म है सोई॥
गुरु से आधीन चेला बोले। खरा शब्द उर अन्तर खोले॥
खारा सिखी वचने खमैं। गुरुके चरणां चेला रमैं॥
भीतर हिरदे गुरुसो भले। ताके पीछे रामहि मिले॥
गुरु रीझेसो कीजे कामा। ताके पीछे रामहिं रामा॥
शिपसरस्वतीगुरुयमुनाअंगा। राम मिले सब सरिता गंगा॥
चेला गुरूमें गुरुमें राम। भक्ति महातम न्यारा नाम॥
गुरु आज्ञा निरबाहें नेम। तब पावे सरवज्ञी प्रेम॥
सरबज्ञी राम सकल घटसारा। है सबही में सब सो न्यारा॥
ऐसी जाने मनमें रहै। खोजे बूझे तासो कहै॥

गुरुकी महिमा संक्षेप भनी । गरुकी महिमा अनंत घनी ।
औतार धरी हरि गुरुकरे । गुरु किये तब नारद तरे ।
साख पुरातम ऐसी सुनी । बात हमारी गरुसा बनी
कीडी जैसा मैं हौं दासा । पडा रहा गरु चरणों पासा
गुरु-चरणों राखों विश्वासा । गुरुहि पुरावे मन की आसा ।

साखी–गुरु गोविन्द अरु शिष मिलि, कीन्हा भक्ति विवेक
त्रिवेनी धारा बही, आगे गंगा एक ॥
गुरुकी महिमा अनंत है, मोसो कही नं जाय ।
तन मन गुरुकी सौंपिकै, चरणा रहों समाय ॥

द्वितीय खण्डगुरु महिमा समाप्त ।

अथ गुरुमहिमा प्रारंभः ।

तृतीयखंड ।

गुरु सतपद भजु अमृतवानी । गुरु विनु नहीं रे प्राणी
गुरु हैं आदि अंतके ज्ञाता । गुरु हैं मुक्तिपदके दाता
गुरु गंगा काशीहि स्थाना । चारवेद गुरुगमसे जाना
अरसठ तीरथ भ्रमि २ आवे । सो फल गुरुके चरणों पावे
गुरुको तजै भजै जो आना । ता पशु याको फोकट ज्ञाना
गुरु पारस परसे जो कोई । लोहाते जिव कंचन होई
शुक गुरु किये जनक विदेही । वो भै गुरुके परम सनेही
नारद गुरू प्रहलाद पढाये । भक्तिहेतु जिन दर्शन पाये
काकभुशुंडि शंभु गुरु कीन्हा । अगम निगम सबही कहिदीन्हा
ब्रह्मा गुरू अग्निको कियेऊ । होम यज्ञ जिन अज्ञा दियेऊ
वशिष्टमुनि गुरू किये रघुनाथा । पाये दरशन भये सनाथा
कृष्ण गये दुर्वासा शरणा । पाये भक्ति जब तारन तरना

नारद उपदेश विमरसे पाये। चौरासीसे तुरत बचाये।
गुरू कह सोई है सांचा। बिनु परचे सेवक है कांचा।
गुरू सामरथ सबके पारा। गहे शरण उतरे भवपारा।
कहैं कबीर गुरु आप अकेला। दशो औतार गुरूका चेला।
साखी—राम कृष्णसों को बड़ा, तिनहू तो गुरु कीन्ह।
तीन लोकके वे धनी, सो गुरु आगे अधीन॥
हरिसेवा युग चार है, गुरु सेवा पल एक।
तासु पटतर ना तुल, संतन किया विवेक॥

अथ प्रचलित गुरुमहिमा कबीर दर्शन लाइब्रेरीके संस्थापक कबीर पंथी भारतपथिक स्वामी श्रीयुगलानन्द द्वारा संग्रहीत संशोधित और सम्पादित।

इति श्रीतृतीय खण्ड गुरु महिमा समाप्त।
